

निर्गम्यं पावयणं

दसवेआलियं
तह
उत्तरज्मयणाणि

018238

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

With Best Compliments of
SHRI JAIN SANGH BOMBAY.
C/o K M JHAVERI
157, Sheikh Memon St; BOMBAY-2.

जेन इवेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१

This book containing extensive research for nearly 12 years, by Āchārya Shri Tulsī and his group of learned monks has been prepared with the intention to present a comprehensive study of the Jain Canons in particular and Jainism in general and also to promote Indological studies.

This book is now presented to the University of Oslo through the good offices of Professor Madame Maximilian whom we had the honour to have in our home in Bombay.

Lenderlal S. Janani

Ramnitichand M. Janani

25th January 1969

निर्गण्यं पावयणं

: ८ : मूल सुत्तणि

दसवेआलियं

तह

उत्तरज्जयणाणि

श्री इमलीक भाई कपेदी,
जम्बू श्री ओर ले
सेंट.

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

(४५)

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

प्रबन्ध-व्यवस्थापक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०

संयोजक,

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

धारक :

आदर्श साहित्य संघ

चूरू (राजस्थान)

अर्थ-सहायक :

सरावगी चेरिटेबल फण्ड

७, लोअर राउडन स्ट्रीट,

कलकत्ता

प्रकाशन-तिथि :

मर्यादा-महोत्सव

माघ सुदी-सप्तमी, सं० २०२३

प्रति-संख्या

१,१००

पृष्ठ-संख्या :

८३२

मूल्य :

₹ १७.०० रु०

मुद्रक

न्यू रोशन प्रिन्टिंग वर्क्स

३१।१ रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-१

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

अन्तस्तोष

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

भूमिका.

हिन्दी

अंग्रेजी

विषयानुक्रम

दसवेआलिप्यं : विषय-सूची

उत्तराध्ययनं : विषय-सूची

दशवैकालिक

१-८४

उत्तराध्ययन

८५-३४९

परिशिष्ट :

१-३४०

(१) शब्दानुक्रम : दशवैकालिक : पृ० १

(२) शब्दानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ९१

(३) नामानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ३३१

शुद्धि और आपूरक पत्र-१ (मूलपाठ)

३४१

शुद्धि और आपूरक पत्र-२ (पाठान्तर)

३४४

शुद्धि और आपूरक पत्र-३ (उत्तराध्ययन शब्द-सूची)

३४९

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ मे मेरे मन मे ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
काकुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनत
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में सलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह सबभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक	:	मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
सहयोगी	:	मुनि दुलहराज
पाठ-सशोधन	:	मुनि सुदर्शन
	:	मुनि मधुकर
	:	मुनि हीरालाल
शब्दानुक्रम	:	मुनि श्रीचन्द्र
	:	मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)
विषयानुक्रम	:	मुनि रूपचन्द्र

सबभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय में दिया हुआ है। “आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला” इन ग्रन्थ-मालाओं में से एक है। इस ग्रन्थ-माला में आगमों के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनों मूल-सूत्रों के संशोधित पाठ-भात्र प्रकाशित हो रहे हैं। संशोधित पाठों के साथ-साथ नीचे पाद-टिप्पणों में पाठान्तर दिये गये हैं।

प्रथम परिशिष्ट में दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट में उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप में दी गई है।

उत्तराध्ययन में प्रमगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, समुद्र, नदी, उद्यान, मिक्का, आवास, शस्त्र, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है।

अन्त में तीन शुद्धि और आपूरक पत्र हैं, जिनमें मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक सुदृष्ट की भूलों का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई सामग्री प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनों आगमों की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों की निकालने में सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय संक्षेप में दोनों सूत्रों का सुन्दर परिचय दे देते हैं।—

इस आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमों के संशोधित पाठ भावी शोध-खोज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों में है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार समिति की ओर से सरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्द्रजी गोठी को सौंपा गया था। निरन्तर अस्वस्थ रहने पर भी बड़ी

श्रद्धा और प्रेम के साथ उन्होंने इस कार्य-भार को ग्रहण किया, पर आकस्मिक निधन ने उस सम्पत्ति को हमसे छीन लिया। गोठीजी आगम-कार्य की योजना के एक महान् स्तम्भ रहे।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि :

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि आदर्श साहित्य संघ, चुरु (राजस्थान) से प्राप्त हुई है, जिसके लिए हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं।

अर्थ-व्यवस्था

इस आगम का मुद्रण-स्वर्च श्री रामकुमारजी सरावगी की प्रेरणा से श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता, जिसके सर्व श्री प्यारेलालजी सरावगी, गोविन्दलालजी मरावगी, सज्जनकुमारजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी द्रष्टी हैं, ने वहन किया है।

श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड का यह आर्थिक अनुदान स्वर्गीय स्वनामधन्य श्रावक महादेवलालजी सरावगी एवं उनके सुयोग्य दिवंगत पुत्र पन्नालालजी सरावगी (मदस्य, भारतीय लोकमभा) की स्मृति में प्राप्त हुआ है। स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी तेरापंथ-सम्प्रदाय के एक अग्रगण्य श्रावक थे और कलकत्ता के प्रसिद्ध अधिष्ठान महादेव रामकुमार से सम्बन्धित थे। स्व० पन्नालालजी सरावगी, महासभा एवं साहित्य प्रकाशन समिति के बड़े उत्साही एवं प्राणवान् सदस्य रहे। आगम-प्रकाशन-योजना में उनकी आरम्भ से अत्यन्त अभिरुचि रही।

उक्त योगदान के प्रति हम उक्त फण्ड के ट्रस्टीगण के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन विद्वान् अथवा प्रकाशन-संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनों का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति के सदस्य सर्व श्री मोहनलालजी बोंठिया 'चंचल', गोविन्दलालजी मरावगी एवं खेमचन्दजी सेठिया को भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनका सहयोग मुझे हर समय प्राप्त होता रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों मेरे हृदय में आनन्द का पारावार नहीं है। मैं तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर भारतीय भ्रमण-साहित्य और संस्कृति के मूल संदेश का जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य सेवाएँ हमारी कृतज्ञता को सहज स्फुरित करती हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१

दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द्र रामपुरिया

संयोजक

•

•

•

•

•

सम्पादकीय

सम्पादन का कार्य सरल नहीं है—यह उन्हें सुविदित है, जिन्होंने इस दिशा में कोई प्रयत्न किया है। दो-ढाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से बहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार में आरम्भ होता है, वह उसी आकार में स्थिर नहीं रहता। या तो वह बड़ा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नहीं है, जो कृत है और परिवर्तनशील नहीं है। परिवर्तनशील घटनाओं, तथ्यों, विचारों और आचारों के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सब परिवर्तनशील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है, जहाँ परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व में जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नहीं है।

शब्द की परिधि में बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है, जो तीनों कालों में समान रूप से प्रकाशित रह सके? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है—भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नहीं रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है। 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रन्थों और अशोक के शिलालेखों में है, वह आज के श्रमण-साहित्य में नहीं है। आज उसका अपकर्ष हो चुका है। आगम-साहित्य के सैकड़ों शब्दों की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नहीं दे रहे हैं। इस स्थिति में हर चिन्तनशील

व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है ।

मनुष्य अपनी शक्ति में विश्वास करता है और अपने पौख से खेलता है, अतः वह किसी भी कार्य को इसलिए नहीं छोड़ देता कि वह दुरूह है । यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नहीं हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है, वह अतीत के किसी भी क्षण में विलुप्त हो जाता । आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयाँ थी । उन्होंने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :

१. सत् सम्प्रदाय (अर्थ-बोध की सम्यक् गुरु-परम्परा) प्राप्त नहीं है ।
२. सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नहीं है ।
३. अनेक वाचनाएँ (आगमिक अध्यापन की पद्धतियाँ) है ।
४. पुस्तके अशुद्ध हैं ।
५. कृतियाँ सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गंभीर हैं ।
६. अर्थ-विषयक मतभेद भी है ।^१

इन सारी कठिनाइयों के उपरान्त भी उन्होंने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा और वे कुछ कर गए ।

कठिनाइयाँ आज भी कम नहीं हैं । किन्तु उनके होते हुए भी आचार्य श्री तुलसी ने आगम-सम्पादन के कार्य को अपने हाथों में ले लिया । उनके शक्ति-शाली हाथों का स्पर्श पा कर' निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वयं प्राणवान् है, उसमें प्राण-संचार करना क्या बड़ी बात

१-स्थानाग वृत्ति, प्रशस्ति १,२

सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सद्गुरुस्य वियोगतः ।

सर्वस्वपरशास्त्राणा- मष्टेरस्मृतेश्च मे ॥ १ ॥

वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः ।

सूत्राणामतिगाम्भीर्याद् मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥ २ ॥

है ? बड़ी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमें प्राण-संचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है । सम्पादन-कार्य मे हमे आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है । आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है । उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का सबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओं का पार पाने में समर्थ हुए हैं ।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनों प्रकार के लोग हैं—विद्वद्-जन और साधारण-जन । दोनों को दृष्टि में रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओं में ग्रथित किया है । उसका आकार यह है :—

- १ आगम-सुक्त ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमों के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होंगे ।
२. आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ माला मे आगमों के मूलपाठ, पाठान्तर, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होंगे ।
३. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमों के टिप्पण होंगे ।
४. आगम-अनुशीलन ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमों के समीक्षात्मक अध्ययन होंगे ।
५. आगम-कथा ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमों से सम्बन्धित कथाओं का सकलन होगा ।
६. वर्गीकृत आगम-ग्रन्थ-माला — इस ग्रन्थ-माला मे आगमों के वर्गीकृत और संक्षिप्त संस्करण होंगे ।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसलिए उन्हे पाठान्तर से पृथक् रखा है ।

अध्ययन-१

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
१।१	उक्किट्ठं	उक्कट्ठं	क,ग,घ,अचू
२।२	आवियइ	आवियती	अचू, जिचू
३।१	मुत्ता	मुक्का	अचू
३।२	साहुणो	साहवो	अचू
४।३	अहागडेसु	अहागडेह	अचू
४।३	रीयंति	रीयते	घ, जिचू
४।४	पुप्फेसु	पुप्फेहि	अचू, जिचू
४।४	भमरा	भमरो	ख
५।१	महु °	मघु °	अचू, जिचू

अध्ययन-२

२।२	इत्थीओ	इत्थिओ	ख
२।४	चाइ	चागि	अचू
४।१	पेहाए	पेहाइ	क,ख
४।२	निस्सरई	नीसरई	अचू, जिचू
४।४	विणएज्ज	विणइज्ज	क,ख,ग
५।१	आयावयाही	आयावयाहि	अचू, जिचू
५।१	सोउमल्ल	सोगमल्ल, सोगुमल्लं	क,ख,ग, जिचू, घ
५।२	कमाही	कमाहि	जिचू, अचू
६।३	वन्तयं	वंतगं	अचू
६।३	भोत्तुं	भुत्तु	ग
८।१	रायस्स	राइस्स	ग
९।२	दच्छसि	दिच्छसि, दिच्छिसि	क,ख,ग
१०।२	संजयाए	संजयाइ	ख,ग,घ

सम्पादकीय

पाँच

१११	करेन्ति	करति, करिति	ख, ग, क, घ
११३	भोगेमु	भोगेहि	अचू

अध्ययन-३

१११	सुद्विअप्पाणं	सुद्वितप्पाणं	अचू
२।३	राइमत्ते	रायमत्ते	ग, जिचू
४।१	नालीय	नालीए, णालीया	ख, अचू
४।३	पाणहा	पाहणा	ख, अचू, जिचू
५।३	निसेज्जा	निसज्जा	ख
६।३	तत्तानिब्बुड-भोइत्तं	तत्तअनिब्बुड-भोतीत	ख, अचू
६।१	धूवणेत्ति	धूवणित्ति	ख
६।२	वत्थीकम्म	वत्थीकम्म, पत्थीकम्म	ख, अचू
६।४	गायाभंग	गायन्मग	जिचू
१२।१	गिम्हेसु	गिम्हासु	अचू
१२।३	० संलीणा	० संल्लीणा	जिचू
१३।१	० रिऊ	० रिवू	अचू
१३।२	धुय ०	धूअ ०	ख, ग
१३।२	जिइदिया	जियंदिया	ग
१४।२	दुस्सहाइ	दूसहाइं	जिचू
१४।३	इत्थ	एत्थ	क

अध्ययन-४

सू० ६	अभिककत	पडिक्कतं अभिकंत पडिकंत	ख
,, १०	दंडं	डड	अचू, जिचू
,, १०	समारंभेज्जा	समारभेज्जा	अचू, जिचू
,, १०	करंतं	करेतं	अचू
,, ११	गरिहामि	गरहामि	अचू
,, १६	राई	रायं	क

छह

दसवेआलियं-उत्तरजभयणं

सू० १८	किलिचेण	कलिचेण	ख,ग,घ,जिचू
,, १८	सलागाए व सलाग	सिलागाए व सिलाग	ख,ग
,, १९	ससिणिद्ध	ससणिद्ध ससिणद्ध	क, अचू,ख
,, २१	विहुवणेण	विहुवणेण	अचू, जिचू
,, २३	पिवीलिय	पिपीलियं	जिचू
,, २३	हत्थसि वा	हत्थेसि वा	अचू,पा
१०।४	नाहिइ	नाहीइ,नाही	ख,ग,घ
१२।१	याणाइ	याणेइ,याणइ	ग,अचू
१२।४	नाहिइ	नाहीइ, नाहीय	क,ख,घ,ग
१३।१	वियाणाइ	वियाणेइ,वियाणाइ	ग,अचू
१६।३	निर्व्विदए	निर्व्विदिय,निर्व्विदइ	क,ग,अचू
२५।४	भवइ	भवइ	क,घ
२६।३	पहोइस्स	पहोयस्स	ख
२६।२	° साइस्स	° सायस्स	ख
२६।४,२७।४	सुगइ	सुगइ, सोगइ	घ,अचू,जिचू
२७।३	जिण	जिणिं	क,घ

अध्ययन-५(१)

३।३	वज्जतो	वज्जेतो	क,ग,अचू, जिचू
४।१	ओवार्यं	उवार्यं	ख
४।२	विज्जलं	विजल	हाटी, जिचू
८।२	पडतीए	पडतिए	अचू
१०।१	अणायणे	अणाययणे	अचू
१३।३	इंदियाणि	इंदियाइ, इंदियायं	क,ग
१६।२	रहस्सा	रहसा	क,ख,ग,हाटी
२३।४	अयंपिरो	अयंपुरो	अचू
२५।३	वच्चस्स	वुच्चस्स	ख

सम्पादकौय

सात

२६।१	दग-मट्टिय	दग-मट्टी	ग
२७।२	आहरे	आहारे	क,ग,घ
२८।१	आहरंती	आहरेती	अचू
२८।३	देतियं	दितियं, दंतियं	क,ग,घ,ग
३३।१	ससिणिद्धे	ससणिद्धे	क
३४।२	कुक्कुस	कुक्कस	ग
४०।४	पुण्डुए	पुण्डुए	घ, अचू
४२।१	पिज्जेमाणी	पेज्जमाणी,पज्जेमाणी	जिचू,अचू
४५।१	दग-वारएण	दग-वारेण	क,हाटी
४६।१	उब्भिदिया	उब्भिदियं	क,ख,ग,घ
५७।३	उम्मीसं	उम्मिस	क,अचू, जिचू
६७।३	मच	मंच	क,ख,ग,घ,अचू
७१।३	सक्कुल	सकुलि	ख
७३।२	अणिमिसं	अणमिस	ख,ग
७३।३	अत्थियं	अच्छियं	अचू, जिचू
७३।४	सिवाल	सवाल, संबिल	घ,ख
७४।२	धम्मिए	धम्मए	घ
७७।३	भवेज्जा	हव्विज्जा	ख
७७।४	रोयए	रोइए, रोवए	ग,ख
७८।४	तण्ह	तण्ह	ख
८१।२	अचित्तं	अच्चित्त	क, अचू
८५।१	निक्खिवे	निखिवे	क,ख,ग
९०।२	अव्वक्खित्तेण	अवक्खित्तेण	अचू
९६।२	एक्कओ	एगओ, इक्कओ	घ,ख,ग
९७।३	एय	एयं	अचू
९८।३	उल्लं	अल्लं	घ
१००।४	सोगाई	सोगाई, सुगगं	अचू,ख,ग

अध्ययन-५(२)

१।३	दुगंध	दुगंध	अचू
२।३	अयावयट्टा	आयावयट्टा	क,ख,ग
३।३	० उत्तेण	० वुत्तेण	अचू
५।२	पडिलेहसि	पडिलेहिसि	ख
५।४	गरिहसि	गिरिहसि,गिरिहिसि,गरहसि	ग,ख,अचू
७।३	त-उज्जुयं	त-ओजुय	ख,घ
१०।२	किविण	किवण	ग
१३।२	नियत्तिए	नियत्तए	ख,ग
१३।४	व	वा	अचू
१४।३	सच्चित्त	सच्चितं	घ,अचू,जिचू
२१।३	नीम	नियम	ख
२२।३	० पिन्नाग	० पन्नाग	ख
२४।३	विहेलग	विभेलग, बिहेलग	अचू,ख
२५।४	ऊसढ	उस्सढ	अचू
२६।१	इत्थिय	इत्थिं	अचू
३२।१	अत्तट्ट	अत्तट्टा	क,ख,ग,घ
३७।१	पिया	पियए	हाटी,जिचू
४६।१	वय	वई	अचू
४७।२	मूययं	मूयग	ख,ग,घ
५०।३	० हिदिए	० हिइदिए	क,घ,जिचू

अध्ययन-६

१३।३	भेत्तं	भित्तं	क,ख,ग,घ
१८।१	लोमस्सेसो,अणुफासो	लोमस्सेसणुफासे, लोमस्सेसणफासो, लोमस्सेसणुफासो	क,घ,ग,ख

सम्पादकीय

नौ

२०।२	नाय °	नाइ °	क,ग
२०।४	इइ	इय	क,ख,ग,घ
२४।३	दिया	दिवा	अचू
३७।३	विइउ °	वीउ ° , वितु °	ग,अचू
५१।२	° धोयण	° धोवण	क,ख,अचू
५१।३	छन्नंति	छिन्नति, छिप्पति	क,ख,ग,हाटी
५२।१	पच्छा °	पच्छे °	अचू
५७।४	पडिकोहो	परिकोहो, पलिकोहो	अचू
६०।३	वोक्कतो	वुक्कतो, वक्कतो	क,ग,ख
६१।२	मिलुगासु	मिलगासु	क,ख,घ
६१।४	° प्पिलावए	° पलावए, ° प्पलावए	ख,ग,घ,हाटी
६३।३	° व्वट्ट °	° वट्ट °	क,ग
६४।१	नगिणस्स	निगणस्स, नगणस्स, नगणिस्स, णिगिणस्स	क,घ,ग,अचू
६७।४	नवाड पावाडं	नवाणि पावाणि	अचू
६८।३	उउप्पसन्ने	उड्डपसण्णे	अचू

अध्ययन-७

२।३	ऽणाइन्ना	अणाइण्णा	अचू
५।४	पुण	पुणो,पुण	अचू,ख
८।१	कालम्मी	कालम्मि	ख
१२।२	पड्ढो त्ति	पड्ढ त्ति पड्ढु त्ति	क,ग,घ
१२।३	रोगि त्ति	रोग त्ति	ग
१२।४	चोरे त्ति	चोरु त्ति	घ
१३।१	वट्ठेण	अट्ठेण	क,ख,ग,घ
१४।२	वसुले त्ति	वसुल त्ति	घ
१४।३	दम्मए दुहए	दुम्माए दूहए	ख

दस

दसवेआलियं-उत्तरज्मयणं

१५।२	माउस्सिय	माउसिउ, माउसिय	क,ख,ग,घ
१५।४	नत्तुणिए	नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ	घ,क,ग,ख
१६।१	अन्नेत्ति	अन्नत्ति	ग
१८।३	भाइणोज्जति	भायणिज्जति	ख
१८।४	नत्तुणिय	नत्तुणइ, नत्तुणिइ	ग,ख
१९।१	हले त्ति	हल त्ति, हरे त्ति	ग,घ,अचू
२१।१	मणुस्सं	मणुसं, मणस	क,ग,घ,ख
२२।२	सरीसिव	सरीसव	ख,ग
२३।१	परिवुड्डे	परिवुड्ड,परिवूढ	क,ग,ख,अचू,जिचू,हाटो
२४।३	° जोग त्ति	° जोगि त्ति	ख,ग,
२५।२	घेणुं	घेणू	ख
२७।२	तोरणाणं गिहाण	तोरणाणि गिहाणि	क,ग
३१।४	दरिसणि	दरिसण	ग,घ,ख
३२।१	फलाइ	फलाणि	अचू
३३।२	निवट्टिमा	निव्वड्डिमा, निव्वत्तिमा, निवट्टिमा	जिचू,अचू,ख
३३।४	रुव त्ति	रुवि त्ति	क,ख,ग
३६।४	सुत्तित्थ	सुत्तित्थे, सुत्तित्थि	ग,घ,ख
३६।१	° वाहडा	° पाहडा	अचू
४१।२	मडे	मते	अचू
४२।१	पयत्त	पयत्ति	क,घ
४२।१	पक्के त्ति	पक्क त्ति	क,ग,घ
४५।१	सुक्कीयं	सुक्किय	ख
४७।१	तहेवासजय	तहेवस्सजत	अचू
४८।२	साहुणो	साघवो	अचू
५१।१	वाओ °	वाउ °	ख
५१।१	° वुट्ठं	° वुट्ठि	क,ख,ग

सम्पादकीय

१

२

५३।१

अतलिक्खे

५६।३

धुन्न

अध्ययन-८

२।४

इय

५।१

निसिए

६।२

विहुयणेण

६।३

वीएज्ज

ह.स.क.

६।४

पोग्गलं

१४।१

कयराइ

१६।३

अप्पमत्तो

१८।३

पडिलेहित्ता

१९।२

पाणट्ठा

२०।४

मरिहइ

२३।२

अयपिरो

२५।१

सतुट्ठे

२५।२

सुहरे

२६।१

अत्तित्तिणे

३१।१

पीलेइ

३६।१

अणिगहीया

४०।१

राडणिए

४०।१

पउजे

४०।३

कुम्भो

४१।३

मिहो

४२।४

अट्ठं

४६।३

पिट्ठि

४८।३

अयंपिर

अंतलिक्खं, अतलिक्ख
धुत्त

ग्यारह

घ, हाटी, जीचू, ख

घ

इय

निसीए

विहुयणेण

वीए

पुग्गलं

कत्तमाणि

अप्पमत्ते

पडिलेहित्तु

पाणत्था

मरुहति

अयपुरो

सतुट्ठो

सुयरे

अत्तित्तणे

पीडेड

अणिग्गिहिया

गयणिए

पयुजे

कुम्भु, कुम्भे

मिधु

अत्य

पिट्ठी

अयंपुर

ख

घ

जिचू

अचू

क, ख, ग, घ

अचू

अचू

अचू

अचू

अचू

अचू

अचू

ख, घ

क, ग

ख, ग, जिचू, हाटी

अचू

ख, ग, हाटी

अचू

क, ख, ग, घ, अचू

अचू

अचू

अचू

अचू

वारह

दसवेआलियं-उत्तरज्जभयणं

४९।३	वड	वाय, वय	जिचू, ख
५३।२	विग्गहिओ	विग्गहओ	ख
५५।१	पडिच्छिन्नं	पलिच्छिन्नं	घ अचू, जिचू
५८।१	मणुन्नेसु	मणुन्नेसुं	क, ख, ग, घ
५९।३	तण्हो	तिण्हो	क
५९।४	सीई	सीत	अचू
६२।३	जसि	जसे	अचू
६३।४	चंदिमा	चदिमि	क, ख, जिचू

अध्ययन-९(१)

२।२	अप्पसुए	अप्पसुय	ख, ग
६।१	पावगं	पावकं	अचू
१२।१	जस्सतिए	जस्संतियं	अचू
१२।२	तस्सतिए	तस्सतियं	अचू
१४।३	बुद्धिए	बुद्धीए	ख
१५।१	जुत्तो	जुत्ते	क, ग
१७।१	मेहावी	मेहावि	ख

अध्ययन-९(२)

२।३	सिग्घ	सग्घ	अचू
१५।३	सक्कारेति	सक्कारति	अचू
२०।२	हेऊहि	हेऊहि	ख, ग
२३।१	वत्ति	वित्ति	क, ख, घ
२३।३	ओह °	ओघ °	क, ख, हाटी

अध्ययन-९(३)

३।१	राइ °	राय °	ख, ग
३।३	निय °	नीय °	घ, जिचू

संज्ञादि

सम्पादकीय

८२ दुम्भणियं
१०२ अपिसुणे
अध्ययन-६(४)
२१४ °यट्ठिए
७ आरुहतेहि
अध्ययन-१०
४१२ निस्सियाणं
६१२ हवेज्ज
७१४ वय
८१३ होही
१२११ मसाणे
१२१२ भायए
१८११ वएज्जासि
१८१२ जेणन्तो
बुलिका-१

दुम्भणयं
अपिस्सुणे

°यत्थीए
आरुहतिहिं

निसियाण

भवेज्ज

वइ

होहिइ

सुसाणे

भाए

वएज्जाहि

जेणन्तु, जेणन्त

तेरह

ग

क,ख,ग

अचू

अचू

क,ख,ग

अचू

क,अचू

अचू

अचू

अचू

ख

क,घ,ख,ग

सू०१स्थान२ इत्तरिया

" " ६ पडियाइयणं

" " ६ वहाय

" " १८ वेयइत्ता

" " १८ अवेइयत्ता

२११ जया

५१४ सेट्ठि °

६१३ गल

६१३ गलित्ता

१०१४ °निरय

१०१४ सारिसो

इत्तरिया

पडिआयणं, पडिआययण

वहाए

वेइत्ता

अवेइत्ता

जहा

सिट्ठि °

गलि

गलित्ता

°नरय

सारिसो

ख,अचू

जिचू,ख,ग,घ

अचू

क,ख,ग,घ

क,ख,ग,घ

क

क,ख,ग,घ, हाटी

ख,घ

ख,ग

क,घ,हाटी

क,ग

चौदह

दसवेआलिय-उत्तरजभयणं

११४	परियाय	परियाइ	ख
१४४	सुलभा	सुलहा	क,ख,ग,घ
१५२	दुहोवणी	दुहोविणी	क,ख,ग
१५२	० वत्तिणो	० वित्तिणो	क,अचू
१७३	पयलेति	पयलंति	क,ख,ग,घ
चूलिका-२			
५२	पइ ०	पय ०	ख,ग,घ
६३	ओसन्न	उसन्न	अचू
१०३	एक्को	एको, एगो	अचू,क,ख,ग,घ
११२	बीयं	वितियं	अचू
१३१	पासइ	पस्सइ	अचू
१३३	पासमाणो	पस्समाणो	अचू
१४१	पासे	पस्से	अचू
१४४	आइन्नओ	आइण्णो	अचू

दशवैकालिक के शब्दान्तर और रूपान्तरो की तालिका ऊपर दे दी गई है ।

उत्तराध्ययन के शब्दान्तर और रूपान्तरो की तालिका इस प्रकार है :

अध्ययन-१

२१४	विणीए	विणीइ	उ,ऋ
५२	सूयरे	सूयरो	अ
१३३	पकरेन्ति	पकरिन्ति	उ
		पकरन्ति	ऋ
१४३	कुव्वेज्जा	कुविज्जा	उ
१५४	परत्थ	परत्त	क्वचित्
१७३	रहस्से	रहसे	उ,ऋ
१८४	पडिस्सुणे	पडिस्सुणे	उ

संवेदार्थः सम्पादनीयः

[illegible]

अध्ययन-७

१८१	सइ	सड	अ
		सयं	उ
१८३	उम्मज्जा	उम्मग्गा	अ,उ,ऋ

अध्ययन-८

६१	दुपरिच्चया	दुपरिच्चइया	अ,ऋ
१६४	इइ	इय	अ,ऋ
२०१	इइ	इय	अ,ऋ

अध्ययन-९

२४२	वद्धमाण	वद्धमाण	चू
५८२	पेच्चा	पेच्छा	अ,
		पिच्चा	उ,ऋ
		पेच्च	स

अध्ययन-१०

११	पण्डुयए	पडुरए	अ
६१	आउक्काय	आयक्काय	ऋ
८१	वाउक्काय	वायक्काय	ऋ
१४३	इक्किक्क	एगेग	वृ
		एक्केक्क	अचू
१६२	आरिअत्त	आयरिअत्त	अ,ऋ
१६२	पुणरावि	पुणरवि	अ
१७१	आरियत्तणं	आयरियत्तण	अ,ऋ
२७१	विसूइया	विसूचिया	ऋ
३२३	विसोहिया	विसोहिउं	अचू
३५२	अकलेवर	अकडेवर	चू वृ

अध्ययन-११

१०१	पन्नस्सहिं	पन्नस्सेहिं	अ,ऋ
१०३	नीयावत्ती	नीयावित्ती	अ

सिद्धि लब्धः सम्पादनीय

अध्ययन-१२

१०३	जाणाहि	जाणाह	
१४३	विहणा	विहीणा	अ
१५१	तुम्हे	तुम्हे	न
२१४	जेणाम्हि	जेणाम्हि	अ
२६४	पगरेह	पगरेह	अ, उ, न
४४३	कम्म	कम्म	अ, उ, न
४७४	पत्त	पत्ति	अ, न

आयसन-१३

८२ नये

अ, उ, न

आ. यजन-१३

५२	तुमे	तुम्हें	५३
२६।२	पवालगया	पवालगयें	
३३।१	तुम्हें	तुम्हें	
३४।१	तुम्हें	तुम्हें	
३५।१	तुम्हें	तुम्हें	
३६।१	तुम्हें	तुम्हें	
३७।१	तुम्हें	तुम्हें	
३८।१	तुम्हें	तुम्हें	
३९।१	तुम्हें	तुम्हें	
४०।१	तुम्हें	तुम्हें	
४१।१	तुम्हें	तुम्हें	
४२।१	तुम्हें	तुम्हें	
४३।१	तुम्हें	तुम्हें	
४४।१	तुम्हें	तुम्हें	
४५।१	तुम्हें	तुम्हें	
४६।१	तुम्हें	तुम्हें	
४७।१	तुम्हें	तुम्हें	
४८।१	तुम्हें	तुम्हें	
४९।१	तुम्हें	तुम्हें	
५०।१	तुम्हें	तुम्हें	

श्री. दयन-१४

[illegible]

अठारह

दसवेआलियं-उत्तरज्जमयणं

अध्ययन-१५

५।२	कुओ	कओ	उ, ऋ
६।१	जेण पुण	जेणं पुणो	अ
१२।४	वय-काय	वइ-काय	उ

अध्ययन-१६

सू० ३	वित्तिगिच्छा	विच्चिकिच्छा	ऋ
१।२	थी	इत्थी	अ
३।१	संयवं थीहे	संथवित्थीहिं	अ
१२।१	कुइयं रुइयं	कुवियं रुदितं	अ
१७।१	निअए	निइए	अ, आ, इ
१७।४	तहापरे	तहावरे	ऋ

अध्ययन-१८

३।१	छुभित्ता	छुब्भित्ता	उ
१३।३	राय	राय	स
१३।४	पेक्कत्थ	पिक्कत्थं	अ, उ, ऋ
२०।४	मणो	मणं	स
२७।२	मिच्छादिट्ठी	मिच्छदिट्ठी	वृ
३६।२	महिद्धिओ	महद्धिओ	स
४२।२	निसूरणो	निसूदणो	उ
		निसूयणो	ऋ
५३।४	हवइ	भवइ	अ
५३।४	नीरए	नीरइ	अ

अध्ययन-१९

६।२	अणिमिसाए	अणिमिसाइ	ऋ
१८।२	अपाहेओ	अपाहेज्जो	अ
		अपाहिओ	ऋ
		अपाहिज्जो	स

सम्पादकीय

१८१४ तण्हाए
२०१२ सपाहेओ

२०१४ तण्हा
२२१४ अवउज्झइ
२३१४ तुब्भेहि
२९१३ परिच्चाओ
३५१२ महाभरो
३५१३ गुरुओ
३८११ अही
५२१२ सिम्बलि
५४१३ फालिओ
७७११ एगभूओ
८५१३ अम्म

अध्ययन-२०

३५११ ततो हं
३७१२ बुहाण

अध्ययन-२१

४१२ पसवई
१५१४ गरह

अध्ययन-२२

१३१२ उत्तिमाए
४४१२ दिच्छसि
४६१२ संजयाए

तिण्हाइ

सपाहेज्जो

सपाहिज्जो

तिण्हा

अवयज्झइ

तुहेहि

परित्ताओ

महब्भरो

गरुओ

अहे

सांवल्लि

फाडिओ

एगभूओ

अम्म

तोह

दुक्खाण

पसूयई

गरिहं

उत्तमाइ

दच्छसि

संजइए

उन्नीस

उ

अ

स

उ

अ

अ

उ

उ, ऋ

अ

अ

अ

अ, उ

आ

उ

ऋ

अ

अ

उ

ऋ

वचिंत

अ

वीर्स :-

दसवेआलिय-उत्तरज्जमयणं

अध्ययन-२३

२६।२	वंकजडा	वक्कजडा	उ, ऋ
४१।२	निहन्तूण	णिहणिऊण	अ
४१।२	उवायओ	ओवायओ	अ

अध्ययन-२४

११।३	आहारोवहि	आहार उवहि	अ
१२।२	बीए	वीइए	अ, उ, ऋ
१८।१	वित्तिणणे	विच्छिन्ने	अ

अध्ययन-२५

१।४	उत्तमट्ट	उत्तिमट्ट	अ
१७।२	पजलिडडा	पजलियडा	अ
२८।३	तायन्ति	ताइन्ति	अ
३२।२	सिणायओ	सिणाइओ	अ
४१।४	सुक्को उ गोळओ	सुक्के उ गोलए	उ, ऋ

अध्ययन-२६

२।२	निसीहिया	निस्सोहिया	अ
३।१	पचमा	पचमी	उ
१३।१	आसाढे मासे	आसाढमासे	अ
१५।३	वडसाहेसु	वयसाहेसु	अ
१६।३	वीयतिथमी	विइयतइयमि	उ, ऋ
१८।२	वीय	वितिए	अ
		विइय	उ, ऋ
२६।४	छट्टा	छट्टी	स
२७।१	पसिदिल	पसदिल	अ, ऋ
४१।१	पडिक्कमित्तु	पडिक्कमिता	अ, आ

सम्पादकीय

इक्कीस

अध्ययन-२७

३।२	विहम्माणो	विहिम्माणो	उ, ऋ
६।२	एगेऽत्य	एगित्य	उ
-		एगत्य	ऋ

अध्ययन-२८

१६।२	आणारुई	आणरुई	उ, ऋ
३४।४	एवमन्मतरो	एमेवन्मतरो	अ
		एवमन्मतरो	उ, ऋ

अध्ययन-२९

सू० १	रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता	रोइत्ता फासित्ता पालित्ता	ऋ, स
सू० १	तीरइत्ता	तीरित्ता	इ
सू० १	आराहइत्ता	आराहित्ता	ऋ
सू० १	गरहणया	गरिहणया	उ
सू० ३	सिद्धिमगे	सिद्धिमग	अ, उ, ऋ
सू० ५	विणइत्ता	विणयइत्ता	इ
सू० ६	मिच्छादरिसण	मिच्छादरिसण	अ
सू० ८	अपुरक्कार	अपुरेक्कार	अ
सू० १५	थयथुइ	थयथुइ	अ, उ, ऋ
सू० ३३	विणियट्टणयाए ण	विणिवट्टणयाए णं	अं, उ
सू० ७३	आणापाणु	आणापाण	ऋ
सू० ७३	वेयणिज्जं	वेयणिय	अ

अध्ययन-३०

१८।१	रच्छासु व	रत्थासु य	अ
२०।१	पोरुसीण	पोरिसीणं	अं

अध्ययन-३१

५।२	तेरिच्छ	तेरिक्ख	अ
-----	---------	---------	---

अध्ययन-३२

१३।१	बिराला	बिडाला	बु
१५।३	जोगं	जोगं	अ
		जुग	उ
२५।२	तंसि कखणे	तस्सि खणे	अ
		तर्णिण खणे	उ
२६।१	परिगहे	परिगहंमि	उ, ऋ
२६।४	आययई	आइयई	अ
३१।४	समाययन्तो	समाइयन्तो	अ
३७।२	अकालियं	आकालिय	अ
३८।२	तंसि कखणे	तम्हि खणे	अ
३८।४	अवरज्जई	अवरुज्जई	स
३९।१	रुहरसि	रुइयंसि	अ
५१।२	तंसि कखणे	तंसी खणे	अ
६५।२	अतालसे	आयालिसे	अ
७६।४	गाहगहीए	गाहगिहीए	अ, ऋ
१०३।४	हिरिमे	हरिमे	उ, ऋ
१०८।३	दंसण	दरिसण	उ, ऋ

अध्ययन-३३

६।२	दसणे	दरिसणे	उ, ऋ
११।४	अतोमुहुत्तं	अंत मुहुत्त	स

अध्ययन-३४

७।१	हिगुलुय	हिगुलग	अ, ऋ
१६।२	सिरीसकुसमाणं	सरीसकुसमाणं	ऊ, ऋ
३१।४	गुत्तिहि	गुत्तिसु	उ, ऋ
३३।४	हुति	हवति	उ, ऋ

सम्पादकीय

३४१२ तेत्तीसं
६०११ अंत

तित्तीसा
अतो

तेईस
ऋ
उ, ऋ

अध्यायन-३५

४११ चितहरं
४१३ पंडुरल्लोय
८११ कुज्जा
२१११ निम्ममो निरहंकारो

चित्तवर
पंडुरल्लोय
कुम्बिज्जा
निम्ममे निरहंकारे

उ, ऋ
अ
उ, ऋ
अ, आ, इ, स

अध्यायन-३६

११११ पुहत्तेण
३६११ गुरुए
५५१३ बोदि

पुहुत्तेण
गरुए
बोदिं

स
स
अ

६१११ पण्डुरा
६६१३ मुसण्डो
१४६१४ द्विकुणे कुकुणे
१४७११ सिगिरीडो
१४७१२ नदावत्ते
१४७१२ विच्छिए
१४७१४ विरली
२०६१३ दिसा
२२८१४ चउद्दस
२३७१४ पणुवीसई
२४०११ अजणतीसं

बुदिं
बुदि
पण्डरा
मुसण्डो
द्विकुणे कुकुणे
सिगिडिडि
नंदापत्ते
विच्छिए
विरिली
दिसि
चोद्दस
पणुवीसइ
इगुणतीसं

उ
वृ
अ
अ
उ, ऋ
अ
अ
उ
ऋ
ऋ
अ
उ, ऋ
स

प्रस्तुत पाठ

दशवैकालिक का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका मुख्य आधार 'ख' प्रति है। किन्तु पूर्णतः मुख्यता किसी की भी नहीं है। आदि से अन्त तक कोई भी प्रति शुद्ध नहीं मिलती। ५।२।१८ में 'कुमुदुप्पल नालिय' यह पाठ अगस्त्यचूर्णि में है। हमने वही स्वीकृत किया है। चूर्णि की भाषा में 'त' और 'घ' की बहुलता है। जैसे—इत्थितो (इत्थिओ २।२), सतणाणि (सयणाणि २।२), जति (जइ २।९)। 'त' का लोप प्रायः नहीं किया गया है।^१ ये प्रयोग प्राचीन अवश्य हैं पर हम लोग प्राकृत व्याकरण की सीमा में घिरे हुए हैं, इसलिए वे हमारे लिए अपरिचित से हो गए हैं। 'घ' को 'ह' भी प्रायः नहीं किया गया है।^२ जैसे—मधुकार (महुकार १।५), साघीणे (साहीणे २।३)। सप्तमी विभक्ति के स्थान में तृतीया का प्रयोग हुआ है। जैसे—अहागडेहि (अहागडेसु १।४)।

उत्तराध्ययन का पाठ भी आदि से अन्त तक किसी एक प्रति के आधार पर स्वीकृत नहीं किया गया है। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त सभी आदर्शों में ३६।६५ का एक शब्द 'पुहुत्तेण' है। अर्थ की दृष्टि से यहाँ 'पुहुत्तेण' होना चाहिए। बृहद्वृत्ति (पत्र ६८६) में इसके तीन अर्थ किए गये हैं—महत्त्व, बहुत्व और सामस्त्य। ये तीनों 'पृथु' शब्द के अर्थ हो सकते हैं, 'पृथक्' शब्द के नहीं। अभिधान चिन्तामणि कोप (६।६५) में पृथु शब्द के पर्यायवाची नामों में 'महत्' और 'बहु'—दोनों शब्द हैं। बृहद्वृत्ति (पत्र ६८६) में 'पृथक्त्वेन' मुद्रित हुआ है, वह सभबतः लिपि-दोष के कारण हुआ है। उसका मुद्रित मूल पाठ 'पुहुत्तेण' है। उक्त अर्थ के पर्यालोचन और उपलब्ध मुद्रित-पाठ के आधार पर हमने 'पुहुत्तेण' पाठ स्वीकृत किया है।

इस प्रकार और भी अनेक पाठ चूर्णि और बृहद्वृत्ति के अर्थालोचनपूर्वक स्वीकृत किए गए हैं।

१—हेमशब्दानुशासन, ८।१।१७७।

२—वही, ८।१।१८७।

चौतीसवें अध्ययन में 'पद्मलेख्या' के लिए 'पम्हलेखा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पद्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते हैं—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नहीं बनता। गोम्मटसार के लेख्या मार्गणाधिकार में पद्मलेख्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनों शब्द प्रयुक्त हुए हैं।^१ हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योंकि पाठ-संशोधन में प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श में 'पम्म' या 'पउम' शब्द नहीं मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों सूत्र बहुचर्चित रहे हैं। अनेक आचार्यों ने अपनी-अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर इन्हें उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप में प्राप्त होते हैं। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओं के कुछ उदाहरण ये हैं :—

मूल पाठ—

चित्त्वं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो ।

तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुणं जो मुसं वए ? ॥ (दशवैकालिक ७।५)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

चित्त्वं पि तहामुत्तिं, जो तहा भासए नरो ।

सो वि ता पुट्ठो पावेणं, किं पुणं जो मुसं वए ? ॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स निसिञ्जा जस्स कप्पई ।

जराए अमिन्नयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ (दशवैकालिक ६।५६)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७८ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स, निसिञ्जा जस्स कप्पई ।

जराए अमिन्नयस्स, वाहियस्सा तवस्सिणो ॥

मूल पाठ—

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।

मेह्णणा उवसंतस्स कि विमूसाए कारियं ? ॥ (दशवेकालिक ६।६४)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ में उद्धृत पाठ—

णगणस्स य मुण्डस्स य, दीहलोमणस्स य ।

मेह्णणादो विरत्तस्स, कि विमूसा करिस्सदि ? ॥

मूल पाठ—

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तस्सत्तरो ।

देसिओ वड्डमाणेण पासेण य महाजसा ॥

एगकज्जपवन्नाणं विसेसे कि नु कारणं ? ।

ल्लिगे डुविहे मेहावि ! कहं विण्णच्चओ न ते ? ॥ (उत्तराव्ययन २३।२६, ३०)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ में उद्धृत पाठ—

आचेलक्को य जो धम्मो, जो वायं पुण स्सत्तरो ।

देसिवो वड्डमाणेण, पासेण य महप्पणा ॥

एग धम्मे पवत्ताणं, डुविधा ल्लिग-क्कप्पणा ।

उमएसि पडिट्ठाण, महं संसय मागदा ॥

पाठान्तर की लम्बी परम्परा

आज हमें जो पाठान्तर उपलब्ध हो रहे हैं, उनके प्रधान कारण चार हैं—

(१) परम्परा-भेद

(२) लिपि-दोष

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

(१) परम्परा-भेद,

वीर-निर्वाण की सहस्राब्दी में देवद्विगणी ने आगमो को पुस्तकारूढ़ किया ।

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हें संकलित कर लिया गया। वे आगमो की व्याख्याओं में अब भी सुरक्षित हैं।^१

अगस्त्य चूर्णि के रचना-काल में भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलो में मतान्तरों का उल्लेख हुआ है।^२ जिनदास चूर्णि की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनसे बहुत भिन्न पड़ जाते हैं। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ़ जाते हैं। जिन श्लोको की व्याख्या टीका में नहीं है, उन्हें दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते हैं।

चूर्णिकार और टीकाकार के बीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका में जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नहीं जान पड़ता। वह लिपिकर्ता से सम्बन्धित है। आदर्शों के लेखक प्रायः मुनि रहे हैं। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल में जो प्रासंगिक श्लोक और गाथाएँ कही जाती, वे उसी स्थान पर लिख ली जाती और आगे चल कर वे ही लम्बे काल में मूल में घुस जाती। दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों में ऐसा हुआ है। दशवैकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयस्त्वक् कायस्त्वक्, अकम्पो गिहिभायणं।

पलियकनिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ (हाटी, पत्र १६६)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४।१२ के पश्चात् एक गाथा मूल आदर्श में लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

संकम्पो संरंभो, परितावकरो भवे समारभो।

आरंभो उद्धवओ, सुद्धनयाणं तु सर्वेसि ॥

ऐसे पाठान्तरों में स्मृतिभ्रंश का भी योग रहा है। जो मुनि कण्ठस्थ-पाठ के आधार पर सूत्र-पाठ लिखते, उनके आदर्शों में स्मृति-दोष के कारण अक्षरों व

१-जिनदास चूर्णि, पृष्ठ २०४ :

नागज्जुणिण्या तु एवं पढंति—‘एवं तु अगुण्येही अगुणाणं विवज्जए’।

२-देखो—दशवैकालिक, भाग २ में ३।१३ ; ५।१।७; ६।५४ के टिप्पण।

कहीं-कहीं श्लोको का विपर्यय हो जाता। उसके उत्तरवर्ती लेखक भी उसी का अनुसरण करते और पाठ-भेद स्थिर हो जाता।

(२) लिपि-दोष

पाठ-भेद का सबसे प्रमुख कारण लिपि-दोष रहा है। कालक्रम से लिपि में परिवर्तन होता रहा है। पूर्ववर्ती लिपि उत्तरवर्ती लोगो से ठीक-ठीक नहीं पढ़ी जाती और प्रतिलिपि करने वाले सभी विद्वान् नहीं होते। फलस्वरूप अक्षरो का विपर्यय हो जाता है। ऐसा बहुधा हुआ है।

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण

जब आगमो को कण्ठस्थ रखने की परम्परा थी, तब उनकी व्याख्याएँ भी कण्ठस्थ रहती थी। कुछ सूत्र-स्पर्शी व्याख्याएँ पाठ के साथ-साथ चलती थीं। वे कालक्रम से मूल के साथ जुड़ गईं। यह निष्कर्ष अगस्त्य चूर्णि से सहजतया निकल आता है। उसके अनुसार दशवैकालिक चतुर्थ अध्ययन के त्रस-प्रकरण (सूत्रांक ६) में 'जे य कीडपयगा, जा य कुन्थुपिवीलिया, सव्वे देवा'—ऐसा पाठ है। चूर्णिकार ने लिखा है कि यहाँ 'कीड' द्वीन्द्रिय जाति का प्रतीक है, इसलिए उसके द्वारा द्वीन्द्रिय जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए। इसी प्रकार पतग और कुन्थु भी अपनी-अपनी जाति के प्रतिनिधि हैं। उनके द्वारा उनकी जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए।^१ 'सव्वे बेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिदिया, सव्वे पंचिदिया'—ये व्याख्या के शब्द आगे चल कर मूल पाठ बन गए। इसलिये टीकाकार ने उन्हें मूल मानकर उनकी व्याख्या की है।^२

१-अगस्त्य चूर्णि :

कीडपयणेण तज्जातीय ग्रहणमिति सव्वे बेइंदिया घेप्पति । पयंग ग्रहणेण चउरिदिया । कुन्थु पिवीलियाभिहाणेण तिदिया ।

२-हारिसद्वीय टीका, पत्र १४२ :

ये च कीडपतङ्गा इत्यत्र कीटाः—कृमयः, 'एकग्रहणे तज्जातीयग्रहण'मिति द्वीन्द्रियाः शब्दादयोऽपि गृह्यन्ते पतङ्गाः—शलमा, अत्रापि पूर्ववच्चतुरिन्द्रिया सर्व एव गृह्यन्ते, अत एवाह—सर्वे द्वीन्द्रियाः—कृम्यादयः सर्वे त्रीन्द्रियाः—कुन्थादयः, सर्वे चतुरिन्द्रियाः—पतङ्गादयः । सर्वे पञ्चेन्द्रियाः सामान्यतः ।

इसी प्रकार महान्नतों के सूत्र-पाठ में भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है।^१

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ में 'पंचमुद्ग्रीहि' ऐसा पाठ आया है। वास्तव में यह पाठ 'पंचट्टा' था। 'अट्टा' का अर्थ है 'मुष्टि'। पंच अट्टा अर्थात् पंचमुष्टि। पंचट्टा शब्द अपरिचित था। बृहद्वृत्ति (पत्र ४६२) में पंचट्टा का अर्थ पंचमुष्टि है। कालान्तर में यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ बन गया।

अन्य आगमों में भी ऐसे अनेक उदाहरण हमें प्राप्त हुए हैं।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'संघीय संग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १२-१३ व प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ५३ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की संख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥१० दशवैकालिक समाप्तमिति ॥॥। सवत् १५०३ वर्षे आषाढ मासे कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने शनिवारे ॥ दशवैलिखितं ॥ सुन्दरसवेगणि योग्यं ॥

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'संघीय संग्रह' की है। इसके पत्र १९ व पृष्ठ ३८ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १३ व प्रत्येक पंक्ति में ४४ से ४९ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों

१-अगस्त्य चर्या :

केति सुत्तमिथं पठन्ति, केति वृत्तिगतं विसेसिति, जहा से सं पाणातिवाते षडविवहे सं जहा दन्वतो, खेततो, कालतो, भावतो ।

तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की संख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

संवत् १४९६ वर्षे वैशाख मासे प्रतिपदायां तिथौ रविवासरे ॥ लिखितं
कर्मचन्द्रेण ॥

ग : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय संग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३२ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १४ व प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ५७ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की संख्या व पद लाल स्याही से लिखे गए हैं। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

दसवेआलियं सुयकखंघो समत्तो ॥वा॥ शिवमस्तुचिरं विजीयात् ॥

संवत् १४०० वर्षे भाद्रपद सुदि ११ तिथौ शुक्रवासरे समस्त देशाधिदेशे
श्री मालवकाख्ये तन्मध्यवर्त्तिन्यां महापुर्यमिवर्त्यां पातसाह श्री महसुंदर
राज्ये पं० श्री विशालकीर्ति पूज्यानां पादप्रसादाद्देपाकेन लिखितमिति ।

घ : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति 'गधैया संग्रहालय', सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ व पृष्ठ ६४ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ ८ से १३ व प्रत्येक पंक्ति में २९ से ३२ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओं के संख्यांक लाल स्याही से लिखे हुए हैं। अनुमानतः १४वीं शताब्दी की लिखी हुई होनी चाहिए। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

इति श्री दसवैकालिक सूत्रां समाप्तं । लिखितं ॥ वा० श्री साधु
विजयगणिभिः कल्याणमस्तु सर्व-जंतोः ॥ लेखकपाठकयोः भद्रं भूयात् ॥

अ, अचू० : अगस्त्यसिंह स्वविर कृत (जैसलमेर मंडारस्थ) तादृशत्रीय दशवैकालिक चूर्णि

इसकी फोटो-प्रिन्ट प्रति 'सेठिया पुस्तकालय', सुजानगढ़ की है। इसकी पत्र-संख्या १६५ व पृष्ठ ३३० है। पत्र क्रमांक संख्या १७७ से ३४२ तक है। फोटो-प्रिन्ट पत्र-संख्या ३६ तथा एक पृष्ठ में करीब ६-१० पृष्ठों के फोटो है। किसी में ७-८ भी है। प्रत्येक पत्र १४ इंच लम्बा व ३ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ४ या ५ पंक्तियाँ हैं। कहीं पंक्तियाँ अधूरी हैं। प्रत्येक पंक्ति में १४८ के करीब अक्षर हैं। यह फोटो-प्रिन्ट प्रति मुनि श्री पुण्यविजयजी से उपलब्ध हुई।

आ, अचू० पा० : अगस्त्यसिंह पाठान्तर

ज, जिचू० : जिनदास महत्तर कृत दशवैकालिक की चूर्णि (मुद्रित)

श्री ऋषभदेवजी केदारीमलजी पेढी-मुकाम रतलाम, जैनबन्धु प्रिन्टिंग प्रेस इन्दौर, वि० सं० १९८६ में प्रकाशित। पृष्ठ ३८०।

जा, जिचू० पा० : जिनदास चूर्णि पाठान्तर

ह, हाटी० : हारिमद्रीय दशवैकालिक की टीका (मुद्रित)

शाह नगीन भाई घेला भाई जव्हेरी, ४२६ जव्हेरी बाजार द्वारा निर्णय-सागर मुद्रणालय कोल भाट गली दम्बई-२३ में मुद्रापित प्रकाशित। विक्रम संवत् १९७४। पत्र २८६।

हा, हाटी० पा० : हारिमद्रीय वृत्ति के पाठान्तर

उत्तराध्ययन : प्रति परिचय

अ : मूल पाठ सावचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'संघीय-संग्रह' की है। इसके पत्र ६६ व पृष्ठ १६२ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की ६ पंक्तियों से लेकर १४ पंक्तियाँ तक हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग ३१ से ३४ तक अक्षर हैं। पाठ के चारों ओर अवचूरी लिखी हुई है। अवचूरी से पाठ के अक्षर बड़े हैं। लिपि सुन्दर, शुद्ध एवं पढ़ने में स्पष्ट है। प्रति काली स्याही से व गाथाओं के संख्यांक व अध्ययनों की पूर्ति लाल स्याही से की गई है। यह विक्रम संवत् १५३८ में लिखी हुई है। प्रति के अंत में लेखक की निम्नलिखित

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः ॥ श्री रस्तु ॥

सं० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिषितं ॥ चिरं नंदंतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन मूल पाठ (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोडिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ८६ व पृष्ठ १७८ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

॥ संवत् १५६१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि संताने श्री खरतर गच्छेण नभोगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरोमणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्रसूरि तत्पट्टप्रतिष्ठित श्री जिनभद्रसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार भाग्य सौभाग्य भंगो सुभग भालस्थल भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहंस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः सार्वभोगैः वा० आणंद नंदन गणाय प्रसादी कृत्यं प्रति ।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोडिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १७ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ५०-५१ हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से लिखी गई है। यह प्रति अनुमानतः १६ वीं शताब्दी में लिखी गई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्वंधः समाप्तः ॥ परमाप्त प्रणीतः ॥ छ ॥
निर्युत्तिकार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया। परित्त संसारियाय जे भव्वा। ते किर पढति एए छत्तीस उत्तरज्जाए तम्हा जिण पन्तते।
अणंतगम पज्जवेहि संजुत्ते। अब्भाए जह जोगं। गुप्पसाया अहिज्जिजा ॥१॥
जो ज्जागविहीइ वहित्ता एए जो लिहइ सुत्त अच्छं व ॥ भासेइय भवियजणो

सो पालइ निज्जरा विउला ॥ ३ ॥ जस्साढत्ती एए कह विसमप्पंति विग्घर-
हियस्स । सोलक्खिज्जइ भन्वो ॥ पुण्वरिसी एव भासति ॥ ४ ॥ छ ॥ शुभं
भवतु ॥ श्रीः ॥

उ : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है । अनुमानतः
सं० १५०० में लिखी हुई है । इसके पत्र ५६ व पृष्ठ ११८ है । पत्र १० इंच
लम्बे और ४॥ इंच चौड़े हैं । पत्र के दोनों तरफ । इंच का मार्जिन है । पाठ
और अवचूरी काली स्याही से लिखे हुए हैं । श्लोकांक तथा मार्जिन की रेखाएँ
लाल स्याही में हैं । दोनों तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और
चारों तरफ अवचूरी है । प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ८ आर अधिकतम १५
पंक्तियाँ हैं । प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरिः समाप्ता ॥ छ ॥ श्री रस्तु ॥ छ ॥ ए प्रति
भ० श्री विद्यासागर सूरि पूसरीया गिष्य शुयवाय कर्मसागरे प्रति लिखी
कलकवल रहित सह ।

ग : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है । विक्रमाब्द
१५३५ में लिखी गई है । इसके पत्र ७६ व पृष्ठ १५८ हैं । प्रत्येक पत्र १०।
इंच लम्बा और ४॥ इंच चौड़ा है । यह प्रति काली स्याही से स्पष्ट लिखित
है । इसके श्लोकांक तथा दोनों तरफ का मार्जिन लाल स्याही में हैं । प्रत्येक
पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं । अवचूरी मार्जिन
तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग में लिखी हुई है । अवचूरी के अक्षर से
पाठ के अक्षर लगभग ड्योढ़े बड़े हैं । प्रति के अंत में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरिः स्वपरोपकृत्यैः ॥ १ शुभं भवतु ॥ १॥

सं० १५३५ वर्ष आसोज सुदि ५ भोमे अद्य श्री ।

स : उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छपर निवासी मोहनलालजी दुबोडिया के संग्रहालय की है ।

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ हैं किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ शताब्दी में लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण हैं कि कभी-कभी हाथ के स्पर्श से ही खिरने लगते हैं। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में लगभग ५३-५४ अक्षर हैं। टीका और पाठ समान अक्षर में ही लिखा हुआ है।

सु : सुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई।

बु : बृहद्बृत्ति 'शाल्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्वारे-ग्रन्थांक ३३।

बू : बूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठ देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्वारे, ग्रन्थांक ३३।

मोहमयीपत्तने वी० सम्बत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुत्पन्नपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का

अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि । इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है । यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है ।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता-जापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संवल पा और अधिक भारी बनूँ ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है ।

पाठ-संपादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है ।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्ता से लगे रहे हैं । मुनि हनुमानमलजी (सरदारगहर) का भी उसमें उल्लेखनीय योग रहा है ।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तैयार किया है ।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

इस कार्य में स्वर्गीय श्री मदनचन्दजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के संयोजक श्री श्रीचन्दजी रामगुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराणा और जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है । आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है । वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है ।

वीदासर (राजस्थान)

—मुनि नथमल

१५, अगस्त, १९६६

भूमिका का विषयानुक्रम

१. आगम सूत्रों का वर्गीकरण	पृष्ठ १
२. मूल-सूत्र	२
३. मूल-आचार और मूल-सूत्र	३
४. मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष	४
५. अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-छत्र	६
६. मूल-सूत्रों की संख्या	६
७. मूल-सूत्रों का विभाजन-काल	८
८. दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान	९
९. दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु	९
१०. दशवैकालिक : निर्यूहण-कृति	११
११. दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श	१२
१२. दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से	१३
१३. दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ	१४
१४. उत्तराध्ययन	१६
१५. उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व	२१
१६. क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर को अंतिम वाणी है ?	२६
१७. महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र	३१
१८. उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु	३३
१९. उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण	३७
२०. उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श	३७
२१. उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से	३९
२२. उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ	४३
२३. उपसंहार	४६

भूमिका

१ : आगम-सूत्रों का वर्गीकरण

जैन आगमों का प्राचीनतम वर्गीकरण पूर्व और अंग के रूप में प्राप्त होता है। पूर्व संह्या में चौदह थे^१ और अंग बारह^२।

दूसरा वर्गीकरण आगम-संकलन-कालीन है। उसमें आगमों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य।^३

तीसरा वर्गीकरण इन दोनों का मध्यवर्ती है। उसमें आगम-साहित्य के चार वर्ग किए गए हैं—(१) चरण-करणानुयोग, (२) धर्मकथानुयोग, (३) गणितानुयोग और (४) द्रव्यानुयोग।

एक वर्गीकरण सबसे उत्तरवर्ती है। उसके अनुसार आगम चार वर्गों में विभक्त होते हैं—(१) अंग, (२) उपांग, (३) मूल और (४) छेद।

नदी के वर्गीकरण में मूल और छेद का विभाग नहीं है। उपांग शब्द भी अर्वाचीन है। नदी के वर्गीकरण में इस अर्थ का वाचक अनंग-प्रविष्ट या अंग-बाह्य शब्द है।

आगमों का एक वर्गीकरण अध्ययन-काल की दृष्टि से भी किया गया है। दिन और रात के प्रथम एवं अन्तिम प्रहर में पढ़े जाने वाले आगम 'कालिक' तथा दिन और रात के चारों प्रहरों में पढ़े जाने वाले आगम 'उत्कालिक' कहलाते हैं।

दशैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों 'मूल-सूत्र' कहे जाते हैं।

१—समवायाङ्ग, समवाय १४ :

चउवस पुच्छा प० तं०—

उप्पायपुच्चमणेणियं च तइयं च वीरियं पुच्चं ।

अत्थीनत्थियपवायं तत्तो नाणप्पवायं च ॥

सच्चप्पवायपुच्चं तत्तो आयप्पवायपुच्चं च ।

कम्मप्पवायपुच्चं पञ्चक्खाणं भवे तवमं ॥

विज्जाअणुप्पवायं अवमपाणाउ बारसं पुच्चं ।

तत्तो किरियविसालं पुच्चं तह बिडुसारं च ॥

२—वही, समवाय १३६ :

दुवालयंगे गणिषिड्ढे प० तं०—आयारे सुयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगड्ढसाओ अनुत्तरोचवाइयवसाओ पण्हावागरणाई विवागसुए दिट्ठिवाए ।

३—नंदी, सूत्र ४३ :

अह्वा तं समासओ बुहिहं पण्णत्तं संजहा—अङ्गपविट्ठं अङ्गवाहिरं च ।

२ : मूल-सूत्र

दशवैकालिक और उत्तराज्जयन गणघर-कृत नहीं है, इसलिए अंग-बाह्य है। इन्हें 'मूल' क्यों माना गया, इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नहीं है। अनेक विद्वानों ने 'मूल' शब्द की अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की हैं। "दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन" में इनका उल्लेख हम कर चुके हैं।

प्रो० विन्टरनिज ने 'मूल' शब्द को 'मूल ग्रन्थ' के अर्थ में स्वीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रों पर अनेक टीकाएँ हैं। इनसे 'मूल ग्रन्थ' का भेद करने के लिए इन्हें 'मूल-सूत्र' कहा गया।^१ यह प्रामाणिक नहीं है। प्रो० विन्टरनिज ने पिण्डनिर्युक्ति को भी 'मूल-वर्ग' में सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नहीं हैं। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई तो पिण्डनिर्युक्ति इस वर्ग में नहीं आ सकती।

डॉ० सरपेन्टियर^२, डॉ० ग्यारीनो^३ और प्रो० पटवर्धन^४ ने 'मूल-सूत्र' का अर्थ 'मगवान् महावीर के मूल शब्दों का संग्रह' किया है। किन्तु यह भी संगत नहीं है।

१—ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-२, पृ० ४६६, पाद-टिप्पणी-१ :

Why these texts are called "root-Sūtras" is not quite clear. Generally the word *mūla* is used in the sense of "fundamental text" in contradistinction to the commentary. Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts, they were probably termed "*Mūla-texts*"

२—बी उत्तराज्जयन सूत्र, भूमिका, पृ० ३२ :

In the Buddhist work *Mahāvīyutpatti* 245, 1265 *mūlagrantha* seems to mean 'original text', i.e. the words of Buddha himself. Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used *mūla* in the sense of 'original text', and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahāvīra himself.

३—ल रिक्लीजीयन द'जैन, पृ० ७९ :

The word *Mūla-Sūtra* is translated as "*tracés originaux*."

४—बी दशवैकालिक सूत्र : ए स्टडी, पृ० १६ :

We find however the word *Mūla* often used in the sense of "original text", and it is but reasonable to hold that the

महान् महावीर के मूल शब्दों के कारण ही किसी आगम को 'मूल' संज्ञा दी जाय तो वह आचार्य के प्रथम श्रुतकेंव को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल शब्दों का संकलन है।

दशवैकालिक और उत्तराख्यन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलमूल सहायक बनने हैं तथा आगमों का अध्ययन इन्हीं के पटन में प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० मूर्तिग का अभिमत भी यही है।^१

हमारा हमारा अभिमत यह है कि इनमें मुनि के मूल गुणों—महाव्रत, ममिनि आदि का निरूपण है। इस दृष्टि में उन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य बटुकर की रचना है।^२ उसमें भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराख्यन के अनेक श्लोक संदर्भित हैं।^३

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense. Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text". i.e., "the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)". And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos. 1 and 3 (उत्तराख्यन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra.

१.—दशवैकालिक सूत्र, सुमित्रा, पृ० ३ :

Together with the Uttarajjīhāyā (commonly called Uttarajjīhāyana Sutta) the Āvassaganijjuti and the Pindanijjuttī it forms a small group of texts called Mūlasutta. This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career.

२.—मुनि कल्याणविजयजी रणी ने 'अमन जगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विज्ञप्ति की सातवीं शताब्दी के आस-पास माना है।

३.—मूलाचार. १।६०	मिलाइए—उत्तराख्यन	३६।२५७
" १।७०	" "	३६।२५८
" १।७८	" "	३६।२६०
" १।८३	" "	३६।२६१

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक तथा ओघनिर्युक्ति-पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' वर्ग में स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है, जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन में 'मूलाचार' के अधिकार-निर्माण में रही है। 'मूल-सूत्रों' की विषय-वस्तु से जो अधिकार तुलनीय है, वे ये हैं—

(१) मूल-गुणाधिकार	मिलाइए—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
(४) समाचाराधिकार	मिलाइए—ओघनिर्युक्ति
(६) पिण्ड-शुद्धि अधिकार	मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति
(७) षडावश्यकधिकार	मिलाइए—आवश्यक

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि को 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

'मूल-सूत्र' वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नंदी-चूर्णि में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर में बारह अंग होते हैं—दो पैर, दो जंघाएँ, दो ऊरु, दो गान्धार्य (उदर और पीठ), दो भुजाएँ, प्रीवा और शिर। आगम-साहित्य में जो बारह अंग हैं, वे ही श्रुत-पुरुष के बारह अंग हैं।^१ अंग-बाह्य श्रुत-पुरुष के उपांग स्थानीय है। यह परिकल्पना अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक वर्गों के आधार पर हुई है। इसमें 'मूल' और 'छेद' की कोई चर्चा नहीं है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वीं शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वीं शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य—ये दो ही परिपार्श्व रहे हैं। इन दोनों आचार्यों ने चूर्णि का अनुसरण किया है। उसमें कोई नई बात नहीं जोड़ी है।^२ आचार्य मलयगिरि ने तो अंग-प्रविष्ट तथा आचारांग आदि को भी 'मूल-सूत्र' कहा है।^३ श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियों में अंग-प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है—

१—नंदी चूर्णि, पृ० ४७ :

इच्छेतस्स सुतपुरिस्स जं सुतं अंगभागठितं तं अंगपविट्ठं मण्णइ ।

२—नंदी, हारिमदीय वृत्ति, पृ० ९० ।

३—नंदी, मलयगिरीया वृत्ति, पत्र २०३ :

यद् गणधरदेवकृत्तं तदंगप्रविट्ठं मूलसूत्रमित्यर्थः, गणधरदेवा हि मूलसूत्रमाचाराविकं श्रुतमुपरचयन्ति ।

१—दायाँ पैर	=	आचारांग
२—बायाँ पैर	=	सूत्रकृतांग
३—दाईं जंघा	=	स्थानांग
४—बाईं जंघा	=	समवायांग
५—दायाँ ऊर	=	भगवती
६—बायाँ ऊर	=	ज्ञाताधर्मकथा
७—उदर	=	उपासकदशा
८—पीठ	=	अन्तर्कृद्दशा
९—दाईं भुजा	=	अनुत्तरोपपातिकदशा
१०—बाईं भुजा	=	प्रस्नव्याकरण
११—ग्रीवा	=	विपाक
१२—शिर	=	दृष्टिवाद

इस स्थापना के अनुसार भी मूल-स्थानीय (चरण-स्थानीय) आचाराग और सूत्रकृताग है ।^१

श्रुत-पुरुष की अन्य रेखा-कृतियों में स्थापना भिन्न प्रकार से मिलती है । उनमें मूल-स्थानीय चार सूत्र हैं—आवश्यक, दशवैकालिक पिण्डनिर्युक्ति और उत्तराध्ययन । नंदी और अनुयोगद्वार को व्याख्या-ग्रन्थों (या चूलिका-सूत्रों) के रूप में 'मूल' से भी नीचे प्रदर्शित किया है ।^२

पैतालीस आगमों को प्रदर्शित करने वाली श्रुत-पुरुष की रेखाकृति बहुत अर्वाचीन है । यदि इनकी कोई प्राचीन रेखाकृति प्राप्त हो तो प्रस्तुत विषय की प्रामाणिक जानकारी हो सकती है । जिस समय पैतालीस आगमों की मान्यता स्थिर हुई, उसके आस-पास या उसी समय, संभव है श्रुत-पुरुष की स्थापना में भी परिवर्तन हुआ । चूर्णि-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' (चरण-स्थान) में आचाराग और सूत्रकृताग थे । उत्तर-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन आ गए । इन्हें 'मूल-सूत्र' मानने का यह सर्वाधिक संभावित हेतु है ।

१—श्री आगम पुरुषर्तुं रहस्य, पृष्ठ ५० के सामने (श्री उदयपुर, मेवाड़ के हस्त-लिखित भण्डार से प्राप्त प्राचीन) श्री आगम पुरुष का चित्र ।

२—वही, पृष्ठ १४ तथा ४९ के सामने वाला चित्र ।

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र

आगमिक-अध्ययन के क्रम में जो परिवर्तन हुआ, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवैकालिक की रचना से पूर्व आचाराग के बाद उत्तराध्ययन पढ़ा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढ़ा जाने लगा।^१

प्राचीन काल में आचाराग के प्रथम अध्ययन 'शास्त्र-परिज्ञा' का अध्ययन करा कर शैक्ष की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'षड्जीवनिका' का अध्ययन करा कर की जाने लगी।^२

प्राचीन काल में आचाराग के द्वितीय अध्ययन के पंचम उद्देशक के 'आमगन्ध' सूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि 'पिण्डकल्पी' होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन 'पिण्डैषणा' के अध्ययन के पश्चात् 'पिण्डकल्पी' होने लगा।^३

ये तीनों तथ्य इस बात के साक्षी हैं कि एक समय आचाराग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचाराग मूल-भूत-तथा, वैसे ही दशवैकालिक भी आचार-ज्ञान के लिए मूल-भूत बन गया। संभव है आदि में पढ़े जाने के कारण तथा मुनि की अनेक मूल-भूत प्रवृत्तियों के उद्बोधक होने के कारण इन्हे 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की सख्या

१—उपाध्याय समयसुन्दर ने 'सामाचारी शतक' में (इसकी रचना विक्रम सं० १६७२ में हुई थी) 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) दशवैकालिक, (२) ओघनिर्युक्ति, (३) पिण्डनिर्युक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१—व्यवहार भाष्य, उद्देशक ३, गाथा १७६ :

आयारस्स उ उवरि, उत्तरज्जम्भयणा उ आसि पुब्बं तु ।

दसवेयालिङ्ग उवरि, इयाणि कि ते न होती उ ॥

२—वही, उद्देशक ३, गाथा १७४ :

पुत्वं सत्यपरिण्णा, अधीय पडियाइ होउ उवट्ठवणा ।

इण्हं च्छज्जीवणया, कि सा उ न होउ उवट्ठवणा ॥

३—वही, उद्देशक ३, गाथा १७५ .

वितितंमि बंसचेरे, पंचमउद्देस आमगंधम्मि ।

सुत्तंमि पिण्डकल्पी, इइ पुण पिण्डेसणाएओ ॥

२—भावप्रभसूरि (१८ वीं शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओघनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक ।^१ ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामों से मिलते हैं । इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है ।

३—स्थानकवासी^२ और तेरापन्थ^३ सम्प्रदाय में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रों को 'मूल' माना गया है ।

४—आधुनिक विद्वानों ने 'मूल सूत्रों' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है

(क) प्रो० वेबर और प्रो० वूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते हैं ।

(ख) डॉ० सरपेन्टियर, डॉ० विन्टरनिट्ज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते हैं ।

(ग) डॉ० सुक्रिंग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रों' की संज्ञा देते हैं ।^४

(घ) प्रो० हीरालाल कापडिया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते हैं ।^५

उक्त सब अभिमतों को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रों' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नंदी ।

आगमों के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है । अनंग-प्रविष्ट आगमों के दो विभाग किए गए हैं । उनमें पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है । दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अन्तर्गत हैं, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है । इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नहीं है ।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि ।

२—श्री रत्नमुनि स्मृति गन्ध, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७ ।

३—श्रीमज्जाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृष्ठ ७३-७४ ।

४—ए हिस्ट्री ऑफ़ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ़ दी जैन्स, पृष्ठ ४४-४५ ।

५—वही, पृष्ठ ४८ ।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनों आगम नहीं हैं, किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ हैं। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन—पिण्डपणा—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओघ-समाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अंश है। विस्तृत कलेवर होने के कारण इसे पृथक्-ग्रन्थ का रूप दिया गया।^१ इसलिए इन्हें 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थों के रूप में स्वीकार करना अधिक संगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नंदी—ये दोनों चूलिका-सूत्र हैं। इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का कोई हेतु उपलब्ध नहीं है। सम्भव है बत्तीस सूत्रों की मान्यता के साथ (वि० १६ वीं शताब्दी में) इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखा गया। श्रीमज्झयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नंदी को 'मूल-सूत्र' माना है। किन्तु इस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई भीमांसा नहीं की है।

इस प्रकार 'मूल-सूत्र' की संख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति में मूल-सूत्रों की कोई चर्चा नहीं है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत बृहद् वृत्ति में भी उनकी कोई चर्चा नहीं है।

इससे यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वीं शताब्दी तक 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना नहीं हुई थी।

धनपाल का अस्तित्व-काल ग्यारहवीं शताब्दी है। उन्होंने 'श्रावक-विधि' में पैतालीस आगमों का उल्लेख किया है।^२ इससे यह अनुमान होता है कि धनपाल से पहले ही आगमों की संख्या पैतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वीं शताब्दी) कृत विचारसार-प्रकरण में भी आगमों की संख्या पैतालीस है, किन्तु इनमें 'मूल-सूत्र' विभाग नहीं है। उसमें ग्यारह अंग और चाँतिस ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है।^३

१-आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ६६५, वृत्ति पत्र ३४१ :

साम्भ्रतमोऽनिर्युक्तिर्गन्तव्या, सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता ।

२-समयसुन्दर गणी' विरचित श्री गाथासहस्री में धनपाल कृत 'श्रावक विधि' का उद्धरण है। उसमें पाठ आता है—पणयालीस आगम (श्लोक २९७; पृ० १८)।

३-विचारलेख, गाथा ३४४-३५१ ।

इसकी दो चूलिकाएँ हैं। अध्ययनो के नाम, श्लोक, संख्या और विषय इस प्रकार है —

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१ द्रुमपुष्पिका ^१	५		धर्म-प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति ।
२. आमप्यपूर्वक	११		सयम में धृति और उसकी साधना ।
३ क्षुल्लकाचार	१५		आचार और अनाचार का विवेक ।
४. धर्म-प्रज्ञप्ति या षड्जीवनिका	२८	२३	जीव-संयम तथा आत्म-संयम का विचार ।
५ पिण्डैषणा	१५०		गवेषणा, ग्रहणैषणा और भोगैषणा की शुद्धि ।
६ महाचार	६८		महाचार का निरूपण ।
७. वाक्यशुद्धि	५७		भाषा-विवेक ।
८. आचार-प्रणिधि	६३		आचार का प्रणिधान ।
९. विनय-समाधि	६२	७	विनय का निरूपण ।
१० सभिक्षु चूलिका	२१		भिक्षु के स्वरूप का वर्णन ।
१. रतिवाक्या	१८	१	संयम में अस्थिर होने पर पुनः स्थिरीकरण का उपदेश ।
२ विविक्षुचर्या	१६		विविक्षुचर्या का उपदेश ।

निर्यत्तिकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण-करणानुयोग में होता है । इसका फलित अर्थ यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है । वह दो प्रकार का होता है—

(१) चरण—व्रत आदि और (२) करण—पिण्ड-विशुद्धि आदि ।^२

घवला के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वर्णन करने वाला सूत्र है ।^३ अंगपरणप्ति के अनुसार इसका विषय गोचर-विधि और पिण्ड-विशुद्धि

१-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, में इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ०

११ पा० टि० २ ।

२-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४ :

अमुहुत्तमुहुत्ताहं, निद्विसिउं एत्य होइ अहिमारो ।

चरणकरणाणुओगेण, तस्स दारा इमे वृत्ति ॥

३-षड्खंडागमः, सत्प्रवृत्ति (११११), पृ० ९७ :

दसवेयालियं आचार-गोचर-विधि वर्णन ।

के पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक से प्राप्त होता है। छठा अध्ययन समवायांग समवाय १८ के “वयच्छक्कं कायच्छक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियं निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं ॥” श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचारांग १।१।६।५ में मिलते हैं। आठवें अध्ययन का आंशिक विषय स्थानांग ८।५।६८, ६०१, ६१५ से मिलता है। आंशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।^१

आचारांग के दूसरे श्रुतस्कंध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ से क्रमशः इसके पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत में वह दशवैकालिक के बाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अंग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय में भी श्वेताम्बर-साहित्य में प्रामाणिक ऊहापोह है। श्वेताम्बर आचार्यों ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे हैं।

दिगम्बर-परम्परा में भी यह सूत्र प्रिय रहा है। धवला, जयधवला, तत्त्वार्थवातिक (राजवातिक), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इसके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कहीं भी विवरण प्राप्त नहीं होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्युद्ध—इतना मात्र संकेत देते हैं। कब तक यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी असमाहित है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्राचीन आगम अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। उन्हें व्याकरण की कसौटी पर कसने का हमारा प्रयत्न भी सम्मान्य नहीं है। जिन व्याकरण परम्पराओं और नियमों के संदर्भ में आगम लिखे गए, वे परम्पराएँ और नियम अर्वाचीन काल में परिवर्तित हो गए। इसलिए उनमें परस्पर पूर्ण-सामंजस्य प्राप्त नहीं होता। व्याकरण-विमर्श की हमारी दृष्टि इतनी ही हो सकती है कि हम प्राचीन रचनाओं में अर्वाचीन व्याकरणों से जो अतिरिक्तता पाते हैं, वह सुलभ हो जाए।

१—(क) दशवैकालिक, ४। सूत्र ९ : मिलाइये—आचारांग, १।१।६।४९।

(ख) दशवैकालिक, ५।२।२८ : मिलाइये—आचारांग, १।१।२।४।

(ग) दशवैकालिक, ६।५३ : मिलाइये—सूत्रकृतांग, १।२।२।१८।

प्रस्तुत सूत्र में अलाक्षणिक (व्याकरण-असिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते हैं—
वत्यगन्वमलंकारं (२।२), आहारमार्डणि (६।४६), निखस्मममाणए (१०।११) ।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते हैं—पीढए (७।२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है । बुद्धवयणे (१०।६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है ।

अच्छन्दा जे न भुजन्ति, न से चाड ति वुच्चइ (२।२)—यहाँ 'भुजन्ति' बहुवचन है और 'से चाइ' एकवचन है ।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं । विस्तार के लिए देखें—
“दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन”, अध्ययन १ व्याकरण-विमर्श ।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमें अर्धमागधी और जैन-महाराष्ट्री आदि के संवलित प्रयोग हैं । 'हृत्यंसि वा', 'पार्यंसि वा' (४। सूत्र २३) में अर्धमागधी के प्रयोग हैं । प्राकृत में सप्तमी के एकवचन के दो रूप बनते हैं—'हृत्ये, हृत्यमि' ।^१ 'हृत्यंसि' यह अर्धमागधी में बनता है । 'जे' (२।३), 'करेमि' (४। सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागधी का लक्षण है ।^२

मणसा (८।३) जोगसा (८।१७)—ये अर्धमागधी के प्रयोग हैं । प्राकृत में ये नहीं मिलते ।

वहवे (७।४८)—बहु शब्द का प्रथमा का बहुवचन, जसोकामी (२।७), दोच्चे (४।सूत्र १२), तच्चे (४।सूत्र १३), सोच्चा (४।११), लड्डूण (५।२।४७), ऊसंडं (५।२।२५), संवुड (५।१।८३), परिवुड (६।१।१५), कड (४। २०), कट्टु (चूलिका १।१४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सब अर्धमागधी के प्रयोग हैं, जिन्हें हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्पणप्रयोग कहा है । हियट्टयाए (४।सूत्र १७)—यहाँ स्वार्थ में 'या' और 'य' के स्थान में 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-सिद्ध नहीं है । तेइंदिया मे 'ति' का 'ते' हुआ है । यह अर्धमागधी का प्रयोग है ।^३ कही शौरसेनी के लक्षण भी मिलते हैं जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८।४८) । यहाँ 'न' को 'म' किया है, जो शौरसेनी में होता है ।^४

१-हेमचन्द्रानुशासन, ८।३।११ : डे स्मि डे : ।

२-वही, ८।४।२८७ :

अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् ।

३-प्राकृत भाषाओं का व्याकरण :

पैरा ४३८, पृष्ठ ६५१ ।

४-हेमचन्द्रानुशासन, ८।४।२६४ : सो वा ।

देशी या अपभ्रंश शब्दों के प्रयोग भी प्रचुर है। गावी (५।१।१२) को पतञ्जलि 'गो' शब्द का अपभ्रंश बतलाते हैं।^१ आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत-भाषा-विशेष के शब्दों को 'देशी' माना है।^२

१३ : दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ

दशवैकालिक की प्राचीनतम व्याख्या निर्युक्ति है। उसमें इसकी रचना के प्रयोजन, नामकरण, उद्धरण-स्थल, अध्ययनों के नाम, उनके विषय आदि का संक्षेप में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों का आधार रहा है। यह पद्यात्मक है। इसकी गाथाओं का परिमाण टीकाकार के अनुसार ३७१ है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु माने जाते हैं। इनका काल-मान विक्रम की पाँचवी-छठी शताब्दी है।

इसकी दूसरी पद्यात्मक व्याख्या भाष्य है। चूर्णिकार ने भाष्य का उल्लेख नहीं किया। टीकाकार भाष्य और भाष्यकार का अनेक स्थलों में उल्लेख करते हैं।^३ टीकाकार के अनुसार भाष्य की ६३ गाथाएँ हैं। इसके कर्ता की जानकारी हमें नहीं है। टीकाकार ने भी भाष्यकार के नाम का उल्लेख नहीं किया है।^४ वे निर्युक्तिकार के बाद और चूर्णिकार से पहले हुए हैं।

हरिभद्र सूरि ने जिन गाथाओं को भाष्यगत माना है, वे चूर्णि में हैं। इससे जान पड़ता है कि भाष्यकार चूर्णिकार के पूर्ववर्ती हैं। इसके बाद चूर्णियाँ लिखी गई हैं। अभी दो चूर्णियाँ प्राप्त हैं। एक के कर्ता अगस्त्यसिंह स्थविर हैं और दूसरी के कर्ता जिनदास महत्तर (वि० की ७ वी शताब्दी)।

१-पातञ्जल महाभाष्य, पस्पशाह्निक :

एकस्यैव गोशब्दस्य गावी-गोणी-गोता-गोपोतलिकेत्यादयोऽनेकेऽपशब्दाः ।

२-देशीनाममाला, १।४ :

वेसविसेसपसिद्धीह, भणमाणा अणन्तया हुंति ।

तम्हा अणाइपाइयपयट्टभासाविसेसवो देशी ॥

३-(क) दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र ६४ : भाष्यकृता पुनरुपन्यस्त इति ।

(ख) वही, पत्र १२० : आह च भाष्यकारः ।

(ग) वही, पत्र १२८ : व्यासार्थस्तु भाष्यादवसेयः ।

(घ) वही, पत्र १२३, १२५, १२६, १२९, १३३, १३४, १४०, १६१, १६२, २७८ ।

४-दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र १३२ :

तामेव निर्युक्तिगाथायां लेशतो व्याचिख्यासुराह भाष्यकारः । ... एतदपि नित्यत्वादिप्रसाधकमिति निर्युक्तिगाथायामनुपन्यस्तमप्युक्तं सूक्ष्मधिया भाष्यकारेणेति गायार्थः ।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्णि के अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदास महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराध्ययन (अ० ३०) चूर्णि पृ० २७४ में एक उल्लेख आता है—“षष्ठोऽपि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्यत्राभिहितं, शेषं दशवैकालिकचूर्णो अभिहितम्।” इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराध्ययन की चूर्णियाँ एक-कर्तृक प्रतीत होती हैं। दशवैकालिक चूर्णि (पृ० २१) में इत्वरिक तप का वर्णन बहुत संक्षिप्त रूप में किया गया है। शेष वर्णन विस्तृत है। उत्तराध्ययन चूर्णि (पृ० २७४) में इत्वरिक तप के पाँच प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कहीं अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेष वर्णन दशवैकालिक चूर्णि में किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्णि में पृ० २१ से ३७ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराध्ययन में उन्होंने इसकी पुनरुक्ति नहीं की। सही अर्थ में तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन के तपोध्ययन (अ० ३०) की चूर्णि में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्णि की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक में आए ‘तप’ शब्द का विशद वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराध्ययन में, जो दशवैकालिक की चूर्णि में नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेष के लिए दशवैकालिक चूर्णि में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्णि का रचना-काल विक्रम की तीसरी शताब्दी के आस-पास है।^१

अगस्त्यसिंह स्थविर ने अपनी चूर्णि में तत्त्वार्थसूत्र, आवश्यकनिर्युक्ति, ओषधिनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। इनमें अन्तिम रचनाएँ भाष्य हैं। उनके रचना-काल के आधार पर अगस्त्यसिंह का समय पुनः अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक और आपवादिक—दोनों विधियों की चर्चा की है। इस चर्चा का आरम्भ जब देवद्विगणी ने आगम पुस्तकारूढ किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवद्विगणी के उत्तरवर्ती और जिनदाम के पूर्ववर्ती हो तो इनका समय विक्रम की ५-६ठी शताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुख पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्णि :

उच्चारणं संजमो—पोत्यएसु घेप्यंतेसु असंजमो सहाघणमोल्लेसु वा द्वेसेसु, वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणद्वं अत्त्वोछित्तिनिमित्तं गेहंतस्स संजमो भवति।

इन चूर्णियो के अतिरिक्त कोई प्राकृत व्याख्या और रही है पर वह अब उपलब्ध नहीं है। उसके अवशेष हरिभद्र सूरि की टीका में मिलते हैं।^१

प्राकृत युग समाप्त हुआ और संस्कृत युग आया। आगम की व्याख्याएँ संस्कृत भाषा में लिखी जाने लगी। इस पर हरिभद्र सूरि ने संस्कृत में टीका लिखी। इनका समय विक्रम की आठवीं शताब्दी है।

यापनीय संघ के अपराजित सूरि (या विजयाचार्य—विक्रम की आठवीं शताब्दी) ने इस पर विजयोदया नाम की टीका लिखी। इसका उल्लेख उन्होंने स्वरचित मूलाराधना की टीका में किया है।^२ परन्तु वह अभी उपलब्ध नहीं है। हरिभद्र सूरि की टीका को आधार मान कर तिलकाचार्य (१३-१४वीं शताब्दी) ने टीका, माण्डव्यशेखर (१५वीं शताब्दी) ने निर्युक्ति-दीपिका, समयसुन्दर (विक्रम सं० १६११) ने दीपिका, विनयहंस (विक्रम सं० १५७३) ने वृत्ति, रामचन्द्र सूरि (विक्रम सं० १६७८) ने वार्तिक

१—दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र १६५ :

तथा च बृद्धव्याख्या—वेसाविगयभावस्स मेहुणं पीडिज्जइ, अणुवओगेणं एसणाकरणे हिंसा, पडुप्पायणे अन्नपुच्छणअवलवणासच्चवयणं, अणुण्णायवेसाइदंसणे अदत्तादाणं, ममत्तकरणे परिगहो, एवं सव्ववयपीडा, वव्वसामन्ने पुण संसयो उण्णिवसमणे त्ति ।

दशवैकालिक चूर्णि (पृ० १७१) में इस आशय की जो पंक्तियाँ हैं, वे इन पंक्तियो से भिन्न है

जइ उण्णिवसमइ तो सव्ववया पीडिया भवन्ति, अहवि ण उण्णिवसमइ तोवि तगयमाणसस्स भावाओ मेहुणं पीडियं भवइ, तगयमाणसोय एसणं न रक्खइ, तत्थ पाणाइवायपीडा भवति, जोएमाणो पुच्छिज्जइ—कि जोएसि ? ताहे अवलवइ, ताहे मुसावायपीडा भवति, ताओ य तित्थगरेहिं णाणुण्णायाउत्तिकाउं अदिण्णादाणपीडा भवइ, तासु य ममत्तं करेतस्स परिगहपीडा भवति ।

अगस्त्य चूर्णि की पंक्तियाँ इस प्रकार है :—

तस्स पीडा वयाण तासु गयाचतो रियं न सोहेतित्ति पाणातिवातो पुच्छितो कि जोएसित्ति ? अवलवति मुसावातो, अदत्तादाणमणुण्णातो तित्थकरेहिं मिहुणे वि गयभावो मुच्छाए परिगहो वि ।

२—मूलाराधना, गा० ११९७ की वृत्ति :

दशवैकालिकटीकायां श्रीविजयोदयायां प्रपञ्चिता उद्गमाविबोधा इति नेह प्रत्यन्ते ।

और पायचन्द्र सूरि तथा धर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वीं शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा में टब्बा लिखा । किन्तु इनमें कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्पष्टीकरण नहीं है । ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए हैं । अतः इसकी महत्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही हैं—(१) अगस्त्य चूर्णि, (२) जिनदास चूर्णि और (३) हारिमद्रीय वृत्ति ।

अगस्त्यसिंह स्वविर की चूर्णि इन सबमें प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-संशो है । जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्वविर के आस-पास भी चलते हैं और कहीं-कहीं इनसे दूर भी चले जाते हैं । टीकाकार तो कहीं-कहीं बहुत दूर चले जाते हैं ।^१

लगता है चूर्णि के रचना-काल में भी दणवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नहीं रही थी । अगस्त्यसिंह स्वविर ने अनेक स्थलों पर अर्थ के कई विकल्प किए हैं । उन्हें देखकर सहज ही जान पड़ता है कि वे मूल अर्थ के बारे में असंदिग्ध नहीं हैं ।

आर्य सुहृस्ती ने एक बार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया । ज्यो-ज्यो जैन आचार्य लोक-संग्रह की ओर अधिक भुके, त्यो-त्यो अपवादों की बाढ-सी आ गई । वीर-निर्वाण की नवीं शताब्दी (८५०) में चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ । इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई । देवद्विगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढ़ा और वह जैन परम्परा पर छा गया । अभयदेव सूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दों में किया है—“देवद्विगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हूँ । इसके बाद शिथिलाचारियों ने अनेक द्रव्य-परम्पराओं का प्रवर्तन कर दिया ।”^२ आचार-शैथिल्य की परम्परा में जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमें ऐसे अपवाद भी हैं जो आगम में प्राप्त नहीं हैं । प्रस्तुत आगम की चूर्णि और टीका तात्कालिक वातावरण से मुक्त नहीं हैं । इन्हें पढ़ते समय इस तथ्य को नहीं भूल जाना चाहिए ।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते हैं । पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है । जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्हीं के किए अपवाद मान्य हो सकते हैं । वर्तमान में जो व्याख्याएँ उपलब्ध हैं, वे चौदहपूर्वी या दसपूर्वी की नहीं हैं, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की कोटि में नहीं रखा जा सकता ।

१-उदाहरण के लिए देखें दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७ ।

२-आगम अद्भुतरी, गाथा १४ :

देवद्विगणमासमणजा, परंपरं भावओ वियाणेमि ।

सिद्धिआचारो ठविया, दब्बेण परंपरा बहुहा ॥

दोनो चूर्णियो मे पाठ और अर्थ का भेद है । टीकाकार का मार्ग तो उनसे बहुत ही भिन्न है ।

चैत्यवासी और संविम-पक्ष के आपसी खिचाव के कारण संभव है उन्हें (टीकाकार को) अगस्त्य चूर्ण उपलब्ध न हुई हो । उसके उपलब्ध होने पर भी यदि इतने बड़े पाठ और अर्थ के भेदों का उल्लेख न किया हो तो यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात है । पर लगता यही है कि टीका-काल में टीकाकार के सामने अगस्त्य चूर्ण नहीं रही । यदि वह उनके सम्मुख होती तो टीका और चूर्ण में इतना अर्थ-भेद नहीं होता । टीकाकार ने 'अन्ये तु', 'तथा च वृद्धसम्प्रदाय', 'तथा च वृद्धव्याख्या'—आदि के द्वारा जिनदास महत्तर का उल्लेख किया है ।^१ पर उनके नाम और चूर्ण का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया ।

हरिभद्र संविम-पाक्षिक थे । इनका समय चैत्यवास के उत्कर्ष का समय है । पुस्तकों का संग्रह अविकाशतया चैत्यवासियों के पास था । संविम-पक्ष एक प्रकार से नया था । चैत्यवासी इसे मिटा देना चाहते थे । इस परिस्थिति में टीकाकार को पुस्तक-प्राप्ति की दुर्लभता रही हो, यह भी आश्चर्य की बात नहीं है ।

आगमो की माथुरी और बल्लभी—ये दो वाचनाएँ हुई । देवद्विगणी ने आगमो को पुस्तकाखंड करते हुए उन दोनों का समन्वय किया । माथुरी में उससे भिन्न पाठ थे । उन्हें पाठ-भेद मान गेप अंग को बल्लभी में समन्वित कर दिया । यह पाठ-भेद की

१-(क) दशवैकालिक, हारिमद्रीय टीका पत्र ७ :

अन्यस्त्वनदिष्टो दशकालिकास्थ. आदिष्टस्तु तदध्ययनविशेषो
द्रुमगुप्तिकादिरिति व्याचष्टे ।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ ४ :

तस्य अणादिद्वं जहा दसगालियंआदिद्वं द्रुमगुप्तियंसामणगुत्त्वयं एवमादि ।

(ख) वही, हारिमद्रीय टीका, पत्र १७२ :

अत्रायं वृद्धसम्प्रदायः—गच्छवासी जइ थणजीवी ...मज्जारदि वा
अवहरेज्ज ति ।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ-१८०-१८१ :

तस्य गच्छवासी जति थणजीवी' .. मज्जारदि वा अवधरेज्जा ।

(ग) वही, हारिमद्रीय टीका, पत्र १४२-४२ :

तथा च वृद्धव्याख्या—एसो ललु छट्ठो' आगासत्थिकाओ
अवगाहलक्खणो ।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ १४१-४२ .

...छट्ठो जीवनिकायो ...आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो ।

उत्तराध्ययनो का एक श्रुतस्कन्ध (एक ग्रन्थ रूप) स्वीकार किया है । फिर भी उन्होंने इसका नाम बहुवचनात्मक माना है ।^१

इस बहुवचनात्मक नाम से यह फलित होता है कि उत्तराध्ययन अध्ययनो का योग मात्र है, एक-कर्तृक एक ग्रन्थ नहीं ।

‘उत्तर’ शब्द ‘पूर्व’ सापेक्ष है । चूर्णिकार ने प्रस्तुत अध्ययनो की तीन प्रकार से योजना की है—

- | | |
|----------------------|---------------------|
| (१) स-उत्तर | —पहला अध्ययन |
| (२) निरुत्तर | —छत्तीसवाँ अध्ययन |
| (३) स-उत्तर-निरुत्तर | —बीच के सारे अध्ययन |

किन्तु ‘उत्तर’ शब्द की यह अर्थ-योजना चूर्णिकार की दृष्टि में अधिकृत नहीं है । उनकी दृष्टि में अधिकृत अर्थ वही है जो निर्युक्तिकार के द्वारा प्रस्तुत है । निर्युक्तिकार के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन आचारांग के उत्तरकाल में पढ़े जाते थे, इसलिए इन्हें ‘उत्तर अध्ययन’ कहा गया ।^३ श्रुतकेवली ग्रन्थभवं (वीर-निर्वाण सं० ६८) के पश्चात् ये अध्ययन दशवैकालिक के उत्तरकाल में पढ़े जाने लगे ।^४ इसलिए ये ‘उत्तर अध्ययन’ ही बने रहे । यह ‘उत्तर’ शब्द की संगत व्याख्या प्रतीत होती है ।

दिगम्बर-आचार्यों ने भी ‘उत्तर’ शब्द की अनेक दृष्टिकोणों से व्याख्या की है ।

१-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ८ :

ऐतेसि चैव छत्तीसाए उत्तरज्ज्मयणाणं समुदयसमितिसमागमेणं उत्तरज्ज्मयणभाव-
मुतक्खंघेति लब्धम्, ताणि पुण छत्तीसं उत्तरज्ज्मयणाणि इमेहि नामेहि
अणुगंतव्वाणि ।

२-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :

विणयसुयंसउत्तरं जीवाजीवासिगमो णिरुत्तरो, सर्वोत्तर इत्यर्थः, सेसज्ज्मयणाणि
सउत्तराणि णिरुत्तराणि य, कंहं ? परीसहा विणयसुयस्स उत्तरा ऋउरंणिज्जस्स
तु पुत्ता इति काउं णिरुत्तरा ।

३-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ३ :

कमउत्तरेण पगयं आयास्सेव उवरिमाहं तु ।

तम्हाउ उत्तरा खलु अज्ज्मयणा हुंति णायव्वा ॥

४-उत्तराध्ययन बृहद्बुद्धि, पत्र ५ :

विशेषश्चायं यथा—शय्यम्भवं यावदेव क्रमः, तदाऽऽरंस्तु दशवैकालिकोत्तरकालं
पठ्यन्त इति ।

दूसरा अध्ययन अंगप्रभव माना गया है। निर्युक्तिकार के अनुसार वह कर्मप्रवाद पूर्व के सतरहवें प्राभृत से उद्धृत है।^१ दसवाँ अध्ययन जिन-भाषित है।^२ आठवाँ अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-भाषित है।^३ नवाँ और तेईसवाँ अध्ययन संवाद-समुत्थित है।^४ ये चूर्णि और बृहद्बुत्तिकार द्वारा उदाहृत है।

उत्तराध्ययन की मूल रचना पर ध्यान देने से उसके कर्तृत्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। प्रस्तुत सूत्र में गद्यात्मक अध्ययन तीन है—दूसरा, सोलहवाँ और उनतीसवाँ।

दूसरे अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु बावीसं परोसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया।”

सोलहवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहि भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्तत्ता।”

उनतीसवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्भत्तपरक्कमे नाम अज्जमयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए।”

इन प्रारम्भिक वाक्यों से फलित होता है कि दूसरा और उनतीसवाँ अध्ययन महावीर द्वारा निरूपित है अर्थात् जिन-भाषित है और सोलहवाँ अध्ययन स्थविर-विचरित है।

१-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ६९ :

कम्मप्पवायपुब्बे सत्तरसे पाहुडंमि जं सुत्तं।

सणयं सोदाहरणं तं चेव इहंपि णायव्वं ॥

२-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ .

जिणभासिया जहा दुमपत्तगादि।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्बुत्ति, पत्र ५ :

जिनभाषितानि यथा द्रुमपुष्पिकाऽध्ययनम्।

३-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

पत्तेयबुद्धभासियाणि जहा काविलिज्जादि।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्बुत्ति, पत्र ५ :

प्रत्येकबुद्धा—कपिलादयः तेभ्य उत्पन्नानि यथा कापिलीयाऽध्ययनम्।

४-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

संवाओ जहा णसिपव्वज्जा केसिगोयमेज्जं व।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्बुत्ति, पत्र ५ :

संवाद-सङ्गतप्रश्नोत्तरवचनव्यस्तत उत्पन्नानि, यथा—केशिन्नोत्तमीयम्।

निर्युक्ति में दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूद्ध माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है।

निर्युक्तिकार के चार वर्गों से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पड़ता है। दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है। किन्तु उस अध्ययन के कर्त्ता भगवान् महावीर नहीं हैं—यह उस अध्ययन के अंतिम वाक्य—‘बुद्धस्स निसम्म भासियं’—से स्पष्ट है। इसी प्रकार दूसरे और उनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यों से भी यही तथ्य प्रकट होता है। छठे अध्ययन के अंतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उवाहु अगुत्तरनाणी अगुत्तरदंसी अगुत्तरनाणदंसणधरे ।

अरुहा नायपुत्ते भगवं वेत्तालिण विद्याहिण ॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नहीं है। आठवें अध्ययन के अंतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती है—

इइ एस धम्मो अक्खाए कविकेणं च विसुद्धपन्नेणं ।

तरिहिनत्ति जे उ काहिनत्ति नेहि आराहिया बुवे लोणे ॥ (८।२०)

संवाद-समुत्थित अध्ययन, नवों और तेईसवाँ भी नमि तथा केशि-गौतम द्वारा विरचित नहीं है। इसका समर्थन भी उनके अन्तिम श्लोकों से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा ।

विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरित्ति ॥ (१।६२)

तोसिया परित्ता सब्वा सम्मगं समुवट्ठिया ।

संथुया ते पसीयन्तु मयवं केसिगोयसे ॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्युक्तिकार के चार वर्गों से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशों, उपदेश-गाथाओं या संवादों को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए हैं। वे कब और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति में कोई उत्तर प्राप्त नहीं है। चूर्णि और बृहद्बृत्ति में भी नहीं है। अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्त्ता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। इसके रचना-काल की भीमांसा से हम इतना जान सकते हैं कि ये अध्ययन विभिन्न युगों में हुए अनेक ऋषियों द्वारा उद्गीत हैं।

सांख्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वीं शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप वारण कर चुके थे। भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदों का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था। आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, संसार की क्षणभंगुरता, वैराग्य व संन्यास की चर्चा इस युग में विघेप विकसित हुई थी।

उत्तराध्ययन में हम ई० पू० ६०० से ई० सन् ४०० तक की धार्मिक व दार्शनिक धारा का प्रतिनिधित्व या विकास पाते हैं। हो सकता है कि इनका कुछ अंग महावीर से पहले का भी हो। चूर्णि में ऐसा संकेत भी मिलता है कि उत्तराध्ययन का छठा अध्ययन भगवान् पार्श्व द्वारा उपदिष्ट है।^१

‘दशवैकालिक’ वीर निर्वाण की पहली शताब्दी की रचना है।^२ ‘उत्तराध्ययन’ एक ग्रन्थ के रूप में उससे पूर्व संकलित हो चुका था। उस समय उसके अध्ययन कितने थे, यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी (६८०-६९३) में देवद्विगणी ने आगमों का संकलन किया था। उन्होंने उत्तराध्ययन के आकाङ्क-प्रकार व विषय-वस्तु में कोई अभिवृद्धि की या नहीं की, इसका प्रत्यक्ष उल्लेख प्राप्त नहीं है, किन्तु नहीं की, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। अतः उत्तराध्ययन को हम एक सहस्राब्दी की, विचारधारा का प्रतिनिधि सूत्र कह सकते हैं। इसमें जहाँ वेद और ब्राह्मण-साहित्य-कालीन यज्ञ और जातिवाद की चर्चा है, वहाँ द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। उन परिभाषाओं को दर्शनकालीन (ई०पू० ५ वीं से ई०पू० पहली शताब्दी) माना जाए तो यह निष्पन्न होता है कि उत्तराध्ययन के अध्ययन विभिन्न कालों में निर्मित हुए और अंतिम वाचना के समय देवद्विगणी ने उनका छत्तीस अध्ययनात्मक एक ग्रन्थ के रूप में संकलन किया। इसीलिए समवायाग में छत्तीस उत्तर-अध्ययनों के नाम उल्लिखित हुए। अन्यथा अंग-साहित्य में इनका उल्लेख सम्भव नहीं होता। वर्तमान संकलन को सामने रखकर हम चिन्तन करें तो उत्तराध्ययन के संकलयिता देवद्विगणी है। इसके प्रारम्भिक संकलन और देवद्विगणी कालीन संकलन में अध्ययनों की संख्या और विषय-वस्तु में पर्याप्त अन्तर आया है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से उत्तराध्ययन के अध्ययन चार भागों में विभक्त होते हैं—

- (१) धर्मकायत्मक—७, ८, ९, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५ और २७।
- (२) उपदेशात्मक—१, ३, ४, ५, ६ और १०।
- (३) आचारात्मक—२, ११, १५, १६, १७, २४, २६, ३२ और ३५।
- (४) सैद्धान्तिक—२८, २९, ३०, ३१, ३३, ३४ और ३६।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १५७ :

केचिदन्यथा पठन्ति—एवं से उदाहु, अरहा पासे पुरिसादाणीए।

मगवन्ते वेसालीए, बुद्धे परिणिब्बुडे ॥

२—दशवैकालिक भाग २, भूमिका पृष्ठ १५।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमों के चार वर्ग किए—

- | | |
|-------------------|------------------|
| (१) चरण-करणानुयोग | (३) गणितानुयोग |
| (२) धर्मकथानुयोग | (४) द्रव्यानुयोग |

इस वर्गीकरण में उत्तराध्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत गृहीत है।^१ पर आचारात्मकअध्ययन चरण-करणानुयोग में तथा सैद्धान्तिक अध्ययन द्रव्यानुयोग में समाते हैं। इस प्रकार उत्तराध्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगों का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवद्विगणी के संकलन-काल में हुआ, यह बहुत सभ्य है।

कुछ विद्वानों का अभिमत है कि उत्तराध्ययन के पहले अठारह अध्ययन प्राचीन हैं और उत्तरवर्ती अठारह अध्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होंने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नहीं किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हों, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हैं, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नहीं है। इकतीसवें अध्ययन में आचाराग, सूत्रकृतांग आदि प्राचीन आगमों के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्व, बृहत्कल्प, व्यवहार और निशीथ जैसे अर्वाचीन आगमों के नाम भी उपलब्ध होते हैं।^२ ये श्रुतकेवली भद्रबाहु (वीर-निर्वाण दूसरी शती) द्वारा निर्युद्ध या कृत है।^३ इसलिए प्रस्तुत अध्ययन भद्रबाहु के बाद की रचना है।

१-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ :

अत्र धम्मानुयोगेनाधिकारः ।

२-उत्तराध्ययन, ३१।१६-१८ :

तेवीसइ सुयगडे, खुवाहिणसु सुरेसु अ ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

पणवीसभावणाहि, उहेत्तेसु दसाइणं ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

अणगारुणेहि च, पक्कप्पम्मि तहेव य ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

३-(क) दशाश्रुतस्कन्व निर्युक्ति, गाथा १ :

वंदामि भद्रबाहुं, पाईणं धरिमसयलसुयणाणि ।

सुत्तस्स कारणमिस्सिं, वसासु कप्पे य वव्हारे ॥

(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि :

तेण भगवता आयारपकप्प दसाकप्प वव्हारा य नवमयुक्वनीसंदन्ता
निज्जूढा ।

अठाइसवें अध्ययन में अंग और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक विभागों के अति-रिक्त ग्यारह अंग, प्रकीर्णक और दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है।^१ प्राचीन आगमों के चौदह पूर्वों, ग्यारह अंगों या बारह अंगों के अध्ययन का वर्णन मिलता है। किन्तु अंग-बाह्य या प्रकीर्णक श्रुत के अध्ययन का वर्णन नहीं मिलता, इसलिए यह अध्ययन भी उत्तरकालीन आगम-व्यवस्था के आस-पास की रचना प्रतीत होती है।

इस अध्ययन में द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। इनकी तुलना क्रमशः वैशेषिक दर्शन के द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्ययन^२

वैशेषिक दर्शन^३

(१) द्रव्य—

(१) द्रव्य—

गुणान्मासओ दव्वं

क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।

(२) गुण—

(२) गुण—

एगदव्वस्सिया गुणा

द्रव्याश्रय्यगुणवान् न्ययोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।

(३) पर्याय—

(३) कर्म—

लक्खणं पज्जवाणं तु
उभओ अस्सिया भवे।

एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति
कर्म-लक्षणम्।

आगम साहित्य में द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्ययन में प्राप्त होती है। आगमों में विवरणात्मक अर्थ ही अधिक मिलते हैं, संक्षिप्त परिभाषाएँ प्रायः नहीं मिलती। इसकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थों से होनी है। उत्तराध्ययन में ये परिभाषाएँ विशेष अर्थ-मूचक हैं। प्रस्तुत अध्ययन के कर्त्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओं से परिचित रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में संकलित हुआ—ऐसा अनुमान होता है। उत्तराध्ययन के प्राचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित थे और अर्वाचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित किए गये, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। किन्तु स्थूल रूप में इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन संस्करण का मुख्य भाग कथा-भाग था और अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धांतिक है।

१—(क) उत्तराध्ययन २८।२१ :

.... अणेण बाहिरेण व..... ।

(ख) वही २८।२३ .

..... एकारस अंगाई पइण्णं दिट्ठिवाओ य ॥

२—वही, २८।६।

३—वैशेषिक दर्शन, प्रथम अध्याय, प्रथम आह्निक, सूत्र १५-१७।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मिलता है ।

‘जैन सिद्धान्त भवन’, आरा (विहार) में प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) में मिलता है—“उत्तराध्ययन में उद्गम, उत्पादन और एपणा से सम्बन्धित दोषों के प्रायश्चित्तों का विधान है ।”^१

अंगपण्णत्ति में लिखा है—“बाईस परीपहो और चार प्रकार के उपसर्गों के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है ।”^२

धवला में यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदों का वर्णन करता है ।^३

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) में लिखा है कि उत्तराध्ययन में वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है ।^४

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप में नहीं होती । अंगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आंगिक रूप से संगत होता है । जैसे—

(१) बाईस परीपहो के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन ।

(२) प्रश्नों के उत्तर, देखिए—उत्तीसवाँ अध्ययन ।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नहीं । संभव है इन लेखकों के सामने उत्तराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है ।

दिगम्बर-साहित्य से एक बात निश्चित रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१—उत्तरज्झयणं उगममुप्यायणे सणदो सगययायच्छित्तविहाणं कालादि विसेसिदं वणोदि ।

२—अंगपण्णत्ति, ३।२५, २६ :

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयणं मदं जिणिदेहि ।

वावीसपरीसहाणं, उवसगाणं च सहणविहि ॥

वणोदि तप्फलमवि, एवं पण्हे च उत्तरं एवं ।

कहदि गुत्तीसियाण, पइणिय अट्ठमं तं खु ॥

३—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति) :

उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वणोइ ।

४—हरिवंश पुराण, १०।१३४ .

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमनं तथा ।

अंग-बाह्य प्रकीर्णक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरो के उत्तर-कालीन आचार्यों) की रचना है।^१

श्वेताम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन में प्राप्त है।^२

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ दशवैकालिक की रचना हो चुकी थी। उत्तराध्ययन उससे पूर्ववर्ती रचना है। वह आचारांग के बाद पड़ा जाने लगा था। उसे अपनी विशेषता के कारण थोड़े समय में ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। इस स्थिति के संदर्भ में यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की संकलना वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो चुकी थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की प्राचीनता असंदिग्ध है। उसकी प्राचीनता जानने के दो साधन हैं—

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) सिद्धान्त।

भाषा-प्रयोग तीसरे अध्ययन (श्लोक १४) में 'जक्ख' (सं० यक्ष) शब्द का 'अर्चनीय देव' के अर्थ में प्रयोग हुआ है। यह प्रयोग इसकी प्राचीनता का सूचक है। यज्ञ के उत्कर्ष काल में ही 'यक्ष' शब्द उत्कर्षवाची था। दोनों की निष्पत्ति एक ही धातु (यज्) से है। यज्ञ के अपकर्ष के साथ-साथ 'यक्ष' शब्द के अर्थ का भी अपकर्ष हो गया। उत्तरकालीन साहित्य में वह देवों की एक हीन जाति का वाचक मात्र रह गया।

इसी प्रकार 'पाढव' (३।१३), 'बुसीमवो' (५।१८), 'मिल्लेबुया' (१०।१६), 'अज्झत्य' (६।६), 'समिय' (६।४) आदि अनेक शब्द हैं, जो आचारांग और सूत्रकृतांग जैसे प्राचीन आगमों में ही मिलते हैं।

सिद्धान्त : जातिवाद (अध्ययन १२ और १३), यज्ञ एवं तीर्थस्थान (अध्ययन १२), ब्राह्मणों के लक्षणों का प्रतिपादन (अध्ययन २५)—ये इन अध्ययनों की प्राचीनता के सूचक हैं। ये सम्बन्धित चर्चाओं के उत्कर्ष काल में लिखे गए हैं, अन्यथा शान्त चर्चा का

१-तत्त्वार्थवार्तिक, १।२०, पृष्ठ ७८ :

यद् गणधरशिष्यप्रशिष्यैरारातीयैरधिगतश्रुतार्थतत्त्वैः कालदोषादल्पमेघायुर्बलाणां प्राणिनामनुग्रहार्थमुपनिबद्धं संक्षिप्ताङ्गार्थवचनविन्यासं तदङ्गबाह्यम्।

तद्भेदा उत्तराध्ययनादयोऽनेकविधाः।

२-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, १८-२६।

इतनी सप्रणता के साथ प्रतिपादन नहीं हो सकता। इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्ष्व-कालीन हैं। संभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हों।

चिकित्सा का वर्जन (२।३२, ३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १६), अचेलकता का प्रतिपादन (२।३४, ३५, २३।२६) तथा अचेलकता और सचेलकता की सामंजस्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२।१२, १३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष हैं जो उत्तरवर्ती साहित्य में नवीन परम्पराओं की पृष्ठभूमि में प्रश्न-चिह्न बने हुए हैं।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग हैं। इसके कथा-भाग में भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नहीं है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही संकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनों, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनों तथा ३६ अपृष्ठ-व्याकरणों का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।^१

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाता है कि छत्तीस अपृष्ठ-व्याकरण वस्तुतः उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही हैं। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) से इसकी पुष्टि की जाती है—

इह पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिब्बुए।

छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंमए॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल में उत्पन्न बद्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनों का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।^२

१-कल्पसूत्र, सूत्र १४६ :

पञ्चसकालसमयसि संपत्तियंकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं छत्तीसं च अपृष्ठवागरणाइं वागरित्ता पघाणं नाम अज्झयणं विभावमाणे २ कालगए वित्तिवकंते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिब्बुडे सब्बदुक्खप्यहीणे।

२-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

इति परिसमाप्ती उपप्रदर्शने च, प्रादुः प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्धः—अवगतार्थः ज्ञातकः—ज्ञातकुलसमुद्भवः बद्धमानस्वामी, ततः परिनिर्वाणं गतः, किं प्रज्ञापयित्वा ?, षट्त्रिंशदुत्तराध्ययनानि।

शान्त्याचार्य ने चूर्णिकार का अनुसरण करते हुए भी इसमें अपनी ओर से दो बातें और जोड़ी हैं। पहली यह है कि भगवान् महावीर ने उत्तराध्ययन के कुछ अध्ययनों का अर्थ-रूप में और कुछ अध्ययनों का सूत्र-रूप में प्रज्ञापन किया। दूसरी यह कि उन्होंने 'परिनिवृत्त' का वैकल्पिक अर्थ 'स्वस्थीभूत' किया है।^२

निर्युक्तिकार ने इन अध्ययनों को जिन-प्रज्ञप्त बतलाया है।^३ शान्त्याचार्य ने 'जिन' शब्द का अर्थ 'श्रुत-जिन' अर्थात् श्रुतकेवली किया है।^४

निर्युक्तिकार के अभिमतानुसार ये छत्तीस अध्ययन श्रुतकेवली आदि स्थविरो द्वारा प्ररूपित हैं। उन्होंने इसकी भी कोई चर्चा नहीं की कि भगवान् ने अन्तिम देशना में इन छत्तीस अध्ययनों का प्ररूपण किया। बृहद्वृत्तिकार शान्त्याचार्य भी परिनिर्वाण के विषय में असंदिग्ध नहीं है। केवल चूर्णिकार ने अपना असंदिग्ध मत प्रगट किया है।

उत्तराध्ययन के अध्ययनों की संख्या ३६ होने के कारण सहज ही उस ओर ध्यान जाता है कि कल्पसूत्र में उल्लिखित ३६ अपृष्ट-व्याकरण ये ही होने चाहिए। यहाँ यह स्मरणीय है कि समवायाग में छत्तीस अपृष्ट-व्याकरणों का उल्लेख नहीं है। वहाँ केवल इतना ही बतलाया गया है कि भगवान् महावीर ने अंतिम रात्रि के समय ५५ कल्याण-

१-उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१२ :

इति इत्यनन्तरमुपवर्णितान् 'पाउकरे'ति सूत्रत्वात् 'प्राबुङ्कृत्य' कांश्चिदर्थतः कांश्चन सूत्रतोऽपि प्रकाश्य, कोऽर्थः ? प्रज्ञाप्य, किमित्याह—'परिनिवृत्तः' निर्वाणं गत इति सम्बन्धनीयम्, कीदृशः सन् क इत्याह—'बुद्धः' केवलज्ञानादवगतसकलवस्तुतत्त्व 'ज्ञातको' 'ज्ञातजो' वा—ज्ञातकुलसमुद्भव, स चेह भगवान् वर्द्धमानस्वामी 'षट्त्रिंशद्' इति षट्त्रिंशत्संख्या उत्तराः—प्रधाना अधीयन्त इत्यध्याया—अध्ययनानि तत उत्तराश्च तेऽध्यायाश्चोत्तराध्यायास्तान्—विनयश्रुतादीन् . . .

२-वही, पत्र ७१२ :

अथवा 'पाउकरे'ति प्रादुरकार्षीत् प्रकाशितवान्, शेषं पूर्ववत् नवरं 'परिनिवृत्तः' क्रोवादिबह्नोपशमत समन्तात्स्वस्थीभूत।

३-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ५५९ :

तम्हा जिणपन्नत्ते, अणंतगमपज्जेहि संजुत्ते।

अज्झाए जहाजोगं, गुरुप्साया अहिज्झिज्जा ॥

४-उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१३ :

तस्साज्जिनै — श्रुतजिनादिभि. प्ररूपिता. ।

फल-विपाक वाले अध्ययनो तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनों का व्याकरण कर परिनिवृत्त हुए ।^१ समवायाग के छत्तीसवें समवाय में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है ।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इइ एस चम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं' जैसे उल्लेखों से यह प्रमाणित नहीं होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित हैं । निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं । अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही हैं, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के हैं—

१८।२४	३६।२६८
इइ पाउकरे बुद्धे	इइ पाउकरे बुद्धे
नायए परिनिव्वुडे ।	नायए परिनिव्वुए ।
विज्जावरणसंपन्ने	छत्तीसं उत्तरज्झाए
सच्च सच्चपरक्कमे ॥	भवसिद्धीयसंमए ॥

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए । वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिवृत्त (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है ।^२ इस अर्थ के संदर्भ में जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढ़ते हैं, तब उससे यह फलित नहीं होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनों का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

महावीर की परम्परा में जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेशना के आधार पर होता है । इसी पारंपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के संकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक में किया है ।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हो, किन्तु उसमें भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से संगुम्पन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है ।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नहीं हैं और भगवान् महावीर के समय में भी नवीन नहीं थे । उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे ।

१—समवायाग, समवाय ५५ ।

२—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४४४ :

इत्येवंकथं 'पाउकरे'ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्ध' अवगततत्त्वः सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीतः क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावान्महावीर एव, 'परिनिवृत्तः' कषायानलविध्यापनात्समन्ताच्छीतीभूतः ।

किन्तु भगवान् महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियों के संदर्भ में उनकी जो अभिव्यक्ति दी, वह उनका नवीन रूप है। भगवान् महावीर के समय की सामाजिक परिस्थिति में अहिंसा और अपरिग्रह के मुख्य बाधक-तत्त्व ये थे—

(१) दास-प्रथा

(४) अमित संग्रह

(२) जातिवाद

(५) दण्ड का उच्छृंखल प्रयोग

(३) पशुबलि

(६) अनियंत्रित भोग

इन बाधक-तत्त्वों के निरसन के लिए भगवान् महावीर ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया उसका हृदयशाही संकलन उत्तराध्ययन में हुआ है।

पार्श्वनाथ के समय में चार महाव्रत थे और सामायिक चारित्र था। भगवान् महावीर ने महाव्रत पाँच किए और छेदोपस्थापनीय चारित्र की व्यवस्था की। छेदोप-स्थापनीय का अर्थ है—विभाग-युक्त चारित्र।

पूज्यपाद (वि० ५-६ शताब्दी) ने लिखा है - “भगवान् महावीर ने चारित्र-धर्म के तेरह विभाग किए—पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ। ये विभाग पार्श्वनाथ के समय में नहीं थे।”^१

उत्तराध्ययन में इनका सुव्यवस्थित प्रतिपादन हुआ है। षड्जीवनिकायवाद महावीर के तत्त्ववाद का प्रधान अंग है। जीव विषयक इतना व्यवस्थित और विस्तृत प्रतिपादन अन्य किसी धर्म-परम्परा में नहीं था। आचार्य सिद्धसेन ने इसे भगवान् महावीर की सर्वज्ञता की कसौटी के रूप में प्रस्तुत किया है।^२

उत्तराध्ययन में जीव-विभक्ति का भी एक सुन्दर प्रकरण है। अजीव-विभक्ति, कर्मवाद, षड्द्रव्य, नव तत्त्व आदि-आदि भी समुचित रूपेण प्रतिपादित हुए हैं।

यद्यपि उत्तराध्ययन को धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत रखा गया है, किन्तु अपने वर्तमान आकार में वह चारों अनुयोगों का संगम है। इस दृष्टि से इसे महावीर-वाणी (आगमो) का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१-चारित्र भक्ति, ७ :

तिव्वः सत्तमगुस्यस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः

पंचेयादिसमाश्रयाः समितय. पंचव्रतानीत्यपि ।

चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न बिष्टं परै-

राचारं परमेष्ठिनो जिनमतेवीरान् नमासो वयम् ॥

२-प्रथम द्वात्रिंशिका, श्लोक १३ .

य एव षड्जीवनिकायविस्तरं परैरनालीढपयस्त्वयोदित. ।

अनेन सर्वज्ञपरीक्षणक्षमा—स्त्वयि प्रसादोदयसोत्सवाः स्थिता. ॥

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन हैं। यह संकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक संकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन संस्करण देवर्द्धिगणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनों के नाम समवायाग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते हैं। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

समवायाग ^१	उत्तराध्ययन निर्युक्ति ^२
१. विणयसुयं	विणयसुयं
२. परीसह	परीसह
३. चाउरंगिज्जं	चउरंगिज्जं
४. असंखयं	असंखयं
५. अकाममरणिज्जं	अकाममरणं
६. पुरिसविज्जा	नियंठ (खुट्ठागनियंठ ^३)
७. उरविमज्जं	ओरबभं
८. काविलिज्जं	काविलिज्जं
९. नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१०. दुमपत्तयं	दुमपत्तयं
११. बहुसुयपूजा	बहुसुयपुज्जं
१२. हरिएसिज्जं	हरिएस
१३. चित्तसंभूय	चित्तसंभूइ
१४. उसुकारिज्जं	उसुआरिज्जं

१—समवायाग, समवाय ३६ ।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७ ।

३—वही, गाथा २४३ :

एसा खलु निज्जुत्ती खुट्ठागनियंठसुत्तस्स ।

१५. सभिकखुगं
१६. समाहिठाणाई
१७. पावसमणिज्जं
१८. संजइज्जं
१९. मियचारिता
२०. अणाहपव्वज्जा
२१. समुद्धपालिज्जं
२२. रह्नेमिज्जं
२३. गोयमकेसिज्जं
२४. समितीओ
२५. जन्ततिज्जं
२६. सामायारी
२७. खलु किज्जं
२८. भोक्खमगगई
२९. अप्पमाओ
३०. तवोमल्लो
३१. चरणविही
३२. पमायठाणाई
३३. कम्मपगडी
३४. लेसज्जम्भयणं
३५. अणगारममो
३६. जीवाजीवविभत्ती

- सभिकखु
- समाहिठाणं
- पावसमणिज्जं
- संजइज्जं
- मियचारिया
- नियंठिज्जं (महानियंठ^१)
- समुद्धपालिज्जं
- रह्नेमीयं
- केसिगोयमिज्जं
- समिइओ
- जन्तइज्जं
- सामायारी
- खलु किज्जं
- भुक्खगई
- अप्पमाओ
- तव
- चरण
- पमायठाणं
- कम्मप्पयडी
- लेसा
- अणगारममो
- जीवाजीवविभत्ती

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४२२ :

एसा खलु निज्जुत्ती महानियंठस्स सुत्तस्स ।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अध्ययनो का विषय-वर्णन इस प्रकार है^१

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१	४८		विनय
२	४६	३	प्राप्त-कष्ट-सहन का विधान ।
३	२०		चार दुर्लभ अंगो का प्रतिपादन ।
४	१३		प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन ।
५	३२		भरण-विभक्ति—अकाम और सकाम भरण ।
६	१७		विद्या और आचरण ।

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७ :

पदमे	विणओ	बीए	परिसहा	दुल्लहंगया	तइय ।
अहिगारो	य	चउत्थे	होइ	पमायप्पमाएत्ति	॥
भरणविभत्ती	पुण	पंचमम्मि	विज्जा	चरणं च	छट्ठअज्जयणे ।
रसगेहिपरिच्चाओ	सत्तमे	अट्ठमि		अलामे	॥
निककंपया	य	नवमे	दसमे	अणुसासणोवमा	मणिया ।
इक्कारसमे		पूया	तवरिद्धी	चेव	वारसमे ॥
तेरसमे	अ	नियानं	अनियानं	चेव	होइ चउदसमे ।
मिक्खुगुणा	पन्नरसे	सोलसमे		वंसगुत्तीओ	॥
पावाण	वज्जणा	खलु	सत्तरसे	भोगिडिद्विजहणद्वारे	।
एगुणि	अप्परिकम्मे	अणाहया	चेव	वीसइमे	॥
चरिया	य	विचित्ता	इक्कवीसि	वावीसिमे	थिरं चरणं ।
तेवीसइमे	धम्मो	चउवीसइमे	य	समिइओ	॥
वंसगुण	पन्नवीसे	सामायारी	य	होइ	छत्तीसे ।
सत्तावीसे	असट्ठया	अट्ठावीसे	य	भुक्खगई	॥
एगुणतीस	आवस्सगप्पमाओ	तवो	अ	होइ	तीसइमे ।
चरणं	च	इक्कतीसे	वत्तीसि		पमायठाणाइं ॥
तेत्तीसइमे	कम्मं	चउत्तीसइमे	य	हुंति	त्तेसाओ ।
मिक्खुगुणा	पणतीसे	जीवाजीवा	य	छरीसे	॥
उत्तरज्जयणाणेसो		पिडत्थो	वण्णिओ	समासेणं	।
इत्तो	इक्किकं	पुण	अज्जयणं	कित्तइस्सामि	॥

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
७	३०		रस-गृद्धि का परित्याग ।
८	२०		लाभ और लोभ के योग का प्रतिपादन ।
९	६२		संयम में निष्प्रकम्प भाव ।
१०	३७		अनुशासन ।
११	३२		बहुश्रुत की पूजा ।
१२	४७		तप का ऐश्वर्य ।
१३	३५		निदान—भोग-संकल्प ।
१४	५३		अनिदान—भोग-असंकल्प ।
१५	१६		भिक्षु के गुण ।
१६	१७	१२	ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ ।
१७	२१		पाप-वर्जन ।
१८	५३		भोग और ऋद्धि का त्याग ।
१९	९८		अपरिकर्म—देहाभ्यास का परित्याग ।
२०	६०		अनायता ।
२१	२४		विचित्र चर्या ।
२२	४९		चरण का स्थिरीकरण ।
२३	८९		धर्म—चातुर्याम और पंचयाम ।
२४	२७		समितियाँ-गुप्तियाँ ।
२५	४३		ब्राह्मण के गुण ।
२६	५२		सामाचारी ।
२७	१७		अशठता ।
२८	३६		मोक्ष-गति ।
२९		७४	आवश्यक में अप्रमाद ।
३०	३७		तप ।
३१	२१		चारित्र ।
३२	१११		प्रमाद-स्थान ।
३३	२५		कर्म ।
३४	६१		लेश्या ।
३५	२१		भिक्षु के गुण ।
३६	२६८		जीव और अजीव का प्रतिपादन ।

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के संक्षिप्त संकेत प्रस्तुत किए हैं। इनसे एक स्थूल-सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार में जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विशद है। भगवान् पार्श्व और भगवान् महावीर की धर्म-देशनाओं का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण संस्कृति के मतवादों का संवादात्मक शैली में इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमों में नहीं है। इसमें धर्म-कथाओं, आध्यात्मिक-उपदेशों तथा दार्शनिक-सिद्धान्तों का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१६ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक शाखाएँ हैं। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी हैं। प्रस्तुत सूत्र में चार कथाएँ ऐसी हैं, जो किंचित् रूपान्तर के साथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य में मिलती हैं। जैसे—

उत्तराध्ययन	महाभारत	जातक
१ हरिकेश बल (अ० १२)	×	मार्तग (सं० ४६७)
२. चित्त-संभूत (अ० १३)	×	चित्तसंभूत (सं० ४६८)
३ इषुकारीय (अ० १४)	शान्तिपर्व, अ० १७५ शान्तिपर्व, अ० २७७	हस्तिपाल (सं० ५०६)
४ नमि-प्रव्रज्या (अ० ६)	शान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६	महाजन (सं० ५३६)

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धों द्वारा रचित प्रकरण हजारों की संख्या में प्रचलित थे। उन्होंने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र संवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन गत पिता-पुत्र संवाद से करने पर दोनों का जोत एक ही परम्परा में प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अपेक्षा प्राचीन आगमों में कुछ विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। इसके अनेक स्थलों में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग है। अनेक स्थलों में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। संस्कृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग प्राप्त होते हैं। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विपुल मात्रा में मिलता है। इसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त है।

विभक्ति-विहीन शब्द-प्रयोग :

बुद्धपुत्त (११७)

भाय (११३६)

कल्लाण (११३६)

भिक्षु (२१२२)

तेल्ल (१४११८)

जीविय (३२१२०)

ह्रस्व का दीर्घीकरण :

समाययन्ती (४१२)

परत्या (४१५)

दुक्खपउराए (८११)

जार्डमय (१२१५)

अन्नमन्नमणूरत्ता (१३१५)

अग्गमाहिंसी (१६११)

दीर्घ का ह्रस्वीकरण :

पक्खिणि (१४१४१)

जिया (२२११६)

पमाणि (२६१२७)

संस्कृत-तुल्य सधि-प्रयोग :

सुइरादवि ७१८

प्राकृत व्याकरण से असिद्ध सधि-प्रयोग :

उवसमो + अभिघारण = उवसमाभिघारण (२१२१)

बुद्धेहि + आयरियं = बुद्धेहायरियं (११४२)

विप्परियासं + उवेइ = विप्परियासुवेइ (२०१४६)

विभक्ति-व्यत्यय :

आणुपुण्वि (१११)—यहाँ तृतीया के अर्थ में द्वितीया विभक्ति है।

अदीणमणसो (२१३)—यहाँ प्रथमा के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।

सन्वदुक्खणं (८१८) —यहाँ तृतीया के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।

चोद्दसहिं ठाणेहिं (१११६)—यहाँ सप्तमी के अर्थ में तृतीया विभक्ति है।

मुहाजोवी (२५१२७)—यहाँ द्वितीया के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है।

चरमाण (३०१२०)—यहाँ षष्ठी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है।

वचन-व्यत्यय :

विहन्तइ (२।६)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर बहुवचन है ।

तं (३६।४८)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

परित्तसंसारी (३६।२६०)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

अलाक्षणिक :

फरसु+आईहि = फरसुमाईहि ११।६६

मुट्टि+आईहि = मुट्टिमाईहि ११।६७

असजत् = संजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्यायके (३।१८)—यहाँ 'अप्य' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नहीं होता ।

यहाँ यह शब्द निषेधार्थ में प्रयुक्त है ।

सुदिट्ठं (१२।३८) ; सुजट्ठं (१२।४०)—इन दोनों में समान प्रयोग चाहिए ।

संभव है 'सुदिट्ठं' के स्थान में लिपि-दोष से 'सुजट्ठं' हो गया हो ।

भवताम् = भवयाणं (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भाषा प्राकृत है । भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में सात प्राकृतों का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाल्हीका और दाक्षिणात्या ।^१

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८ :

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी ।

वाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषाः प्रकीर्तिताः ॥

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैंशाची, चूलिका-पैंशाचिक और अपभ्रंश—इन छह प्राकृतों का उल्लेख किया है ।

‘षड्भाषा चन्द्रिका’ में भी प्राकृत के ये ही छह विभाग मिलते हैं । वहाँ महाराष्ट्र की भाषा को प्राकृत, शूरसेन (मथुरा के आसपास के प्रदेश) की भाषा को शौरसेनी, मगध की भाषा को मागधी, पिशाच (पाण्ड्य, केकय आदि देशों) की भाषा को पैंशाची और चूलिका पैंशाची तथा आभीर आदि देशों की भाषा को अपभ्रंश कहा गया है^१ ।

भगवान् महावीर अर्द्धमागधी भाषा में बोलते थे । आगमों में स्थान-स्थान पर यही उल्लेख मिलता है^२ । प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी और मागधी रही है ।

१-षड्भाषाचन्द्रिका, उपोद्घात :

षड्विधा सा प्राकृती च शौरसेनी च मागधी ।
 पैंशाची चूलिकापैंशाच्यपभ्रंश इति क्रमात् ॥
 तत्र तु प्राकृतं नाम महाराष्ट्रोद्भवं विदुः ।
 शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति शीयते ॥
 मगधोत्पन्नभाषां तां मागधी संप्रचक्षते ।
 पिशाचदेशनियतं पैंशाचीद्वितयं भवेत् ॥
 पाण्ड्यकेकयवाल्हीक सिंह नेपाल कुन्तलाः ।
 सुघोष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजकास्तथा ॥
 एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् ।
 पिशाचजातमथवा पैंशाचीद्वयमुच्यते ॥
 अपभ्रंशस्तु भाषा स्यादामीरादिगिरां चयः ।
 ॥

२-(क) औपपातिक, सूत्र ३४ :

तए णं समणं भगवं महावीरे कूणिअस्स मंभासारपुत्तस्स.....
 अर्द्धमागहाए भासाए भासति... ..

(ख) समवायार्थ, समवाय ३४ :

भगवं च णं अर्द्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ (२२) ।

क्षेत्र को दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आधे मगध मे अर्थात् मगध के पश्चिमी भाग मे व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ हैं—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'ष', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी मे प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कही-कही मिलती है और तीसरी प्रायः नहीं मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारतसे हट कर पश्चिमी भारत मे विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी में लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपों में महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—“महाराष्ट्राश्रयां, प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः”^१।

फिर भी जैन आचार्यों को आगमों की मूल भाषा की विस्मृति नहीं हुई। वे समय के विविध परिवर्तनों में भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे हैं कि आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रजापता में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।^२ स्थानांग^३ और अनुयोगद्वार^४ मे संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या में संस्कृत और जोड़ा है।^५ कुछ आचार्य पूर्वो की भाषा भी संस्कृत मानते हैं।^६ इन सब तथ्यों के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नहीं कर सकते कि प्राचीन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७ : भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए नासेत्ति।

३—स्थानांग ७।३।५५३, गाथा २८ :

सकता पागता चेव, बुहा भणितीओ आहिया।

सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्या इसिमासिता ॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सकथा पायया चेव, भणिईओ होति दोण्णि वा।

सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्या इसिमासिता ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हरिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८० :

शिष्टाः-सर्वातिशयसम्पन्ना गणधरादयःतेषां भाषा संस्कृताऽर्द्धमागधिकादिका च।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, वृद्धवाक्सूरि चरित, श्लोक ११३ :

चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन्।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तराध्ययन की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है। अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री का अन्तर निम्न प्रकार है

अर्द्धमागधी

असंयुक्त 'क' को 'ग' या 'त' होता है—

कुमारगा (१४।११)

लोगो (१४।२२)

असंयुक्त 'ग' का लुक् नहीं होता—

कामभोगेमु (१४।६)

सगरो (१८।३५)

असंयुक्त 'च' और 'ज' के तकार बहुल प्रयोग मिलते हैं—

तेगिच्छं (२।३३)

वितिगिच्छा (१६। सू० ४)

असंयुक्त 'त' का प्रायः लुक् नहीं होता—

अतरं (८।६)

असंयुक्त 'द' का प्रायः लुक् नहीं होता और कहीं-कहीं उसको 'त' हो जाता है—

उदंग (७।२३)

असंयुक्त 'प' को प्रायः 'ब' हो जाता है—

महादीवो (२३।६६)

असंयुक्त 'य' का प्रायः लुक् नहीं होता और कहीं-कहीं उसको 'त' हो जाता है—

उवाया (३२।६)

असंयुक्त 'व' का प्रायः लुक् नहीं होता और कहीं-कहीं उसको 'त' हो जाता है—

पवरे (११।१६)

दिवायरे (११।२४)

प्रथमा के एकवचन में 'एकार' होता है—

कयरे (१२।६)

धीरे (१५।३)

महाराष्ट्री

'क' का प्रायः लुक् होता है—

अज्झावयाणं (१२।१६)

'ग' का प्रायः लुक् होता है—

भोए (१४।३७)

'च' और 'ज' का प्रायः लुक् होता है—

समुवाय (१४।३७)

वीयाडं (१२।१२)

'त' का प्रायः लुक् होता है—

पुरोहिंयं (१४।३७)

'द' का प्रायः लुक् होता है—

विड्याणि (१२।१३)

'प' का प्रायः लुक् होता है—

तउय (३६।७३)

'य' का प्रायः लुक् होता है—

काए (३६।८२)

आउ (७।१०)

'व' का प्रायः लुक् होता है—

चेय (२४।१६)

प्रथमा के एकवचन में 'ओकार' होता है—

मणगुत्तो (१२।३)

शब्द-भेद—

अर्द्धमागधी

महाराष्ट्री

कम्मुणा

कम्मेण

वेयसां (२५।१६)

वेयाणं

विसालिसेहिं (३।१४)

विसरिसेहिं

दुवालसंगं (२४।३)

बारसंगं (२३।७)

गेही (६।४)

गिद्धी

सोही (३।१२)

सुद्धी

तेगिच्छं (२।३३)

चीइच्छं

मिलेक्खुया (१०।१६)

मिलिच्छा, मिच्छा

माहणा (१२।१३)

बम्हणो (२५।१९)

पडुप्पन् (२६।सू०१३)

पच्चुप्पन् (७।६)

उत्तराध्ययन में अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि से इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमों में उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके सरस कथानक, सरस संवाद और सरस रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अव्यापन और विशाल व्याख्या-ग्रन्थ हैं। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के हैं, उतने अन्य किसी आगम के नहीं हैं।

१-निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्रांत व्याख्या-ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन है। इसमें ५५७ गाथाएँ हैं। यह लघु कृति है, किन्तु इसमें अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध हैं। इसलिये यह उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों की आधार-भित्ति रही है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० छठी शताब्दी) हैं।

२-चूर्णि :

यह प्राकृत-संस्कृत में लिखी गई उत्तराध्ययन की महत्वपूर्ण व्याख्या है। इसमें अन्तिम अठारह अध्ययनों का व्याख्यान बहुत ही संक्षिप्त है। ग्रन्थ की प्रशस्ति में ग्रन्थकार

ने अपना पन्चिय 'गोपालिक महत्तर गिय्य' के रूप में दिया है।^१ इनका अन्तित्व-काल विक्रम की सानवीं सताब्दी है।

३—गिज्यहिता (बृहद्बृत्ति या पाड्य-टीका) :

उत्तराध्ययन की संस्कृत-व्याख्याओं में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसमें अवतरणात्मक कथाएँ प्राकृत में गृहीत हैं। बृहद्बृत्तिकार ने अनेक बार 'वृद्धसम्प्रदाया-दवसेयः'^२ या 'सम्प्रदायादवसेयः'^३ लिख कर उनका अवतरण किया है।

बृहद्बृत्तिकार के नामने चूर्णि के अतिरिक्त और भी कोई प्राचीन व्याख्या गृही है, ऐसा प्रतीत होता है। नौवें अध्ययन के अट्टाईसवें श्लोक की व्याख्या में—'तथा च वृद्धा-लोमहाग प्राणहारा इति'^४ ऐसा उल्लेख मिलता है। यह वाक्य चूर्णि का नहीं है। उनमें 'लोमहार' का अर्थ—'लोमहारा नाम पेष्टुणमोसगा'^५—इन शब्दों में है।

इसने यह प्रमाणित होना है कि बृहद्बृत्ति में उद्धृत वाक्य चूर्णि से अतिरिक्त किसी दूसरी प्राचीन व्याख्या का है।

बृहद्बृत्तिकार ने 'वृद्ध' शब्द के द्वारा चूर्णिकार का भी उल्लेख किया है—'वृद्धान्तु व्याचक्षते-लोलुप्यमाणं ति लालयमानं—भरणपोषणकुलमन्ताणेमु य तुवमे भविस्सह ति'^६।

मिलाइए—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २२३ : 'लोलुप्यमाणं लोलुप्यमाणं भरणपोषण-कुलमन्ताणेमु य तुवमे भविस्सह'ति।'

ये बृहद्बृत्तिकार हैं वादी-वेनाल गान्ति मूरि। इनका अन्तित्व-काल विक्रम की ११वीं सताब्दी है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

वाणिजकुलसंभूतो, कोटियगणिओ उ वयरसाहीतो।

गोवालियमहत्तरओ, विक्खाओ आसि लोपमि ॥१॥

ससमयपरसमयविऊ, ओयस्सी दित्तिमं मुगंभीरो।

मीसगणमंपरिबुडो, चक्खाणरत्तिण्णिओ आसी ॥२॥

तेसि सीसेण इमं उत्तरकयणाण चुप्पिण्णं तु।

रइयं अणुगहत्वं, सीसागं मंदबुद्धिणं ॥३॥

२—उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र १४५।

३—वही, पत्र १२५।

४—वही, पत्र ३१२।

५—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १८३।

६—उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ४००।

४-सुखबोधा :

यह बृहद्वृत्ति से समुद्धृत लघु वृत्ति है। इसके कर्त्ता नेमिचन्द्र सूरि है। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस वृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२६ है।

५-सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय है। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७६ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सारे के सारे प्रायः इन्हीं मुख्य व्याख्या-ग्रन्थों के उपजीवी हैं। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्त्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं^१

६-अवचूरि	ज्ञानसागर	वि० सं० १६४१
७-वृत्ति	कमल संयम	,, १५५४
८-दीपिका	उदयसागर	,, १५४६
९-लघुवृत्ति	खरतर तपोरत्नवाचक	,, १५५०
१०-वृत्ति	कीर्तिवल्लभ	,, १५५२
११-वृत्ति	विनयहंस	,, १५६७-८१
१२-टीका	अजितदेव सूरि	,, १६२८
१३-दीपिका	हर्षकुल	१६ वीं शताब्दी
१४-अवचूरि	अजितदेव सूरि	
१५-टीका-दीपिका	माणिक्यशेखर सूरि	
१६-दीपिका	लक्ष्मीवल्लभ	१८ वीं शताब्दी
१७-वृत्ति-टीका	हर्षनन्दन	वि० सं० १७११
१८-वृत्ति	शान्तिभद्राचार्य	
१९-टीका	मुनिचन्द्र सूरि	
२०-अवचूरि	ज्ञानशीलगणी	
२१-अवचूरि		वि० सं० १४६१
२२-बालावबोध	समरचन्द्र	
२३-बालावबोध	कमललाल	१६ वीं शताब्दी
२४-बालावबोध	मानविजय	वि० सं० १७४१

१-जैनसारस्वती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) में प्रकाशित श्री अमरचन्द्रजी नाहटा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आधृत।

इनके अतिरिक्त कुछ वृत्ति-टीकाएँ, दीपिकाएँ तथा अवचूरियों भी उपलब्ध होती हैं। कई में कर्त्ता का नाम नहीं है तो कई में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। वे ये हैं—

व्याख्या-ग्रन्थ	कर्त्ता	रचना-काल
मकरन्द टीका		वि० सं० १७५०
दीपिका		,, १६३७,
वृत्ति-दीपिका		
दीपिका		,, १६४३
वृत्ति		
अक्षरार्थ लवलेश		
टब्बा	आदिचन्द्र या रायचन्द्र	
टब्बा	पार्श्वचन्द्र, धर्मसिंह	१८ वीं शताब्दी
वृत्ति	मतिकीर्त्ति के शिष्य	
भाषा पद्यसार	ब्रह्म ऋषि	वि० सं० १५६६

तेरापन्थ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्झयाचार्य (वि० सं० १८६०-१९३८) ने इस सूत्र के उनतीस अध्यायनों पर राजस्थानी भाषा में पद्य-बद्ध 'जोड' की रचना की। ग्रन्थ-तन्त्र, उन्होंने विषय को स्पष्ट करने के लिए वार्तिक भी लिखे हैं।

२३ : उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में दशवैकालिक और उत्तराव्ययन का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। उनके छन्द आदि अनेक विषयों पर यहाँ कोई विमर्श नहीं किया गया है। इनका पर्यालोचन 'दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन' तथा, 'उत्तराव्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन' में किया जा चुका है। इसलिए उनके अवलोकन की सूचना के साथ-साथ मैं इस विषय को सम्पन्न कर रहा हूँ। -

जाँठिया-भवन

बीदासर -

१ अगस्त, १९६६

आचार्य तुलसी

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

१. अनुयोगद्वार (वि० सं० २०१६) ले० आर्यरक्षित सूरि
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई)
२. आगम अद्भुतरी ले० अभयदेव सूरि
३. आगम पुरुषनुं रहस्य, श्री (वि०सं० २०१०) ले० मुनि अभयसागर
(प्र० श्री गोडजी मित्र मंडल, बम्बई)
४. आगमाधिकार ले० श्रीमज्जयाचार्य
(अप्रकाशित)
५. आचाराग सूत्रम् (वि० सं० २००७) अनु० मुनि सौभाग्यमलजी
(प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन)
६. आवश्यक निर्युक्ति (वि० सं० १९८४) ले० भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)
७. आवश्यकवृत्ति (वि० सं० १९८८) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)
८. उत्तराध्ययन चूर्णि (वि० सं० १९८६) ले० जिनदासगणि महत्तर
(प्र० श्री ऋषभदेव केसरीमलजी
श्री श्वे० संस्था, इन्दौर)
९. उत्तराध्ययन निर्युक्ति भा० १-३ (वि०सं० १९७२) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)
१०. उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति (वि०सं० १९७२) ले० वेदालवादी शान्ति सूरि
(भा० १-३)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)
११. उत्तराध्ययन सूत्र एकसमीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(अप्रकाशित)
१२. उत्तराध्ययन सूत्र, दो (२ भाग) (सन् १९२२) सं० जार्ज शार्पेन्टियर
(प्र० उप्पसला विश्वविद्यालय)

१३. औपपातिक सूत्रम् (सवृत्ति) (वि०सं० १९९४) सं० मुनि हेमसागर
(प्र० पं० भूरालाल कालीदास)
१४. ओघनिर्युक्ति, श्रीमती (वृत्ति सहित) (वि०सं० १९७५) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति)
१५. अगपण्णात्ति
(प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाल)
१६. कल्पसूत्र (वि० सं० २००८) ले० आर्य भद्रबाहु स्वामी
(प्र० साराभाई मणिकलाल नवाब, अहमदाबाद) सं० मुनि पुण्यविजयजी
१७. कषायपाहुड (भाग-१-६)(वि०सं० २००० से २०२२) ले० भगवद् गुणधराचार्य
(प्र० भारतीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा)
१८. काव्यादर्श (सन् १९२४) ले० दंडी
(प्र० ओरियन्टल बुक्स सप्लाइ ऐजेन्सी, पूना)
१९. केनीनिकल लिटरेचर ऑफ टी जैन्स ले० हीरालाल रसिकदास
(प्र० ही०रा० संकडीसेरी, गोपीपुरा, सूरत)
२०. गाथा सहस्री - ले० समयसुन्दर गणी
२१. गोम्मटसार (जीवकाड) (सन् १९२७) ले० नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
(प्र० सेन्द्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, अनु० सं० जे० एल० जैनी
लखनऊ) एम० ए०
२२. चारित्रमर्क (क्रियाकलाप में मुद्रित) ले० पूजपाद स्वामी
२३. जयधवल (६ भाग) (वि०सं० २००० से २०२२) ले० बीरसेनाचार्य
(प्र० भारत दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा) सं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री,
सं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री
२४. जातक (६ खंड) (प्रथम संस्करण) अनु० भदन्त आनन्द कोस्त्यायन
(प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)
२५. जैनधर्मवरस्तोत्र (स्वोपज्ञवृत्ति सहित) (वि० सं० १९८९) ले० भावप्रभ सूरि
(प्र० जल्हेरी जीवनचन्द्र साकरचन्द्र)
२६. जैन मारत्ती (मासिक) (वर्ष ७ अंक ३३)
(प्र० जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता-१)

२७. तत्त्वार्थवार्त्तिक (राजवार्त्तिक) (वि०सं०२०००) ले० अकलंकदेव
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)
२८. तत्त्वार्थवृत्ति (श्रुतसागरीय) (वि०सं०२०००) ले० श्रुतसागर
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी) सं० प्रो० महेन्द्रकुमार जैन
२९. तत्त्वार्थवृत्ति (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९९२) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) सं० आनन्दसागर सूरि
३०. दशवेकालिय (भाग २) (वि०सं०२०२०) वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(प्र० श्री जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता)
३१. दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(यन्त्रस्थ)
३२. दशवैकालिक चूर्णि (अगस्त्य) ले० स्थविर अगस्त्यसिंह
(अप्रकाशित)
३३. दशवैकालिक चूर्णि (जिनदास) (वि०सं०१९८९) ले० जिनदास महत्तर
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
३४. दशवैकालिक टोपिका (वि०नं०१९७५) ले० समयसुन्दर उपाध्याय
(प्र० श्री जिनयश सूरिजी ग्रन्थमाला समिति, खभात)
३५. दशवैकालिक निर्युक्ति (वि०सं०१९७४) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
३६. दशवैकालिक वृत्ति (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९७४) ले० हरिभद्र
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
३७. दसवेयालिय सुच (सन् १९३२) ले० डॉ० बाल्यर क्षुत्रिग
(प्र० सेठ आनन्दजी कल्याणजी, अहमदाबाद)
३८. दशवैकालिक सूत्र, २ स्टडी, दी (सन् १९३३) ले० प्रो०पट्टवर्द्धन एम०ए०
(प्र० विर्लिंगटन कालेज, संगली)
३९. दशश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति (वि०सं०२०११) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० पण्पास मणिविजयजी गणि ग्रन्थमाला) सं० विजय कुमुदसूरीवरजी
४०. देशीनाममाळा (द्वितीय संस्करण) (सन् १९३८) ले० आचार्य हेमचन्द्र
(प्र० बम्बई संस्कृत सीरीज)

४१. धवला (षट्खण्डागम) (भा० १-६) (वि० सं० १९६६ से २००६)
(प्र० जैन साहित्योद्धार कार्यालय, अमरावती) ले० बीरसेनाचार्य
सं० हीरालाल जैन
४२. नन्दी चूर्णि
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
४३. नन्दी वृत्ति (वि० सं० १९८०) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति)
४४. नन्दी वृत्ति (वि० सं० १९८४) ले० हरिमद्र
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
४५. नन्दी सूक्त (सन् १९५८) सं० सुबोध मुनि
(प्र० सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी, आगरा)
४६. नन्दी सूत्रम् श्रीमद् (चूर्णि और हारिमद्रीय वृत्ति सहित) सं० विजयदास सूरि
(वि० सं० १९८८)
(प्र० श्रीमद् रूपचन्द्रजी नवलमलजी, इन्दौर)
४७. नाट्यशास्त्र (सन् १९३६) ले० भरत मुनि
(प्र० गायकवाड ओरियंटल सीरीज)
४८. प्रथम द्वान्त्रिंशिका ले० सिद्धसेन
४९. प्रभावकचरित (१९६७) ले० श्री प्रभाचन्द्र आचार्य
(प्र० सिंघी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद) सं० मुनि जिनविजय
५०. प्रज्ञापना (वि० सं० १९७४) ले० श्यामाचार्य
(प्र० आगमोदय समिति, भेसाणा)
५१. पचकल्प भाष्य (वृहद्) ले० संघदास क्षमाश्रमण
५२. पचकल्प चूर्णि
५३. प्राकृत भाषाओ का व्याकरण (वि० सं० २०१५) ले० आर० पिशल
(प्र० विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना) अनु० डॉ० हेमचन्द्र जोशी
५४. पातजल महाभाष्य (सन् १९५१) ले० पतजलि
(प्र० निर्णयसागर, वम्बई) सं० भार्गव शास्त्री
५५. पिण्ड निर्युक्ति (वि० सं० २०१८) ले० भद्रबाहु स्वामी
(प्र० शासन कण्टकोद्धारक ज्ञानमंदिर,
भावनगर (सौराष्ट्र) अनु० श्री हंससागरजी महाराज

- ५६ बृहत्कल्प सूत्रम् (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ से १९३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) सं० पुण्यविजयजी
५७. महाभारत (प्रथम संस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)
- ५८ मार्कण्डेय पुराण (वि०सं० २०१८) ले० कृष्ण द्वैपायन
(प्र० गुल्मडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)
- ५९ मूलाचार (वि०सं० २४८४) ले० बटुकेर आचार्य
(प्र० सूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फुडकुले शास्त्री
फलटन, जि० उत्तरसतारा)
६०. मूलाचार (वि०सं० १९७७) ले० बटुकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) सं० पं० पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
सं० पं० गजाधरलाल
- ६१ मूलाधना (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि
६२. रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ (वि०सं० २००१) सं० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामंडी, आगरा) डॉ० हरिश्चंकर शर्मा
६३. रिट्नीजियन द जैन, ल अनु० डॉ० ग्यारीनो
६४. व्यवहारमाध्य (वि०सं० १९६४) संशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)
६५. विचारलेख (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि
६६. वैशेषिक दर्शन (सन् १९५४, द्वितीय संस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)
६७. स्थानाग (द्वितीय संस्करण, सं० १९५४)
(प्र० भाणिकचन्द चुब्रीलाल, अहमदाबाद)
६८. समवायाग सूत्रम् (वि०सं० १९७४)
(प्र० आगमोदय समिति)
६९. सामाचारोदात्तक (वि०सं० १९६६) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० जवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत, बम्बई)
७०. सिद्धान्तस्तवज्ञोत ले० जिनप्रभ सूरि

७१ सूत्रकृताग (सं० १९७३)
(प० आगमोदय समिति)

७२ षड्भाषाचन्द्रिका

७३. हरिवंश पुराण (दो भाग) (ग्रन्थांक ३२, ३३) ले० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) सं० पं० दरबारीलाल

७४. हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर (भाग-२) (सन् १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) ले० मोरी विन्टरनिस्ज, पी-एच०डी०

७५. हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर
ऑफ दी जैन्स, ए (सन् १९४१) ले० एच०आर०कापडिया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया, गोपीपुरा, सूरत)

७६. हेमशब्दानुशासन (सं १९६२) ले० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० सेठ मनसुख भाई पोरवाह डायमंड जुबली
प्रिन्टिंग प्रेस, सालापोस दरवाजा, अहमदाबाद)

७७. श्रमण मगवान् महावीर (वि०सं० १९६८) ले० पं० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० नास्त्रसंग्रह समिति, जालोर)

७८. श्रावक विधि ले० धनपाल

दसवेआलियं : विषय-सूची

१. द्रुमपुष्पिक्या	पृ० १
व्रम-पदं	१		ममर-वरिया-पदं		२-५
२ साम्मण्णपुव्वयं	२
काम-पदं	१		राईमई-पदं		६-१०
चाई-पद	२-३		निकखेव-पदं		११
मणो-निगाह-पदं	४-५				
३ खुड्डियायारकट्टा	४
उक्खेव-पदं	१		उज्जवरिया-पदं		१२
अणायार-पदं	२-१०		निकखेव पदं		१३-१५
निगंथ-पदं	११				
४ छज्जीवणिया	६
उक्खेव-पदं	सू० १-३		वणस्सइ-पदं		सू० २२
जीव-पदं	सू० ४-१०		तस-पदं		सू० २३
महव्वय-पद	सू० ११-१७		सज्जम-पदं		१-६
पुव्वी-पदं	सू० १८		नाण-पदं		१०-१३
आउ-पद	सू० १९		आरोह-पदं		१४-२५
तेउ-पद	सू० २०		निकखेव-पदं		२६-२९
वाउ-पद	सू० २१				
५ पिंडेसणा (उ० १)	१८
उक्खेव-पद	१		अणायत्तनं		६-११
गवेसणा-पदं—			गमणं		१२-२२
गमण	२-८		दिट्ठि-संजमो		२३

मित-भूमि	२४-२६	गहणेसणा-पद—	
गहणेसणा-पदं		सत्त-दोसा	५५-५६
छड्डियं	२७-२८	उम्मीस	५७-५८
दायगो	२९	निक्खित्तं	५९-६४
सहडं	३०-३१	सकमो	६५-६६
पुराकम्मं	३२-३४	मालोहडं	६७-६९
पच्छाकम्मं	३५-३६	सचित्त	७०-७२
अणिसट्ठ	३७-३८	बहु-उज्झियं	७३-७५
गुन्विणी	३९	अपरिणंत	७६
दायगा	४०-४३	अर्चविल	७७-८१
संकिय	४४	परिभोगेसणा-पदं—	
उब्भिन्न	४५-४६	बहि-भोयणं	८२-८६
दाणट्ठ	४७-४८	ठाण-भोयण	८७
पुण्णट्ठं	४९-५०	पडिक्कमणं	८८-८९
वणिमट्ठ	५१-५२	आलोयण	९०-९१
समणट्ठं	५३-५४	विउसग्गो	९२-९४
		भोयण	९५-९६
		निक्खेव-पद	१००
पिंडेसणा (७० २) ...			२९
उक्खेव-पदं	१	अकप्प-पद	१४-२४
पुणो-गमण-पदं	२-३	समुयाण-पद	२५
समय-पदं	४-६	अदीण-पदं	२६-२८
पाण-पदं	७	संथव-पद	२९-३०
कहा-पद	८	माया-पद	३१-३५
अवलवण-पदं	९	सुरा-पद	३६-४५
बणीमग-पदं	१०-१३	तेण-पदं	४६-४९
		निक्खेव-पदं	५०

छ. महायारकहा	३८५
उक्खेव-पद	१-३		तेउ-पदं		३३-३६
आयार-गोयर-पदं	४-८		वाउ-पदं		३७-४०
अहिंसा-पद	९-११		वणस्सइ पदं		४१-४३
सच्च-पद	१२-१३		तस-पदं		४४-४६
अतेणग-पद	१४-१५		अकप्प-पदं		४७-५०
वभचेर-पद	१६-१७		गिहि-भायण-पदं		५१-५३
अपरिग्गह-पद	१८-२२		आसन्दी-पदं		५४-५६
एगभत्त-पद	२३		निसेज्जा-पदं		५७-६०
भोयण-पद	२४-२६		सिणाण-पदं		६१-६४
पुढवी-पद	२७-२९		विभूसा-पद		६५-६७
आउ-पद	३०-३२		निकखेव-पदं		६८-६९

७ वक्कसुद्धि	४३
भासा-पदं	१-५		सावज्ज-अणवज्ज-पदं		४०-४६
संकिय-पद	६-१०		आएस-पदं		४७
फस्स-भासा-पदं	११-१४		जहत्थ-पद		४८-४९
ममत्त-भासा-पद	१५-१८		आससा-पदं		५०
नाम-गोत्त-पदं	१९-२०		जहत्थ-पदं		५१-५३
जाइ-पद	२१-३९		निकखेव-पद		५४-५७

८ आयारपणिही	८०
उक्खेव-पदं	१-२		पइण्ण-चरिया-पदं		४०-४५
अहिंसा-पद	३-१२		भासा-पदं		४६-५०
सुहम-पदं	१३-१६		लयण-पद		५१-५२
पहिलेहण-पदं	१७		इत्थी-पद		५३-५७
परिट्ठावणा-पद	१८		विसय-पदं		५८-५९
पइण्ण-चरिया-पद	१९-३५		सद्धा-पदं		६०
कसाय-पद	३६-३९		निकखेव-पदं		६१-६३

६. विणयसस्माही (उ० १)	८७
उक्खेव-पदं १ आयरिय-पदं ११-१६	
आसायण-पदं २-१० निकखेव-पदं १७	
विणयसस्माही (उ० २)	६१
दुम-पदं १-२ विणीयाविणीय-पदं ५-११	
कट्ट-पद ३ सिक्खा-पदं १२-२१	
कोव-पदं ४ निकखेव-पदं २२	
विणयसस्माही (उ० ३)	६४
स-पुज्ज-पदं १-३ अवत्तव्व-पदं ६	
जवणट्टया-पदं ४ गुण-पदं १०-१२	
अप्पिच्छा-पद ५ माणरिह-पदं १३-१४	
कट्य-पदं ६-८ निकखेव-पदं १५	
विणयसस्माही (उ० ४)	६८
उक्खेव-पदं सू० १-३ तव-पद १०६	
विणय-पद १०४ आया-पदं १०७	
मुय-पद १०५ निकखेव-पदं ६-७	
१० स-भिनक्खु	७१
उक्खेव-पद १ वोसट्ट-वत्त-देह-पद १३	
अहिंसा-पदं २-४ परीसह-जय-पदं १४	
संवर-पद ५ संजय-पदं १५	
बुव-जोगी-पदं ६ असग-पद १६	
मम्महिट्ठा-पद ७ ठिअप्पा-पदं १७	
असन्निहि-पद ८ समता-पदं १८	
छदणा-पदं ९ मत्त-पदं १९	
कहा-पदं १० अज्जपय-पदं २०	
मय-भेरव-पदं ११ निकखेव-पदं २१	
पडिमा-पदं १२	

रहवक्क (पढमा चूलिया) ... पृ० ७६

गयकुस-पदं	१	धम्म-भट्ट-पदं	१२-१४
पच्छा-परिताव-पद	१-६	थिरीकरण-पदं	१५-१७
रतारत-पद	१०-११	निक्खेव-पदं	१८

विचित्तचरिया (विहया चूलिया) ... पृ० ८१

उत्तखेव-पद	१	पडिसंहरण-पदं	१४
पडिसोय-पदं	२-३	पडिबुद्ध-पदं	१५
चरिया-पद	४-११	अप्परक्खा-पदं	१६
सपेक्खा-पदं	१२-१३		



उत्तररञ्जयणं : विषय-सूची

१. विणयसुयं	पृ० ८७
उक्खेव-पदं	१	अणुसासण-पदं	२७-४६
विणय-पदं	२-१४	निकखेव-पद	४७-४८
दत्त-पद	१५-२६		
२. परीसह पविभत्ती	१३
उक्खेव-पद	सू० १-३	अक्कोस-पदं	२४-२५
परीसह-पदं	१	वह-पद	२६-२७
दिगिच्छा-पद	२-३,	जायणा-पद	२८-२९
पिवासा-पद	४-५	अलाभ-पद	३०-३१
सीय-पद	६-७	रोग-पद	३२-३३
उत्तिण-पद	८-९	तण-फास-पद	३४-३५
दस-मसय-पदं	१०-११	जल्ल-पदं	३६-३७
अचेल-पदं	१२-१३	सक्कार-पदं	३८-३९
अरइ-पद	१४-१५	पन्ना-पदं	४०-४१
इत्थी-पदं	१६-१७	अन्नाण-पदं	४२-४३
चरिया-पद	१८-१९	दसण-पद	४४-४५
निसीहिया-पद	२०-२१	निकखेव-पद	४६
सेज्जा-पद	२२-२३,		
३. चाउरंगिज्जं	१००
उक्खेव-पद	१-६	वीरिय-पदं	१०-११
मागुसत्त-पदं	७	धम्म-पद	१२-१९
सुइ-पद	८	निकखेव-पद	२०
सद्धा-पद	९		

४. असंख्यं	१०३०
सत्त्व-पद	३-६	अप्पमाय-पद	५-१३
अणसण-पद	३-७		५-१३
५. अकाममरणिज्ज	१०६
उक्खेव-पद	१-३	सकाम-मरण-पद	१७-३२
अकाम-मरण-पद	४-१६		
६. खुड्डानियण्ठिज्जं	११०
सत्त्व-पद	२-७	अप्पमाय-पद	१२-१७
नाण-वाय-पद	८-११		
७. उरब्भिज्जं	११३
उरब्भिज्ज-पद	१-१०	कुसग्ग-जल-पद	२३-२७
कागिणि अम्बग-पद	११-१३	निक्खेव-पद	२८-३०
वणिय-पद	१४-२२		
८. काविलीयं	११७
दुक्ख-मुत्ति-पद	१-३	अभियोग-भावणा-पद	१३-१५
असग्ग-पद	४-६	लोभ-पद	१६-१७
अहिंसा-पद	७-१०	इत्थी-पद	१८-१९
आहार-पद	११-१२	निक्खेव-पद	२०-२१
९. नमिपव्वज्जा	१२२
उक्खेव-पद	१-६	दाण-पद	३७-४०
मिहिला-पद	७-१६	घोरासम-पद	४१-४४
पागार-पद	१७-२२	कोस-पद	४५-४६
पासाय-पद	२३-२६	काम-पद	५०-५३
दण्ड-पद	२७-३०	कसाय-पद	५४
जुज्झ-पद	३१-३६	निक्खेव-पद	५५-६२

१०. दुर्मपत्तयं	१२९
भवे-पदं	१-४	हाण-पदं	२१-२७
ससार-पदं	५-१५	उवदेस-पदं	२८-३६
दुल्लह-पदं	१६-२०	निकखेव-पदं	३७
११. बहुस्सुयपुज्जं	१३६
उक्खेव-पदं	१	अविणीय-पदं	६-११
अवेदुस्सुय-पदं	२	सुविणीय-पदं	१०-१४
असिक्खा-पदं	३	बहुस्सुय-पदं	१५-२०
सिक्खा-सील-पदं	४-५	निकखेव-पदं	२१
१२. हरिएसिज्जं	१४०
उक्खेव-पदं	१-२	अहोदाण-पदं	३५-३६
जन्नवाड-पदं	३-११	जाइ-पदं	३७
खेत-पदं	१२-१५	सोहि-पदं	३८-३९
तालण-पदं	१६-३०	जन्न-पदं	४०-४४
पासा-पदं	३१-३४	तित्थ-पदं	४५-४७
१३. चित्तसम्भूइज्जं	१४९
उक्खेव-पदं	१-१२	सबोहि-पदं	१७-१३
निमतण-पदं	१३-१६	निकखेव-पदं	३४-३५
१४. उसुयारिज्जं	१५५
निकखेव-पदं	१-६	कमलावई-पदं	३७-५०
भिगुभुत-पदं	७-२८	निकखेव-पदं	५१-५३
भिगु-जसा-पदं	२९-३६		
१५. सभवेखुयं	१६४
पइण्णो-पदं	१	आर्य-गेवेसय-पदं	५
अंसग-पदं	२	निग्गह-पदं	६
अहिंयास-पदं	३-४	आणोयार-पदं	७

उत्तर-उपक्रमण : विषय-सूची

भ.

संथर्व-पदं	१०	उर्वसत-पदं	१५
पिण्ड-पदं	११	निकलेव-पदं	१६
भय-भेरव-पदं	१४		

१६. बम्भचेरसमोहिठाणं ... १६८

उक्खेव-पद	सू० १-३	पणोय-पद	सू० ६
कैत्थो-कह-पद	सू० ४	अडमत्त-पद	सू० १०
सन्निसेज्जा-पदं	सू० ५	विभूसा-पदं	सू० ११
वक्खु-संजम-पदं	सू० ६	कामगुण-पद	सू० १२
सोय-संजम-पदं	सू० ७	बभचेर-गुत्ति-पदं	सू० १७
सइ-संजम-पदं	सू० ८		

१७. पाँविसमणिज्जं ... १७५

उक्खेव-पद	१-२	विवाद-पदं	१२
निहासील-पद	३	निसीदण-पदं	१३
अविणय-पद	४-५	सेज्जा-पद	१४
सजय-मन्नया-पदं	६	विगड-पद	१५
अप्पमज्जण-पदं	७	अत्थन्त-आहार-पदं	१६
दवदव-पदं	८	गाणगणिय-पदं	१७
पडिलेहा-पदं	९	पर-गेह-पदं	१८
परिभावय-पदं	१०	सन्नाइ-पिंड-पदं	१९
असविभागी-पदं	११	निकलेव-पदं	२०-२१

१८. संजइज्जं ... १७८

उक्खेव-पदं	१-११	रोयोरिसह-पदं	१८-५०
संवोहि-पदं	१२-१७	निकलेव-पदं	५१-५३

१९. मियापुतिज्जं

उक्खेव-पद	१-१४
दुक्ख-पद	१५-१७
धम्म-पद	१८-२१
सार-भण्ड-पद	२२-२३
महव्वय-पदं	२४-३०
दुक्कर-पद	३१-४४

...	१८५
भव-दुक्ख-पद	४५-४६
नरय-दुक्ख-पद	४७-७४
मिग-चारिया-पदं	७५-८५
पव्वज्जा-पद	८६-८७
समता-पद	८८-९५
निकखेव-पद	९६-९८

२०. महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पद	१-७
अणाह-पद	८-३५
अत्त-पद	३६-३७

...	१९७
धम्म-लोव-पद	३८-५०
निकखेव-पद	५१-६०

२१. समुद्दपालीयं

उक्खेव-पद	१-११
महव्वय-पद	१२

...	२०६
चरिया-पद	१३-३३
निकखेव-पद	२४

२२. रहनेमिज्जं

उक्खेव-पदं	१-५
निज्जाण-पदं	६-१४
सवेग-पदं	१५-२०
अभिनिकखमण-पदं	२१-२४

...	२११
आसीवाय-पद	२५-२७
राईमई-पद	२८-४८
निकखेव-पद	४९

२३. केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पद	१-२२
चाउज्जाम-पद	२३-२८
अचेलग-पद	२९-३४
विजय-पदं	३५-४०

...	२१८
पास-पद	४१-४४
लया-पदं	४५-४९
अगो-पद	५०-५४
दुट्टस्स-पदं	५५-५९

उत्तररज्जयणः विषय-सूची

कुप्यह-पद	६०-६४	उज्जोय-पद	७५-७६
दीव-पद	६५-६६	ठाण-पद	८०-८७
नावा-पद	७०-७४	निकखेव-पद	८८-८९
२४. पवयण-माया			२२८
उक्खेव-पद	१-३	वड्-गुत्ति-पद	२२-२३
समिड-पद	४-१६	काय-गुत्ति-पद	२४-२५
गुत्ति-पद	२०-२१	निकखेव-पद	२६-२७
२५. जेत्तइज्जं			२३१
उक्खेव-पद	१-१०	थुइ-पद	३४-३७
मुख-पद	११-१८	संवाहि-पद	३८-४१
माहण-पद	१९-३३	निकखेव-पद	४२-४३
२६. सामायारी			२३७
सामायारी-पद	१-७	अणाहार-पद	३३-३४
चरिया-पद	८-१०	विहार-पद	३५
दिवस-चरिया-पद	११-१६	सज्जाय-पद	३६
रत्ति-चरिया-पद	१७-१९	सक्का-पद	३७-३८
पडिलेहण-पद	२०-२२	पडिक्कमण-पद	३९-४१
पडिलेहण-विहि-पद	२३-३०	निकखेव-पद	४२
आहारि-पद	३१-३२		
२७. खलुकिज्जं			२४४
२८. मोक्खमग्गाई			२४७
मग्ग-पद	२-३	सम्मत्त-रुइ-पद	१५-३१
नाणं-पद	४-५	चरित्त-पद	३२-३३
दब्ब-पद	६-१३	तव-पद	३४
नव-तहिय-पद	१४	निकखेव-पद	३५-३६

२९. सम्प्रतपरकमे

उक्खेव-पदं	सू० १	वोदाण-पदं	सू० २८
सवेग-पदं	सू० १	सुहसाय-पदं	सू० २९
निव्वेय-पदं	सू० २	अप्पडिबद्ध-पदं	सू० ३०
घम्म-सद्धा-पदं	सू० ३	वित्रित्त-पदं	सू० ३१
सुसुसणा-पदं	सू० ४	त्रिनियट्टण-पदं	सू० ३२
आल्लोयणा-पदं	सू० ५	पच्चक्खाय-पदं	सू० ३३-४१
निदण-पदं	सू० ६	पडिख्व-पद	सू० ४२
गरहण-पदं	सू० ७	वेयक्क्व-पदं	सू० ४३
सामाद्वय-पदं	सू० ८	सव्व-गुण-सम्पन्न-पदं	सू० ४४
चउरुवीसत्थव-पदं	सू० ९	वीयराग-पदं	सू० ४५
बंदण-पदं	सू० १०	खंति-पदं	सू० ४६
पडिक्कमण-पदं	सू० ११	मुत्ति-पदं	सू० ४७
काउस्सग-पदं	सू० १२	अज्जव-पद	सू० ४८
पच्चक्खाण-पदं	सू० १३	मट्टव-पदं	सू० ४९
थवथुइ-पदं	सू० १४	सक्ख-पद	सू० ५०-५२
काल-पडिलेहण-पदं	सू० १५	गुत्ति-पदं	सू० ५३
पायच्छित्त-पद	सू० १६	समाहारण-पदं	सू० ५६-५८
खमावण-पद	सू० १७	सपन्नया-पद	सू० ५९-६१
सज्जाय-पद	सू० १८-२३	इदिय-निगाह-पद	सू० ६२-६६
सुय-पद	सू० २४	कसाय-विजय-पदं	सू० ६७-७०
एगग-मण-पदं	सू० २५	खवणा-पद	७१-७२
सजम-पदं	सू० २६	निकखेव-पद	सू० ७३
तन्न-पदं	सू० २७		

३०. सैवमसा	२७१
उक्खेव-पदं	१-६	अभिभंतर-तव-पदं		३०-३६
तव-पदं	७	निक्खेव-पदं		३७
वाहिरग-तव-पदं	८-२६			
३१. चैरणविही	२७६
उक्खेव-पदं	१	वज्जण-पद		६
नियत्ति-पवत्ति-पदं	२	जयणा-पदं		७-२०
निरोध-पदं	३-५	निक्खेव-पद		२१
३२. पमायट्ठाणं	२७९
उक्खेव-पदं	१	गन्ध-पद		४८-६०
तण्हा-पद	६-८	रस-पदं		६१-७३
उवाय-पदं	९-१८	फास-पदं		७४-८६
दुक्खं-पदं	१९-२२	भाव-पद		८७-९९
रूढ-पदं	२३-३४	निक्खेव-पदं		१००
सद्-पद	३५-४७			
३३. कम्मपयडी	३०१
उक्खेव-पद	१	ठिड्-पदं		१९-२३
कम्म-पद	२-३	अणुभाग-पद		२४
पयडि-पद	४-१६	निक्खेव-पद		२५
पएस-पदं	१७-१८			
३४. लेसज्जमयणं	३०५
उक्खेव-पद	१-२	रस-पदं		१०-१५
लेसा-पदं	३	गन्ध-पदं		१६-१७
वज्जण-पद	४-६	फास-पदं		१८-१९

परिणाम-पदं	२०-३२	घम्म-लेसा-पदं	५७
ठाण-पदं	३३	उववात-पदं	५८-६०
ठिह-पद	३४-५५	निकखेव-पदं	६१
अहम्म-लेसा-पद	५६		
३५. अणगारमग्गार्ह	३१७
उक्खेव-पदं	१	कय-विवकय-पदं	१४-१५
असग-पदं	२	पिण्डवाय-पदं	१६
उवस्सय-पदं	४-७	समता-पदं	१८
गिह-समारंभ-पद	८-९	वोसट्ठ-काय-पदं	१९
पायण-पदं	१०-११	सल्लेहणा-पदं	२०
जोह-पद	१२	निकखेव-पद	२१
सम-लेद्ध-कचण-पदं	१३		
३६. जीवाजीवविभत्ती	३२०
उक्खेव-पदं	१	वेइंदिय-पदं	१२७-१३५
लोकालोक-पद	२-४	तेइंदिय-पदं	१३६-१४४
अरुवि-अजीव-पद	५-९	चउरिदिय-पदं	१४५-१५४
रुवि-अजीव-पद	१०-४७	पचिदिय-पदं	१५५
जीव-पदं	४८	नेरइय-पदं	१५६-१६९
सिद्ध-जीव-पद	४९-६७	तिरिक्ख-जोणिय-पदं	१७०-१९४
ससारत्थ-जीव-पदं	६८-६९	मणुय-पदं	१९५-२०३
पुढवी-पद	७०-८३	देव-पद	२०४-२४९
आउ-पदं	८४-९१	सल्लेहणा-पद	२५०-२५४
वणस्सइ-पदं	९२-१०७	भावणा-पदं	२५६-२६७
तेउ-पद	१०८-११६	निकखेव-पदं	२६८
चाउ-पद	११७-१२६		

दसवेआलियं

11. 11. 11.

11. 11. 11.

11. 11. 11.

11. 11. 11.

पद्म अञ्जयणं

दुमपुष्पिया

धम्मो मंगलमुक्किहं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मो सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वयं च वित्ति लब्भामो न य कोइ उवहमई ।
अहागडेसु रोयति पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिसिया ।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥
—त्ति बेमि ॥

बीअ अज्मयणं

सामण्णपुव्वयं

'कहं नु कुज्जा'^१ सामण्णं जो कामे न निवारए ।
 पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥
 वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
 अञ्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
 जे य^२ कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई^३ ।
 साहीणे चयइ भोए^४ से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
 समाए^५ पेहाए परिव्वयंतो
 सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
 न सा महं नोवि अहं पि तीसे
 इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥
 आयावयाही चय सोउमल्लं
 कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
 'छिन्दाहि दोसं विणएज्ज रागं'^६
 एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

१—कयाऽह कुज्जा (आ, जा, हा) ; कइएह कुज्जा (आ, ज, हा) ;

कह ण कुज्जा (जा) , कह स कुज्जा (आ) , कह णु कुज्जा (जा) ।

२—उ (अ) ।

३—विप्पिट्ठ ^० (अ) , विप्पिट्ठि ^० (ल) ; विप्पिट्ठ ^० (ग) ।

४—भोगी (अ) ।

५—समाय (आ) ।

६—छिदाहि राग विणएहि दोस (अ) ।

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
 नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं^१ कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥
 धिरत्थु 'ते जसोकामी'^२ जो तं जीवियकारणा ।
 वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥
 अहं च भोयरायस्स^३ तं चऽसि अन्धगवण्हिणो ।
 मा 'कुले गन्धणा'^४ होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥
 जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
 वायाइद्धो व्व हडो^५ अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
 अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥
 एवं करेन्ति संबुद्धा^६ पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो^७ ॥ ११ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—भुत्त (स) ।

२—ते जसो ° (आ, जा) ।

३—भोग ° (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।

४—कुल गन्धिणो (जा) ।

५—हटो (अ, क, ज) ।

६—सपन्ना (अ, ज) ।

७—पुरिसोत्तिमे (अ) ; पुरिसुत्तम (ख, ग, घ) , पुरिसुत्तमो (ज) ।

तइयं अज्झयणं

खुड्डियायारकहा

संजमे सुट्ठिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
 तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ॥ १ ॥
 उद्देसिय कीयगडं नियागमभिह्वाणि य ।
 राइभत्ते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
 सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
 सब्राह्णा दंतपहोयणा य संपुच्छणा^१ देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
 अट्ठावए य^२ नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
 तेगिच्छं पाणहा पाए समारंभ च जोइणो ॥ ४ ॥
 सेज्जायरपिंडं च 'आसंदीपलियंकए'^३ ।
 गिहंतरनिसेज्जा य गायस्सुवट्ठणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडिय 'जायआजीववित्तिया'^४ ।
 तत्तानिब्वुडभोइत्त आउरस्सरणाणि^५ य ॥ ६ ॥
 मूलए सिंगवेरे य उच्छुखंडे अनिब्वुडे ।
 कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

१—सपुछ्णो (अ) ।

२—x (ग) ।

३—आसण्ण परिवज्जए (आ, जा) ।

४—^० व त्तिया (स, ग) ।५—जाइ याजीव^० (ग), जाय आजीवि^० (अ) ।६—आउरेस्सर^० (अ); आउरसर^० (हा, जा) ।

सोवच्चले सिधवे लोणे रोमालोणे^१ य आमए ।
 सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
 ध्रुवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
 अंजणे दंतवणे य गायामंगविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण्णं निगंगथाण महेसिणं ।
 'संजमम्मि य' जुत्ताणं^३ लहुभूयविहारिणं^४ ॥ १० ॥
 पचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
 पचनिग्गहणा धीरा^५ निग्गंथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयंति गिम्हेसु हेमतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया ।
 सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमंति महेसिणो'^६ ॥ १३ ॥
 *दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइ सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं संजसेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा^७ ॥ १५ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—रुमा^० (अ, घ, ज) ।

२—छ (अ) ।

३—सजप अणुपालता (ज) ।

४—^० विहारिणो (ज) ।

५—वीरा (अ) ।

६—ते वदसि सिव गति (अ) . परक्कपति पहेसिणो (ज) ।

७—अगत्त्यच्चूर्णो मे श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं ।

८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा) , परिनिव्वुडे (स) , परिनिव्वुए (ह) ।

चउत्थ अज्झयणं
छज्जीवणिया

सुयं मे 'आउसं! तेणं'^१ भगवया एवमक्खायं—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता ? सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी चित्तमंतमक्खाया^२ अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ६ ॥

१—आवसतेण, आमुसतेण (हाटी पा०) ।

२—चित्तमत्ता अक्खाया (जिचू) ; चित्तमत्ता अक्खाया (जिचू पा०) , चित्तमत मक्खाया (अचू पा० , हाटी पा०) ।

वाळ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणणं, तं जहा—अगवीया मूलवीया पोरवीया खंध-
वीया वीयम्हा सम्मुच्छिमा तणल्या वणस्सडकाइया सवीया
चित्तमंतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणणं ॥ सू० ८ ॥

गे जे पुण उमे अणेगे वहवे तसा पाणा तं जहा—अंडया
पोयया जराउया रसया संसेइमा' सम्मुच्छिमा उव्विया उववाइया ।
जेंसि केसिचि' पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं
रुयं भंत तसियं पळाइयं आगडगइविन्ताया—जे य कीडपयंगा जा
य कुंधुपिवीलिया 'सव्वे वेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया
सव्वे पचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया
सव्वे देवा सव्वे पाणा' परमाहम्मिया' एसो' खलु छट्ठो जीव-
निकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चेसि' छण्ह जीवनिक्कायाणं नेवसयं दंडं समारंभेज्जा नेवन्नेहिं
दंडं समारंभावेज्जा दडं समारभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा'

१—ससेयगा (जिचू) ।

२—जैसि च (ख) ।

३—सव्वे नेइया, सव्वे पंचेइया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा,
सव्वे पाणा (जिचू) ।

सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेइया, सव्वे पचिंदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे
मणुस्सा, सव्वे पाणा (अचू) ।

४—परवस्मिता (जिचू पा० ; जिचू पा०) ।

५—× (अचू) ।

६—इच्चेंतेहिं (जिचू ; अचू) ।

७—समणुजागामि (क, ख, ग, अचू, सू १० से २२ तक) ।

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं 'मणेणं वायाए काएणं' न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढसे भंते ! महव्वए^३ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि—से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा 'थावरं वा'^३ नेव सयं पाणे अइवाएज्जा^४ नेवन्तेहिं पाणे अइवायावेज्जा^५ पाणे अइवायंते वि अन्ते न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पढसे भंते ! महव्वए उवड्डिओमि^६ सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा^७ नेवन्तेहिं मुसं वायावेज्जा^८ मुसं वयंते वि अन्ते न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न

१—ग्गसा वपसा कायसा (अच्) ।

२—महव्वए उवड्डिओमि (अच् सू० ११ से १५ तक) ।

३—थावर वा से त पाणातिवते चतुवेहे त दव्वतो सेततो कलतो भादतो (अच् पा०) ।

४—अइवाएज्जा (अच्) एवं वेदश सूत्र पर्यन्तं पृथक्पुस्तकस्थाने उत्तमपुराणस्य पर्यं ग. ।

५—अइवायावेपि (अच्) ।

६—> (अच्) सू ११ से १५ तक ।

७—वसामि (अच्) ।

८—वायावेपि (अच्) ।

समणुजाणामि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।

दोच्चे भंते । महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ
वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वं
भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे वा
अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव
सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हंते
वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणु-
जाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ।

तच्चे भंते । महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ
वेरमणं ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते ।
मेहुणं पच्चक्खामि —से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव
सयं मेहुण सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवावेज्जा मेहुणं सेवते वि अन्ने
न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते । पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

चउत्थे भंते । महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ
वेरमणं ॥ सू० १४ ॥

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—से 'गामे वा'^१ नगरे वा रण्णे^२ वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिणहेज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिणहावेज्जा परिग्गहं परिणहेतं वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ सू० १५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! राईभोयण पच्चक्खामि—से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइ भुंजेज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा राइं भुजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ सू० १६ ॥

इच्चैयाइं^३ पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्त-
हियट्ठयाए^४ उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ सू० १७ ॥

१—× (क, ख, ग, घ, हाटी०) ।

२—अरण्णे (अचू) ।

३—इच्चैयाइं (ख, ग, घ) ।

४—^० हियट्ठाए (घ, ज) ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिह्यपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा 'एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा'^१—से पुढवि वा भित्ति वा
सिलं वा लेलु^२ वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण
वा पाएण वा 'कट्ठेण वा किलिचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए
वा'^३ सलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा
न भिदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा
न भिदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिदंतं
वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिह्यपच्चक्खाय-
पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा
जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा
हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओत्तलं वा कायं उदओत्तलं वा वत्थं
ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा न
संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न
पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमुसावेज्जा न
संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा
न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमुसंतं वा
सफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा

१—सुत्ते वा जागरमाणे वा एगओ वा परिसागओ वा (अ, ज) । एव सूत्र १९ से २३ में ।

२—लेल (ख) ।

३—अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिचेण वा (अ) ।

आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहिं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १९ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से अगणि वा इंगालं वा मुम्मुरं वा
अच्चि वा 'जालं वा अलायं वा' सुद्धागणि वा उक्क वा, न उज्जेज्जा
'न घट्टेज्जा न उज्जालेज्जा' न निव्वावेज्जा अन्नं न उजावेज्जा
'न घट्टावेज्जा न उज्जालावेज्जा' न निव्वावेज्जा अन्नं उंजतं वा
'घट्टंतं वा उज्जालंतं वा' निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं
पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २० ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से सिएण वा विहुयणेण
वा तालियंटेण वा 'पत्तेण वा' साहाए वा साहाभगेण वा पिहुणेण
वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकणेण वा हत्थेण वा मुहेण वा
अप्पणो वा काय वाहिर वा वि पुग्गल, न फुमेज्जा न वीएज्जा
अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न

१—अलाय वा जाल वा (अ) ।

२—न घट्टेज्जा न मिदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा (क, ख, ग, घ) ।

३—न घट्टावेज्जा न मिदावेज्जा न उज्जावेज्जा न पज्जालावेज्जा (क, ख, ग, घ) ।

४—घट्टन्तं वा मिदन्तं वा उज्जलन्तं वा पज्जलन्तं वा (क, ख, ग, घ) ।

५—पत्तेण वा पत्तभगेण वा (क, ख, ग, घ) ।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से बीएसु वा बीयपइट्टिएसु^१
वा रुढेसु वा रुढपइट्टिएसु वा जाएसु वा जायपइट्टिएसु वा हरिएसु
वा हरियपइट्टिएसु वा छिन्नेसु वा 'छिन्नपइट्टिएसु वा'^२
सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न
निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न
निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा
निसीयंतं वा तुयट्ठंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविर-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीडं वा पयंगं
कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा "बाहुंसि वा ऊरुं
वा 'उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा 'पडिगहंसि वा
रयहरणंसि वा'^३ गोच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि

१—बीयपइट्टिएसु (क, ख, ग, घ) ।

२—छिन्नपइट्टिएसु वा सच्चित्तिएसु वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

३—पडिगहंसि वा कउलसि वा पाय-पुच्छसि वा (क, ख, ग) ।

४—उदरसि वा वत्थसि वा रयहरणसि वा (ह) ।

पीढांसि वा^१ फलगांसि वा सेज्जंसि वा संथारागंसि वा अन्नयरंसि
वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय
पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३ ॥

अजयं चरमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई^३ ।

बंधई^४ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥

अजयं चिद्धमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥

अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥

अजयं भुंजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सए?

कहं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई? ॥ ७ ॥

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।

जयं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई ॥ ८ ॥

सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ ।

पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥ ९ ॥

१—वाहसि वा उदसीससि वा उरसि वा उदरसि वा पातासि वा स्यहरणंसि वा
गोच्छरांसि वा इडंसि वा कंवलंसि वा उडुयंसि वा पीढांसि वा (अ) ।

२—य (छ. ग) । गाथा १ से ६ तक ।

३—हिंसओ (छ. ज) । गाथा १ से ६ में ।

४—वज्झई (छ) । गाथा १ से ६ व ९ में ।

पढमं नाण तओ दया एव चिद्दइ सव्वसंजए ।
 अन्नाणी किं काही ? किं वानाहिइ छेय पावगं ? ॥१०॥
 सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं ? ।
 उभयं पि जाणई सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥११॥
 जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
 जीवाजीवे अयाणंतो कहां सो नाहिइ संजमं ? ॥१२॥
 जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणई ।
 जीवाजीवे वियाणंतो सो हु नाहिइ संजमं ॥१३॥
 जया 'जीवे अजीवे' य दो वि एए वियाणई ।
 तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥१४॥
 जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ।
 तया पुण्णं च पाव च बंधं मोक्खं च जाणई ॥१५॥
 जया पुण्णं च पाव च बंधं मोक्खं च जाणई ।
 तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
 जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तया चयइ^१ सजोगं सब्भितरबाहिरं ॥१७॥
 जया चयइ^१ सजोगं सब्भितरबाहिरं ।
 तया मुंडे भवित्ताण पव्वइए^२ अणगारिय ॥१८॥
 जया मुंडे भवित्ताण पव्वइए^२ अणगारिय ।
 तया संवरमुक्किट्ठं धम्म फासे^३ अणुत्तर ॥१९॥
 जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे^३ अणुत्तर ।
 तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥

१—जीवपजीवे (क, ख, ग, घ) ।

२—जहइ (अ, ज) ।

३—पव्वए (ग) ; पव्वाति (अ) ।

४—फासइ (अ, ज) , फासइ (घ) ।

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुस कड ।
 तया सव्वत्तगं^१ नाण दंसण चाभिगच्छई ॥२१॥
 जया सव्वत्तगं नाणं दसणं चाभिगच्छई ।
 तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
 जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
 तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ॥२३॥
 जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ।
 तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
 जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
 तया लोग मत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
 सुहसायगस्स^२ समणस्स

सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।

उच्छोलणापहोइस्स

दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स

उज्जुमइ खतिसजमरयस्स ।

परीसहे जिणंतस्स

सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥

[पच्छा वि ते पयाया

खिप्पं गच्छन्ति अमरभवणां ।

जेसि पिओ तवो संजमो य

खन्ती य बम्भचेरं च ॥]^३

१—सव्वत्थग (ज) ।

२—सुहसीलगस्स (अ) . सुहसायगस्स (आ) ।

३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णोद्भय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

इच्छेयं

छज्जीवणियं

सम्मदिट्ठी सया जए ।

दुलहं

लभित्तु सामणं

कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥२८॥

—त्ति बेमि ॥

*

पंचमं अन्त्यगं

पिंडेक्षणा (पद्मोद्देशो)

संपत्ते मित्रकालन्ति^१ असंमत्तो अनुच्छिद्यो ।
 इनेन कनजोपेय नत्तपाणं गवेक्षए ॥ १ ॥
 ने गामे वा नगरे वा गोयरणपओ नुणो ।
 चरे मंडनपुब्बिणो अज्जक्खित्तेण^२ वेयसा ॥ २ ॥
 पुरओ^३ जुगनायाए^४ पेह्नाणो नहि चरे ।
 वज्जंतो वीयहग्न्याडं पाणे य दगनट्ठियं ॥ ३ ॥
 बोवायं विसनं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
 संकनेन न गच्छेज्जा विज्जनापे परक्कमे ॥ ४ ॥
 पवडन्ते व से तय्य पक्कलन्ते व संजए ।
 हिंसेज्ज पाणनूयाडं^५ तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
 नम्हा तेष न गच्छेज्जा संजए मृगनाहिए ।
 मड अत्तेन नगंग जयमेव परक्कमे ॥^६ ६ ॥

१—मित्रकु.० (क.ग) :

२—अज्जक्खित्तेण (ग) : अज्जक्खित्तेण (ग) ।

३—सक्कतो (अ.उ) ।

४—०नटय (क) : ०नटय (क) ।

५—०नूयेव (अ.उ) ।

६—श्लोक ६ के पदवत्ता अस्त्वत्तुर्दि नै निम्न श्लोक ६ (जो कि वृद्ध परिवर्तन के सप्त दशके, ६६वें श्लोक के प्रथम दो-दो चरण हैं) सल्लेख है (उप के संवि सिद्धेने सति नमिहि) —

चरं कट्टं पित्तं वडि इड्ढं वडि संकने ।

न तेन मिन्दु गच्छेज्जा दिहे सत्थ वरुज्जेने ।

इंगाल छारियं रासिं तुसरसिं च गोमयं ।
 'ससरक्खेहिं पाएहिं' संजओ तं 'न अक्खमे' ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व^३ पडंतीए ।
 महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
 न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए^४ ।
 बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
 अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं ।
 होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥ १० ॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
 साणं सूइयं^५ गाविं दित्तं गोणं हयं गयं ।
 संडिब्भं कलहं जुद्ध दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
 अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले ।
 ईदियाणि जहाभागं^६ दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य^७ गोयरे ।
 हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुल उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
 आलोयं थिग्गलं दारं संधि दगभवणाणि य ।
 चरंतो न विणिज्झाए संकट्टाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
 रत्तो गिहवईणं च 'रहस्सारक्खियाण'^८ य ।
 संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ) ।

२—नुइक्खमे (क, ख, ग, घ) ।

३—× (अ) ।

४—वभचारी^० (आ), ^० वसाणए (ह) ।

५—सूय (क, ख, ग, घ, ह) ; सू वेय (ज) ।

६—जहाभाव (ज) ।

७—व (ह) ।

८—रहस्सारक्खियाणि (ख) ।

पडिकुट्टकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए ।
 अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
 साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे ।
 कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओगहंसि अजाइया ॥१८॥
 गोयरग्गपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न धारए ।
 ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥
 नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए ।
 अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेह्गा ॥२०॥
 जत्थ पुप्फाइ बोयाइं विप्पइण्णाइं कोट्ठए ।
 अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥
 एलगं दारगं साणं वच्छगं वावि कोट्ठए ।
 उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥
 असंसत्तं पलोएज्जा नाइद्वरावलोयए ।
 उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्ठेज्ज अयंपिरो ॥२३॥
 अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गओ मुणी ।
 कुलस्स भूमि जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे ॥२४॥
 तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो ।
 सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥२५॥
 'दगमट्ठियआयाणं' बीयाणि हरियाणि य^१ ।
 परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सत्त्विदियसमाहिए ॥२६॥
 तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
 अकप्पियं न इच्छेज्जा^३ पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥

१—^० आयाणे (क, ख, ग, घ) ।

२—वा (अ) ।

३—गिण्हेज्जा (क, घ, ह) ।

आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥
 सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
 असंजमकरिं नच्चा तारिसं' परिवज्जे ॥२९॥
 साहट्ठु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाण' य ।
 तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥
 आगाहइत्ता' चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥
 पुरेकग्गेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥
 [एवं उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
 हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
 गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्टिय पिट्ट कुक्कुसकए य ।
 उक्कट्टमसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोधव्वे ॥३४॥]^४

१—तारिसिं (ह) ।

२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।

३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।

४—अगस्त्य चूर्ण में गाथा ३३-३४ के स्थान में सतरह श्लोक हैं :

१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।

देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥

२—ससिणिद्धेण हत्थेण

३—ससरक्खेण

४—मट्टियागतेण

५—ऊसगतेण

६—हारत्तालगतेण

७—हिंगुलपगतेण

८—मणोसिलागतेण

९—अजणगतेण

१०—लोणगतेण हत्थेण

११—गेरुयगतेण

१२—वण्णियगतेण

१३—सेडियगतेण

१४—सोरट्टियगतेण

१५—पिट्टगतेण

१६—कुक्कुसगतेण

१७—उक्कट्टगतेण

असंसद्वेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५॥
 संसद्वेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
 दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
 दोण्हं तु भुंजमाणाणं दोवि तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
 गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं ।
 भुज्जमाणं^१ विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥
 सिया य समणद्वाए गुव्विणी कालमासिणी ।
 उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुइए ॥४०॥
 'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।'
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥
 'थणगं पिज्जेमाणी दारग वा कुमारियं ।'
 तं निक्खवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
 जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
 दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा । -
 लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—भुजपाण (क, ख, ग, घ, ज) ।

२—अगस्त्य चूर्णी मे श्लोक ४१-४३ के प्रथम दो चरण नहीं हैं—पुव्व भणित्त सुत्तं
 सिलोगद वितीए अणुस्सरिज्जति "देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं"
 अहवा दिवड्ढ सिलोगो (अ) ।

। 'चमं अज्मयणं (पढमोद्देशो)

तं च उब्भिदिया देज्जा समणट्ठाए व दावए ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं - इमं ॥४७॥
 'तं भवे' भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥
 असण पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगड इम ॥४९॥
 तं भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगड इमं ॥५१॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥
 असणं पाणग वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगड इमं ॥५३॥
 तं भवे भत्तपाणं तु सजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥
 उद्देशिय कीयगडं पूईकमं च आहडं ।
 अज्मोयर पामिच्च मीसजायं 'च वज्जए' ॥५५॥
 उगमं से पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कड ? ।
 सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

१-तारिस (अ, क, ह) ।

२-विवज्जए (अ, ज) ।

तं भवे भक्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥
 'होज्ज कट्टं सिलं वा वि इट्ठालं वा वि एगया ।
 ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचल ॥६५॥'^१
 'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'^२
 गंभीरं झुसिरं चेव सव्विदियसमाहिए ॥६६॥
 निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
 मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥६७॥
 दुरूहमाणी^३ पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
 पुढविजीवे^४ वि हिसेज्जा जे य^५ तन्निस्सिया जगा ॥६८॥
 'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'^६
 तम्हा^७ मालोहडं भिक्खं न 'पडिगेण्हंति संजया'^८ ॥६९॥
 कंदं मूलं पलंब वा आमं छिन्नं व सन्निरं ।
 तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥७०॥
 तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
 सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥
 विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

१—अगस्त्य चूर्णि में यह श्लोक यहाँ नहीं है । किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है ।

२—६६वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं ।

३—दुरूहमाणे (अ) ।

४—पुढविक्काय (अ, ज,)

५—वा (अ) ।

६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं ।

७—हदि (हा) ।

८—पडिगाहेज्ज संजए (अ) ।

बहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
 अस्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व^१ सिंबलिं ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
 तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
 संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥
 जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
 अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
 मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
 तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
 तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
 तं 'अप्पणा न पिबे'^२ नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प^३ पडिक्खे ॥८१॥
 सिया य गोयरग्गओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
 कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहिताण फासुयं ॥८२॥
 अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
 हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ) ।

२—अप्पणा वि न पिबे अ) ।

३—पडिट्ठप्प (ह) ।

तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
 तण-कट्ट-सक्करं वा चि अन्नं 'वा वि' तहाविहं ॥८४॥
 तं उक्खित्तु न निक्खिवे आसएण न छट्ठए ।
 हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥८५॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्टवेज्जा परिट्टप्प^१ पडिक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
 सर्पिडपायमागम्म उंडुयं^२ पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय^३ आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
 आभोएत्ताण नीसेसं अइयार^४ जहक्कमं ।
 गमणागमणे चेव भत्तपाणे व^५ संजए ॥८९॥
 उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेतसा ।
 आलोए गुरुसगासे ज जहा गहियं भवे ॥९०॥
 न सम्ममालोइयं होज्जा पुट्ठि पच्छा व जं कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चित्तए इमं ॥९१॥
 अहो जिणेहि असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहूणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
 सज्झायं पट्टवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।

२—पडिट्टप्प (ह) ।

३—उण्णय (अ) ।

४—^० मायाए (ख) ।

५—अइयार च (क, ग, घ, ह) ।

६—य (क, ख, ग, घ, ह) ।

वीसमंतो इमं चित्ते हियमद्वं लाभमद्विओ ।
 जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥१४॥
 साहूवो तो त्रियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
 जइ तत्थकेइ^१ इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥१५॥
 अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एकओ ।
 आलोए^२ भायणे साहू जयं 'अपरिसाडयं'^३ ॥१६॥
 तित्तगं व कडुयं व कसायं

अंबिलं व^४ म्हुरं लवणं वा ।

एय लद्धमन्नङ्क-पउत्तं

नहु-वयं व भुंजेज्ज संजए ॥१७॥
 अरत्तं विरत्तं वा वि सुइयं^५ वा अमूइयं ।
 उल्लं वाजइ वा चुक्कं मत्थु-कुम्मत्त-भोयणं ॥१८॥
 उप्पणं नाइहीलेज्जा अप्पं पि^६ बहू फासुयं ।
 मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥१९॥
 दुल्लाहा उ^७ सुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लाहा ।
 मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं ॥१००॥
 —ति वेमि ॥

५

१—केइ (उ) ।

२—आलोए (उ. ल) ।

३—अपरिसाडियं (क. ख. ग. घ. ल) ।

४—x (ग. घ) ।

५—सूइयं (उ) ।

६—वा (क. ख. ग. घ. ह) ।

७—इ (उ) ।

पंचमं अज्मयणं

पिंडेसणा (बीओ उद्देसो)

पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेव-मायाए^१ संजए ।
 दुग्गंधं वा सुग्गंधं वा सव्वं भुंजे न छद्दुए^२ ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व^३ गोयरे ।
 अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेणं उत्तरेण य^४ ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य^५' पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जेता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
 सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं ।
 अलाभोत्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
 तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
 त-उज्जुय न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
 गोयरग्ग-पविट्ठो उ^५ न निसीएज्ज कत्थई ।
 कहं च न पबंघेज्जा चिट्ठित्ताणं व संजए ॥ ८ ॥
 अगलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
 अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गओ सुणी ॥ ९ ॥

१—^० मायाय (ग) ; मादाय (आ) ; मायाइ (ख) ।

२—उज्जुए (ह) ।

३—य (क, ख, ग) ।

४—कालेण व (अ) ।

५—य (ग) ।

समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं ।
 'उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए'^१ ॥१०॥
 तं अइक्कमित्तु^२ न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-गोयरे'^३ ।
 'एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए'^१ ॥११॥
 वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तियं सियाहोज्जा लहुत्तं^४ पवयणस्स वा ॥१२॥
 पडिसेहिएव दिन्ने^५ वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥१४॥
 'त भवे'^६ भत्तपाणं तु संजयाण अक्कप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मदिया दए ॥१६॥
 'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अक्कप्पियं'^७ ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
 सालुयं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं^८ ।
 मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥

१—अगस्त्य चूर्णि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो-दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

२—अइक्कम्म (अ) ।

३—चक्खु-फासओ (अ) ।

४—लहुयत्त (घ) ।

५—दिन्न (अ) ।

६—तारिसं (ह) ; एतस्स सिलोगस्स प्रागेण पच्चद्दघ पढति (अ) ।

७—अगस्त्य चूर्णि में ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

८—कुमुयं उप्पल^० (क, ख, ग, घ) ।

तरुणं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा विहरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥
 तरुणियं व छिवाडिं आमियं भज्जियं सइं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
 तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
 तिलपिट्ठ पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥
 कविट्ठं माउलिगं च मूलगं 'मूलगत्तियं' ।
 आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
 बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥
 समुयाणं चरे भिक्खू कुल उच्चावयं सया ।
 नीयं कुलमइक्कम्म ऊसडं नाभिधारए ॥२५॥
 अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
 अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ते एसणारए ॥२६॥
 बहुं परघरे अत्थि विविह् खाइमसाइमं ।
 न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज, परो न वा ॥२७॥
 सयणासण वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
 अदेतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥
 इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा मह्खणं ।
 वंदमाणो न जाएज्जा तो य णं फल्सं वए ॥२९॥

१—मूलवत्तिय (घ, ह) ।

२—वदमाण (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) , वदमाणो (आ, जा, ह) ।

जे न वंदे न से कुप्पे वंदिओ न समुक्खे ।
 एवमन्नेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठई ॥३०॥
 सिया एगइओ लद्धुं^१ लोभेण विणिगूहई ।
 मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥
 अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो बहु पावं पकुव्वई ।
 दुत्तोसओ य से होइ निव्वाणं च न गच्छई ॥३२॥
 सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं ।
 भद्दं भद्दं भोच्चा विवणं विरसमाहरे ॥३३॥
 जाणतु ता इमे समणा आययट्ठी अयं मुणी ।
 संतुट्ठो सेवई पंतं लूहवित्ती सुत्तोसओ ॥३४॥
 पूयणट्ठी^२ जसोकामी माणसम्माणकामए ।
 बहं पसवई पावं मायासल्लं 'च कुव्वई'^३ ॥३५॥
 सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
 ससक्खं न पिवे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥
 पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
 तस्स पस्सह दोसाइं नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥
 वड्ढई सोडिया तस्स मायमोसं च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिव्वाणं^४ सययं च असाहुया ॥३८॥
 निच्चुव्विग्गो जहातेणो अत्तकम्मेहि दुम्मई ।
 तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥३९॥
 आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारिसो ।
 गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥

१—लद्ध (ल) ।

२—पूयणट्ठा (क, ख, ग, घ, ह) ।

३—पकुव्वई (स) ; वि कुव्वई (ज) ।

४—अनिव्वाणी (अ) ।

‘एवं तु अगुणप्पेही^१ गुणाणं च विवज्जओ^२
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥’

तवं कुब्बइ मेहावी^३ पणीयं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं^४ ।
विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एवं ‘तु गुणप्पेही’^३ अगुणाणं ‘च विवज्जओ’^२ ।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य कुब्बइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिब्बिसे ।
तत्था वि से न याणाइ किंमे किच्चा ईमं फलं? ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताण लब्धिही एलमूययं ।
नरय तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्ला ॥४८॥

एयं च दोसं दट्ठुणं नायपुत्तेण भासियं ।
अणुमायं पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णित्थय में व्याख्यात नहीं है ।

२—अणेग० (ज) ।

३—स गुणप्पेही (ह), अगुणप्पेही (जा) ।

४—विवज्जए (अ, क, जा) ।

सिक्खिअण भिक्खेसणसोहि
 संजयाण बुद्धाण सगासे ।
 तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिदिए
 तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
 —त्ति वेमि ॥

छटुमज्झयणं

महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
 रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
 पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥ २ ॥
 तेसि सो निहुओ दंतो सव्वभूयंसुहावहो ।
 सिक्खाए सुसमाउत्तो आइवखइ वियक्खणो ॥ ३ ॥
 हंदि धम्मत्यकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे ।
 आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिद्वियं ॥ ४ ॥
 नन्नत्थ एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
 विउलट्ठाणभाइस्स^१ न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥
 सखुहुगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
 अखंडफुडिया^२ कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥
 दस अट्ट य ठाणाइं जाइं बालोऽवरउम्हई ।
 तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥
 [वयल्लक्कं कायल्लक्कं अकप्पो गिहिभायणं ।
 पलियं क निसेज्जा य सिणाणं सोहवज्जणं ॥]^३

१—^० भाविस्स (अ) ।२—^० फुडा (ज) ; ^० फुल्ला (अ) ।

३—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूणिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

तत्स्थितं पटनं ठाणं महावीरेण देसियं ।
 अहिंसा निउणं विद्धा सव्वेत्थेषु संजमो ॥ ८ ॥
 जावंति लोए पाणा तंसा अटुव थावरा ।
 ते जाणमजाणं वा न हणे णो वि^१ धायए ॥ ९ ॥
 सव्वे^२ जीवा विइच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवहं^३ धोरं निगंथा वज्जयंति णं ॥ १० ॥
 अप्पणद्धा पग्गु वा कोहा वा जइ वा भया ।
 हिंसयं न नुत्तं ब्रूया नो वि अल्लं वयावए ॥ ११ ॥
 मुत्तावाओ य लोणम्मि मव्वसाहूहि नरहिओ ।
 अविन्नासो य भूयाणं तम्हा मोत्तं विवज्जए ॥ १२ ॥
 चित्तनंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा वहं ।
 वंतसोहणमेतं पि ओणहंसि अजाइया ॥ १३ ॥
 नं अप्पणा न गेहंति नो वि गेह्हावए परं ।
 अल्लं वा गेह्माणं पि नाणुजाणंति संजया^४ ॥ १४ ॥
 अवंभचगियं धोरं पमायं दुरहिद्वियं ।
 नायरंति नुणो लोए भेयाययणवज्जिणो ॥ १५ ॥
 मूलनेयमहम्मस्स महादोससमुत्तयं ।
 तम्हा मेहणसंसग्गि निगंथा वज्जयंति णं ॥ १६ ॥

१—नित्ता (क. च. छ. छ. ह.) ।

२—^० जीवेसु (ला. छ.) ।

३—व (क. स. ग.) ।

४—स्व (ठ. छ.) ।

५—पाणिवहं (क. र. छ.) ।

६—नाणुजोत्तं स्वयं (ठ.) ।

बिडमुब्भेइमं^१ लोण तेल्लं सप्पि च फाणियं ।
 न ते सन्निहिमिच्छन्ति नायपुत्तवओरया ॥१७॥
 लोभस्सेसो अणुफासो मन्ने अन्नयरामंवि ।
 जे सिया सन्निहीकामे गिही पव्वइए न से ॥१८॥
 जं पि वत्थं व पायं वा कंबल पायपुच्छणं ।
 तं पि संजमलज्जद्वा धारंति परिहरंति य ॥१९॥
 न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
 मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्त महेसिणा ॥२०॥
 सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
 अविअप्पणो वि देहम्मि नायरंति ममाइयं ॥२१॥
 अहो निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहि वण्णिय ।
 जाय^२ लज्जासमा वित्ती एगभत्त च भोयणं ॥२२॥
 सतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
 जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ? ॥२३॥
 उदउल्ल बीयसंसत्तं पाणा निवड्डिया महि ।
 दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ? ॥२४॥
 एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासिय ।
 सव्वाहारं न भुंजति निग्गंथा राइभोयणं ॥२५॥
 पुढविकायं न हिसति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥२६॥
 पुढविकायं विहिसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२७॥

१—पिडमुब्भे (अ) ।

२—व (अ) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥
 आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥
 आउकायं विहिसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे यं विविहे पाणे चक्खुसे यं अचक्खुसे ॥३०॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३१॥
 जायतेयं न इच्छंति पावग जलइत्तए ।
 तिकखमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥
 पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि ये ॥३३॥
 भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
 तं पईवपयावट्ठा संजया किंचि नारभे ॥३४॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥
 अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिंसं ।
 सावज्जवहुलं चयं नेयं तार्ईहिं सेवियं ॥३६॥
 तालियेटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न ते वीइउमिच्छन्ति 'वीयावेऊण वा परं' ३ ॥३७॥
 जंपि वत्थं व पायं वा कंबल पायपुंछणं ।
 न ते वायमुईरंति जय परिहरंति य ॥३८॥

१—^० वियावट्ठा (अ) ।

२—अगणिकाय ^० (क, घ) ।

३—ना वि वीयावए पर (क) ।

४—वाउ ^० (ख, घ) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥
 वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४०॥
 वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥
 तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥
 तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥
 जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाहारमाईणि ।
 ताइं तु विवज्जतो संजमं अणुपालए ॥४६॥
 पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
 अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥
 जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
 वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥४८॥
 तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
 वज्जयंति ठियप्पाणो निगंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

कुंसेसु कंसपाएसु 'कुंडमोएसु'^१ वा पुणो ।
 भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५०॥
 सीओदगसमारंभे मत्तघोयणछहुणे ।
 जाइं छन्नंति^२ भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥
 पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई ।
 एयमट्ठं न भुंजंति निगंथा गिहिभायणे ॥५२॥
 आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा ।
 अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥
 'नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
 निगंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'^३
 गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
 आसंदीपलियंका^४ य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥
 गोयरगपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥
 विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे^५ वहो ।
 वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥५७॥
 अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि^६ संकणं ।
 कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ * परिवज्जए ॥५८॥

१—कुंडकोसेसु (आ, जा) ।

२—छिन्नंति (क, ख, ग) ; छिप्पति (ह) ।

३—'असंदीपलियंकेसु' एस सिलोगो केसिचि-णेव अत्थि (अ) ; जिनदास चूर्णि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है ।

४—^० पलियंको (क, ग) ; ^० पलियंके (ख) ।

५—च वहै (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—यावि (अ, क, ख, ग, ज) ।

तिण्हमन्नयरागस्स , , , निसेज्जा जस्स , कप्पई ।
 जराए , अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥
 वाहिओ वा अरोगीवा सिणाणं जो उ पत्थए ।
 वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥६०॥
 संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
 जे उ^१ भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥
 तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
 जावज्जीवं वयं घोरे असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥
 सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
 गायस्सुव्वट्टणद्वाए नायरंति कयाइ वि ॥६३॥
 नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
 मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ॥६४॥
 विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
 संसारसायरे घोरे जेणं पडइ^२ दुरुत्तरे ॥६५॥
 विभूसावत्तियं चेयं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥६६॥
 खवेति अप्पाणममोहदंसिणो
 तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
 धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
 नवाइ पावाइं न ते करेति ॥६७॥

१—य (स) ।

२—भमइ (अ) ।

सओवसंता अममा अकिचणा
 सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
 उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा
 सिद्धि विमाणाइ उर्वेति^१ ताइणो ॥६८॥
 —त्ति बेमि ॥

*

सत्तमज्जमयणं

वक्खसुद्धि

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्नवं ।
 दोण्हं तु विणयं^१ सिक्खे दो न भासेज्ज सब्बसो ॥ १ ॥
 जा य^२ सच्चा अवत्तव्वा सच्चा मोसा य जा मुसा ।
 जा य बुद्धेहि^३ णाइन्ना न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
 असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमककसं ।
 समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
 एयं च अट्टमन्न वा जं तु नामेइ सासयं ।
 स भासं सच्चमोसं पि^३ तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
 वितहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो ।
 तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किपुण जो मुसं वए^३ ? ॥ ५ ॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वाणे भविस्सई ।
 अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥ ६ ॥
 एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया ।
 संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
 'अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
 अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

१—विजय (अ), विनय (आ) ।

२—जा (अ) ।

३—च (स) ।

अइयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
 निस्संकियं भवे जं तु 'एवमेयं ति निहिसे' ॥१०॥^२
 तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी ।
 सच्चा वि सा न वत्तन्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
 वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥
 एएणन्तेण वट्टेण^३ परो जेणुवहम्मई ।
 आयाारभावदोसन्तू^४ न तं भासेज्ज पन्तव ॥१३॥
 तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
 दमए दुहए वा^५ वि नेवं^६ भासेज्ज पन्तव ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउस्सियं त्ति य ।
 पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥
 हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

१—थोव थोव तु निहिसे (हा) ।

२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर चूर्णिद्वय मे निम्न श्लोक हैं :—

तहेवुणागत अट्ट ज वण्ण मणु(ण) व धारिय ।

सकित पड्डपण्ण वा 'एवमेयं' ति णो वदे ॥ ८ ॥

तहेवुणागत अट्ट ज वण्ण मु(म) व धारिय ।

नीसकित पड्डपण्ण थाव थावाए णिहिसे ॥ ९ ॥ (अ) ।

त तहेव अइयमि कालमिणवधारिय ।

ज चण्ण सकिय वावि 'एवमेयं' ति नो वए ॥ ८ ॥

तहेवणागत अट्ट ज होइ उवहारिय ।

निस्सकिय पड्डप्पन्ने 'एवमेयं' ति निहिसे ॥ ९ ॥ (ज) ।

३—अट्टेण (क, ख, ग, घ) ।

४—० दोसेण (अ) ।

५—चा (ह) ।

६—नेय (ख) ।

- नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 १७ जहारिहमभिगिज्झं आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥
 अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
 १८ माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥
 हे हो हले त्ति अन्ते त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।
 १९ होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥
 नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
 २० जहारिहमभिगिज्झं आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥
 पंचिदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं ।
 २१ जावणं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥
 तहेव मणुस्सं पसु पक्खि वा विसरीसिवं ।
 थूले पमेइले वज्जे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥
 परिवुइहे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य ।
 २३ संजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥
 तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
 वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥
 जुवं गवे त्ति णं बूया घेणुं रसदय त्ति य ।
 २५ रहस्से महल्लए वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
 २६ रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥
 अलं पासायखभाणं तोरणाणं गिहाण य ।
 २७ फलिहमलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥२७॥

पीढए चंगवेरे^१ य नंगले मइयं^२ सिया ।
 जंतलट्टी व नाभो वा गंडिया^३ वअलं सिया ॥२८॥
 आसणं सयणं जाणं होज्जा वा 'किंचुवस्सए'^४ ।
 भूओवघाइणि भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि यं ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥
 जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया ।
 पयायंसाला विडिमा^५ वए टरिस्सणि त्ति य ॥३१॥
 तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए ।
 वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥
 असंथडा इमे अंवा बहुनिवट्टिमा फला ।
 वएज्ज बहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइयं ।
 लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥
 रुढा^६ बहुसंभूया थिरा ऊसढा^७ वि य ।
 गट्ठिभयाओ पसूयाओ ससाराओ^८ त्ति आलवे ॥३५॥
 'तहेव संखडिं नच्चा 'किच्चं कज्जं'^९ त्ति नो वए ।
 तेणगं वा वि वज्जे त्ति सुतित्थ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दडिया (क, ख, ग) ।

२—किं चुवस्सए (ख) ।

३—पडिमा (ख) ।

४—वरूढा (ज) ।

५—उत्सडा (अ) ; उत्तिसया (ज) ।

६—ससाराओ (ह) ।

७—करणिजंति (घ) ।

संखडिं संखडिं ब्रूया 'पणियट्ट ति' तेणं ।
 - बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥
 तथा नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्ज ति' नो वए ।
 नावाहिं तारिमाओ ति पाणिपेज्ज ति नो वए ॥३८॥
 बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥^३
 तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
 कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
 सुकडे ति सुपक्के ति सुद्धिन्ने सुहडे मडे ।
 सुनिट्ठिए सुलट्ठे ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥
 पयत्तपक्के ति व पक्कमालवे ।
 पयत्तद्धिन्न ति व धिन्नमालवे ।
 पयत्तलट्ठ ति व कम्महेउयं,
 'पहारगाढ' ति व गाढमालवे ॥४२॥
 सव्वुकसं परगघं वा अउलं नत्थि एगिसं ।
 अवक्कियमवत्तव्वं अचियत्त चेव नो वए ॥४३॥
 सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं ति नो वए ।
 अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पन्नवं ॥४४॥
 सुक्कीयं वा मुविक्कीय अवेज्जं केज्जमेव वा ।
 इमं गेण्ह इमं मुच पणियं नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्ट ति (ख, ग, घ) ।

२—काय-पेज्जति (अ) ; काय तेज्जति (आ) ; काय पेज्जति (जा) ।

३—अगत्य चूर्णि में श्लोक ३६, ३७ के स्थान में ३८, ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६, ३७ इस प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है ।

४—गाढप्पहार (अ, ज, ह) ।

५—अचक्किय ° (ख, ग) • अवक्किय ° (ङ) ।

अप्पघे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।
 पणियट्ठे समुपन्ने अणवज्जं वियागरे ॥४६॥
 तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा ।
 सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥४७॥
 बहवे इमे असाहु लोए वुच्चंति साहुणो ।
 न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे ॥४८॥
 नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥
 देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे ।
 अमुयाणं जओ होउ मावा होउ त्ति नो वए ॥५०॥
 वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायंसिवं त्ति वा ।
 कया णु होज्ज एयाणि मावा होउ त्ति नो वए ॥५१॥
 तहेव मेहं व नहं व माणवं
 न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
 समुच्छिण्ण उन्नए वा पओए
 वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥
 अंतलिकखे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरियं त्ति य ।
 रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं त्ति आलवे ॥५३॥
 तहेव सावज्जणुभोयणी गिरा
 ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
 से कोह लोह भयसा^२ व माणवो^३
 न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह) ।

२—भय-हास (ख, ज, ह) ।

३—माणवा (ख) ।

सवक्खुद्धिं^१ समुपेहिया मुणी
 गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
 मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
 सयाण मज्जे लहई पसंसणं ॥५५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
 तीसे य दुट्ठे परिवज्जए^२ सया ।
 छसु संजए सामणिए सया जए
 वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
 परिक्खभासी सुसमाहिईदिए
 चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
 स निद्धणे धुन्तमलं पुरेकडं
 आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—सव्यक्क^० (क, घ) ; सुव्यक्क^० (ल, ग) ।

२—विपज्जगो (उ) ।

अट्टमज्झयणं

आयारपणिही

अयारप्पणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा । -
 तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
 पुढवि दग अगणि माख्य तणरुक्ख सबीयणा ।
 तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
 तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया । -
 मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥ ३ ॥
 पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिंदे न संलिहे ।
 तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
 सुद्धपुढवीए^१ न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
 पमजित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओगहं ॥ ५ ॥
 सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुट्ठं^२ हिमाणि य ।
 उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥
 उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
 समुप्पेह^३ तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
 इंगालं अगणि अच्चिं अलायं व सजोइयं ।
 न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
 तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न वीएज्ज अप्पणो कायं वाहिरं वा विपोगलं ॥ ९ ॥

१—^०पुढवी (ख) ।२—^०वुट्ठि (क, ख) ।

३—समुप्पेहे (अ, ज) ।

तणस्खलं^१ न छिदेज्जा फलं मूलं व कस्सई ।
 आमगं विविहं बीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
 गहणेसु^२ न चिद्वेज्जा बीएसु हरिएसु वा ।
 उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा ॥११॥
 तसे पाणे न हिसेज्जा वाया अदुव कम्मणा ।
 उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥
 अट्ठं^३ सुहुमाइं पेहाए^४ जाइं जाणित्तु संजए^५ ।
 दयाहिगारी भूएसु आस चिद्व सएहि वा ॥१३॥
 कयराइं अट्ठ सुहुमाइं जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
 इमाइं ताइ मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥
 सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिगं तहेव य ।
 पणं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥
 एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
 अप्पमतो जए निच्चं सव्विदियसमाहिए ॥१६॥
 धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं ।
 सेज्जमुच्चारभूमि च संथारं अदुवासणं ॥१७॥
 उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
 फासुयं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥
 पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
 जयं चिद्वे मियं भासे णं^६ य रुवेसु मणं करे ॥१९॥

१—० रुक्खे (अ) ।

२—गहणंमि (अ) ।

३—मेहावी (अ) ।

४—पडिलेहित्तु सजए (अ) ।

५—णो (अ) ।

बहं सुणेइ कण्णेहिं बहं अच्छीहिं पेच्छइ^१ ।
 न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
 सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
 न य केणइ^२ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
 निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दं पावणं ति वा ।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निदिसे ॥२२॥
 न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंठं अयंपिरो ।
 अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥
 सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
 मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥
 लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
 आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥२५॥
 कण्णसोक्खेहि सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
 दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥२६॥
 खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
 अहियासे अव्वहिओ देहे^३ दुक्खं महाफलं ॥२७॥
 अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
 आहारमइयं^४ सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अतित्तिणे अचवले अप्पभासी^५ मियासणे ।
 हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिसए ॥२९॥

१—पासति (अ) ।

२—कोह (ज) ; केण (ख, घ) ।

३—देह (क, ख, घ) ।

४—^० माइय (क) ।५—^० वादी (अ, ज) ।

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्खे ।
 सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिबुद्धिए ॥३०॥
 से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
 संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥३१॥
 अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हेवे ।
 सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥
 अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
 तं परिगिज्झ वायाए कम्मूणा उववायए ॥३३॥
 अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमगं वियाणिया ।
 विणियट्टेज्ज^१ भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥
 [बलं थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
 खेतं कालं च विन्ताय तहप्पाणं निजुंजए ॥]^२
 जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्डई ।
 जाविदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥३५॥
 कोहं माणं च मायं च लोभं च पापवड्डणं ।
 वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥३६॥
 कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
 माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३७॥
 उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
 मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ^३ जिणे ॥३८॥

१—विणियज्जेज्ज (अ) ।

२—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूणि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

३—सत्तुडिए (ज) ।

कोहो य माणो य अणिग्गीया ।

माया य लोभो य पवद्धमाणा ।

चत्तारि ए ए कसिणा कसाया

सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥३९॥

राइणिएसु विणयं पउंजे

धुवसीलय सययं न हावएज्जा ।

कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो

परक्कमेज्जा तवसंजमम्मिं ॥४०॥

निदं च न बहुमन्नेज्जा संपहासं^१ विवज्जए ।

मिहोक्कहाहिं न रमे सज्झायम्मिं^२ रओसंयो ॥४१॥

जोगं च समणधम्मम्मिं^३ जुंजे अणलसो धुवं ।

जुत्तो य समणधम्मम्मिं अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४२॥

इहलोगपारत्तहियं जेणं गेच्छइ सोग्गइं ।

बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थ विणिच्छयं ॥४३॥

हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए ।

अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४४॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।

न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४५॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरो ।

पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायांमोसं विवज्जए ॥४६॥

अप्पत्तिय जेण सिया आसुकुप्पेज्ज वा परो ।

सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियग्गम्मिं^४ ॥४७॥

१—संप्रहास (क, ख, ग, घ, ह) ।

२—अज्झयणम्मि (ज) ।

३—० धम्मस्स (अ) ।

४—० गामिणी (अ) ।

दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुत्ते वियंजियं ।
 अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥
 आयारपन्नत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
 वेइविक्खलिये नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥४९॥
 नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं ।
 गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥
 अन्नट्ठं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं ।
 उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥
 विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं ।
 गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जां साहूहि संथवं ॥५२॥
 जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं ।
 एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥
 चित्तिभित्तिं न निज्झाए नारि वा सुअलंकियं ।
 भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठि पडिसमाहरे ॥५४॥
 हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविग्गप्पियं ।
 अवि वाससइं नारि 'बंभयारी विवज्जए' ॥५५॥
 विभूसां इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं ।
 नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥
 अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।
 इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥
 विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए ।
 अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामंपोग्गलाणउ ॥५८॥

१—दूरओ परिवज्जए (ज) ।

२—पणीय रस (क, ख, ग) ।

३—चारुल्लविय (अ, ज) ।

४—य (क, ख, ग, घ) ।

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तहा ।
 विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥
 जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं ।
 तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥
 तवं चिमं संजमजोगयं^१ च
 सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
 सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
 अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥
 सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।
 विसुज्झई जं सि मलं^२ पुरेकडं
 समीरियं रुपमलं व जोइणा ॥६२॥
 से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
 सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
 विरायई^३ कम्मघणम्मि^४ अवगए
 कसिणब्भपुडावगसे व चंदिमा ॥६३॥
 —त्ति बेमि ॥

२—^०जोग (अ) ।

३—रयं (अ) ।

१—विसुज्झई (अ), विमुच्चइ (ज) ।

२—पुव्वकडेण कम्मणा (अ, ज) ।

नवमं अज्मयणं
विणयसमाही (पढमो उद्देशो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्ख^१ ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करेंति आसायण ते गुरुणं ॥ २ ॥
पगईए मंदा वि भवंति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥
आसीविसो यावि^२ परं सुद्धो
किं जीवनासाओ^३ परं नुकुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ता
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—चिह्ने (अ, ज, हा) ।

२—यावि (क, ख, ग, ज) ।

३—जीवि^० (घ) ; जीवित^० (अ) ।

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
 आसीविसं वा वि हु कोवेएज्जा ।
 जो वा विसं त्वायइ जीवियट्ठी
 एसोवमासायणया गुरुणं ॥ ६ ॥
 सिया हु से पावय नो डहेज्जा
 आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
 सिया विसं हाल्हलं न मारे
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
 जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
 सुत्तं व सीहं पडिवोहएज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
 एसोवमासायणया गुरुणं ॥ ८ ॥
 सिया हु सीसेण गिरिं पि भिदे
 सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 सिया न भिदेज्ज व सत्तिअग्गं
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
 आयरियपाया पुण अण्णसन्ता
 अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
 तम्हा अणावाह सुहाभिकंखी
 गुरुण्णसायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥
 जहाहियग्गी जलणं नमंसे
 नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
 एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
 अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥

जस्संतिए धम्मपयाइ । सिक्खे
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसां पंजलीओ
कायगिरा भो मणसा य' निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया संजम बंभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
विरायई सुरमज्जे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अव्वभमुक्के
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'^१ ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं
आराहए^३ तोसए धम्मकामी ॥१६॥

१—वि (ख) ।

२—समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए (हा) ।

३—उवड्डिओ (अ) ।

सोच्चाण मेहावी सुभासियाइं
 सुस्सुसए आयरियप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे
 से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥
 —त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्मयणं

विणयसमाही (बीओ उद्देसो)

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स
 खंधाओ पच्छा समुवेति साहा ।
 साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
 तओ से पुप्फ च फलं रसो य ॥ १ ॥
 एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
 जेण कित्ति सुयं सिग्घं निस्सेसं चाभिगच्छई^१ ॥ २ ॥
 जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
 वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥
 विणयं पि जो उवाएण चोइओ कुप्पई नरो ।
 दिव्व सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥
 तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसति सुहमेहंता इड्ढि^२ पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
 तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसति दुहमेहंता छाया विगलितेदिया^३ ॥ ७ ॥
 दंडसत्थपरिजुण्णा असब्भ वयणेहि य ।
 कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए^४ परिगया ॥ ८ ॥

१—चाधिगच्छई (अ, ह) ।

२—इड्ढि (अ) ।

३—ते विगलितिया (क, ख, ग, घ) ; विगलितिया (अ) ।

४—खु प्पिवासा (घ) ; खु प्पिवासाहि (क, ग) , खु प्पिवासा य (ख) ।

तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसंति सुहमेहंता इडिढ पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ १० ॥
 तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति सुहमेहंता इडिढ पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
 जे आयरियउवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा ।
 तेसि सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव^१ पायवा ॥ १२ ॥
 अप्पणट्ठा पग्गट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य ।
 गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥
 जेण वंधं वह घोरं परियावं च दारुणं ।
 सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥ १४ ॥
 ते वि त गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा ।
 सक्कारेति नमंसंति^२ तुट्ठा निट्ठेसवत्तिणो ॥ १५ ॥
 किं पुण जे सुयग्गाही 'अणंतहियकामए'^३ ।
 आयरिया जवए भिवखू तग्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥
 नीयं सेज्ज गइं ठाण नीयं च आसणाणि य ।
 नीय च पाग्ग वंदेज्जा नीय कुज्जा य अंजलि ॥ १७ ॥
 सघट्ठत्ता काएणं तहा उवहिणामवि ।
 खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥ १८ ॥
 दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं ।
 एवं दुवुद्धि किच्चाणं^४ वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥ १९ ॥

१—व (अ) ।

२—सग्गेति (अ) ।

३—^० सुहकःपए (अ) ।

४—किच्चाइ (अ, ज, हा) ।

[आलवते लवन्ते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
 मोत्तूण आसण धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥]^१
 कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
 तेण तेण उवाएण तं तं संपडिवायए ॥२०॥
 विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
 जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ^२ ॥२१॥
 जे यावि चडे मइइडिङ्गारवे
 पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
 अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
 असंविभागी नहु तस्स मोक्खो ॥२२॥
 निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
 सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
 तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
 खवित्तु कम्मं गडमुत्तमं गय ॥२३॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

२—अधिगच्छइ (हा) ।

नवमं अङ्गमयणं

विणयसमाह्वी (तइओ उहेसो)

आयरियं^१ अग्निमिवाहियग्गो
 सुत्सुसमाणो पडिजागरेज्जा ।
 आलोइयं^२ इंगियमेव नञ्चा
 जो छन्दमाराह्यइ स पुज्जो ॥ १ ॥
 आयारमट्ठा विणयं पडंजे
 सुत्सुसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
 जहोवइट्ठं अभिकंजमाणो^३
 'गुरु' तु नासाययई^४ स पुज्जो ॥ २ ॥
 राइणिएनु विणयं पडंजे
 डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
 नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई
 ओवायवं वक्करे स पुज्जो ॥ ३ ॥
 अन्नायउंछं चरई विसुद्धं
 जवणइया समुयाणं च निच्चं ।
 अलद्धयं नो परिदेवएज्जा
 लद्धं न विकत्थयई^५ स पुज्जो ॥ ४ ॥

१—आयरियणि (अ. क. ख. ग) ।

२—आलोइय (क. ख) ।

३—अदिकंपणागो (अ. ज) ।

४—जो छन्दमाराह्यइ (अ. उ) ।

५—विकत्थई (ग) : विज्जंथई (क. ख. घ) ।

संथारसेज्जासणभत्तपाणे .

अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।

जो एवमप्पाणभितोसएज्जा

संतोसपाहन्त्त ए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए^१ कंटया

अओमया उच्छहया नरेणं ।

अणासए जो उ सहेज्ज कंटए

वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु^२ हवन्ति कंटया

अओमया ते वि तओ सुउद्धरा^३ ।

वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि

वेराणुबन्धीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयन्ता वयणाभिघाया

कण्णंगया दुम्मणियं जणन्ति ।

धम्मो त्ति किच्चा परमगसूरे

जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्मुहस्स

पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।

ओहारिणि अप्पियकारिणि च

भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

१—आसाय (स) ।

२—उ (क, ख, ग, घ) ।

३—सुउद्धरा (क) ।

अलोलुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
 नो भावए नो वि य भावियप्पा
 अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
 गिण्हाहि साहूगुण मुंचऽसाहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पएणं
 जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लं वा
 इत्थीपुमं पव्वइयं गिहि वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
 थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति
 जत्तेण कन्तं व निवेसयंति ।
 ते माणए माणरिहे तवस्सी
 जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
 चरे मुणी पंचरए^१ तिगुत्तो
 चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
 जिणमयनिउणे^१ अभिगमकुसले ।
 धुणिय रयमलं पुरेकडं
 भासुरमउलं गइं गय^२ ॥१५॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—जिणवयण^० (अ) ।

२—वइ (ज, ह) ।

नवमं अज्जयणं

विणयसमाही (चउत्थो उद्देशो)

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं
भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
पन्नत्ता, तंजहा—(१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही
(४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्चं पंडिया ।

अभिरामयंति अप्पाणं जे भवन्ति जिइंदिया ॥ १ ॥

॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा—(१) अणु-
सासिज्जंतो सुस्सूसइ (२) सम्मं संपडिवज्जइ (३) वेयमाराहयइ'
(४) न य भवइ अत्तसंपग्गहिए । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलौगो—

पेहेइ

हियाणुसासणं

सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमएण मज्जइ

विणयसमाही

आययट्ठिए ॥ २ ॥

॥ सू० ४ ॥

१—वेयमाराहइ (ख, ज) ।

२—वीहेति (अ) ।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तंजहा—(१) सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (२) एगगचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (३) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (४) ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थं सिलोगो—

नाणमेगगचित्तो य' ठिओ ठावयई परं ।

सुयाणि य अहिज्जिता रओ सुयसमाहिण ॥ ३ ॥

॥ सू० ५ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसट्ठसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थं सिलोगो—

विविहुगुणतवोरए य निच्चं

भवइ निरासए निज्जरट्ठिए ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

जुत्तो सया तवसमाहिण ॥ ४ ॥

॥ सू० ६ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसट्ठसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहंतेहि हेअहिं आयारमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए^१

अतितिणे

पडिपुण्णाययमाययट्टिए ।

आयारसमाहिसंवुडे

भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥

॥ सू० ७ ॥

अभिगम^२ चउरो समाहिओ^३

सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।

विउलहियसुहावहं

पुणो

कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइमरणाओ

मुच्चई

इत्थं^४ च चयइ^५ सव्वसो ।

सिद्धे वा

भवइ सासए

देवे वा अप्परए महिड्डिए ॥ ७ ॥

—त्ति नेमि ॥

*

१—० सए (अ) ।

२—अभिगत (अ) ।

३—समाहीओ (ख) ।

४—इत्थत्तं (अ) ।

५—जहाइ (अ, ज) ।

दसमज्झयणं
स-भिक्षू

निक्वम्ममाणाए^१ बुद्धवयणे^२
निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे
वंतं नो पडियायई जे स भिक्षू ॥१॥
पुढवि^३ न खणे न खणावए
सीओदगं न पिए^४ न पियावए^५ ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
तं न जले न जलावए जे स भिक्षू ॥२॥
अनिलेण न 'वीए न वीयावए'^६
हरियाणि न 'छिदे न छिदावए'^७ ।
वीयाणि सया विवज्जयंतो
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्षू ॥३॥
वहणं तसथावराण होइ
पुढवितणकट्टनिसियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुजे
नो 'विपए'^८ न पयावए जे स भिक्षू ॥४॥

१—० माणाइय (क, ख, ग), ० मादाय (जा) ।

२—० वयण (जा) ।

३—पुढवि (अ) ।

४—पीए (ख) ।

५—पीयावए (ख) ।

६—वीयावए न वीए (अ) ।

७—छिदावए न छिदे (अ) ।

८—न पए (अ) ।

रोइय नायपुत्तवयणे

अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

पंच य फासे महव्वयाइं

पंचांसवसंवरे^१ जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वसे सया कसाए

धुवजोगी य^२ हवेज्ज बुद्धवयणे ।

अहणे निज्जायरूवरयए^३

गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मदिट्ठी सया अमूढे

अत्थि हु नाणे तवे संजमे य ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असण पाणगं वा

विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।

होही अट्ठो सुए परे वा

तं न निहेन निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असण पाणगं वा

विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।

छंदिय साहम्मियाण भुंजे

भोच्चा सज्झायए य^४ जे स भिक्खू ॥९॥

१—^० सवुडे (घ, ह) ।

२—x (ज, ह) ।

३—^० रए (ख, ग) ।

४—x (क, ख, ग) ।

न य वुग्गहियं^१ कहां कहेज्जा
 न य^२ कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
 संजमधुवजोगजुत्ते
 उवसंते अविहेडए^३ जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु^४ गामकंटए
 अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
 भयभेरवसद्दसंपहासे^५
 समसुहुदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
 नो भायए भयभेरवाइं दिस्स^६ ।
 विविहगुणतवोरए य निच्चं
 न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइ वोसट्ठच्चत्तदेहे
 अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा ।
 पुढवि समे मुणी हवेज्जा
 अनियाणे अकोउहल्ले^७ य जे स भिक्खू ॥१३॥

१—विग्गहिय (अ, ह) ।

२—हु (क, ख, ग) ।

३—अवहेडए (क ग) ।

४—इइ (ख) ।

५—^० सप्पहासे (क, ख, ग घ. ज, ह) ।

६—दिअस्स (ख) ।

७—अकूतुहलि (अ) ।

अभिभूय काएण परीसहाइं
 समुद्धरे जाइपहाओ^१ अप्पयं ।
 विइत्तु जाईमरणं महब्भयं
 तवे^२ रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥
 हत्थसंजए पायसंजए
 वायसंजए संजइंदिए ।
 अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
 सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥
 उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे^३
 अन्तायउंठं पुलनिप्पुलाए ।
 कयविक्रयसन्तिहिओ^४ विरए
 सच्चसंगावणएय जे स भिक्खू ॥१६॥
 अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
 उंठं चरे जीविएनाभिकंखे^५ ।
 इडिंढ च सक्कारण पूयणं च
 चए^६ ठियप्पा अणिहे^७ जे स भिक्खू ॥१७॥
 न परं वएज्जासि अयं कुसीले
 जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
 जाणिय पत्तेयं पुण्णपावं
 अत्ताणं न समुक्खसे जे स भिक्खू ॥१८॥

१—० वहओ (अ, ज) ।

२—मवे (अ) ।

३—अराटिए (अ) ।

४—० सन्निहीहि (अ) ।

५—० नावकखे (अ) ; ० नाभिकखी (क, ख, ग, घ) ।

६—जहे (अ, ज) ।

७—अणिहिय (क) ; अणिहिए (ग) ।

न जाइमत्ते न य ख्वमत्ते
 न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता^१
 धम्मज्झाणरणे जे^२ स भिक्खू ॥१९॥
 पवेये अज्जपयं^३ महामुणी
 धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
 निक्खम्मं वज्जेज्ज कुसीललिङ्गं
 न यावि हस्सकुहए^४ जे स भिक्खू ॥२०॥
 तं देहवासं असुडं असासयं
 सया चए^५ निच्च हियट्ठियप्पा ।
 छिदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
 उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—विपज्जयतो (क, ख) ; विणि च धीरो (ज) ।

२—^० ए य जे (क) ।

३—अज्जवय (अ) ।

४—हास ^० (क, ख, ग, घ) ।

५—जहै (अ) ।

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो ! पव्वइएणं, उप्पन्तदुक्खेणं, संजमे अरइस्समावन्न-
चित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, हयरस्सिगयंकुस-
पोयपडागाभूयाइं^१ इमाइं अट्टारस आणाइं सम्मं संपडिलेहिंयव्वाइं
भवन्ति । तंजहा—

१—हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी^२ ।

२—लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ।

३—भुज्जो य साइबहुला^३ मणुस्सा ।

४—इमे य मे दुक्खे न चिरकालो वट्ठाई भविस्सइ ।

५—ओमजणपुरक्कारे ।

६—वंतस्स य पडियाइयणं ।

७—अहरगइवासोवसंपया ।

८—दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्जे वसन्ताणं ।

९—आयंके से वहाय होइ ।

१०—संकप्पे से वहाय होइ ।

११—सोवक्केसे गिहवासे ॥ निरुवक्केसे परियाए ॥

१२—बंधे गिहवासे ॥ मोक्खे परियाए ॥

१३—सावज्जे गिहवासे ॥ अणवज्जे परियाए ॥

१४—बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥

१५—पत्तेयं पुण्णपावं ॥

१६—अणिच्चेखलु^४ भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलविदुचंचले ॥

१—^१ पडागारो (अ) ।

२—दुप्पजीवं (अ) ।

३—त्ताय^३ (क, दी, ग, घ)

४—x (आ, जा) ।

१७-बहुं च खलु^१ पावं कम्मं पगडं ॥

१८-पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुंवि दुच्चिणाणं
दुप्पडिकंताणं^२ वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा
वा भोसइत्ता अट्टारसमं पयं भवइ ॥ सू० १ ॥

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई^३ धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।

से तत्थ मुच्छिण्ण बाले आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इदो वा पडिओ छमं ।

सव्वधम्म परिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।

देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो ।

राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।

सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो ।

मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥

‘जया य कुकुडंबस्स कुत्तीहिं विहम्मइ ।

हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥’^४

१—खलु भो (ख, घ,) ।

२—दुप्परकताण (ह) ; दुप्परिकताणं (ज) ।

३—जहइ (अ, ज) ।

४—यह श्लोक हस्तलिखित प्रतियों में है तथा टीका में व्याख्यात है किन्तु चूर्णिद्रय
व्याख्यात नहीं है ।

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
 पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
 'अज्ज आहं' गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुओ ।
 जइ हं रमतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
 देवलोगसमाणो उ^१ परियाओ महेसिणं ।
 रयाणं अरयाणं तु^२ महानिरयसारिसो ॥१०॥
 अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
 रयाण परियाए तहारयाणं ।
 निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
 रमेज्ज तम्हा परियाय पंडिए ॥११॥
 धम्माउ भट्ठ सिरिओ ववेयं^३
 जन्नग्गि विज्झायंमिव प्पतेयं ।
 हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला^४
 दादुद्धियं^५ घोरविसं व नागं ॥१२॥
 इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
 दुन्नामधेज्जं^६ च पिहुज्जणम्मि ।
 चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
 संभिन्नवित्तस्स य^७ हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा) ।

२—य (ख) ।

३—च (क, ख, ग, घ, ह) ।

४—अवेय (क, ग, घ, ह) ।

५—कुसील (अ, ज,) ।

६—दादुद्धिय (क, ज, ह) ।

७—^० गोत्तं (अ, ज) ।

८—उ (क, घ) ।

भुंजित्तु भोगाइ पसज्झ चेतसा
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं^१ दुहं
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं फिज्झइ सागरोवमं
किमंगपुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न च^२ सरीरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई^३ जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छओ^४
चएज्ज^५ देहं न उ^६ धम्मसासनं ।
तं तारिसं नो पयलेति इंदिया
उवेंतवाया^७ व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥

१—अणिहिज्झिय (क, ख, ग, घ) ।

२—मे (अ) ।

३—वियस्सई (अ) ।

४—निच्छओ (ख) ।

५—जहेज्ज (अ) ।

६—य (अ, ज) ।

७—उविति^० (क) ; उवति^० (ग) ।

इच्छेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो
 आयं उवायं विविहं वियाणिया ।
 काएण वाया अदु माणसेणं
 तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि^१ ॥१८॥
 —त्ति वेमि ॥

*

विविक्तचरिया (विज्ञा चूलिया)

चूलियं तु पक्खामि सुयं केवलिभासियं ।
जं सुणित्तु सपुत्ताणं^१ धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
अणुसोयपट्टिएबहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं ।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेणं ॥ २ ॥
अणुसोयसुहोलोगो
पडिसोओ आसवो^२ सुविहियाणं ।
अणुसोओ संसारो
पडिसोओ तस्स उत्तारो^३ ॥ ३ ॥
तम्हा^४ आचारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं ।
चरियागुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥
अणिएयवासो समुयाणचरिया
अन्नायउंछं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य^५
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥
आइण्णओमाणविवज्जणा य
ओसन्नदिट्ठाहड्ढभत्तपाणे^६ ।
संसट्ठक्कप्पेण चरेज्ज भिक्खू
तज्जायससट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

१—सपुज्जाण (घ) ; सपुत्ताण (ह) ।

२—आसमो (अ, हा) ।

३—निगघाळो (अ, ज) ।

४—एव (अ, ज) ।

५—उ (ज) ।

६—० पाण (आ) ।

अमज्जमंसासि अमच्छरीया
 'अभिवखणं निव्विगइं' गया य' १ ।
 अभिवखणं काउस्सगकारी
 सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥
 न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
 सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं ।
 गामे कुले वा नगरे व देसे
 ममत्तभावं ३ न 'कहिं चि' ४ कुज्जा ॥ ८ ॥
 गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
 अभिवायणं वंदण पूयणं च ५ ।
 असंकलिट्टेहिं समं वसेज्जा
 मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
 न या लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
 विहरेज्ज ६ कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥
 संवच्छरं चावि परं पमाणं
 वीयं च वासं न तहिं वसेज्जा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
 सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥

१—निव्विगइं (अ, घ) ।

२—अभिवखणि ज्वितियजोगया य (आ, जा) ।

३—ममत्ति ० (अ) ।

४—कहिं पि (स) ।

५—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—चरेज्ज (अ) ।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
संपिक्खई^१ अप्पगमप्पएणं ।
कि मे कडं ? कि च मे किच्चसेसं ?
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ? ॥१२॥

कि मे परो पासइ ? किं व^२ अप्पा ?
किं वाह^३ 'खलियं न विवज्जयामि'^४ ?
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं^५
काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
आइन्नओ^६ खिप्पमिव^७ क्वलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
सो जीवइ सजमजीविएणं ॥१५॥

१—सारक्खई (अ, ज) ।

२—च (क, ग, घ, ज) ।

३—चाह (क) ।

४—खलितो वि^० (अ), खलित ण वि^० (आ) ।

५—दुप्पणीय (अ, ज), दुप्पइत्त (क) ।

६—आइण्णो (अ); आइण्ण (ज) ।

७—खिप्प^० (आ, जा); खित्त^० (अ जा); ओसित्त^० (ज) ।

अप्पा^१ खलु सययं रक्खियव्वो
 सब्बिदिएहिं सुसमाहिएहि ।
 अरक्खिओ जाइपहं^२ उवेइ
 सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
 —त्ति बेमि ॥

*

उत्तरज्झयणं

पढमं अज्मयणं

विणयसुयं

- १-संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुर्व्वि सुणेह मे ॥
- २-आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥
- ३-आणाऽनिद्देसकरे^१ गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- ४-जहा सुणी पूइकणी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥
- ५-कणकुण्डगं चइत्ताणं^२ विट्ठं भुजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए^३ ॥
- ६-सुणियाऽभाव साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाण इच्छन्तो हियमप्पणो ॥
- ७-तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं 'पडिलभे जओ'^४ ।
बुद्धपुत्त^५ नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥

१-आणा अनिद्देसयरे (अ) ।

२-जहिताण (वृ०, चू०) ।

३-मिई (आ) ।

४-पडिलभिज्जओ (क) ; पडिलभेज्जओ (अ) ।

५-बुद्धउत्ते (वृ०) , बुद्धपुत्ते , बुद्धवुत्ते (वृ० पा०) ।

- ८-निसन्ते सियाऽमुहरी^१ बुद्धाणं अन्ति ए सया ।
 अट्टजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्टाणि उ वज्जए ॥
- ९-अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंति सेविज्ज पण्डि ए ।
 खुट्ठेहि सह संसग्गि हासं कीडं च वज्जए ॥
- १०-माय चण्डालियं कासी^२ बहुयं मा य आलवे ।
 कालेण य अहिज्जिता तओ भाएज्ज एगगो^३ ॥
- ११-आहच चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
 कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ॥
- १२-मा 'गलियस्सेव'^४ कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
 कसं व दट्ठुमाइणो पावगं परिवज्जए^५ ॥
- १३-अणासवा^६ थूलवया कुसीला
 मिउं पि चण्डं पकरेति सीसा ।
 चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
 पसायए ते हु दुरासयं पि ॥
- १४-नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
 कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥
- १५-'अप्पा चेव दमेयव्वो'^७ अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
 अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सि लोए परत्थ य ॥

१-सियाऽमुहरी (अ) ।

२-कुज्जा (उ) ।

३-एकको (अ) ।

४-गलियस्सेव (उ, ऋ) ; गलियस्सेव (अ) ।

५-पड्विज्जए (अ, वृ० पा०) ।

६-अणासुणा (वृ० पा०) ।

७-अप्पाणमेव दमए (वृ०, चू०) ।

- १६—वरं^१ मे अप्पादन्तो संजमेण तवेण य ।
 माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥
- १७—पडिणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
 आवी वा जइ वारहस्से नेव कुंजा कयाइ वि ॥
- १८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ॥
- १९—नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं व संजए ।
 पाए पसारिए^२ वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥
- २०—आयरिएहिं वाहिन्तो^३ तुसिणीओ न कयाइ वि ।
 पसायपेही^४ नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥
- २१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं^५ पडिस्सुणे ॥
- २२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सिज्जागओ कया'^६ ।
 आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो^७ ॥
- २३—एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुयं ॥
- २४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणि वए ।
 भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥
- २५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं ।
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥

१—वर (अ, उ, म) ।

२—पसारि नो (वृ०) ; पसारिए (वृ० पा०) ।

३—वाहितो (अ, आ, इ, उ) ।

४—पसायट्ठी (वृ० पा०) ।

५—जुत्तं (अ, उ) ।

६—णिसिज्जागओ कयाइ (वृ०) ।

७—पजलीगडे (वृ०) ; पजलीउडो (वृ० पा०) ।

- २६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'¹ ।
 एगो एगित्थिए सद्धि नेव चिट्ठे न संलवे ॥
- २७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण² फरुसेण वा ।
 मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥
- २८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयण³ ।
 हियं तं मन्ने पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥
- २९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
 वेसं तं होइ मूढाणं खत्तिंसोहिकरं⁴ पयं ॥
- ३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'⁵ थिरे ।
 अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥
- ३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥
- ३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
 पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥
- ३३—नाइदूरमणासन्ने⁶ नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे⁷ ॥
- ३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु) ; गिहसधिसु अ महापहेसु (बु०) ।

२—सीलेण (अ) ; सीलेण (बु० पा०, चू० पा०) ।

३—पेरण (वु०) , चोयणा (चू०) ।

४—सुद्धिकरं (वु०) ।

५—अणुच्चेअकुक्कुए (वु०) ।

६—णाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।

७—न अइक्कमे (अ) ।

- ३५—अप्पपाणेऽप्पवीयंमि^१, पडिच्छन्तंमि संवुडे ।
समयं संजए भुंजे जयं अपरिसाडियं^२ ॥
- ३६—सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुणिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥
- ३७—रमए पण्डिए सासं हयं भहं व वाहए ।
बालं सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ॥
- ३८—‘खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा यवहाय मे’^३ ।
कल्लाणमणुसासन्तो^४ पावदिट्ठि त्ति मन्नई ॥
- ३९—पुत्तो मे भाय नाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नई ।
पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं ‘दासं व’^५ मन्नई ॥
- ४०—न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए ।
बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥
- ४१—आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिएण पसायए ।
विज्झवेज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणो त्ति य ॥
- ४२—धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया ।
तमायरन्तो ववहारं^६ गरहं नाभिगच्छई ॥
- ४३—‘मणोगयं वक्कगयं’^७ जाणित्तायरियस्स उ ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मणा उववायए ॥

१—अप्पपाणेऽप्पवीयंमि (अ, उ, ऋ) ।

२—अप्परि (उ, ऋ, वृ०) ।

३—खड्डुयाहि चवेडाहि, अक्कोसेहि वहेहि य (वृ०, चू०) । खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे (चू० पा०, वृ० पा०) ।

४—^० सासन्त (वृ०, चू०) ।

५—दासे त्ति (अ, आ, इ, उ, सु) ।

६—मेहावी (वृ० पा०) ।

७—मणोरुइ वक्कइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४४—वित्तं अचोइए निच्चं^१ 'खिप्पं हवइ सुचोइए'^२ ।

जहोवइहं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ॥

४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्तीसे'^३ जायए ।

हवई किच्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा ॥

४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया ।

पसन्ना^४ लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥

४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए

'मणोरुइ'^५ चिट्ठइ कम्मसंपया ।^६

तवोसमायारिसमाहिंसंवुडे

महज्जुई पंचवयाइं पालिया ॥

४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए

चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।

सिद्धे वा हवइ सासए

देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥

—ति बेमि ॥

*

१—खिप्प (वृ० पा०, चू० पा०) ।

२—पसन्ने थामव करे (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—कित्तीय (अ, उ, ऋ) ; कित्ती सि (ऋ) ।

४—संपन्ना (वृ० पा०) ।

५—मणोरुइ (वृ० पा०) ।

६—मणोरुइ चिट्ठइ कम्मसपय (वृ० पा०) ; मणिच्छिय सपयमुत्तम गया (नागार्जुनीयाः) ।

वीर्यं अजभयणं परीसहपविभत्ती

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए^१ परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा^२ ।

सू० २—कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा—

१. दिगिच्छापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दंसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइ-परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसीहिया-परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,^३ १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७. तण्णापरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया ।

तं मे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (वृ०), भिक्खायरियाए (वृ० पा०) ।

२—विनिहन्नेज्जा (वृ०) ।

३—उक्कोस^० (अ, ऋ) ।

(१) दिगिच्छापरीसहे

२—दिगिच्छापरीसहे^१ देहे तवस्सी भिक्खु थामवं ।

न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥

३—कालीपव्वंगसंकासे , किसे , धमणिसंतए ।

मायन्ते असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥

(२) पिवासापरीसहे

४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए^२ ।

सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥

५—छिन्तावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए^३ ।

परिसुक्कमुहेऽदीणे^४ तं तितिकखे परीसहं^५ ॥

(३) सीयपरीसहे

६—चरन्तं विरयं लूह सीयं फुसइ एगया ।

नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं^६ ॥

७—न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई ।

अहं तु अग्गि सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(४) उसिणपरीसहे

८—उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए ।

धिसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए ॥

१—^०परियावेण (वृ०), ^०परितापेण (चू०); ^०परिगते (वृ० पा०) ।

२—लज्जसज्जे (वृ० चू०); लज्जासज्जे, लज्जसज्जे (वृ० पा०); लज्जसज्जे (चू० पा०) ।

३—सुप्पिवासिए (अ); सुपिवासए (ऋ) ।

४—^०मुहदीणे (अ, सु); ^०मुहोदीणे (ऋ) ।

५—सव्वतो य परिव्वए (वृ० पा०) ।

६—नाइवेलं विहन्निज्जा पावदिट्ठी विहन्निइ (चू०, वृ०); नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं (चू० पा०, वृ० पा०) ।

९—उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाणं 'नो वि पत्थए' ।
गायं नो परिसिचेज्जा^२ न वीएज्जा य अण्पयं ॥

(५) दंसमसयपरीसहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहि समरेव^३ महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा सूरु अम्भिहणे परं ॥
११—न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए ।
उवेहे^४ न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥

(६) अचेलपरीसहे

१२—परिजुण्णेहि वत्थेहि होक्खामि त्ति अचेलए ।
अट्ठुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चित्तए ॥
१३—'एगयाऽचेलए होइ'^५ सचेले यावि एगया ।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥

(७) अरइपरीसहे

१४—गामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पविसे तं तित्तिक्खे परीसहं ॥
१५—अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए ।
धम्मरामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥

(८) इत्थीपरीसहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थिओ ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं^६ तस्स सामण्णं ॥

१—नाभिपत्थए (चू०, वृ०), जोऽपि पत्थए (वृ० पा०) ।

२—परिसेविज्जा (उ, ऋ) ।

३—सम एव (अ) ।

४—उवेह (उ, चू०, ऋ) ।

५—एगता अचेलगे भवति (चू०) ; अचेलए सय होइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सुकर (वृ० पा०) ।

१७—एवमादाय^१ मेहावी 'पंकभूया उ इत्थिओ'^२ ।
नो ताहि विणिहन्नेज्जा^३ चरेज्जत्तगवेसए ॥

(६) चरियापरीसहे

१८—एग एव^४ चरे लाढे अभिभूय पंरीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥
१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव^५ कुज्जा परिगहं ।
असंसत्तो गिहत्येहिं अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुन्नगारे वा ख्वमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं ॥
२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स^६ 'उवसग्गाभिधारए'^७ ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता^८ अन्नमासणं ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहि सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं ।
नाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नेई ॥
२३—पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदु पावगं ।
'किमेगरायं करिस्सइ'^९ एवं तत्थज्जियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, व०) ; एवमादाय (चू० पा०, व० पा०) ।

२—जहा एया लहस्सगा (चू० पा०, व० पा०) ।

३—विहन्नेज्जा (अ, सु) ।

४—एगो (चू० पा०) ; एगो (व० पा०) ।

५—नेव (अ) ।

६—अच्छमाणस्स (व० पा०, चू०) ।

७—उवसग्गमय मवे (व० पा०, चू० पा०) ।

८—उवट्ठित्ता (उ) ।

९—किं मज्झ एग रायाए (चू०) ।

(१२) अकोसपरीसहे

२४—अक्कोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।

सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥

२५—सोच्चाणं फरसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।

तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) वहपरीसहे

२६—हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए ।

तितिक्खं परमं नच्चा 'भिक्खुधम्मं विचित्तए' ॥

२७—समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कत्थई ।

नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एवं पेहेज्ज संजए' ॥

(१४) जायणापरीसहे

२८—दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।

सव्व से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥

२९—गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।

सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चित्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।

लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुत्तप्पेज्ज संजए ॥

३१—अज्जेवाह न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।

जो एवं पडिसंविक्खे* अलाभो तं न तज्जए ॥

१—० धम्ममि चित्तए (बु०), ० धम्म व चित्तए (बु० पा०) ।

२—ग त पेहे असाधुव (बु०); न ता पेहे असाधुव (चू०); एव पेहेज्ज संजए (चू० पा०), न य पेहे असाधुय, पठन्ति च—एव पेहेज्ज संजतो (बु० पा०) ।

३—पडिए (अ) ।

४—पडिसचिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसहे

३२—नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए द्दुहट्टिए ।

अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ॥

३३—तेगिच्छं नाभिनन्देज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।

एवं^१ खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तण्णफासपरीसहे

३४—अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।

तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥

३५—आयवस्स निवाएणं अउला^२ हवइ वेयणा ।एवं^३ नच्चा न सेवन्ति तन्तुजं^४ तणत्तज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

३६—किलिन्तगाए^५ मेहावी पंकेण व रएण वा ।

घिसु वा परितावेण सायं नो परिदेवए ॥

३७—वेएज्ज^६ निज्जरापेही 'आरियं धम्मणुत्तरं'^७ ।जाव सरीरभेउ त्ति जल्लं काएण धारए^८ ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

३८—अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमन्तणं ।

जे ताइं पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥

१—एय (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

२—तिउला (चू०, वृ०) , अतुला, विपुला वा (वृ० पा०) ।

३—एय (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

४—तन्तय (चू० पा०, वृ० पा०) ।

५—किलिङ्गाए (चू० पा०, वृ० पा०) ।

६—वेयज्ज (अ) ; वेइ तो, वेइज्ज, वेयतो (वृ० पा०) ।

७—आरियं धम्मणुत्तर (स०), आरियं धम्मणुत्तर (अ) ।

८—उळ्ळटे (चू०, वृ० पा०) ; धारए (चू० पा०) ।

३९—अणुक्साई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
'रसेसु' नाणुगिज्जेज्जा' " 'नाणुत्तप्पेज्ज पन्नवं'^३ ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूणं मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरट्ठगमि विरओ मेहुणाओ सुसंचुडो ।
जोसक्ख' नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावगं ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ^४ ।
एवं पि विहरओ मे छउम न नियट्ठई ॥

(२२) दसणपरीसहे

४४—नत्थि नूण परे लोए इड्ढी वावितवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सरसेसु० (वृ०) ।

२—रसिएसु णातिगिज्जेज्जा (वृ०) ; रसेसु नाणु० (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—न तैसि पीहए मु० (चू०, वृ०) , नाणुत्तप्पेज्ज पण्णव (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४—सप्तक्ख (चू०) ।

५—पडिवज्जिओ (वृ०) ; पडिवज्जओ (वृ० पा०) ।

तदयं अज्जयर्णं.

चाउरंगिज्जं

- १-चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो^१ ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥
- २-समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्ठु पुढो^२ विस्संभिया पया ॥
- ३-एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुर कायं आहाकम्मेहि गच्छई ॥
- ४-एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्सो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥
- ५-एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे 'सव्वट्ठेसु व'^३* खत्तिया ॥
- ६-कम्मसंगेहि सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥
- ७-कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सयं'^४ ॥
- ८-माणुस्सं विग्गहं लद्धु सुई धम्मस्स^५ दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तव खन्तिमहिसयं ॥

१-देहिणो (वृ० पा०, चू०) ।

२-पुणो (चू० पा०) ।

३-य (अ) : वि (ऋ) ।

४-सव्वट्ठ इव (वृ० पा०, चू० पा०) ।

५-जायन्ते मणुसत्तयं (वृ० पा०) ।

- ९-आहच्च- सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउयं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥
- १०-सुइं च लद्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
 बहवे रोयमाणा वि 'नो एणं' पडिवज्जए ॥
- ११-माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्धे ।
 तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धणे रयं ॥
- १२-"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिद्धई ।
 निव्वाणं परमं जाइ 'घयसित्तं व्व' पावए ॥"^३
- १३-विगिंचि* कम्मणो* हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
 पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥
- १४-विसालिसेहि सीलेहि जक्खा उत्तरउत्तरा ।
 महासुक्का व दिप्पन्ता मन्तन्ता अपुणच्चवं ॥
- १५-अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
 उड्ढं कप्पेसु चिद्धन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥
- १६-तत्थ ठिच्चा जहाठाण जक्खा आउक्खए चुया ।
 उवेन्ति माणुसं जोणि से दसंगेऽभिजायई ॥
- १७-खेत्तं वत्थु हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
 चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१-नो य ण (स, सु, वृ०) ।

२-घयसित्तं (उ) ; घयसित्तं (ऋ, सु,) . घयसित्ते व (वृ०) ।

३-चउद्धा संपयं लद्धुं इहेव ताव मायते ।

तैयते तैजसपन्ने घयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीया)

४-विकिंचि (अ, आ) ; विकिंच (चू०) ; विगिंच (चू० पा०) ।

५-कम्मणो (उ, ऋ) ।

१८—मित्तवं नायवं^१ होइ उचागोए य वण्णवं ।

अप्पायंके महापत्ते अभिजाए जसोबले ॥

१९—भोच्चा मागुस्सए भोए अप्पाडिल्ले अहाउयं ।

पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे केवलं बोहि बुज्झिया ॥

२०—चउरंगं दुल्लहं मत्ता^२ संजमं पडिवज्जिया ।

तवसा धुयकम्मसे सिद्धे हवइ सासए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—नाइव्व (ऋ) : नाइव (उ) ।

२—नत्ता (उ) ।

चउत्थं अज्जयणं

असंखयं

- १—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं^१ वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति ॥
- २—जे पावकम्मेहि धणं मणूसा
समाययन्ती अमइं^२ गहाय ।
पहाय ते 'पास पयट्ठिए'^३ नरे
वेराणुवद्धा नरयं उवेन्ति ॥
- ३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च^४ इहं च^५ लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख^६ अत्थि'^७ ॥
- ४—संसारमावन्न परस्स अट्ठा
साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥

१—एण (दृ० पा०) ।

२—अमय (दृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पासपयट्ठिए (ऋ) ; पासपट्ठिए (उ) ।

४—पेच्च (दृ०) ; पेच्च (दृ० पा०) ।

५—पि (चू०, दृ० पा०) ।

६—भोक्खो (दृ०, चू०) ।

७—ण कम्मुणो पीहाति तो क्याती (दृ० पा०, चू० पा०) ।

- ५—वित्तेण ताणं न लभे पमत्तो
इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पण्हे व अणन्तमोहे
नेयाउयं दट्टुमदट्टुमेव ॥
- ६—सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीसंसे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥
- ७—चरे पयाइं परिसंकमाणो
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥
- ८—छन्दं निरोहेण उवेइ मोकखं
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोकखं ॥
- ९—स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयंमि
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥
- १०—खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो ॥

१—आउंमि (उ) ।

२—व चरप्पमत्तो (ऋ) : चरउपपत्तो (उ) ।

- ११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमंजसं च
न तेमु भिक्खू मणसा पउस्से ॥
- १२—‘मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा’*
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं
मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥
- १३—जे संखया तुच्छ परप्पवाई
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए ‘अहम्मै’ति दुगुच्छमाणो
कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥
—ति वेमि ॥

*

१—मदाउ तहा हियस्स वड्डलोमणेज्जा (चू० पा०) ।

प त्रम अज्जमयणं

अकाममरणिज्जं

१—अण्णवंसि महोहसि^१ एगे तिण्णे^२ दुरुत्तरं ।

तत्थ एगे महापन्ने इमं पट्टमुदाहरे^३ ॥

२—सत्तिमे य^४ दुवे ठाणा अक्खाया मारणन्तिया ।

अकाममरणं चेव सकाममरणं तथा ॥

३—बालाणं^५ अकामं तु मरणं असइं भवे ।

पण्डियाणं सकामं तु उल्लोसेण सइं भवे ॥

४—तत्थिमं पढमं ठाण महावीरेण देसियं ।

कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥

५—जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई ।

तं मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥

६—हत्थागया इमे कामा

कालिया जे अणागया ।

को जाणइ परे लोए

अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥

७—जणेण सद्धि होक्खामि इइ बाले पगब्भई ।

कामभोगाणुराएणं केसं संपडिवज्जई ॥

८—तओ से दण्डं समारभई तसेसु थावरेसु य ।

अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गाम विहिंसई ॥

१—महोघसि (वृ० पा०) ।

२—तरइ (वृ०, चू०,) , तिण्णे (वृ० पा०) ।

३—पट्टमुदाहरे (वृ० पा०, चू० पा०, सु) ।

४—खलु (चू०) , ए (वृ०) ।

५—बालाण य (ऋ) ।

- ९—हिसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुजमाणे सुरं मंसं सेयमेयं ति मन्नई ॥
- १०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहओ मलं सचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥
- ११—तओ पुट्टो आयकेणं गिलाणो परितप्पई ।
 पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥
- १२—सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई ।
 बालाण कूरकम्माण पगाढा जत्थ वेयणा ॥
- १३—तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
 आहाकमेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥
- १४—जहा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं ।
 विसमं मग्गमोइण्णो^१ 'अक्खे भग्गंमि'^२ सोयई ॥
- १५—एव धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥
- १६—तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई^३ भया ।
 अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥
- १७—एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं ।
 एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥
- १८—मरणं पि सपुण्णाणं^४ जहा मेयमणुस्सुयं ।
 विप्पसण्णमणाघाय^५ संजयाण वुसीमओ ॥

१—मग्गमोगाढा (चू०) ; मग्गमोगाढो (वृ० पा०) ।

२—अक्खभग्गमि (वृ०) ; अक्खस्स भग्गे (चू०) , अक्खे भग्गमि (वृ० पा०) ।

३—सत्तसई (चू०) ।

४—सपुण्णाण (अ) ।

५—सुपसन्तोहि अक्खाय (वृ० पा०, चू०) ; सुप्पसन्नमणक्खाय (वृ०) ;

विप्पसण्णमणाघाय (चू० पा०) ।

१९—न इमं 'सव्वेसु भिक्खूसु'^१

न इमं सव्वेसुऽगारिसु ।

नाणासीला

अगारत्था

विसमसीला य भिक्खुणो ॥

२०—सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा ।

गारत्थेहिं य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥

२१—चीराजिणं नगिणिणं^२ जडीसंघाडिमुण्डिणं ।

एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागय ॥

२२—पिण्डोलए व^३ दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई ।

भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं ॥

२३—अगारिसामाइयंग्गाइं सड्ढी काएण फासए ।

पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए ॥

२४—एवं सिक्खासमावन्ने गिहवासे^४ वि सुव्वए ।

मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं ॥

२५—अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे^५ सिया ।

सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महड्ढिए ॥

२६—उत्तराइं विमोहाइं जुइमन्ताणुपुव्वसो ।

समाइण्णाइं जक्खेहिं आवासाइं जसंसिणो ॥

२७—दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरुविणो ।

अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥

१—सव्वेसि भिक्खूण (चू०) ।

२—गिगिणिण (वृ०) ; गियण (चू०) ।

३—वि० (अ, चू०) ।

४—गिह्वासे (छ) ।

५—एगयरे (चू०) ।

- २८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खिता संजमं तवं ।
 भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥
- २९—तेसि सोच्चा सपुज्जाणं^१ संजयाण वुसीमओ ।
 न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥
- ३१—तओ काले अभिप्पेए सङ्खी तालिसमन्तिए ।
 विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥
- ३२—अह कालंमि संपत्ते 'आघायाय समुत्सयं'^२
 सकाममरणं , मरई तिण्हमन्तयरं मुणी ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—सपुज्जाण (चू०) ।

२—सुतक्खाल समाहितो (चू०), आघायाय समुच्छय (चू० पा०) ।

छट्टमज्जयणं

खुड्डागनियंठिज्जं

- १—जावन्तऽविज्जापुरिसा 'सव्वे ते दुक्खसंभवा'¹ ।
 लुप्पन्ति बहुसो मूढा संसारंमि अणन्तए ॥
- २—'समिक्ख पंडिए तम्हा'² पासजाईपहे बहू ।
 अप्पणा³ सच्चमेसेज्जा मेत्ति भूएसु⁴ कप्पए ॥
- ३—माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
 नालं ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥
- ४—एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे ।
 छिन्द गेहि⁵ सिणेहं च न कळे पुव्वसंथवं ॥
- ५—गवास मणिकुडलं पसवो दासपोरुसं ।
 सव्वमेय चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥
 [थावर जगमं चेव धण धणं उवक्खरं ।
 पच्चमाणस्स कम्मेहि नालं दुक्खाउ मोयणे ॥]⁶
- ६—अज्झत्थं सव्वओ सव्व दिस्स पाणे पियायए ।
 'न हणे पाणिणो पाणे'⁷ भयवेराओ उवरए ॥
- ७—आयाण नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि ।
 'दोग्गछी⁸ अप्पणो पाए'⁹ दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥

१—ते सव्वे दुक्खसंभवा (न ग.जुनीयाः) ।

२—जम्हा समिक्ख मेहावी (चू०, वृ० पा०) ; समिक्ख पण्डिए तम्हा (चू० पा०) ।

३—अत्तट्ठा (वृ० पा०) ।

४—भूएसु (चू०) ।

५—गेह (उ) ।

६—यह श्लोक चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

७—नो हिंसेज्ज पाणिण पाणे (चू०) , नो हणे पाणिण पाणे (वृ० पा०) ।

८—दोग्गछी (ऋ) ।

९—अप्पणो पाणिपाते (चू० पा०) ।

- ८—इहमेगे उ मन्तन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
 आयरियं^१ विदित्ताणं सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥
- ९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
 वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥
- १०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
 विसन्ता पावक्कमेहिं^२ बाला पंडियमाणिणो ॥
- ११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
 'मणसा कायवक्केण'^३ सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥
- १२—आवन्ता दीहमद्वाणं संसारंमि अणंतए ।
 तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥
- १३—बहिया उड्ढमादाय नावक्खे कयाइ वि ।
 पुव्वक्कम्मखयट्ठाए इम देहं समुद्धरे ॥
- १४—विविच्च^४ कम्मणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
 मायं पिडस्स पाणस्स कड लद्धूण भक्खए ॥
- १५—सन्निहि च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
 पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो^५ परिव्वए ॥
- १६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
 अप्पमत्तो पमत्तेहि पिंडवाय गवेसए ॥

१—आयारिय (वृ० पा०, उ, चु) ।

२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।

३—मणसा वयसा चैव (वृ०, वृ०) ; मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।

४—विविच (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।

५—निरवेक्खी (वृ०) ।

१७—‘एवं से उदाहु, अणुत्तरनाणी
 अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे ।
 अरहा नायपुत्ते
 भगवं वेसालिए वियाहिए ॥’
 —त्ति वेमि ।’

*

१—एव से उदाहु अरहा पासि प्रसिदाणीए ।
 भगवंते वेसालिए बुद्धे परिनिव्वुडे ॥ (वृ० पा०, चू० पा०)

सत्तमं अजभयणं

उरब्धिज्जं

- १—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं 'जवसं देज्जा' पोसेज्जा 'वि सयंगणे' ॥
- २—तओ से पुट्टे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए ॥
- ३—जाव न एइ^१ आएसे ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
- ४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
एवं बाले अहम्मिद्वे ईहई नरयाउयं ॥
- ५—हिसे बाले^२ मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए ।
अन्नदत्तहरे तेणे^३ माई कण्हुहरे^४ सढे ॥
- ६—इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे ।
भुजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥
- ७—अयककरभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए^५ ।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
- ८—आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया ।
दुस्साहडं धण हिच्चा बहुं संचिणिया रयं ॥

१—जवसे देति (चू०) ।

२—विसयगणे (वृ० पा०, चू०) ।

३—पडि० (वृ०), परि० (वृ० पा०) ।

४—एज्जति (चू०) ।

५—कोही (वृ० पा०) ।

६—बाले (वृ०), तेणे (वृ० पा०) ।

७—किन्नुहरे (चू०); कन्नुहरे (सु) ।

८—^० सोणिए (उ, ऋ) ।

- ९—तओ कम्मगुरू जन्तू पच्चुप्पन्नपरायणे^१ ।
 अय व्व आगयाएसे मरणन्तंमि सोयई ॥
- १०—तओ आजपरिक्खीणे 'चुयादेहा'^२ विहिंसगा^३ ।
 आसुरियं दिसं बाला^४ 'गच्छन्ति अवसा'^५ तमं ॥
- ११—जहा कागिणिए हेउं सहस्सं हारए नरो ।
 अपत्थं अम्बगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥
- १२—एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ।
 सहस्सगुणिया भुज्जो आजं कामा य^६ दिव्विया ॥
- १३—अणेगवासानउया जा सा पन्नवओ ठिई ।
 जाणि जीयन्ति^७ दुम्मेहा ऊणे वाससयाउए ॥
- १४—जहा य तिन्नि वणिया मूलं घेत्तूण निग्गया ।
 एगोऽत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ ॥
- १५—एगो मूलं पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ ।
 ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥
- १६—माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे ।
 मूलच्छेएण जीवाणं नरगंतिरिक्खत्तणं धुवं ॥
- १७—दुहओ गई बालस्स आवई वहंमूलिया ।
 देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासडे ॥

१—० पलज्जणे (चू०) ।

२—चुओदेहा (वृ०) ; चुयदेहो (वृ० पा०) ।

३—विहिंसगो (वृ०) ।

४—बालो (वृ०) ।

५—गच्छइ अवसो (वृ०) ।

६—उ (ऋ) ।

७—हारित्ति (वृ० पा०) ।

- १८—तओ जिए सइं होइ दुविहं दोम्माइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अद्दाए सुइरादवि ॥
- १९—एवं जियं^१ सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं ।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमेन्ति^२ जे ॥
- २०—वेमायाहिं सिक्खाहि जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा^३ हु पाणिणो ॥
- २१—जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया^४ ।
सीलवन्ता सवीसेसा अदीणा जन्ति देवयं ॥
- २२—एवमदीणवं^५ भिक्खु अगारिं^६ च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं 'जिच्चमाणे न'^७ संविदे ? ॥
- २३—जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एव माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥
- २४—कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए ।
कस्स हेउ पुराकाउ^८ जोगक्खेमं न संविदे ? ॥
- २५—इह कामाणियदुस्स अत्तट्ठे अवरज्झई ।
'सोच्चा' नेयाउयं मगं जं भुज्जो परिभस्सई^९ ॥

१—जिए (वृ०) ।

२—जोणिमेन्ति (उ, चू०) ।

३—कम्मसत्ता (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४—तिउच्छिया (अ) ; ते उट्ठिया (चू०) ; ते अइच्छिया (चू० पा०) ;
विउट्ठिया, अतिउट्ठिया, अतिच्छिया (वृ०) ।

५—एव अदीणव (चू०, वृ०) ।

६—आगारिं (उ, ऋ) ।

७—जिच्चमाण व (चू०) ।

८—पुराकाउ (चू०) ।

९—पत्तो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

१०—पूइदेह निरोहिणं भवे देवे त्ति मे सुयं (चू० पा०) ।

- २६—‘इह कामणियट्टस्स अत्तद्धे नावरज्जई ।
 पूइदेहनिर्रोहेणं भवे देवि त्ति मे सुयं ॥’^१
- २७—इइढी जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई ॥
- २८—बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया^२ ।
 चिच्चा धम्मं अहम्मिद्धे नरए^३ उववज्जई ॥
- २९—धीरस्स पस्स धीरत्तं सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
 चिच्चा अधम्मं धम्मिद्धे^४ देवेषु उववज्जई ॥
- ३०—तुलियाण बालभावं अबालं चैव पण्डिए ।
 चइऊण बालभावं अबालं सेवए मुणि ॥
 —त्ति वेमि ।

१—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है ।

२—पडिवज्जिणो (अ, वृ० पा०) ।

३—नरएसु (अ, उ) ।

४—धम्मद्धे (उ) ।

अट्टमं अज्जमयणं

काविलीयं

१-अधुवे

असासयंमि^१

संसारंमि दुक्खपउराए ।

किं नाम होज्ज तं कम्मयं

‘जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा’^२ ॥

२-विजहित्तु

पुव्वसंजोगं

न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।

असिणेह

सिणेहकरेहिं

दोसपओसेहिं^३ मुच्चए भिक्खू ॥

३-तो

नाणदंसणसमग्गो

हियनिस्सेसाए^४ सव्वजीवाणं ।

तेसिं

विमोक्खणट्ठाए

भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥

४-सव्वं गन्थं

कलहं च

विप्पजहे तहाविहं^५ भिक्खू ।

‘सव्वेसु

कामजाएसु’^६

पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१-अधुवमि मोहगहणए (नागार्जुनीयाः) ।

२-जेणाह(घ) दुग्गइतो मुव्वेज्जा (चू०, वृ० पा०) ।

३-दोसपएहिं (वृ०) ; दोसपओसेहिं (वृ० पा०) ।

४-हियनिस्सेसाय (चू०, सु) ।

५-तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६-सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०) ।

५—भोगामिसदोसविसण्णे

हियनिस्सेयसवुद्धिवोच्चत्थे ।

वाले य मन्दिए मूढे

वज्झई मच्छिया व खेलंमि ॥

६—दुपरिच्चया इमे कामा

नो सुजहा अवीरपुरिसेहि ।

अह सन्ति सुव्वया साहू^१

जे तरन्ति 'अतरं वणिया व'^२ ॥

७—समणा मु एगे वयमाणा

पाणवहं मिया अयाणन्ता ।

मन्दा निरयं^३ गच्छन्ति

वाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥

८—न हु पाणवहं अणुजाणे

मुच्चेज्ज कयाड सव्वदुक्खाणं ।

एवागिएहि^४ अक्खायं

जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥

९—पाणे य नाइवाएज्जा

से 'समिए त्ति'^५ वुच्चई ताई ।

तओ से पावयं कम्मं

निज्जाइ^६ उदगं व थलाओ ॥

१—सव्वे (चू०) ।

२—वणिया व समुद्ध (वृ० पा०, चू०) : अतर वणिया व (चू० पा०) ।

३—निरय (वृ० पा०, चू०) ।

४—एवायरिएहिं (अ, ऋ) : एवमारिएहिं (आ, सु) ।

५—समिय त्ति (चू०) ; समीए त्ति (अ०) ; समीइ त्ति (उ ऋ) ।

६—णिग्गाइ (वृ० पा०) ।

- १०—'जगनिस्सिएहिं भूएहिं
तसनामेहिं थावरेहिं च ।'^१
नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयंसा कायसा चेव ॥
- ११—सुद्धेसणाओ नच्चाणं
तत्थ ठवेज्जं भिक्खू अण्णाणं ।
जायाए चासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥
- १२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
अट्टु वुक्कसं पुलागं वा
'जवणट्ठाए निसेवए'^२ मंथुं ॥
- १३—जे लक्खणं च सुविणं च
अगविज्जं च जे पउंजन्ति ।
न ह ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं^३ अक्खायं ॥
- १४—इहजीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाणं भूयाण तसाण थावराण य । (वृ० पा०),
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराण च । (वृ०);
जगनिस्सितेसु थावराणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा । (वृ० पा०),
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हि वा । (वृ०) ।

२—जवणट्ठा वा सेवए (वृ०); जवणट्ठाए निसेवए (वृ० पा०) ।

३—आरिएहिं (अ, वृ०) ।

१५-ततो वि य उवट्टिता
संसारं बहुं अणुपरियडन्ति ।

बहुकम्मलेवलित्ताणं
बोही होइ सुदुल्ला तेसिं ॥

१६-कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से^१
इइ दुप्परए इमे आया ॥

१७-जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्डई ।
दोमासकयं कज्जं
कोडीए वि न निट्ठियं ॥

१८-नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा
गंडवच्छासु ऽण्णेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता
खेलन्ति जहा व दासेहिं ॥

१९-नारीसु नोपगिज्जेज्जा
इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्म च पेसव नच्चा
तत्तत्तत्तवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥

१-अनुपरियट्ट ति (क) ; अनुपरियति (सु, वृ०) ; अनुचरति (वृ० पा०) ।

२-जत्थ (वृ० पा०) ।

-संतुसिज्जा (क) ; तुसिज्ज (उ) ; तुसिज्जा (अ) ; (सं) तुस्से (चू०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
 कविलेणं च विसुद्धपन्तेणं ।
 तरिहन्ति जे उ काहन्ति
 तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

नवम अजम्भयण

नमिपव्वज्जा

- १—चइऊण देवलोगाओ
उववन्तो माणुसंमि लोगंमि ।
उवसन्तमोहणिज्जो
सरई पोराणियं जाइं ॥
- २—जाइं सरित्तु भयवं
सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे
अभिणिक्खमई नमी राया ॥
- ३—से देवलोगसरिसे
अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया
बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥
- ४—मिहिल सपुरज्जणवयं
बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो
एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥
- ५—कोलाहलगभूयं
आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि ।
तइया रायरिसिंमि
नमिमि अभिणिक्खमन्तंमि ॥
- ६—अव्भुट्ठियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
सको माहणरूवेण इमं वयणमव्ववी ॥

- ७—किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दासणा सदा पासाएसु गिहेसु य ? ॥
- ८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- ९—मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए बहूणं बहुगुणे सया ॥
- १०—वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥
- ११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- १२—एस अगी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं ।
भयव । अन्तेउरं तेणं कीसणं नावपेक्खसि^१ ? ॥
- १३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमो रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- १४—सुह वसामो जीवामो जेसि मो नत्थि किंचण ।
मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण ॥
- १५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि अप्पिय पि न विज्जाए ॥
- १६—बहुं खु मुणिणो भदं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सत्त्वओ विप्पमुक्खस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥
- १७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

- १८—पागारं कारइत्ताणं गोपुरद्वालगाणि च ।
उत्सूलगसयग्धीओ^१ तओ गच्छसि खत्तिया ॥
- १९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- २०—सद्धं नगरं^२ किच्चा तवसंवरमग्गलं ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं'^३ ॥
- २१—धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए^४ ॥
- २२—तवनारायजुत्तेण भेत्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥
- २३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- २४—पासाए^५ कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
बालग्गपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥
- २५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- २६—संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुब्बेज्ज सासयं ॥
- २७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—उच्छूला ° (स) ।

२—नगरौ (वृ०) ।

३—खन्ति निउण पागार तिगुत्ति दुप्पधसय (वृ० पा०) ।

४—पलिकथए (चू०) ।

५—पासाय (ऋ) ।

- २८—आमोसे लोमहारे य गंठिमेए य तकरे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- २९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- ३०—असट्ठं तु मणुस्सेहि मिच्छा दण्डो पजुंजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥
- ३१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- ३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भं^१ नानमन्ति नराहिवा ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ३३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- ३४—जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥
- ३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि कि ते जुज्जेण बज्झओ ।
अप्पाणमेव^२ अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥
- ३६—पच्चिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चैव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥
- ३७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- ३८—जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—जुज्झ (वृ० पा०) ।

२—अप्पणा चैव (अ) ।

- ३९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४०—जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥
- ४१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ४२—घोरासमं चइत्ताणं^१ अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥
- ४३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४४—मासे मासे तु जो वालो कुसग्गेण तु^२ भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥
- ४५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ४६—हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं 'च दाहणं'^३ ।
कोसं बड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ४७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४८—सुवण्णरूपस्स उ^४ पव्वया भवे
सिया हु कैलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि^५ किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणत्तिया ॥

१—जहत्ताण (वृ० पा०) ।

२—व (अ) ।

३—सवाहणं (वृ० पा०, चू०) ।

४—य (अ) ।

५—तेणं (वृ० पा०) ।

- ४९—पुढवी साली जवा चव हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं^१ नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥
- ५०—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- ५१—अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि^२ पत्थिवा^३ ।
असन्ते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहन्नसि ॥
- ५२—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥
- ५३—सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइ ॥
- ५४—अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥
- ५५—अवउज्झिऊण माहणरूवं विउव्विऊण इन्दत्त ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥
- ५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥
- ५७—अहो ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥
- ५८—इहं सि उत्तुमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं^४ ठाणं सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥

१—सव्वत्त (वृ० पा०) ।

२—जहासि (वृ०) ; चयसि (वृ० पा०) ।

३—खत्तिया (वृ० पा०) ।

४—लोगुत्तम मुत्तम (वृ० पा०) ।

५९—एवं अभित्युणन्तो
 रायरिसि उत्तमाए सद्धाए ।
 पयाहिणं^१ करेन्तो
 पुणो पुणो वन्दई सको ॥
 ६०—तो^२ वन्दिऊण पाए
 चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
 आगासेणुप्पइओ
 ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥
 ६१—नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं^३ सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥
 ६२—एवं करेन्ति संबुद्धा^४ पंडिया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥
 —त्ति बेमि ॥

१—पायाहिण (वृ०) ।

२—स (वृ० पा०) ।

३—सक्कं (क) ।

४—सपन्ना (चू०) ।

दसमं अज्भयणं

दुमपत्तयं

१—दुमपत्तए पण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए ।

एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२—कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।

एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'^१ ।

विहुणाहि रयं पुरे कडं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।

गाढा य विवाग कम्मुणो
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

५—पुढविकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१—एवं मणुयाण जीविए
एत्तिरिए बहुपच्चवायए । (वृ० पा०) ।

६—आउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

७—तेउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

८—वाउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

९—वणस्सइकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमणन्तदुरन्तं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१०—वेइन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

११—तेइन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१२—चउरिन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं

संखिज्जसन्नियं

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१३—पंचिन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

सत्तट्ठभवग्गहणे

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१४—देवे नेरइए य अइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

इक्किक्कभवग्गहणे

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१५—एवं

भवसंसारे

संसरइ सुहासुहेहि कम्महेहि ।

जीवो

पमायवहुलो

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१६—लद्धूणं

वि

माणुसत्तणं

आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।

बहवे

दसुया

मिलेक्खुया

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१७—लद्धूणं

वि

आरियत्तणं

अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा ।

विगलिन्दियया

हु दीसई

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१८—अहीणपंचिन्दियत्तं पि से लहे
 उत्तमधम्मसुई हु दुल्लाहा ।
 कुत्तित्थिनिसेवए^१ जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१९—लद्धूण वि उत्तमं सुइं
 सदहणा पुणरावि दुल्लाहा ।
 मिच्छत्तनिसेवए जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२०—धम्मं पि हु सदहन्तया
 दुल्लहया^२ काएण फासया ।
 इह कामगुणेहि^३ मुच्छिया
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२१—परिजूरइ ते सरीरयं
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से सोयवले य हायई
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२२—परिजूरइ ते सरीरयं
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से चक्खुवले य हायई
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१—कुत्तित्थि^४ (वृ० पा०, चू०) ।

२—दुल्लाहा (छ) ।

३—कामगुणेषु (छ, म, वृ०) ; काम गुणेहि (वृ० पा०) ।

- २३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणवले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिम्बवले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २५—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासवले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २६—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सब्बवले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २७—अरई गण्डं विमूडया
आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विवडइ विद्धसइ ते सरीरयं
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २८—वोछिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व^र पाणियं ।
से सब्बसिणेहवज्जिए
समयं गोयम! मा पमायए ॥

२९—चिच्चाण धणं च भारियं
 पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
 मा वन्तं पुणो वि आइए
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३०—अवउज्झियं मित्तबन्धवं
 विउलं चेव धणोहसंचयं ।
 मा तं बिइयं गवेसए
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
 बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
 संपइ नेयाउए पहे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३२—अवसोहिय कण्ठगापहं
 ओइण्णो सि पहं महालयं ।
 गच्छसि मग्गं विसोहिया
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३३—अबले जह भारवाहए
 मा मग्गे विसमे बगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावए
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णवं महं
 कि पुण चिइसि तीरमागओ ।
 अभितुर पारं गमित्तए
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया

सिद्धिं गोयम लोयं गच्छसि ।

खेमं च सिवं अणुत्तरं

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३६—बुद्धे परिनिव्वुडे चरे

गामगए नगरे व संजए ।

सन्तिमगं च ब्रूहए

समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३७—बुद्धस्स निसम्म भासियं

सुकहियमद्वपओवसोहियं ।

रागं दोसं च छिन्दिया

सिद्धिगइ गए गोयमे ॥

—त्ति वेमि ॥

इक्कारसमं अज्जम्भयणं

बहुस्सुयपुज्जा

- १—संजोगा विप्पमुक्खस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुर्व्वि सुणेह मे ॥
- २—जे थावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥
- ३—अह पंचहिं ठाणेहि जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएणं रोगेणाऽलस्सएण य ॥
- ४—अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥
- ५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥
- ६—अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ॥
- ७—अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥
- ८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥
- ९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- १०—अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुउहले ॥

११—अप्यं चाऽहिक्खवई^१ पबन्धं च न कुव्वई ।

मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धु न मज्जई ॥

१२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई ।

अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई ॥

१३—कलहडमरवज्जए बुद्धे अभिजाइए ।

हिरिमं पडिसलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥

१४—वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं ।

पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥

१५—जहा संखम्मि पयं

‘निहियं दुहओ’^२ वि विरायइ ।

एवं बहुस्सुए भिक्खू

धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥

१६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।

आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१७—जहाइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे ।

उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१८—जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे ।

बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१९—जहा से तिक्खसिंगे जायखन्त्थे विरायई ।

वसहे जूहाहिवाई एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए ।

सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१—चाऽहिक्खवइ (अ) ; चाऽहिक्खवइ (उ) ।

२—णिसित उभयतो (चू०) ।

- २१-जहा से वासुदेवे संखचक्रगयाधरे ।
अप्पडिहयबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २२-जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिडिहए ।
चउदसरयणाहिवाई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २३-जहा से सहस्सकखे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्के देवाहिवाई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २४-जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २५-जहा से उडुवाई चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २६-जहा से सामाइयाणं^१ कोट्टागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्तपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २७-जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २८-जहा^२सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा^३ एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २९-जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- ३०-जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे^३ एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१-सामाइयगणं (वृ० पा०) ।

२-^० पमवा (वृ०) ; ^० पवहा (वृ० पा०) ।

३-^० सपुण्णे (अ) ।

- ३१—समुद्गम्भीरसमा दुरासया
 अचक्रिया केणइ दुप्पहंसया^१ ।
 सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
 खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥
- ३२—तम्हा सुयमहिट्ठेज्जा उत्तमट्ठगवेसए^२ ।
 जेणऽप्पाणं पर चेव सिद्धि संपाउणेज्जासि ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—डुप्पहंसिया (चू०) ।

२—उत्तमिट्ठ^० (अ) ।

चारसमं अजम्भयणं

हरिणसिज्जं

१-सोवागकुलसंभूओ

गुणुत्तरधरो^१

मुणी ।

हरिणसबलो

नाम

आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२-इरिणसणभासाए

उच्चारसमिईसु

य ।

जओ

आयाणनिक्खेवे

संजओ

सुसमाहिओ ॥

३-मणगुत्तो

वयगुत्तो

कायगुत्तो

जिइन्दिओ ।

भिक्खट्ठा

बम्भइज्जम्मि

जन्नवाडं

उवट्ठिओ ॥

४-तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।

पन्तोवहिउवगरणं

उवहसन्ति अणारिया ॥

५-जाईमयपडिथट्ठा^२

हिसगा अजिइन्दिया ।

अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमन्ववी ॥

६-‘कयरे आगच्छइ’^३ दित्तरूवे

काले विगराले फोक्कनासे ।

ओमचेलए

पंसुपिसायभूए

संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥

१-अणुत्तरधरो (अ, बृ०पा०, चू०) ।

२-० पडिथट्ठा (उ, बृ०पा०) ।

३-कयरे तुमं एसिध (चू०) ; कयरे आगच्छति (चू० पा०) ;

को रे आगच्छइ (बृ० पा०) ।

७—कयरे^१ तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसाइ हमागओ सि ।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
गच्छ कखलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८—जक्खो तहिं तिन्दुयस्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियग सरीरं
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥

९—समणो अहं संजओ बम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०—वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु^२ त्ति
सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥

११—उवक्खडंभोयण माहणाणं
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥

१—को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।

२—[□] जीवो त्ति (वृ० पा०) ।

१२-थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा--- - - - -

तहेव -निन्नेसु य आससाए ।

एयाए सद्धाए दलाह मज्झं

'आराहए पुण्णमिणं खु खेत्तं'^१ ॥

१३-खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए

जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।

जे माहणा जाइविज्जोववेया

ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१४-कोहो य माणो य वहो य जेसि

मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।

ते माहणा जाइविज्जाविहूणा

ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥

१५-नुब्भेत्थ भो भावधरा^२ गिराण

अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए ।

उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति

ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१६-अज्झावयाणं पडिकूलभासी

पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।

अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं^३

न य णं दहामु तुमं नियण्ठा ! ॥

१-आराहणा होहिप पुण्ण खेत्त (वृ० पा०) ।

२-भारवहा (वृ० पा०) ।

३-भक्षपाण (ऋ) ।

१७—समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
 गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
 जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
 किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८—के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
 अज्झावया वा सह खण्डिएहि ।
 एय^१ दण्डेण फलेण हन्ता
 कण्ठम्मि घेतूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९—अज्झावयाण वयणं सुणेत्ता
 उद्धाइया तत्थ वहू कुमारा ।
 दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
 समागया तं 'इसि तालयन्ति'^२ ॥

२०—रन्नो तर्हि कोसलियस्स धूया
 भद्दं त्ति नामेण अणिन्दिग्रंगी ।
 तं पासिया संजय हम्ममाणं
 कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१—देवाभिओगेण निओइएणं
 दिन्ना मु रत्ता मणसा न भाया ।
 नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं
 जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥

१—एय खु (अ उ), एय तु (आ) ।

२—इसिं ताळयति (उ, ऋ) ।

२२-एसो हु सो उगतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
'जो मे'^१ तथा नेच्छइ दिज्जमाणि
पिउणा सयं कोसलिएण रत्ता ॥

२३-महाजसो एस महाणुभागो^२
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण मे निद्देज्जा ॥

२४-एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति^३ ॥

२५-ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६-गिरिं नहेहिं खणह
अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह
जे भिक्खुं अवमत्तह ॥

१-जो म (अ, आ०) ।

२-महानुभावो (वृ० पा०, चू०) ।

३-विणिवारयति (वृ० पा०) ।

२७-आसीविसो उगतवो महेसी
 घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
 अगणि व पक्खन्द पयंगसेणा
 जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह' ॥

२८-सीसेण एयं सरणं उवेह
 समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
 जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
 लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९-अवहेडियं पिट्टिसउत्तमंगे
 पसारियाबाहु अकम्मचेट्ठे ।
 निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
 उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०-ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
 विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
 इसि पसाएइ सभारियाओ
 हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥

३१-बालेहि मूढेहि अयाणएहि
 जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ! ।
 महप्पसाया इसिणो हवन्ति
 न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१-हणेह (ऋ) ।

२-आवडिय (वृ० पा०) ।

३२-‘पुब्बि च इण्हि च अणागयं च’^१

मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।

जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति

तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥

३३-अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा

तुब्भे न वि कुप्पह भूइपत्ता ।

तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो

समागया सव्वजणेण अम्हे ॥

३४-अच्चेमु ते महाभाग!^२ न ते किंचि न अच्चिमो ।

भुंजाहि सालिमं कूर नाणावंजणसंजुयं ॥

३५-इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं

तं भुंजसू अम्ह अणुगहट्ठा ।

बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं

मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥

३६-तहियं गन्धोदयपुप्फवासं

दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।

पहयाओ^३ दुन्दुहीओ सुरेहिं

आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥

३७-सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो

न दीसई जाइविसेस कोई ।

‘सोवागपुत्ते

हरिएससाहू’^४

जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥

१-पुब्बि च पच्छा व तहेव मज्झे (बृ० पा०) ; पुब्बि च पच्छा व अणागय च (चू०) ।

२-महाभागा ! (अ, उ, ऋ) ।

३-पहया (उ, ऋ) ।

४-सोवागपुत्तं हरिएससाहू (बृ० पा०) ।

३८—किं माहणा ! जोइसमारभन्ता
उदएण सोहि बहिया विमग्गहा ? ।

जं मग्गहा बाहिरियं विसोहि
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥

३९—कुसं च जूवं तणकट्टमग्गिं
सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।

पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
भुज्जो वि मन्दा ! पगरेह पावं ॥

४०—कहं चरे ? भिक्खु ! वय जयामो ?
पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।

अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया ।
कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ? ॥

४१—छज्जीवकाए असमारभन्ता
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।

परिग्गह इत्थिओ माणमायं
एयं परिन्ताय चरन्ति^१ दन्ता ॥

४२—सुसंबुडो^२ पंचहि संवरेहिं
इह जीवियं अणवकंखमाणा^३ ।

वोसट्ठकाओ^४ सुइच्चतदेहो^५
महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥

१—चरेज्ज (वृ०), चरन्ति (वृ० पा०) ।

२—सुसंबुद्धा (उ, सु) ।

३—अणवकंखमाणा (उ, सु) ।

४—वोसट्ठकाया (उ, सु) ।

५—सुइच्चतदेहा (उ, सु) ।

४३—के ते जोई ? के व ते जोइठाणे ?

का ते सुया ? किं व^१ ते कारिसंगं ? ।

एहा य ते कयरा सन्ति ? भिक्खू !

कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥

४४—तवो जोई जीवो जोइठाणं

जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।

कम्म एहा संजमजोगसन्ती

होमं हुणामी इसिणं पसत्थं ॥

४५—के ते हरए ? के य ते सन्तितित्थे ?

कहिंसि ण्हाओ व रयं जहासि ? ।

आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया !

इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥

४६—धम्मे हरए वम्भे सन्तितित्थे

अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।

जहिंसि ण्हाओ विमलो विमुद्धो

मुसीइभूओ^२ पजहामि दोसं ॥

४७—एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं

महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।

'जहिंसि ण्हाया'^३ विमला विमुद्धा

महारिसी उत्तम ठाण पत्त ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—च (उ, ऋ) ।

२—मुसीलभूओ (वृ० पा०) ।

३—जहि सिणाया (अ, उ, ऋ) ।

तेरसमं अज्झयणं
चित्तसम्भूद्वज्जं

- १-जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए वम्भदत्तो
उववन्तो पउमगुम्माओ ॥
- २-कम्पिल्ले संभूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्टिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥
- ३-कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एकमेकस्स ॥
- ४-चक्कवट्ठी महिड्ढीओ वम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं डमं वयणमव्ववी ॥
- ५-आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥
- ६-दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे^१ सोवागा^२ कासिभूमिए ॥

१-मयंगतीराए (उ, उ, ऋ) ।

२-चंडाला (उ, ऋ) ।

७—देवा य^१ देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।

‘इमानो’^२ छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥

८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।

तेसि फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥

९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।

ते अज्ज परिभुंजामो किंनुचित्ते विसेतहा ? ॥

१०—सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं

कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।

अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि

आया ममं पुण्णफलोववेए ॥

११—जाणासि संभूय ! महानुभागं

महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।

चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं !

इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥

१२—महत्यरूवा

वयणप्पभूया

गाहाणुगीया

नरसंघमज्जे ।

जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया

‘इहज्जयन्ते समणो’^३ म्हि जाओ ॥

१३—उच्चोयए महु कक्के य वम्भे

पवेइया आवसहा ‘य रम्मा’^४ ।

इमं गिहं वित्तघणप्पभूयं^५

पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

१—वि (उ) ।

२—इपामे (वृ०) : इपागो (वृ० पा०) ।

३—इहज्जयन्ते सुमणो (वृ० पा०) - इहज्जयन्ते सुमणो (वृ० पा०) ।

४—उत्तिरम्मा, सुरम्मा वा (वृ० पा०) ।

५—वित्तघणोववेयं (वृ०) : घणवित्तोववेयं (वृ०) ; वित्तघणप्पभूय (वृ० पा०) ।

१४-नट्टेहि गीएहि य वाइएहि
नारीजणाइं परिवारयन्तो^१ ।

भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥

१५-तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेषु गिद्धं ।

धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था^२ ॥

१६-सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्बियं^३ ।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥

१७-बालाभिरामेषु दुहावहेसु
न तं सुहं कामगुणेषु रायं ।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥^४

१८-नरिंद ! जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।

जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेषु ॥

१९-तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेषु ।

सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥

१-पवियारियतो (वृ० पा०) ; परियारयन्तो (अ, उ, ऋ) ।

२-वक्क^० (वृ०) ; वयण^० (वृ० पा०) ।

३-विडवणा (उ, वृ०) ।

४-यह श्लोक चूणि में व्याख्यात नहीं है ।

- २०—सो दाणि सि राय ! महाणुभागो
महिडिढओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं
'आयाणहेउं अभिणिकखमाहि' ॥
- २१—इह जीविए राय ! असासयम्मि
धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥
- २२—जहेह सीहो व मियं गहाय
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया 'व पिया व भाया'^१
कालम्मि तम्मिसहरा^२ भवन्ति ॥
- २३—न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एको सयं पच्चणुहोइ दुक्खं
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥
- २४—चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च
खेत्तं गिहं धणधन्तं च सव्वं ।
कम्मप्पवीओ^३ अवसो पयाइ
परं भवं सुदर पावगं वा ॥

१—आदाणमेव अणुचितयाहि (चू०), आदाण हेउ अभिणिकखमाहि (चू० पा०),
आयाणमेवा अणुचितयाहि (वृ० पा०) ।

२—न पिया न माया (उ) ।

३—तम्मसहरा (उ) ।

४—सकम्मप्पवीओ (उ) ; सकम्मवीओ (ऋ) ; कम्मप्पविइओ (अ) ।

२५—तं इक्कं तुच्छसरीरं से
चिईगयं डहिय उ पावणेणं ।
भज्जा य पुत्ता^१ वि य नायओ य
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमायं
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया! वयणं सुणाहि
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥

२७—अहं पि जाणामि 'जहेह साहू!'^२
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइं महिड्डियं ।
कामभोगेसु गिद्धेण नियाणमसुहं कडं ॥

२९—तस्स मे अपडिक्कन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥

३०—नागो जहा पंकजलावसन्तो
दट्ठु थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥

१—पुत्तो (वृ०) ।

२—जो एत्थ सारो (वृ० पा०, चू०) ।

- ३१-अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
 उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति^१
 दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥
- ३२-‘जइ ता सि’^२ भोगे चइउं असत्तो
 अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ! ।
 धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी
 तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥
- ३३-न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
 गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
 मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
 गच्छामि रायं ! आमन्तिओ सि ॥
- ३४-पंचालराया वि य बम्भदत्तो
 साहुस्स तस्स^३ वयणं अकाउं ।
 अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
 अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥
- ३५-चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
 उदग्गचारित्ततवो^४ महेसी ।
 अणुत्तरं संजम पालइत्ता
 अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१-जहंति (चू०) ।

२-जइ तंसि (उ, वृ० पा०, ऋ) ; जईउसि (चू०) ।

३-तस्सा (अ, आ, इ, स) ।

४-उदत्त^० (चू०, वृ०, सु) ।

चउदसमं अज्जयणं

उसुयारिज्जं

- १—देवां भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥
- २—सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेसु दग्गेसु^१ य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय
जिणिन्दमगं सरण पवन्ता ॥
- ३—पुमत्तमागम्म कुमार दो वीं
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो
रायत्थ देवी कमलावई य ॥
- ४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया^२
बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्खस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ . :
- ५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥

१—दत्तेसु (चू०, बृ०) ; उग्गेसु (उ) ।

२—^० भयाभिभूए (बृ० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इमं विहारं
बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
‘तम्हा गिहंसि न रइं लहामो
आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसि
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वय वेयविओ वयन्ति
जहा न होई असुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे
पुत्ते पड्डिप्प^१ गिहंसि जाया ! ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहि
‘आरण्णगा होह मुणी पसत्था’ ॥

१०—सोयगिणा आयगुणिन्धणेणं
मोहाणिला : पज्जलणाहिणं ।
संतत्तभावं परित्तप्पमाणं
लोलुप्पमाणं बहुहा, बहुं च ॥

१—परिड्डिप्प (वृ० पा०) ।

२—पच्छा वणप्पवेसं पसत्थ (चू०) ।

११—पुरोहितं तं कमसोऽणुणन्तं^१
 निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
 जहक्कमं कामगुणेहि^२ चेव
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥

१२—वेया अहीया न भवन्ति ताणं
 भुत्ता दिया नित्ति तम तमेणं ।
 जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं
 को णाम ते अणुमन्नेज्ज^३ एयं ॥

१३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
 पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
 संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
 खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥

१४—परिव्वयन्ते अणियत्तकामे
 अहो य राओ परित्पमाणे ।
 अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे
 पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥

१५—इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
 इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
 तं एवमेवं लालप्पमाणं
 हरा हरंति त्ति कहं पमाए ? ॥

१—० णिणत्तं (उ) ।

२—कामगुणेषु (वृ० पा०) ।

३—अणुमोदेज्ज (अ) ।

- १६—धणं पभूयं सह इत्थियाहि
 सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
 तवं कए तप्पइ जस्स लोगो
 तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥
- १७—धणेण कि धम्मधुराहिगारे
 सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी
 बहिंविहारो अभिगम्म भिक्खं ॥
- १८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
 खीरे घय तेल्लामहा तिलेसु ।
 एमेव जाया ! सरीरंसि सत्ता
 संमुच्छई नासइ नावचिद्वे ॥
- १९—नो इन्द्रियगोञ्ज् अमुत्तभावा
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्झत्थहेउं निययऽस्स बन्धो
 ससारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥
- २०—जहा वयं धम्ममजाणमाणा
 पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरुज्झमाणा परिरिक्खयन्ता
 तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥
- २१—अब्भाहयमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए ।
 ‘अमोहाहि पडन्तीहि’^१ गिहंसि न रइं लभे ॥
- २२—केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ? ।
 का वा अमोहा वुत्ता ? जाया ! चित्तावरो हुमि ॥

२३-मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए^१ परिवारिओ ।

अमोहा^२ रयणी वुत्ता एवं ताय । वियाणह ॥

२४-जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।

अहम्मं^३ कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥

२५-जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।

धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥

२६-एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया ।

पच्छा जाया ! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥

२७-जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि^४ पलायणं ।

जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥

२८-अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो

जहि पवन्ना न पुणब्भवामो ।

अणागयं नेव य अत्थि किंचि

सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥

२९-पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो

वासिट्ठि । भिक्खायरियाइ कालो ।

साहाहि रुक्खो लहए समाहिं

छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु ॥

३०-पंखाविहूणे व्व^३ जहेह^३ पक्खी

भिच्चाविहूणो^४ व्व^३ रणे नरिन्दो ।

विवन्नसारो वणिओ व्व पोए

पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥

१-चउत्थि (ऋ) ।

२-य (उ, ऋ) ।

३-जहेव (अ, उ, ऋ) ।

४-भिच्चाविहीणु (ऋ) ; भिच्चुविहीणु (उ) ।

३१—सुसंभिया कामगुणा इमे ते
संपिण्डिया अगगरसापभूया^१ ।

भुंजामु ता कामगुणे पगामं
पच्छा गमिस्सामु पहाणमगं ॥

३२—भुत्ता रत्ता भोइ^२ ! जहाइ णे वओ
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।

लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं
संचिक्खमाणो^३ चरिस्सामि^४ मोणं ॥

३३—मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे
जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।

भुंजाहि भोगाइ माए समाणं
दुक्खं तु भिक्खायरियाविहारो ॥

३४—जहा य भोई^५ ! तणुयं भूयंगो^६
निम्मोयणि हिच्च पलेइ मुत्तो ।

एमेए^७ जाया पयहन्ति भोए
ते हं^८ कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥

३५—छिन्दित्तु जालं अवलं व रोहिया
मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।

घोरेयसीला तवसा उदारा
घीरा हू भिक्खायरियं चरन्ति ॥

१—अगगरसज्जमूया (उ. ऋ) ।

२—होइ (वृ०) ।

३—संचिक्खमाणो (चू० उ) ।

४—चरिस्सामि (उ. ऋ) = करिस्सामि (चू०) ।

५—भोयि (वृ० ण०) ।

६—भूयंगो (उ. वृ०) ।

७—इमेति (वृ० ण०) ।

८—ताह (उ. चू०) = तोहं (उ) ।

३६—नहेव । कुंचा समइक्कमन्ता ।

तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।

पलेन्ति पुत्ता य, पई य मज्झं ।

‘ते हं’^१ कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥

३७—पुरोहिंयं तं समुयं सदारं

सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।

कुडुम्बसारं विउलुत्तमं त

रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥

३८—वन्तासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ ।

माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥

३९—सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।

सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥

४०—मरिहिसि रायं ! जया तया वा

मणोरमे कामगुणे पहाय^२ ।

एको हु धम्मो नरदेव । ताणं

न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥

४१—नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा

संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।

अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा

परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥

४२—दवगिणा जहा रण्णे डज्झमाणेसु जन्तुसु ।

अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्दोसवसं गया ॥

१—ताह (उ, चू०), तोह (अ) ।

२—जहाय (चू०) ।

- ४३—एवमेव^१ वयं मूढा कामभोगेषु मुच्छिद्या ।
 डज्जमाणं न बुज्जामो रागद्वेसगिणा जगं ॥
- ४४—भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव ॥
- ४५—इमे य बद्धा^२ फन्दन्ति मम हत्थज्जमागया ।
 वयं च सत्ता कामेषु भविस्सामो जहा इमे ॥
- ४६—सामिसं कुललं दिस्स बज्जमाणं निरामिसं ।
 आमिसं सव्वमुज्जित्ता विहरिस्सामि निरामिसा ॥
- ४७—गिद्धोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे ।
 उरगो 'सुवण्णपासे व'^३ संकमाणो तणुं चरे ॥
- ४८—नागो व्व बन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए ।
 एयं पत्थं महारायं ! उसुयारि त्ति मे सुयं ॥
- ४९—चइत्ता विउलं रज्जं^४ कामभोगे य दुच्चए ।
 निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥
- ५०—सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे ।
 तव पगिज्जहक्खायं^५ धोरं धोरपरक्कमा ॥
- ५१—एवं ते कमसो बुद्धा
 सव्वे धम्मपरायणा^६ ।

जम्ममच्चुभउव्विग्गा

दुक्खस्सन्तगवेसिणो

॥

१—एवमेव (वृ०) ।

२—लद्धा (चू०) ।

३—सुवण्णपासेव्व (उ, चू०, सु) ; सुवण्णपासित्ता (ऋ) ; सुवण्णपासिव्वा (अ) ।

४—रद्धं (वृ०, चू०) ; रज्ज (वृ० पा०) ।

५—^० अहकाम (चू० पा०) ।

६—^० परपरा (वृ० पा०) ।

५२-सासणे विगयमोहाणं पुब्बि भावणभाविआ ।

अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥

५३-राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।

माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड' ॥

—त्ति बेमि ॥



१-परिनिव्वुडु (ऋ), परिनिव्वुडि (अ); परिनिव्वुए (चू०) ।

पनरसमं अंजमयणं

सभिवखुयं

- १-मोणं चरिस्सामि^१ समिच्च धम्मं
 सहिए उज्जुकडे नियाणच्छिन्ते ।
 संथवं जहिज्ज अकामकामे
 अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥
- २-राओवरयं^२ चरेज्ज लाढे
 विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
 पत्ते अभिभूय सब्बदंसी
 जे कम्हिचि^३ न मुच्छिए स भिक्खू ॥
- ३-अक्कोसवहं विइत्तु धीरे
 मुणो चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
 अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
 जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥
- ४-पत्तं सयणासणं भइत्ता
 सीउण्हं विविहं च दसमसगं ।
 अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
 जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥
- ५-नो सकियमिच्छई न पूयं
 नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
 से संजए सुव्वए तवस्सी
 सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥

१-चरिस्सामो (वृ०) ।

२-रागोवरयं (वृ०) ; रातोवरयं (वृ० पा०) ।

३-कम्हि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीवियं
मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारि पजहे सया तवस्सी
न य कोऊहल उवेइ स भिक्खू ॥

७—छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं
मुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं
जो विज्जार्हि न जीवइ स भिक्खू ॥

८—मन्तं मूलं विविह वेज्जचिन्त
वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउग्गरायपुत्ता
माहणभोइय विविहा 'य सिप्पिणो'^१ ।
नो तेसि वयइ^२ सिलोगपूयं
त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसि इहलोइयफलट्ठा^३
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥

१—सिप्पिणोणे (वृ० पा०) ।

२—करेइ (चू०) ।

३—इहलोगफलट्ठाए (अ, आ, इ, चू०) ।

११—सयणासणपाणभोयणं

विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।

अदए पडिसेहिए नियण्ठे

जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२—जं किचि आहारपाणं^१ विविहं

खाइमसाइमं परेसिं लद्धं ।

जो तं तिबिहेण नाणुकम्पे

मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥

१३—आयामगं चेव जवोदणं च

‘सीयं च सोवीरजवोदगं च’^२ ।

नो हीलए पिण्डं नीरसं तु

पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥

१४—सद्दा विविहा भवन्ति लोए

दिव्वा ‘माणुस्सगा तहा तिरिच्छा’^३ ।

भीमा भयभेरवा उराला

जो सोच्चा न वहिज्जई^४ स भिक्खू ॥

१५—वादं विविहं समिच्च लोए

सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।

पन्ते अभिभूय सव्वदंसी

उवसन्ते अविहेडए^५ स भिक्खू ॥

१—वाहार^२ (अ) ।

२—सीयं सुवीर च जवोदग च (स, सु) ।

३—माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०) ।

४—वहिए (उ) ।

५—उविहेडए (उ) ।

१६-असिपञ्चमी' अगिहं अमिहं
 जिह्मिहं सन्ध्यां विष्णुमुत्तरे ।
 अणुसूत्रं लहृअणभङ्गी
 चंदा गिहं एगन्तरे स भिक्कु ॥
 — नि वेमि ॥

५

सोलसमं अज्जयणं

वम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १—मुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहि भगवन्तेहि दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमवहुले, संवरवहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तवम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

सू० २—कयरे खलु ते थेरेहि भगवन्तेहि दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमवहुले, संवरवहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तवम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३—इमे खलु ते थेरेहि भगवन्तेहि दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमवहुले, संवरवहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तवम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, तं जहा—‘वित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा’, से निग्गन्थे ।’ नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ ‘वा धम्माओ’^३ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

१—सेविज्जा हवइ (उ) ।

२—“वित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा से निग्गन्थे” इतना पाठ चूणि में नहीं है ।

३—धम्माओ (उ, इ) ।

सू० ४—नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ, से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । 'तम्हा नो इत्थीणं' कहं कहेज्जा ।

सू० ५—नो इत्थीहिं^१ सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा^२ ।

सू० ६—नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवल-

१—तम्हा खलु निगन्थे नो इत्थीण (उ) ।

२—इत्थीणं (अ, ऋ) ।

३—विहरइ (अ) ।

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु 'निगन्थे नो'^१ इत्थीणं
इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएज्जा, निज्झाएज्जा ।

सू० ७—नो इत्थीणं कुडुत्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि
वा, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,
थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा, सुणेत्ता हवइ से
निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीणं 'कुडुत्तंसि वा,
दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा'^२, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा,
गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा,
विलवियसहं वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा,
कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं
वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ
वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु निगन्थे नो इत्थीणं कुडुत्तरंसि
वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा,
गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा,
विलवियसहं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ।

सू० ८—नो निगन्थे पुव्वरयं, पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ, से
निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु पुव्वरयं^३, पुव्वकीलियं
अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा,

१—नो निगन्थे (अ) ।

२—मिन्नि अतरसि वा (अ, ऋ) : भित्तितरसि (उ) ।

३—कुडुत्तरसि वा भित्तन्तरसि वा दूसन्तरसि वा (दू०, स) : कडुत्तरंसि वा^० (अ) ।

४—इत्थीण पुव्वरय (उ, ऋ) ।

वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ।

सू० ९-नो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ।

सू० १०-नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारे-माणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-कालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं भुजिज्जा ।

सू० ११-नो विभूसाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-विभूसावत्ति^१, विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ । तओ ण तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया ।

सू० १२-नो सद्वरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु सद्वरसगन्धफासाणुवाईस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्वरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा । दसे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ।

भवन्ति इत्थ सिलोगा, तं जहा—

१-जं विवित्तमणाइणं रहियं थीजणेण य ।

बम्भचेरस्स रक्खद्धा आलयं तु निसेवए ॥

२-मणपल्हायजणणिं कामरागविवड्ढणिं ।

बम्भचेरओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए ॥

३-समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं ।

बम्भचेरओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

४-अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।

बम्भचेरओ थीणं चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥

५-कुइयं रुइयं गीयं हसियं थणियकन्दियं ।

बम्भचेरओ थीणं सोयगिज्झं विवज्जए ॥

- ६—'हासं किड्डं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि^१ य'^२ ।
 बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥
- ७—पणीयं भत्तपाणं तु^३ खिप्पं मयविवड्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥
- ८—धम्मलद्ध^४ मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं ।
 नाइमत्तं तु भुजेज्जा बम्भचेररओ सया ॥
- ९—विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू सिगारत्थं न धारए ॥
- १०—सहे रूवे य गन्वे य रसे फासे तहेव य ।
 पचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥
- ११—आलओ थीजणाइणो थीकहा य मणोरमा ।
 संथवो चेव नारीण^५ तासि इन्दियदरिसणं ॥
- १२—कुइयं रुइयं गीयं हसियं^६ भुत्तासियाणि य ।
 पणीयं भत्तपाणं च अइमाय^७ पाणभोयण ॥
- १३—गतभूसणमिट्ठ च कामभोगा य दुज्जया ।
 नरस्सऽत्तगवेसिस्स विस तालउड जहा ॥
- १४—दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
 संकट्टाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा^८ पणिहाणवं ॥

१—सहसावित्ता^० (ऋ), सहभुत्ता^० (अ) ।
 २—हस्स दप्प रइ किड्ड सहभुत्ता^० (बु० पा०) ।
 ३—च (अ) ।
 ४—धम्म लद्ध (बु०), धम्मलद्ध, धम्मलद्ध (बु० पा०) ।
 ५—नारिहिं (ऋ) ।
 ६—सहभुत्ता^० (अ) ।
 ७—अइमाय (ऋ) ।
 ८—वज्जिया (ऋ) ।

- १५-धम्मारामे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही ।-
 धम्मारामरए ढन्ते वम्भचेरसमाहिए ॥
- १६-देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसुक्किन्नरा ।
 वम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति तं' ॥
- १७-एस धम्मे ध्रुवे निअए सासए जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥
 —त्ति वेमि ॥

सतरसमं अज्जमयणं

पावसमणिज्जं

- १-जे 'के इमे'¹ पव्वइए नियण्ठे
धम्मं सुणिता विणओववन्ते ।-
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं ²
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥
- २-सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तुं³ तहेव पाउं ।-
जाणामि जं वट्ठइ आउसु ! त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते । ॥
- ३-जे के इमे पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ³ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ४-आयरियउवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ५-आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ६-सम्मइमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए सजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ७-संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१-कैइ उ (वृ०, ऋ, सु), के इमे (वृ० पा०) ।

२-भुत्तु (ऋ) ।

३-वसइ (वृ० पा०) ।

- ८—दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खणं ।
उल्लंघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बलं ।
पडिलेहणाअणाउत्ते^१ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १०—पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया ।
गुरुपरिभावए^२ निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ११—बहुमाई पमुहरे^३ थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १२—विवादं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा^४ ।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १४—ससरक्खपाए सुवई सेज्ज न पडिलेहेइ ।
संथारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १५—दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खणं ।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १६—अत्थन्तम्मि^५ य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं ।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १७—आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए ।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—पडिलेहा ० (स) ।

२—गुरु परिमवइ (अ) ; गुरुपरिभासए (वृ०) ; गुरुपरिभावए (वृ० पा०) ।

३—पमुहरी (इ, चू, स) ।

४—अत्तपन्नहा (वृ०) , अत्तपण्णहा (वृ० पा०) ।

५—अत्थंतमयमि (वृ० पा०) ।

- १८—सयं गेहं परिचज्ज परगेहसि वावडे^१ ।
 निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १९—सन्नाइपिण्डं जेमेइ तेच्छई सामुदाणियं ।
 गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- २०—एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे
 रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
 अयंसि लोए विसमेव गरहिए
 न से इह नेव परत्थ लोए ॥
- २१—जे वज्जए एए सया उ दोसे
 से सुव्वए होइ मुणीण मज्जे ।
 अयंसि लोए अमयं व पूइए
 आराहए 'दुहओ लोगमिणं'^२ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—वावरे (वृ०, सु), ववहरे (वृ० पा०) ।

२—लोगमिणि तहापर (उ, स, सु, ऋ) ।

अष्टाङ्गममं अजम्भयणं

संजइज्जं

ज्जलेव-पुं

- १—कम्पिल्ले नयरे नया उब्धिणवलवाहणे ।
 नानेणं संजए नाम मियव्वं उवणिगाए ॥
- २—हयाणीए गयाणीए ग्हाणीए तहेव य ।
 पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए^१ ॥
- ३—मिए छुन्तिता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
 भोए सन्ते निए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥
- ४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
 सज्जायज्जाणजुत्ते वस्मज्जाणं कियायई ॥
- ५—अप्पोवमण्डवम्मि कायई कवियासवे^२ ।
 तत्सागए निए पासं वहेई से नराहिवे ॥
- ६—अह आसगओ राया खिप्पसागम्म सो तहि ।
 हए निए उ पासिन्ता अणगारं तत्थ पासई ॥
- ७—अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
 नए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घन्तुणा^३ ॥
- ८—आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
 विणएण वन्दए पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥
- ९—अह मोणेण सो भगवं अणगारे काणमस्सिए ।
 रायाणं न पडिन्तेइ तओ राया भयट्ठओ ॥

१—परिवार (ड) :

२—कवियास्ते (क) :

३—घन्तुणा (ड) : घन्तुणा (क) ।

- १०-संजओ अहमस्मीति भगवं ! वाहराहि मे ।
 कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥
 ११-अभओ^१पत्थिवा ! तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि कि हिसाए पसज्जसि ? ॥

सबोहि-पद

- १२-जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि^२पसज्जसि ? ॥
 १३-जीवियं चेव रूवं च विज्जुसपायचंचलं ।
 जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥
 १४-‘दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा ।
 जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥’^३
 १५-नीहरन्ति मयं पुत्ता पियरं परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू राय । तवं चरे ॥
 १६-तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए ।
 कीलन्तऽन्ने नरा रायं ! हट्ठुट्ठमलंकिया ॥
 १७-तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
 कम्मणा तेण संजुत्तो गच्छई उ पर भव ॥

रायरिसि-पद

- १८-सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
 महया संवेगनिव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥

१-अभय (अ, आ) ।

२-रज्जेण (उ, ऋ), हिसाए (वृ० पा०) ।

३-इदं सूत्रं चिरन्तनवृत्तिकृता न व्याख्यात, प्रत्यन्तरेषु च दृश्यत
 इत्यस्माभिरुन्नीतम् (वृ०) ।

- १९—संजओ चइउं रज्जं निक्खन्तो जिणसासणे ।
 गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अत्तिए ॥
- २०—चिंचा रट्ठ पव्वइए खत्तिए परिभासई ।
 जहा ते दीसई ख्वं पसन्नं ते तहा मणो ॥
- २१—किंनामे ? किगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? ।
 कहं पडियरसी बुद्धे ? कहं विणोए त्ति बुच्चसि^१ ? ॥
- २२—संजओ नाम नामेणं तहा गोत्तेण गोयमे ।
 गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥
- २३—किरियं अकिरियं विणयं
 अन्नाणं च मंहामुणी ! ।
 एएहि चउहि ठाणेहि
 मेयन्ने^२ कि पर्भासई ? ॥
- २४—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
 विज्जाचरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥
- २५—पडन्ति नराए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
 दिव्वं च गइं गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारियं ॥
- २६—‘मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया ।
 संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥’^३
- २७—सव्वे ते विइया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
 विज्जमाणे परे लोए संम्मं जाणामि अप्पगं ॥
- २८—अहमासी महापाणे जुइमं वरिसंसओवमे ।
 जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिसंसओवमा ॥

१—बुच्चई (अ, क, वृ०) ।

२—मियन्ना (वृ०) ।

३—इदमपि सूत्र प्रायो न दृश्यते (वृ०) ।

- २९—से चुए^१ बम्भल्लोगाओ माणुस्सं भवंमागिए ।
अप्पणो ये परेसिं च आउं जाणे जहाँ तहाँ ॥
- ३०—नाणासुइं च छन्दं च परिवज्जेज्ज सजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥
- ३१—पडिक्कमामि पसिणाण परमन्तेहि वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥
- ३२—जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण^२ चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाण जिणसासणे ॥
- ३३—किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ते धम्मं चर सुदुच्चरं ॥
- ३४—एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं चेच्चा कामाइ पव्वए ॥
- ३५—सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवल हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे^३ ॥
- ३६—चइत्ता भारहं वास चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघव नाम महाजसो ॥
- ३७—सणकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं^४ सो वि राया तवं चरे ॥
- ३८—चइत्ता भारहं वास चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
सन्ती सत्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥

१—चुया (अ) ।

२—सुद्धेण (वृ०) ।

३—परिनिव्वुओ (उ, ऋ) ।

४—ठवेत्तण (उ, ऋ) ।

- ३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्तो धिइम^१ 'मोक्खं गओ अणुत्तरं'^२ ॥
- ४०—सागरत्तं जहित्ताणं^३ 'भरह वासं नरीसरो'^४ ।
अरो य अरयं^५ पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥
- ४१—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी नराहिवो^६ ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तव चरे ॥
- ४२—एगच्छत्तं पसाहित्ता महि माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो^७ गइमणुत्तरं ॥
- ४३—अन्निओ रायसहस्सेहि सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं ॥
- ४४—दसण्णरज्ज मुइय चइत्ताणं मुणी चरे- ।
दसण्णभट्ठो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ ॥
[नमी नमेइ अप्पाण सक्ख सक्केण चोइओ ।
चइअण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥]^८
- ४५—करकण्डू कलिगेसु पंचालेसु य दुम्मुहो^९ ।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नगई ॥

१—भगव (उ, ऋ) ।

२—पत्तो गइमणुत्तर (उ, ऋ) ।

३—चइत्ताण (उ, ऋ, स) ।

४—भरह नरवरीसरो (उ, ऋ) ।

५—अरस (वृ० पा०) ।

६—महिड्डिट्ठो (उ, ऋ) ।

७—गओ (अ) ।

८—यह श्लोक वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

९—दुम्महा (ऋ) ।

- ४६—एए^१ नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे ।
 पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं^२ सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥
- ४७—सवीररायवसभो चेच्चा^३ रज्जं मुणी चरे ।
 उदायणो^४ पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥
- ४८—तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
 कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥
- ४९—तहेव विजओ राया 'अणट्ठाकित्ति'^५ पव्वए^६ ।
 रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥
- ५०—तहेवुगं^७ तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेतसा ।
 महाबलो^८ रायरिसी अदाय^९ सिरसा सिरं^{१०} ॥
- निक्खेव-पद
- ५१—कह धीरो अहेऊहि उम्मत्तो^{११} व्व^{१२} महिं चरे ? ।
 एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥
- ५२—अच्चन्तनियाणखमा सच्चा^{१३} मे भासिया वई ।
 अतरिसु तरन्तेगे^{१४} तरिस्सन्ति अणागया^{१५} ॥

१—एव (उ, ऋ) ।

२—ठवेत्ताण (उ, ऋ) ।

३—चइत्ताण (अ, उ, ऋ) ।

४—उदाहणो (ऋ), उदायणो (वृ०, आ, उ, ऋ) ।

५—अणट्ठा^० (वृ०), आणट्ठा^० (सु) ।

६—आणट्ठा किइ पव्वइ (वृ० पा०) ।

७—तहेवउग (अ) ।

८—महव्वलो (अ, आ, ऋ), महवलो (उ) ।

९—आदाय (उ, ऋ, सु, वृ० पा०) ।

१०—सिरिं (वृ० पा० अ, आ, उ, ऋ) ।

११—उम्मत्तु (उ, ऋ) ।

१२—व (अ) ।

१३—एसा (वृ०), सव्वा, सच्चा (वृ० पा०) ।

१४—तरतन्ने (वृ० पा०) ।

१५—अणागय (अ) ।

५३—कहं धीरे अहेऊहि अत्ताण^१ परियावसे ? ।

सव्वसंगाविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरण ॥

—त्ति वेमि ॥

*

एगूणविसइमं अज्जमयणं

मियापुत्तिज्जं

उक्खेव-पदं

- १—सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिंसी ॥
- २—तैसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे ॥
- ३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए^१ सह इत्थिहि ।
देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥
- ४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउक्कतियच्चरे ॥
- ५—अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलड्ढं गुणआगर ॥
- ६—त देहई^२ मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं^३ मए पुरा ॥
- ७—साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥
[देवलोग चुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पण्णे जाइं सरइ पुराणयं ॥]^३
- ८—जाईसरणे समुप्पन्ते मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामणं च पुराकयं ॥

१—कीलिए (क) ।

२—पेहइ (वृ०) ।

३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति और सर्वार्थसिद्धि में व्याख्यात नहीं है ।

- ९-विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य ।
 अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥
- १०-सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
 नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
 निव्विण्णकामो मि^१ महण्णवाओ
 अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥
- ११-अम्मताय ! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
 पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥
- १२-इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं ।
 असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥
- १३-असासए^२ सरीरम्मि रइं नोवलभामहं ।
 पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे ॥
- १४-माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
 जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ॥

दुक्ख-पदं

- १५-जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य ।
 अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो^३ ॥
- १६-खेत्तं वत्थु हिरणं च पुत्तदारं च बन्धवा^४ ।
 चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥
- १७-जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो ।
 एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥

१-हिं (स) ।

२-आसासए (अ, उ) ।

३-जन्तुणो (आ, ऋ), पाणिणो (उ, स) ।

४-अधव (उ) ।

धम्म-पद

- १८—अद्धाणं जो महन्त तु अपाहेओ पवज्जई ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ ॥
 १९—एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहि पीडिओ ॥
 २०—अद्धाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥
 २१—एवं धम्मं पि काऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥

सारभण्ड-पदं

- २२—जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू ।
 सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ ॥
 २३—एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।
 अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहि अणुमन्निओ ॥

महव्वय-पद

- २४—तं बित्तं ऽम्मापियरो सामण्णं पुत्त ! दुक्करं ।
 गुणाणं तु सहस्साइ धारेयव्वाइ भिक्खुणो^१ ॥
 २५—समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
 पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करा^२ ॥
 २६—निच्चकालऽप्पमत्तेण मुसावायविवज्जणं ।
 भासियव्व हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥
 २७—दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
 अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं ॥

१—भिक्खुणा (वृ०), भिक्खुणो (वृ० पा०) ।

२—दुक्कर (वृ०, सु) ।

- २८-विरई अवन्नवेस्स काननोगसत्तुणा ।
 उणं नहुक्कयं वस्सं धारेयव्वं नुदुक्करं ॥
 २९ वणवन्नपेत्तव्वगेसु परिणहविद्वज्जयं ।
 सव्वारन्नरिज्जाओ निम्ममत्तं नुदुक्करं ॥
 ३०-त्रउज्जिहे वि आहारे राईसोयणवज्जणा ।
 तत्तिहीसंत्रओ त्रेव वज्जेयव्वो नुदुक्करो ॥ -

दुक्कर-नदं

- ३१-हुहा नहा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
 अज्जोत्ता दुक्कसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥
 ३२-नालणा तज्जणा त्रेव व्हव्वपरिसहा ।
 दुक्कत्तं निक्कलाययिआ जायणा य अलाभया ॥
 ३३-कावोग जाइना विज्जी केसलोओ य दासणो ।
 दुक्कडं वन्नवयं ओर धारेउं अ महप्पणो ॥
 ३४-हुहोइओ तुमं पुत्ता ! नुक्कुमालो सुमज्जिओ ।
 न हुत्तोपनू तुनं पुत्ता ! सामण्णनणुपालिउं ॥
 ३५-जावज्जीवमविस्सामो गुणार्णं तु महानरो ।
 गुरओ लोहनारो व्व जोपुत्ता ! हेइ दुक्कहो ॥
 ३६-आगाप्पे गंसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
 वाहाहिं सागरो त्रेव तत्तियव्वो गुणोयिही ॥
 ३७-वालुयाक्कव्वे^१ त्रेव निरस्साए उ^२ संजने ।
 अत्तिवारागमणं त्रेव दुक्करं चरिउं तवो ॥

१-^० उज्जण (ल. ड. अ.) :

२-नुदुक्करं (उ.) :

३-^० व्वज्जा (ठ) :

४-उ (उ.) :

- ३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयच्चा सुदुक्करं ॥
- ३९—जहा अग्निसिहा दित्ता पाउ होइ सुदुक्करं^१ ।
तह दुक्करं करेउ जे तारुण्णे समणत्तण ॥
- ४०—जहा दुक्खं भरेउ जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥
- ४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसकं दुक्करं समणत्तणं ॥
- ४२—जहा भुयाहि तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं^२ दमसागरो ॥
- ४३—भुज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥
- ४४—‘तं बित्तं ऽम्मापियरो’^३ एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥

भवदुक्ख-पदं

- ४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥
- ४६—जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पद

- ४७—जहा इहं अगणी उण्हो ‘एत्तोऽणन्तगुणे तहि’^४ ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥

१—सुदुक्करा (वृ० पा०) ।

२—दुत्तर (आ) ।

३—सो वे अम्मापियरो (उ, वृ० पा०, ऋ) , तो वेत्तऽम्मापियरो (वृ० पा०) ।

४—इत्तोऽणन्तगुणा तहि (वृ० पा०) ।

- ४८—जहा 'इमं इहं'^१ सीयं 'एतोऽणन्तगुणं तर्हि'^२ ।
 नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥
- ४९—कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
 हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५०—महादवगिसंकासे मरम्मि वडरवालुए ।
 कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५१—रसन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढं वडो अबन्धवो ।
 करवत्तकरकयाईहि छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
 खेवियं^३ पासवद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥
- ५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो मुभेरवं ।
 पीलिओ मि सकम्मेहि पावकम्मो अणन्तसो ॥
- ५४—कूवन्तो कोलमुणएहिं
 सामेहिं सवलेहिं य ।
 पाडिओ फालिओ छिन्नो
 विप्फुरन्तो^४ अणेगसो ॥
- ५५—असीहिं^५ अयसिवण्णाहिं
 भल्लीहिं पट्टिसेहिं य ।
 छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
 ओइण्णो^६ पावकम्मुणा ॥

१—इह इम (उ, ऋ) ।

२—एतो ऽणन्तगुणा तर्हि (वृ० पा०) ।

३—खेदियं (वृ०) ।

४—विप्फुरन्तो (अ, ऋ) ।

५—अरसाहिं (वृ०) - असीहिं (वृ० पा०) ।

६—उत्तवण्णो (ऋ) ।

- ५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते^१ समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहि रोज्झो वा जहपाडिओ ॥
- ५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥
- ५८—बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तो हं ठंकगिद्धेहिण्णत्तसो ॥
- ५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं ।
जलं 'पाहिं ति'^२ चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ^३ ॥
- ६०—उण्हाभित्ततो संपत्तो असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहि पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो^४ ॥
- ६१—मुगरेहिं मुसंडीहिं सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयासं भग्गत्तेहि पत्तं दुक्खं अणत्तसो ॥
- ६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं छुरियाहिं^५ कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो^६ य अणेगसो^७ ॥
- ६३—पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ^८ बद्धरुद्धो अ 'बहुसो'^९ चेव विवाइओ ॥

१—जलत्त (वृ० पा०) ।

२—पाह ति (वृ०) ।

३—विपाडिओ (वृ०) . विवाइओ (वृ० पा०) ।

४,८—अणत्तसो (उ, ऋ) ।

५—तिक्ख दादेहि (उ) ।

६—छुरीहिं (ऋ) ।

७—उक्कित्तो (वृ० पा०, सु) ।

८—गहिओ (वृ० पा०) ।

९—विवसो (उ, ऋ) ।

- ६४—गलेहि मगरजालेहि
मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ^१ फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६५—वीदंसएहि^२ जालेहि
लेप्पाहि सउणो विव ।
गहिओ लग्गो^३ बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६६—कुहाडफरसुमाईहि
वड्ढईहि दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो ॥
- ६७—चवेडमुट्ठिमाईहि
कुमारेहि अयं पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो ॥
- ६८—तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं ॥
- ६९—तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि^४ समंसाइं अग्गिवण्णाइं जेगसो ॥
- ७०—तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महुणि य ।
पाइओ^५ मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य ॥

१—अल्लिओ (उ, ऋ) ।

२—वीसदएहि (ऋ) ; वीस देहिए (उ) ।

३—मग्गो (अ) ।

४—वि (ऋ) ।

५—पज्जितो (वृ०) ।

- ७१—निच्चं^१ भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण यं ।
 परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥
 ७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा ।
 महब्भयाओ^२ भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥
 ७३—जारिसा माणुसे लोए ताया! दीसन्ति वेयणा ।
 एत्तो^३ अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥
 ७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए ।
 निमेसेन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥

मिगचारिया-पदं

- ७५—तं बित्तं^४ म्मापियरो छन्देण पुत्त! पव्वया ।
 नवरं पुणं सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥
 ७६—सो बित्तं म्मापियरो! एवमेयं जहाफुडं ।
 पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं? ॥
 ७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे ।
 एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥
 ७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई ।
 अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई^५? ॥
 ७९—को वा से ओसहं देई? को वा से पुच्छई सुहं? ।
 को से भत्तं च 'पाणं च'^५ आहरित्तु पणामए? ॥
 ८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।
 भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥

१—निच्च (अ, ऋ) ।

२—महालया (वृ० पा०) ।

३—ततो (अ) ; इतो (उ, ऋ) ।

४—विगिच्छई (उ) ; विगिच्छई (ऋ) ।

५—पाण वा (ऋ) ।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा ।

मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥

८२—एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ^१ ।

मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ॥

८३—जहा मिगे एग अणेगचारी

अणेगवासे धुवगोयरे यं ।

एवं- मुणी गोयरियं पविट्ठे

नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥

८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता ! जहासुहं ।

अम्मापिज्झहिं ऽणुत्ताओ जहाइ उवहिं तओ ॥

८५—मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।

तुवभेहिं अम्म ! ऽणुत्ताओ गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पदं

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।

समत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥

८७—इड्ढि^२ वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।

रेणुयं व पडे लगं निद्धुणित्ताण निगओ ॥

समता-पदं

८८—पंचमहव्वयजुत्तो

पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।

संभित्तरवाहिरओ

तवोकम्मंसि

उज्जुओ ॥

१—अणेगसो (अ, ऋ) : अणिपयणे (वृ० पा०) ।

२—इड्ढी (उ, ऋ) ।

- ८९-निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।
 समो य संव्वभूएसु तंसेसु थावरेसु य ॥
- ९०-लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तंहा ।
 समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥
- ९१-गारवेषु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
 नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबन्धणो ॥
- ९२-अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
 वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥
- ९३-अप्पसत्थेहिं दारेहिं संव्वओ पिहियासवे ।
 अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ।
- ९४-एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
 भावणाहि 'य सुद्धाहि'१ सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥
- ९५-बहुयाणि उ२ वासाणि सामण्णमणुपालिया ।
 मासिएण उ३ भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥
 निक्खेव-पदं
- ९६-एवं करन्ति संबुद्धा४ पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी५ ॥
- ९७-महापभावस्स महाजसस्स
 मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
 तवप्पहाणं चरियं६ च उत्तमं
 गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥

१-विसुद्धाहिं (बु०, सु) ।

२-ओ (उ) ; अ (ऋ) ।

३-य (अ) ।

४-संपन्ना (उ, बु०) ।

५-जहामिसी (वृ०, सु) ।

६-चरित्तं (अ) ।

९८—वियाणिया दुक्खविवद्वणं घणं
 ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
 सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं
 घारेह निव्वाणगुणावहं महं ॥
 —ति बेमि ॥

*

विसङ्गं अज्जयणं
महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पदं

- १—सिद्धाणं नमो किच्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्यधम्मगइं^१ तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥
- २—पभूयरयो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुर्च्छिसि चेइए ॥
- ३—नाणादुमलयाइणं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥
- ४—तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥
- ५—तस्स रुवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रुवविम्हओ ॥
- ६—अहो ! वण्णो अहो ! रुव अहो ! अजस्स सोमया ।
अहो ! खन्ती अहो ! मुत्ती अहो ! भोगे असंगया ॥
- ७—तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने^२ पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पदं

- ८—तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ
भोगकालम्मि संजया ! ।
उवट्ठिओ^३ सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१—० गत (अ) ; ० वइ (दू० पा०) ।

२—निसण्णो नाइदूरमि (आ) ।

३—उवहितो (दू० पा०) ।

- ९-अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्झई ।
 अणुकम्पगं सुहिं वावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'^१ ॥
- १०-तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
 एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्झई ? ॥
- ११-होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
 मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥
- १२-अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिवा ! ।
 अप्पणा अणाहो सन्तो कहं^२ नाहो भविस्ससि ? ॥
- १३-एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिवो ।
 वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ^३ ॥
- १४-अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
 भुंजामि माणुसे भोगे^४ आणाइस्सरियं च मे ॥
- १५-एरिसे सम्पयग्गम्मि^५ सव्वकामसमप्पिए ।
 कहं अणाहो भवइ ? 'मा हु भन्ते ! मुसं वए'^६ ॥
- १६-न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं 'पोत्थं व'^७ पत्थिवा ! ।
 जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिवा ? ॥
- १७-सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण^८ चैयसा ।
 जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तिं ॥

१-कचीनाहि तुमे मह (वृ०, सु) ; कची नाभिसमेमऽहं (वृ० पा०) ।

२-कस्स (आ) ।

३-विम्हयन्निओ (अ, च, ऋ) ।

४-लोए (अ) ।

५-सपयायम्मि (वृ० पा०) ।

६-मंते ! माहु मुसं वए (वृ० पा०) ।

७-उत्थं व (वृ०) ; पोत्थं च (अ) ; पोत्थं व (वृ० पा०) ।

८-अविक्खित्तेण (ऋ) ।

- १८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी^१ ।
तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयघणसंचओ ॥
- १९—पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो^२ दाहो 'सव्वंगेसु य'^३ पत्थिवा ! ॥
- २०—सत्थं जहा परमत्तिक्खं सरीरविवरन्तरे^४ ।
पवेसेज्ज^५ अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥
- २१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
- २२—उवट्टिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छणा^६ ।
'अवीया सत्थकुसला'^७ मन्तमूलविसारया ॥
- २३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा^८ विमोएइ^९ एसा मज्झ अणाहया ॥
- २५—माया य^{१०} मे महाराय !
पुत्तसोगदुहट्टिया^{११} ।
न य दुक्खा^{१२} विमोएइ
एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुढभेयण (बु० पा०) ।

२—तिउलो (बु०) ; विउलो (बु० पा०) ।

३—सव्वगत्तेसु (बु०) ; सव्वगत्तेसु य (बु० पा०) ।

४—सरीर वीय अतरे (बु० पा०) ।

५—आविलिज्ज (उ, बु० पा०, ऋ) ।

६—^० विगिच्छणा (ऋ) ।

७—नाना सत्थत्थ कुसला (बु० पा०) ; अधीया' (अ) ।

८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।

९—विमोयति (बु०), एव सर्वत्र ।

१०—वि (उ) ।

११—^० दुहट्टिया (बु० पा०) ।

१२—पा० टि० ७

२६-भायरो^१ मे महाराय ! सगा जेद्वकणिद्वगा ।

न य दुक्खा^२ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥

२७-भइणीओ मे महाराय ! सगा जेद्वकणिद्वगा ।

न य दुक्खा^३ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥

२८-भारिया मे महाराय ! 'अणुरत्ता अणुव्वया'^४ ।

अंसुपुणोहि नयणेहि उरं मे परिसिचई ॥

२९-अत्तं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं ।

'मए नायमणायं वा'^५ सा वाला नोवमुंजई ॥

३०-खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि^६ न फिट्ठई ।

न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥

३१-तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो ।

वेयणा अणुमविउं जे संसारम्मि अणन्तए ॥

३२-सइं^७ च जइ मुच्चवेजा वेयणा विउला इओ ।

खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए^८ अणगारियं ॥

३३-एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा ! ।

परियद्वन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया ॥

३४-तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण वन्धवे ।

खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं ॥

३५-ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य ।

सव्वेसि चैव भूयाणं तसाण थावराण य ॥

१-भाया (उ) ।

२, ३-दुक्खाओ (ऋ) : दुक्खाउ (उ) ।

४-अणुरत्तमपुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०) ।

५-तारिस्सि रोगमादग्गे (वृ० पा०) ।

६-य (ऊ, आ, उ) ।

७-सयं (उ, वृ०) ; सइयं (ऋ) ।

८-पव्वइए (उ) ।

अत्त-पदं

- ३६—अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा घेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥
- ३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्टियसुपट्टिओ ॥

धम्मलोव-पदं

- ३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !
 तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
 नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहा
 सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥

- ३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं
 सम्मं नो फासयई^१ पमाया ।
 अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे
 न मूलओ छिन्दइ बन्धणं से ॥

- ४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काइ
 इरियाए भासाए तहेसणाए ।
 आयाणनिकखेवदुगुच्छणाए
 न वीरजायं^२ अणुजाइ मगं ॥

- ४१—चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता
 अत्थिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
 चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता
 न पारए होइ हु संपराए ॥

१—फासइ (उ, ऋ) ।

२—वीरजाय (सु) ।

४२-‘पोल्ले व’^१ मुट्ठी जह से असारे
 अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
 राढामणी वेरुलियप्पगासे
 अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥

४३-कुसीललिंगं इह धारइत्ता
 इसिज्जमं जीविय बूहइत्ता ।
 असंजए संजयलप्पमाणे^२
 विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥

४४-‘विसं तु पीयं’^३ जह कालकूडं
 हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
 ‘एसे व’^४ धम्मो विसओववन्नो
 हणाइ वेयाल इवाविवन्तो^५ ॥

४५-जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे
 निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
 कुहेडविज्जासवदारजीवी
 न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥

४६-तमंतमेणेव उ से असीले
 सया दुही विप्परियासुवेइ^६ ।
 संधावई नरगतिरिक्खजोणिं
 मोणं चिराहेत्तु असाहुल्वे ॥

१-पोल्लार (वृ० पा०) ।

२-सजयलप्पमाणे (वृ० पा०) ।

३-विस पिविसा (अ, आ) ; विस पिवन्ती (वृ०) ।

४-एसो वि (अ) ; एसो व (उ) ।

५-इवाविवध्धो (वृ० पा०) ।

६-समेइ (अ) ।

४७—उद्देसियं कीयगहं नियागं
न मुंचई किचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभवक्खी भवित्ता
इओ चुओ गच्छइ कट्ट पावं ॥

४८—न तं अरी कण्ठछेत्ता करेइ
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा' ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥

४९—निरट्टिया नगरई उ तस्स
जे उत्तमट्टं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए
दुहओ वि से भिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एसेवऽहाएत्तकुसीलखे
मग्गं विगहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुरगी विवा भोगरत्ताणुगिद्धा
निरट्टतोया परियावमेइ ॥

निक्खेव-पद

५१—सोद्याण मेहावि मुभासियं इमं
अणुसात्तणं नाणगुणोच्चैरं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं
महानियण्ठाण वग पदेणं ॥

- ५२-चरित्तमायारगुणनि^१ तओ
अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥
- ५३-एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं मंहासुयं
से काहए महया वित्थरेणं ॥
- ५४-तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहतं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥
- ५५-तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥
- ५६-तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ! ।
खामेमि ते महाभाग ! इच्छामि अणुसासिउं ॥
- ५७-पुच्छिळ्ळण मए तुब्भं भाणविग्घो उ^२जो कओ ।
निमन्तिओ^३ य भोगेहि तं सव्वं मरिसेहि मे ॥
- ५८-एवं धुणित्ताण स रायसीहो
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
'सओरोहो य सपरियणो य'^४
धम्ममाणुरत्तो विमलेण चयेसा ॥

१-^१ गुणत्तिए (अ) ।

२-अ (क) ।

३-निमत्तिआ (अ, आ इ, उ) ।

४-सओरोहो सपरियणो सवधवो (अ, आ, इ) ।

५९-ऊत्तसियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।

अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ^१ नराहिवो ॥

६०-इयरो वि गुणसमिद्धो

तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।

विहग इव विप्पमुक्को

विहरइ वसुह विगयमोहो ॥

—त्ति वेमि ॥

एगविसइमं जज्जयणं

समुद्दपालीयं

उत्तरेव-पदं

- १-चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥
- २-निगन्थे पावयणे सावए से विक्रोविए ।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्डं नगरमागए ॥
- ३-पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥
- ४-अह पालियस्स घरणी सनुद्दंसि पसवई ।
अह 'दारए तहि' जाए समुद्दपालि त्ति नामए ॥
- ५-त्तेमेण आगए चम्पं सावए वाणिए घरं ।
संवड्डई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥
- ६-वावत्तरि कलाओ य सिक्खए' नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपत्ते' सुह्वे पियदंसणे ॥
- ७-तस्स रुववडं भज्जं पिया आणेइ रुविणि ।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥
- ८-अह अन्नया कयाई पासायालयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥

१-वालए^० (उ) : वालए तन्नि (त्र) ।

२-सिक्खिए (उ. त्र. वृ०) : सिक्खए (वृ० पा०) ।

३-सप्पुणे (वृ०) : सप्पन्ने (वृ० पा०) ।

- ९-तं पासिऊण संविग्गो^१ समुद्दपालो-इणमब्बवी ।
 अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥
 १०-संबुद्धो सो तहिं भगवं 'परं संवेगमागओ'^२ ।
 आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए^३ अणगारियं ॥
 ११-'जहित्तु संगं च'^४ महाकिलेसं
 महन्तमोहं कसिणं भयावहं^५ ।
 परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
 वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥
 महव्वय-पद
 १२-अहिंस सच्चं च अतेणगं च
 तत्तो य 'बम्मं अपरिग्गहं च'^६ ।
 पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
 चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥
 चरिया-पद
 १३-सव्वेहिं भूएहि दयाणुकम्पी^७
 खन्तिक्खमे संजयबम्मयारी ।
 सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
 चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

१-सवैग (उ, ऋ, वृ०) ।

२-परम ० (उ) ।

३-पव्वइए (उ) ।

४-जहिज्ज सगय (वृ०) ; जहित्तुऽसगय (चू०) ; जहित्तु सगय ० (चु) :
 जहित्तु संगं च, जहाय संगं च (वृ० पा०) ।

५-मयाणा (वृ०, चू०) ।

६-अव्वम परिग्गहं च (वृ० पा०) ।

७-दयाणुकपो (वृ० पा०) ।

- १४—कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे^१
 वलाबलं जाणिय अप्पणो य^२ ।
 सीहो व सट्ठेण न संतसेज्जा
 वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥
- १५—उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
 पियमप्पियं सब्ब तित्तिक्खएज्जा ।
 न सब्ब सब्बत्थऽभिरोयएज्जा
 न यावि पूयं गरहं च संजए ॥
- १६—अणेगच्छन्दाइह^३ माणवेहि
 जे भावओ संपगरेइ^४ भिक्खू ।
 भयभेरवा तत्थ उइन्ति^५ भीमा
 दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥
- १७—परीसहा दुव्विसहा अणेगे
 सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
 से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
 संगामसीसे इव नागराया ॥
- १८—सीओसिणा दंसमसा य फासा
 आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
 अकुक्कुओ^६ तत्थऽहियासएज्जा
 रयाइं^७ खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥

१—रिट्ठे (ऋ) ।

२—उ (अ) ।

३—^० छंदाभिह (वृ०) ।

४—सोपगरेइ (वृ०) ।

५—उवेन्ति (वृ० पा०) ।

६—अकक्करे (वृ० पा०, चू०) ।

७—रज्जाइ (उ) ।

१९—पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥

२०—अणुत्तए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥

२१—अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई
छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥

२२—विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई^१
निरोवलेवाइ असंथडाइ ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं
काएण फासेज्ज परीसहाइ ॥

२३—सन्नाणनानोवगए^२ महेसी
अणुत्तरं चरित्तं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरेनाणघरे^३ जसंसी
ओभासई सूरिए वन्तलिकखे^४ ॥

१—ताया (ऋ) ।

२—सन्नाईण ° (ऋ) ; सन्नाण ° (वृ० पा०) , सनाण ° (वृ०) ।

३—अणुत्तरे ° (वृ० पा०) ।

४—वन्तलिकख (अ) ।

निक्खेव-पदं

२४—दुविहं खवेऊण थ पुण्णपावं
 निरंगणे^१ सव्वओ विप्पमुक्के ।
 तरित्ता समुदं व महाभवोघं
 समुदपाले 'अपुणागमं गए'^२ ॥
 —त्ति बेमि ॥

१—निरजणे (वृ०) ; निरंगणे (वृ० पा०) ।

२—^० गइ गउ (अ, चू०, ऋ, सु) ।

वाइसमं अज्झयणं

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पदं

- १—सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिण्ण ।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥
- २—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोहं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥
- ३—सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिड्ढिण्ण ।
समुद्विजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥
- ४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं अरिद्धनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥
- ५—सोऽरिद्धनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ^१ ।
अट्टसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निज्जाण-पद

- ६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो भसोयरो ।
तस्स राईमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥
- ७—अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसंपुन्ना^२ विज्जुसोयामणिप्पभा ॥
- ८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलाम हं ॥

१—वज्जणस्सर ° (अ, दू० पा०) ।

२—° सपन्ना (उ, ऋ) ।

- ९—सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमंगलो ।
 दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहि विभूसिओ^१ ॥
- १०—मत्तं च गन्धहत्थिं^२ वामुदेवस्स जेड्ढां ।
 आरुढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥
- ११—‘अह ऊसिएण’^३ छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
 दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥
- १२—चउरंगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
 तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुसे ॥
- १३—एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाए य ।
 नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥
- १४—अह सो तत्थ निज्जन्तो विस्स प्राणे भयद्दुए ।
 वाडेहि पंजरेहि च सन्निरुद्धे^४ मुट्ठुक्खिए ॥

मवेग-पदं

- १५—जीवियन्तं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
 पासेत्ता से मर्हापन्ने सारहि इणमव्ववी ॥
- १६—कस्स अट्ठा ‘इमे पाणा’^५ एए सव्वे सुहेसिणो ।
 वाडेहि पंजरेहि च सन्निरुद्धाय अच्छहि ? ॥
- १७—अह सारही तओ भणइ एए भट्ठा उ पाणिणो ।
 तुज्जं विवाहकज्जंमि भोयावेउं वहुं जणं ॥

१—विमूसई (अ) ।

२—^० हत्थिं च (अ, आ, इ, उ) ।

३—से ओसिएण (वृ० पा०) ।

४—वद्धरुद्धे (वृ० पा०) ।

५—दहुपाणे (वृ० पा०) ।

१८—सोऊण तस्स^१ वयणं बहुपाणिविणासणं^२ ।

चिन्तेइ से महापन्ने साणुकोसे जिएहि उ ॥

१९—जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिंति बहू'^३ जिया ।

न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥

२०—सो कुण्डलाण जुयलं

सुत्तगं च महायसो ।

आभरणाणि य सव्वाणि^४

सारहिस्स पणामए ॥

अमिनिक्खमण-पद

२१—मणपरिणामे य कए

देवा य जहोइयं समोइण्णा^५ ।

सव्वड्ढीए

सपरिसा

निक्खमणं तस्स काउं जे ॥

२२—देवमणुस्सपरिवुडो

सीयारयणं^६ तओ. समारूढो ।

निक्खमिय

वारगाओ

रेवययमि द्विओ भगवं ॥

२३—उज्जाणं

संपत्तो

ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ^७ ।

साहस्सीए

परिवुडो

अह निक्खमई उ चित्ताहि ॥

१—तस्स सो (उ, ऋ) ।

२—वहुपाण^० (वृ०) ।

३—हम्मिंति सुवहू (उ, ऋ, वृ०) ; हम्मिहिंति सु वहू (वृ० पा०) ।

४—सैसाणि (उ, ऋ) ।

५—समोवड्डिया (वृ० पा०) ।

६, ७—सीइया^० (ऋ) ।

२४—अहं से सुगन्धगन्धि^१ तुरियं मज्जकुंघि^२ ।
सयमेव लुंचई केसे पंचमुट्ठीहि^३ समाहिओ ॥

आसीवाय-पदं

२५—वासुदेवो यं णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावेसू^४ तं दमीसरा ! ॥
२६—नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव^५ य ।
खन्तीए मुत्तीए^६ वड्ढमाणो भवाहि य ॥
२७—एवं ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिदुणेमि वन्दित्ता अइगया बारगापुरि ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ता पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोणेण उ समुत्थया^७ ॥
२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता 'सियं पव्वइउं'^८ मम ॥
३०—अहं सा भमरसन्निभे^९ कुच्चफणगपसाहि^{१०} ।
सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया^{११} ॥

१—सुगन्धि^० (ऋ, वृ०) ।

२—मओए^० (अ) ।

३—पचउट्ठाहि (वृ०) ।

४—पावसु (वृ०) ।

५—तवेण (सु) ।

६—मुत्तीए चैव (उ) ।

७—समुत्थिया (अ) ; समुच्छया (आ) ।

८—सेउ पव्वइउ (ऋ), से ओ पव्वइओ (उ), सेउ पव्वइयं (अ) ।

९—^० संकासे (अ) ।

१०—^० फल्लो (अ) ।

११—वि तवस्सिया (अ) ।

- ३१-वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
 संसारसागरं घोरं तर कन्ते । लहुं लहुं ॥
- ३२-सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी^१ तहिं बहुं ।
 सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३३-गिरिं रेवययं^२ जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
 वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥
- ३४-चीवराइं विसारन्ती जहा जाय ति पासिया ।
 रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥
- ३५-भीयाय सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं ।
 बाहाहिं काउं संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥
- ३६-अह सो वि रायपुत्तो समुद्विजयंगओ ।
 भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे ॥
- ३७-रहनेमी अहं भदे ! सुखे ! चारुभासिणि ! ।
 ममं^३ भयाहि सुयणू ! न ते पीला भविस्सई ॥
- ३८-एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
 'भुत्तभोगातओ'^४ पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥
- ३९-दट्ठूण रहनेमि तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
 राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं ॥
- ४०-अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
 जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥
- ४१-जइ सि रूवेण वेसमणो लल्लिएण नलकूवरो ।
 तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ॥

१-पव्वावेती (अ) ।

२-रेवइय (अ) ।

३-मम (वृ० पा०) ।

४-भुत्तभोगी तओ (उ, ऋ) , भुत्तभोगा पुणो (वृ०) ।

['पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥]^१

४२—धिरत्थु ते जसोकामी! जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥

४३—अहं च भोयरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥

४४—जइ तं काहिसि भावं जाजा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥

४५—गोवालो भण्डवालो^२ वा
जहा तद्व्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि
सामणस्स भविस्ससि ॥

[कोहं माणं निगिण्हित्ता मायं लोभं च सव्वसो ।
इन्दियाइं वसे काउं अप्पाणं उवसंहरे ॥]^३

४६—तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥

४७—मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामणं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥

४८—उगं तवं चरित्ताणं जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

१—यह श्लोक चूणि और वृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

२—दण्डपालो (वृ० पा०) ।

३—यह श्लोक चूणि और वृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

निक्खेव-पदं

४९—एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जह्मा सो पुरिसोत्तमो ॥
—त्ति बेमि ॥

*

तेविसइमं अज्जमयणं
केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पद

- १—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्तू धम्मतित्थयरे जिणे'^१ ॥
- २—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
- ३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थि नगरिमागए ॥
- ४—तित्ठुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ५—अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
- ६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे^२ ।
भगवं गोयमे नामं विज्जाचरणपारगे ॥
- ७—बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
- ८—कोट्टुगं नाम उज्जाणं तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिसु अल्लीणा^३ सुसमाहिया ॥

१— अरिहा लोगविस्सुए ।

सव्वन्तू सव्वदस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।

२—महिड्डए (अ) ।

३—अलीणा (वृ० पा०) ।

- १०—उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण तांइणं ॥
- ११—केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ? ।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥
- १२—चाउज्जाभो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥
- १३—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किनु कारणं ? ॥
- १४—अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवित्किंयं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥
- १५—गोयमे पडिरूवन्तू सीससंघसमाउले ।
जेहं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥
- १६—केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूव पडिवत्ति सम्मं संपडिवज्जई ॥
- १७—पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥
- १८—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥
- १९—समागया बहू तत्थ पासण्डा 'कोउगा मिगा'^१ ।
गिहत्थाणं अणेगाओ साहस्सीओ समागया ॥
- २०—देवदाणवगन्धवा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥
- २१—पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसि बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—कोउगासिया (वृ०) ; कोउगा मिगा (वृ० पा०) ।

२२-पुच्छ भन्ते! जहिच्छं तें केसि गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुत्ताए गोयमं इणमब्बवी ॥

चाउज्जाम-पदं

२३-चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥

२४-एगकज्जपवन्नाणं विसेसे कि नु कारणं ? ।
धम्मे दुविहे मेहावि! कहं^१ विप्पच्चओ न ते ? ॥

२५-तओ केसि बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ता समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छयं^२ ॥

२६-पुरिमा उज्जुजडा^३ उ वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा 'उज्जुपत्ताय'^४ तेण धम्मे दुहा कए ॥

२७-पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु
सुविसोज्झो सुपालओ ॥

२८-साहु गोयम! 'पन्ता ते'^५
छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं
तं मे कहसु गोयमा! ॥

१-कहिं (अ) ।

२-^० विणिच्छिय (उ, ऋ) ।

३-उज्जुकडा (अ) ।

४-उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ) ।

५-पन्नाए (बु० पा०) ।

अचेलग-पदं

- २९—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तस्तरो ।
 देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा^१ ॥
- ३०—एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
 लिंगे दुविहे मेहावि ! कहां विप्पच्चओ न ते ? ॥
- ३१—केसिमेवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी ।
 विन्ताणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥
- ३२—पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविह्विगप्पणं ।
 जत्तत्थं गहणत्थं च लोगे लिंगप्पओयणं ॥
- ३३—अह भवे पइन्ना उ मोक्खसम्भूयसाहणे^२ ।
 नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥
- ३४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्तो मे संसओ इमो ।
 अन्तो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

विजय-पद

- ३५—अणेगाण सहस्साणं मज्जे चिट्ठसि गोयमा ! ।
 ते य ते अहिगच्छन्ति कहां ते निज्जिया तुमे ? ॥
- ३६—एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस ।
 दसहा उ जिणित्ताण सव्वसत्तू जिणामहं ॥
- ३७—सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 तओ केसि बुवंत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ३८—एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य ।
 ते जिणित्तु^३ जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥

१—महामुणी (वृ०) ; महाजसा (वृ० पा०) ।

२—मुक्ख सम्भूय^० (उ, ऋ) ; मोक्खे सम्भूय^० (अ) ।

३—जहित्तु (अ) ।

५९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

कुप्पह-पद

६०—कुप्पहा बहवो लोए जेहि नासन्ति जंतवो ।
अद्धाणे कह वट्टन्ते तं न नस्ससि ? गोयमा ! ॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्ठिया'^१ ।
ते सब्बे विइया मज्झं तो न नस्सामहं^२ मुणी ॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सब्बे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि^३ उत्तमे ॥

६४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

दीव-पद

६५—महाउदगवेगेण वुज्झमाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य दीवं 'कं मन्नसी ?'^४ मुणी ! ॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—जे उम्मग्ग पट्ठिया (अ) ।

२—नस्सामिह (अ) ।

३—है (अ) ।

४—कम्मणसी (अ) ।

६८—जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।
 धम्मो दीवो 'पइद्वा य'१ गई सरणमुत्तमं ॥
 ६९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्तो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

नावा-पद

७०—अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
 जंसि गोयममारूढो कहं पारं गमिस्ससि ? ॥
 ७१—जा उ अस्साविणी२ नावा
 न सा पारस्स गामिणी ।
 जा निरस्साविणी नावा
 सा उ पारस्स गामिणी ॥
 ७२—नावाय इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
 संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥
 ७४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्तो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

उज्जोय-पदं

७५—अन्धयारे तमे घोरे चिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
 को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ? ॥
 ७६—उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥

१—पत्तिद्वा ण (अ) ।

२—सस्साविणी (वु० पा०) ।

- ७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ७८—उगंओ खीणसंसारो सब्बन्तू जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं सब्बलोयंमि पाणिणं ॥
 ७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पद

- ८०—सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणाणं^१ पाणिणं ।
 खेमं 'सिवमणाबाहं' ठाणं किं मन्नसी मुणी ? ॥
 ८१—अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगगंमि दुरारुहं ।
 जंत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥
 ८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ८३—निब्बाणं ति अब्राहं ति सिद्धी लोगगमेव य ।
 खेमं सिवं अणाबाहं जं चरन्ति महेसिणो ॥
 ८४—तं ठाणं सासयंवासं लोगगंमि दुरारुहं ।
 जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥
 ८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 नमो ते संसयाइय ! सब्बसुत्तमहोयही ! ॥
 ८६—एवं तु संसए छिन्ने केसी धोरपरक्खमे ।
 'अभिवन्दिता सिरसा गोयमं तु महायसं'^२ ॥

१—पञ्चमाणाण (वृ० पा०) ।

२—वेदित्तु पंजलिउडो गोतम तु महामुणी (वृ०) ।

८७—‘पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमंसी’ मग्गे तत्थ सुहावहे ॥’^२

निक्खेव-पद

८८—केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थइत्थविणिच्छओ ॥
८९—तोसिया परिसा सव्वा ‘सम्मग्गं’ समुवड्ढिया’^३ ।
‘संथुया ते पसीयन्तु’^४ भयवं केसिगोयमे ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—पच्छिमंसी (अ) ।

२—पंच महव्वय जुत्त भावतो पडिवज्जिया ।
धम्म पुरिमस्स पच्छिमंमि मग्गे सुहावहे ॥ (दू०) ।

३—पज्जुवड्ढिया (दू० पा०) ।

४—सम्मत्ते पज्जुवड्ढिया (दू०) ।

५—सज्जुता ते पदीसत्तु (दू०) ।

चउविसइमं अज्जमयणं

पवयण-माया

उक्खेव-पदं

- १-अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
 पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥
 २-इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय ।
 मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य^१ अट्ठमा ॥
 ३-एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया ।
 दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ॥

समिड-पद

- ४-आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य ।
 चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥
 ५-तत्थ आलंबणं नाणं दंसण चरणं तहा ।
 काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए^२ ॥
 ६-दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
 जयणा^३ चउव्विहावुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥
 ७-दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ ।
 कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥
 ८-इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्जमायं चेव पंचहा ।
 तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरियं^४ रिए ॥

१-उ (अ) ।

२-दुप्पह वज्जिए (अ) ।

३-जायणा (अ) ।

४-रियं (अ) ।

- १—‘कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया’^१ ।
 हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥’^२
- १०—एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
 असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥
- ११—‘गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
 आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥’^३
- १२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
 परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥
- १३—ओहोवहोवग्गहियं भण्डग दुविहं मुणी ।
 गिण्हन्तो निक्खवन्तोय पउंजेज्ज इमं विहि ॥
- १४—चक्खुसा पडिलेहिता पमज्जेज्ज जयं जई ।
 आइए निक्खवेज्जा वा दुहओ विसमिए सया ॥
- १५—उच्चारं पासवणं खेल सिघाणजल्लियं ।
 आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥
- १६—अणावायमसलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
 आवायमसलोए आवाए चेय संलोए ॥
- १७—अणावायमसलोए परस्सऽणुवघाइए ।
 समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥
- १८—वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए ।
 तसपाणबीयरहिए उच्चारार्इणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ) ।

२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।

हास मय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (बु० पा०) ।

३—गवेसणाए गहणेण परिभोगेसणाणि य ।

आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (बु० पा०) ।

१९—एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥

गुत्ति-पद

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥

२१—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥

२३—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

२४—ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघणपल्लंघणे इन्दियाण य जुंजणे ॥

२५—संरम्भसमारम्भे आरम्भस्मि तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

निक्खेव-पदं

२६—एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥

२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयेरे मुणी ।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिण ॥

—त्ति बेमि ॥

पंचविंशद्वयं अज्जमयणं

जन्नइज्जं

उक्खेव-पदं

- १—माहणकुलंसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥
- २—इन्द्रियगामनिगाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥
- ३—वाणारसीए^१ बहिया उज्जाणंमि मणोरसे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ४—अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्नं जयइ वेयवी ॥
- ५—अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि भिक्खमट्ठा^२ उवट्ठिए ॥
- ६—समुवट्ठियं तहिं सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न ह्नु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥
- ७—जे य वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठा य 'जे दिया'^३ ।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥
- ८—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥
- ९—सो 'एवंतत्थ'^४ पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, बृ०) ।

२—भिक्खस्स अट्ठा (बृ० पा०) ।

३—जिहदिया (आ) ।

४—तत्थ एव (बृ०) ।

१०—नऽन्तुं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणद्वाए इमं वयणमब्बवी ॥

मुख-पदं

- ११—नवि जाणसि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ।
१२—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥
१३—तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तहिं दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महानुणि ॥
१४—वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥
१५—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहयं पुच्छिओ ॥
१६—अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥
१७—जहा चन्दं गहाईया चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥^१
१८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया ।
गूढा^३ सज्झायतवसा भासच्छन्ता इवऽग्गिणो ॥

माहण-पदं

- १९—जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं त वयं बूम माहणं ॥

१—कहइ (अ) ।

२—जहा चन्दे गहाईये चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।

णमंसमाणा वदती उद्धत्तमणहारिणो [उद्धत्तमणहारिणो] ॥ (वृ० पा०) ।

३—मूढा (वृ०) ; गूढा (वृ० पा०) ।

२०—जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई^१ ।

रमए . अज्जवयणंमि तं वयं बूम माहणं ॥

२१—जायरूवं जहामट्टं^२ निद्धन्तमलपावगं ।

रागद्दोसभयाईयं तं वयं बूम माहणं ॥

[तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।

सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं बूम माहणं ॥]^३

२२—तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण 'य थावरे'^४ ।

जो न हिंसइ तिविहेणं^५ तं वयं बूम माहणं ॥

२३—कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।

मुसं न वयई जो उ तं वयं बूम माहणं ॥

२४—चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहं ।

न गेण्हइ अदत्तं जो तं वयं बूम माहणं ॥

२५—दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।

मणसा कायवक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥

२६—जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ चारिणा ।

एवं अलित्तो^६ कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥

२७—अलोलुयं मुहाजीवी^७ अणगारं अकिंचणं ।

असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥

१—सुव्वइ (उ) ।

२—महामट्टं (वृ०) ; जहामट्टं (वृ० पा०) ।

३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

४—सथावरे (वृ० पा०) ।

५—एयं तु (वृ०) ; तिविहेण (वृ० पा०) ।

६—अलित्तं (आ, इ, चु) ।

७—मुहाजीवि (वृ० पा०) ।

- [जहिता पुव्वसंजोगं नाइसंगे^१ य बन्धवे^२ ।
 जो न सज्जइ एएहिं^३ तं वयं बूम माहणं ॥]^३
 २८—पसुवन्धा^४ सव्ववेया^५ जहं च पावकम्मुणा ।
 न तं तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥
 २९—त विमुण्डिणं समणो न ओंकारेण बम्भणो ।
 न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥
 ३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
 नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥
 ३१—कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
 वइस्सो कम्मुणा होइ सुट्ठो हवइ^६ कम्मुणा ॥
 ३२—एए^७ पाउकरे बुद्धे^८ जेहिं होइ सिंणायओ ।
 सव्वकम्मविनिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं ॥
 ३३—एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ॥

घुइ-पदं

- ३४—एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे^९ ।
 'समुदाय लयं' तं तु^{१०} जयघोसं महामुणि ॥

१—नाइ सजोगे (ऋ) ।
 २—भोगेसु (ऋ) ; एएसु (उ) ।
 ३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है ।
 ४—पसुवन्धा (वृ० पा०) ।
 ५—सव्व वेया य (अ) ।
 ६—होइय (अ) ; होइ उ (वृ०) ।
 ७—पाउकराधम्मा (वृ० पा०) ।
 ८—वभणे (वृ०) ; माहणे (वृ० पा०) ।
 ९—तओ (अ, सु, ऋ) ।
 १०—सजार्णतो तओ त तु (वृ० पा०) ; समादाय तयं तं व (उ) ।

३५—तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥

३६—तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥

३७—तुब्भे समत्था उद्धत्तं परं अप्पाणमेव य ।
तमणुगहं करेहम्मं भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा ॥

सबोहि-पदं

३८—न कज्जं मज्झं भिक्खेण खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्ठे^१ घोरे^२ संसारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ^३ लग्गई ॥

४१—एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पद

४२—एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं सोच्चा अणुत्तरं^४ ॥

१—करे अम्म (अ, इ) ।

२—भिक्खूण (वृ०) ।

३—भयावत्तं (वृ० पा०) ।

४—सीहे (वृ० पा०) ।

५—सोत्तथ (वृ०, ऋ) ।

६—सोच्चाण केवल (वृ० पा०) ।

४३—खवित्ता पुव्वक्कम्माइं संजमेण तवेण य । . .

जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

—त्ति वेमि ॥

*

छवीसइमं अज्जमयणं

सामायारी

सामायारी-पदं

- १-सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणि ।
जं चरित्ताण निगन्था तिण्णा संसारसागरं ॥
- २-पढमा आवस्सिया नाम बिइया य^१ निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥
- ३-पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छाकारो य^२ तह्कारो य अट्ठमो ॥
- ४-अब्भुट्ठाणं नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥
- ५-गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥
- ६-छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तह्कारो य^३ पडिस्सुए ॥
- ७-अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
'एवं दुपंचसंजुत्ता'^४ सामायारी पवेइया ॥

चरिया-पद

- ८-पुव्विल्लमि चउम्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहिता वन्दिता य तओ गुरुं ॥

१-होइ (उ) ।

२-उ (आ, इ) ।

३-X (उ) ।

४-एसा दसंगा साहूणं (बु० पा०) ।

- ९-पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
 इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥
 १०-वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वं अगिलायओ ।
 सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पदं

- ११-दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥
 १२-पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं ऋणं क्रियायई ।
 तइयाए भिक्खायरिये पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥
 १३-आसाढे मासे डुपया पोसे मासे चउप्पया ।
 चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
 १४-अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेण य दुअंगुलं ।
 वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥
 १५-आसाढबहुलपक्खे भइवए कत्तिएय पोसे य ।
 फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा^१ अमोरत्ताओ ॥
 १६-जेट्ठामूले आसाढसावणे छहि अंगुलेहिं पडिलेहा ।
 अट्ठहिं बीयत्तियंमी तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पद

- १७-रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥
 १८-पढमं पोरिसिं सज्झायं
 बीयं ऋणं क्रियायई ।
 तइयाए निहमोक्खं तु
 चउत्थी भुज्जो^२ वि सज्झायं ॥

१-बोद्धवा (आ) ।

२-पुणो (अ) ।

१९-जं नेइ जया रत्ति

नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।

संपत्ते विरमेज्जा

सज्झायं पओसकालम्मि ॥

पडिलेहण-पदं :

२०-तम्मेव य नक्खत्ते

गयणचउब्भागसावसेसंमि ।

वेरत्तियं पि कालं

पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥

२१-पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहिताण भण्डयं ।

गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥

२२-पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

अपडिक्कमिता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥

पडिलेहणविहि-पदं

२३-मुहपोत्तियं^१ पडिलेहिता पडिलेहिज्ज गोच्छयं ।

गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥

२४-उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमैव पडिलेहे ।

तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥

२५-अणच्चावियं अवलियं

अणाणुबन्धिं अमोसलिं^२ चेव ।

छप्पुरिमा नव खोडा

^३पाणीपाणविसोहणं ॥

१-मुहपत्ति (-आ, इ, उ, ऋ) ।

२-अमोसल (अ) ; आमोसलि (वृ०) ।

३-पाणीपाणि० (वृ०) ।

४-^० पमज्जण (आ, वृ० पा०) ; ^० पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६—आरभडा सम्मद्दा
 वज्जेयच्चा य मोसली तइया ।
 पप्फोडणा चउत्थी
 विक्खित्ता वैइया छद्दा ॥

२७—पसिडिलपलम्बलोल
 एगामोसा अणेगरूवधुणा १-२
 कुणइ पमाणि पमायं
 संकिएगणणोवगं कुज्जा ॥

२८—अणूणाइरित्तपडिलेहा
 अविवच्चासा तहेव य १
 पढमं पयं पसत्थं
 सेसाणि उ अप्पसत्थाइ ॥ २

२९—पडिलेहणं कुणन्तो
 मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा ॥
 देइ व पच्चक्खाणं
 वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥

३०—पुढवीआउक्काए
 तेऊवाऊवणस्सइतसाणं
 पडिलेहणापमत्तो
 छण्हं पि विराहओ होइ ॥

आहारपदं
 [पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ।
 पडिलेहणाउत्तो छण्हं आराहओ होइ ॥] ३

१—अणेगरूवधुया (वृ० पा०) ।

२—यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है ।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए ।
छ्हं अत्तयरागम्मि कारणंमि समुट्ठिए ॥

३२—वेयणवेयावच्चे

इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए
छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥
अणाहार-पदं

३३—निग्गन्थो

धिइमन्तो
निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहि उ इमेहि
अणइकमणा य से होइ ॥

३४—आयंके

उवसग्गे^१
तितिवक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं
सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥
विहार-पदं

३५—अवसेसं भण्डगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।

परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खित्ताण भायणं ।

सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं^२ ॥

संभा-पदं

३७—पोरिसीए चउन्भाए वन्दिताण तओ गुरुं ।

पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥

१—उमग्गे (उ) ।

२—सव्वदुक्खविमोक्खण (वृ० पा०) ।

३८-पासवणुचारभूमि च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्कमण-पदं

३९-देसियं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।

नाणे^१ दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव यं ॥

४०-पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥

४१-पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

४२-पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

‘थुइमंगलं च काऊण’ कालं संपडिलेहए ॥

४३-‘पढमं पोरिसिं सज्झायं वीयं भाणं भियायई ।

तइयाए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए ॥’^२

४४-‘पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया ।

सज्झायं तओ कुज्जा अवोहेन्तो असंजए ॥’^३

४५-पोरिसीए चउव्भाए ‘वन्दिऊण तओ गुरुं’^४ ।

पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥

४६-आगए कायवोस्सगो सव्वदुक्खविमोक्खणे ।

काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१-नाणे य (आ) ; नाणमि (उ) ।

२-सिद्धाण सथव किच्चा (वृ० पा०) ।

३-पढमा पोरिसिं सज्झाय वीए ज्ञाण झियायति ।

ततियाए निद्दमोक्खं च चउव्भाए चउत्थिए ॥ (वृ० पा०) ।

४-कालं तु पडिलेहिच्चा अवोहिन्तो असंजए ।

कुज्जा मुणी य सज्झाय सव्वदुक्खविमोक्खण ॥ (वृ० पा०) ।

५-से से वदित्तु ते गुरु (वृ० पा०) ।

- ४७-राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
 नाणंमि दंसणंमी य चरित्तंमि तवंमि य ॥
- ४८-पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥
- ४९-पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 काउस्सग्गं तओ कुज्जा सब्बदुक्खविमोक्खणं ॥
- ५०-किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्तए ।
 काउस्सग्गं तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं ॥
- ५१-पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 तवं संपडिवज्जेत्ता^१ करेज्ज सिद्धाण संथवं ॥
- निकखेव-पदं
- ५२-एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
 जं चरित्ता वहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

सत्तावीसइमं अज्जमयणं

खलुंकिज्जं

- १—थेरे गणहरे गगो मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए ॥
- २—वहणे वहमाणस्स^१ कन्तारं अइवत्तई ।
जोए वहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥
- ३—खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई^२ ।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥
- ४—एगं डसइ पुच्छंमि एगं वित्थइऽभिक्षणं ।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥
- ५—एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुट्ठइ उप्फिडई सढे वालगवी वए ॥
- ६—माई मुट्ठेण पडइ कुट्ठे गच्छइ पडिप्पहं ।
'मयलक्खेण चिट्ठई'^३ वेगेण य पहावई ॥
- ७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लि दुट्ठन्तो भंजए जुगं ।
से वि य सुस्सुयाइत्ता^४ उज्जाहिता^५ पलायए ॥
- ८—खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला ॥

१—वाहयमाणस्स (अ, सु) ; वहणमाणस्स (ऋ) ।

२—किलामई (वृ०) ; किलिस्सई (वृ० पा०) ।

३—पल्लं (यलं) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०) ।

४—सुस्सुयत्ता (अ) ।

५—उज्जुहिता (आ, वृ०, सु) ।

- ९-इड्ढीगारविण एगे एगेऽत्थ रसगारवे ।
 सायागारविण एगे एगे सुचिरकोहणे ॥
- १०-भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
 एगं च^१ अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य ॥
- ११-सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पंकुव्वई^२ ।
 आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेइ अभिक्खणं ॥
- १२-त सा ममं वियाणाइ न वि^३ सा मज्झ दाहिई ।
 निगया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥
- १३-पेसिया^४ पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
 रायवेट्ठि^५ व मन्नन्ता करेन्ति भिउडिं मुहे ॥
- १४-वाइया सगहिया चेव 'भत्तपाणे य'^६ पोसिया ।
 जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं ॥
- १५-अह सारही विचिन्तेइ^७ खलुकेहि समागओ ।
 किं मज्झ दुइसीसेहि अप्पा मे अवसीयई ॥
- १६-जारिसा^८ मम सीसाउ तारिसा^९ गलिगइहा ।
 गलिगइहे चइत्ताणं^{१०} दढं परिगिण्हइ^{११} तवं ॥

१-× (अ) ।

२-पभासए (बु० पा०) ।

३-य (उ) ।

४-पोसिया (बु० पा०) ।

५-रायाविट्ठं (अ) ।

६-भत्तपाणेण (अ, आ, इ) ।

७-हि चित्तेइ (अ) ।

८-तारिसा (अ) ।

९-जारिसा (अ) ।

१०-जहिताणं (आ) ।

११-पणिहामि (बु०) ; परिगिण्हई (बु० पा०) ।

१७-मिउ मद्दवसंपत्ते गम्भीरे सुसमाहिए ।

विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणा ॥

—त्ति वेमि ॥

*

अट्टावीसइमं अज्जमयणं
मोक्खमग्गगई

१-मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पद

२-नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस^१ मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं, वरदंसिहिं^२ ॥
३-नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता^३ जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

नाण-पदं

४-तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५-एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहिं देसियं ॥

दव्व-पदं

६-गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ^४ अस्सिया भवे ॥
७-धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

१-एय (अ) ।

२-सव्वदसिहिं (अ) ।

३-एव^० (अ) ।

४-दुहओ (अ) ।

८-धम्मो अहम्मो आगासं दब्बं इक्किमाहियं ।

अणन्ताणि य दब्बाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥

९-गइलक्खणो उ^१ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।

भायणं सव्वदब्बाणं नहं ओगाहलक्खणं ॥

१०-वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।

नाणेणं दंसणेण च सुहेण य दुहेण य ॥

११-नाणं च दंसणं चैव चरित्तं च तवो तथा ।

वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥

१२-सद्धन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'^२ ।

वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥

१३-एगत्तं च पुहत्तं^३ च संखा संठाणमेव य ।

संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पदं

१४-जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तथा ।

संवरो निज्जरा भोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तरुह-पदं

१५-तहियाणं तु भावाणं 'सन्भावे उवएसणं ।

भावेणं सद्धन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं'^४ ॥

१-य (अ) ।

२-^० तवेइ या (अ, ऋ) , ^० तवुचि वा (बृ०) ।

३-दुहत्त (उ) ।

४-सन्भावो (वेणो) वएसणे ।

भावेण उ सद्धहणा सम्मत्तं होति आहिय ॥ (बृ० पा०) ।

१६-निसग्गुएसरुई

आणारुई सुत्तबीयरुइमेव ।

अभिगमवित्थाररुई

किरियासंखेवधम्मरुई ॥

१७-भूयत्थेणाहिगया

जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।

सहसम्मइयासवसंवरो य^१

रोएइ उ निसग्गो ॥ ।

१८-जो जिणदिट्ठे भावे

चउव्विहे सइहाइ सयमेव ।

एमेव^२ नज्जह त्ति य

निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥

१९-एए चेव उ^३ भावे

उवइट्ठे जो परेण सइहई ।

छउमत्थेण जिणेण व^४

उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥

२०-रागो दोसो मोहो

अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।

आणाए रीयंतो

सो खलु आणारुई नाम ॥

१-उ (अ) ।

२-एमेय (अ, उ, वृ०) ।

३-ह (ऋ) ।

४-य (ऋ) ।

- २१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
 सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
 अंगेण बाहिरेण व'
 सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २२—एगेण अणेगाइं
 पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
 उदए व्व तेल्लबिन्दू
 सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २३—सो होइ अभिगमरुई
 सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
 'एकारिस अंगाइं'
 पइण्णगं^३ दिट्ठिवाओ य ॥
- २४—दव्वाण सव्वभावा
 सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
 सव्वाहि नयविहीहि य
 वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥
- २५—दंसणनाणचरित्ते
 तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु^४ ।
 जो किरियाभावरुई
 सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ) ।

२—इकारसमगाइ (उ, ऋ) ।

३—पइण्णय (अ) ।

४—सव्व^० (अ) ।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी

संखेरुइ त्ति होइ नायव्वो ।

अविसारओ

पवयणे

अणभिग्गहिओ य सेसेसु ।

२७—जो

अत्थिकायधम्मं

सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।

सद्दहइ

जिणाभिहियं

सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥

२८—परमत्थसंथवो

वा

सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।

वावन्नकुदंसणवज्जणा

य

सम्मत्तसद्दहणा ॥

२९—नत्थि चरित्तं

सम्मत्तविहूणं

दंसणे

उ

भइयव्वं ।

सम्मत्तचरित्ताइं

जुगवं पुव्वं व^१ सम्मतं ॥

३०—नादसणिस्स

नाणं

नाणेण विणा न हुत्ति चरणगुणा ।

अगुणिस्स

नत्थि मोक्खो

नत्थि अमोक्खस्स निव्वानं ॥

३१—निस्संकिय

निककंखिय

निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।

उववूह

थिरीकरणे

वच्छल्ल पभावणे

अट्ठ ॥

चारिस्तम्भं

- ३२-सामाङ्ग्य^१ पढमं छेओवड्ढावणं भवे वीर्यं ।
 पण्हारविमुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥
 ३३-अकसायं अहकसायं छज्जमत्थस्स जिणस्स वा ।
 एयं चयस्सिक्करं चारिस्तं होइ आहियं ॥

तव-गदं

- ३४-तवो य दुविहो वुत्तो वाहिग्गमन्नरो तथा ।
 वाहिगे छव्विहो वुत्तो एवमग्गमन्नरो तवो ॥

मिक्खवेव-गदं

- ३५-नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सट्ठे ।
 चरित्तेण निगिण्हाइ^२ तवेण परिमुज्झई ॥
 ३६-खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
 सव्वदुक्कज्जण्होणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१-सामाङ्ग्यं च (उ, ऋ) ।

२-न गिहति (दृ० पा०) ।

एगूणतीसइमं अज्झयणं

सम्मत्तपरक्रमे

उक्खेव-पद

सू० १—‘सुयं मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-
परक्रमे ‘नाम अज्झयणे’ समणेणं भगवया महावीरेणं कांसवेणं
पवेइए जं सम्मं सद्वहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता^१
तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे
जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं
करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा—संवेगे १ निव्वेए २
धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सुसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६
गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए^२ १०
पडिक्कमणे ११ काउस्सगो १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले^३ १४
कालपडिलेहणया १५ पायन्छित्तकरणे १६ खमावणया १७
सज्झाए १८ वायणया^४ १९ पडिपुच्छणया २० परियट्ठणया २१ अणु-
प्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवे-
सणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडि-
बद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्ठणया ३२ संभोग-
पच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसाय-
पच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ), नामज्झयणे (स, उ) ।

२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ) ।

३—वंदणे (अ) ।

४—थय थुइ मंगले (अ, ऋ), थण थुई मंगले (उ) ।

५—वायणाए (ऋ) ; वायणा (उ) ।

पच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सम्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवया^१
 ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपण्णया^२ ४४ वीयरगया ४५
 खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे^३ ४८ मट्टवे^४ ४९ भावसच्चे ५० करण-
 सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया
 ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया
 ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
 सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४
 जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७
 माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-
 दंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

सवेग-पद

सू० २—संवेगेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए
 धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ । अणुत्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे
 खवेइ । कम्मं^५ न वन्धइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण
 दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए
 तेणेव भवग्गहणेणं सिज्जइ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो
 भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

निव्वेय-पदं

सू० ३—निव्वेएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं
 हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे

१—पडिरूवणया (ऋ) ।

२—^० सपुण्णया (अ, आ, इ, वृ०) ।

३—मट्टवे (अ, सु, वृ०) ।

४—अज्जवे (अ, सु, वृ०) ।

५—नव च कम्म (अ, आ, इ) ।

आरम्भपरिच्चायं^१ करेइ । आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ते य भवइ ॥

धम्मसद्धा-पद

सू० ४-धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ । अगारधम्मं च णं चयइ अणगारेए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयण-संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अब्बाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ^२ ॥

सुस्सूसणा-पद

सू० ५-गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ । 'विणय-पडिवन्ते य णं'^३ जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियं-मणुस्सदेवदोगाईओ निरुम्भइ । वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवसोगाईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ । पसत्थाइं च ण विणयमूलाइं सव्वकज्जाइ साहेइ । अन्ते य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पद

सू० ६-आलोयणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणन्तसंसारवद्धणाणं^४ उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च^५ जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ते^६ य णं जीवे अमाई इत्थीवेयत्तपुंसगवेयं च न बन्धइ । पुव्ववद्धं च ण निज्जरेइ ॥

१-आरम्भपरिग्गहं (अ) ।

२-निव्वित्ते (ऋ) ।

३-० पडिवन्तएण (ऋ) ।

४-० वद्धमाण (अ) ।

५-च णं (उ, ऋ, स) ।

६-० पडिवन्तएण (ऋ) ।

पायच्छित्त-पदं

सू० १७—पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

खमावण-पद

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं पल्हायणभावं^१ जणयइ । पल्हायणभावमुवगाए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगाए यावि जीवे भावविसोहि काऊण निब्भए भवइ ।

सज्झाय-पदं

सू० १९—सज्झाएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० २०—वायणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निज्जरं जणयइ । सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'^२ । सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छित्तइ ।

सू० २२—परियट्टणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ।

१—पल्हाएणंत माव (बू०), पल्हायणभाव (बू० पा०) ।

२—अणुसज्जणाए वट्टइ (बू० पा०) ।

सू० २३—अणुप्पेहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिद्धिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्टिइयाओ हस्सकालट्टिइयाओ पकरेइ । तिब्बाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । 'बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ'^१ । आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ । 'असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'^२ अणाइयं च णं अणवदगं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ।

सू० २४—धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं 'निज्जरं जणयइ'^३ । 'धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ'^४ । पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भइत्ताए कम्मं निबन्धइ ।

सुय-पदं

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ।

एगगमण-पदं

सू० २६—एगगमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

एगगमणसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ।

संजम-पदं

सू० २७—संजमेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अण्हयत्तं जणयइ ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०) ।

२—साया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०) ।

३—पवयण पभावेइ (वृ० पा०) ।

४—X (वृ०) ।

तव-पदं

सू० २८—तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ।

वोदाण-पदं

सू० २९—वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ
पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं
करेइ ।

सुहसाय-पदं

सू० ३०—सुहसाएणं^१ भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे
अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ।

अप्पडिबद्ध-पदं

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं^२ जीवे
एगे एगगचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि
विहरइ ।

विवित्त-पदं

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए^३ णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्ति जणयइ । चरित्तगुत्ते
य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ते
अट्ठविहकम्मगण्ठि निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएण (बृ०) ; सुहसायाएणं, सुहसाएणं (बृ० पा०) ;

सुहसायाएण (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्तं गएण (उ, ऋ) ।

३—^० सयणासणसेवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ । पुच्चबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ ।

पच्चक्खाण-पद

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेणं आलम्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति । सएणं लाभेणं संतुस्सइ^१ परलाभं 'नो आसाएइ'^२ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ । परलाभ अणासायमाणे^३ अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ । निरुवहिए णं जीवे निक्कखे^४ उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ ।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियासंसप्पओगं'^५ वोच्छिन्दइ^६ । जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ।

१—तुस्सइ (उ, ऋ) ।

२—'नो आभाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०) ।

३—अणस्सायमाणे (वृ०) ।

४—'नक्कखे' एतच्च पदं क्वचिदेव दृश्यते (वृ०) ।

५—जीवियासं विप्पओगं (वृ० पा०) ।

६—वोच्छिदिय (वृ० पा०) ।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरगभावं जणयइ ।
वीयरगभावपडिवन्ते वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ । अजोगी^१ णं जीवे त्वं
कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं^२ निव्वत्तेइ ।
सिद्धाइसयगुणसंपन्ते य णं जीवे लोगगमुवगए परमसुही भवइ ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए^३ वि^४ य
णं^५ जीवे एगगं भावेमाणे अप्पसद्दे^६ अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए
अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्ठि^७ जणयइ । अनियट्ठिपडिवन्ते^८
य अणगारे चत्तारिं केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं

१—अजोगीय (ऋ) ।

२—^० सयगुणत्त (उ, ऋ) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४—X (उ, ऋ) ।

५—X (वृ०) ।

६—नियट्ठि (वृ० पा०) ।

७—नियट्ठि० (वृ० पा०) ।

नामं गोयं । तओ^१ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ
सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

पडिख्व-पदं

सू० ४३—पडिख्वयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिख्वयाए णं लाघवियं जणयइ । लहुभूए णं^२ जीवे
अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते
सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे^३ जिइन्दिए
विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ।

वेयावच्च-पदं

सू० ४४—वेयावच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ।

सव्वगुणसंपन्न-पदं

सू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए^४ णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्तिं
पत्तए य^५ णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ।

वीयरग-पदं

सू० ४६—वीयरगयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरगयाएणं 'नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि'^६ य
वोच्छिन्दइ मणुन्नेसु^७ सद्दफरिसरसरूवगन्धेसु चेव विरज्जइ ।

१—X (उ, ऋ) ।

२—य ण (उ, ऋ) ।

३—अप्पपडिलेहे (वृ० पा०) ।

४—^० सपुण्णयाए (अ, आ) ।

५—X (उ, ऋ) ।

६—^० वघणाणि तण्हा वघणाणि (वृ०), नेहाणु वन्धणाणि, तण्हाणु वन्धणाणि (वृ० पा०) ।

७—मणुन्नामणुन्नेसु (अ) ।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए णं परीसहे जिणइ ।

मुत्ति-पदं

सू० ४८—मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे
अत्थलोल्लाणं^१ अपत्थणिज्जो भवइ ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं
अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स
आराहए भवइ ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्ते णं
जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ'^२ ।

सत्त-पदं

सू० ५१—भावसच्चवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चवेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहीए वट्ठमाणे
जीवे अरहन्तपत्तत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।

१—अत्थलोल्लाणं पुरिस्साणं (आ, इ, उ, ऋ, स) ।

२—अणुस्सुअत्तं जणइ । अणुस्सुअत्तेण जीवे मद्दवयाएणं मिउ० (अ) ; मद्दवयाए णं
मिउ० (उ, वृ०, ऋ) ; मद्द० अणुस्सियत्तं जणेति, अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउ०
(वृ० पा०) ।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहण्याए^१ अब्भुट्ठिता
परलोगधम्मस्स^२ आराहए हवइ ।

सू० ५२—करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणे
जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ।

सू० ५३—जोगसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ ।

सू० ५४—मणगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगगं जणयइ । एगगचित्ते णं जीवे
मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ।

गुत्ति-पद

सू० ५५—वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं^३ जणयइ । 'निव्वियारेणं जीवे'^४
वइगुत्ते अज्झप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'^५ यावि भवइ ।

सू० ५६—कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणे
पावासवनिरोहं करेइ ।

समाहारण-पदं

सू० ५७—मणसमाहारण्याए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणसमाहारण्याए णं एगगं जणयइ । एगगं जणइत्ता
नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं
च निज्जरेइ ।

१—आराहण्याए ण (ऋ) ।

२—परलोगाराहए (वृ० पा०) ।

३—निव्वियारत्तं (अ, स) ।

४—निव्वियारे ण जीवे वयगुत्तयं जणयइ (वृ० पा०) ।

५—० साहणज्जुचे (उ, ऋ, वृ०) ।

सू० ५६—वयसमाहारण्याए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयसमाहारण्याए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ ।
वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ
दुल्लहबोहियत्तं निज्जेइ ।

सू० ५९—कायसमाहारण्याए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारण्याए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे
विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता
चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ
परिनिव्वाएइ सब्बदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सपन्नया-पदं

सू० ६०—नाणसंपन्नायाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

नाणसंपन्नायाए णं जीवे सब्बभावाहिगमं जणयइ ।
नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता

पडिया वि न विणस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते

संसारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय^१
संघायणिज्जे भवइ ।

सू० ६१—दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तच्छेयणं करेइ परं न विज्झायइ^२ ।
'अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ'^३ ।

१—० समय विसारए य (अ) ।

२—विज्झाइ (ऋ) ; वज्झाइ । पर आणाज्झायमाणे (अ) ।

३—अप्पाण संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे अणुत्तरेण नाणदंसणेणं विहरइ (अ) ; अनुत्तरेण
नाणदंसणेणं विहरइ (वृ० पा०) ।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ । 'सेलेसिं पडिक्खन्ते य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ । तयो पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिब्बाएइ सब्बदुक्खाणमन्तं करेइ' ।

इन्द्रियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्तेसु सदेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६४—चक्खिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्तेसु रूवेसु रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६५—घाणिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्तेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६६—जिब्भिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जिब्भिन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्तेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६७—फासिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्तेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

१—सेलेसी पडिक्खन्ते विहरइ (बु०) ; सेलेसिं पडिक्खन्ते अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेति, ततो पच्छा सिज्झति... (बु० पा०) ।

२—चक्खिन्द्रियसु (अ) ।

कसायविजय-पदं

सू० ६८—कोहविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कोहविजएणं खन्ति जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६९—माणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

माणविजएणं मह्वं जणयइ माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७०—मायाविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मायाविजएणं उज्जुभावं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७१—लोभविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

खवणा-पदं

सू० ७२—पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । 'अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए'^१ तप्पढमयाए जहाणुपुत्वि अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं^२ पंचविहं अन्तरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पड्डिपुणं निरावरणं वित्तिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावगं^३ केवल-

१—अट्ठविहकम्म विमोयणाए (बु० पा०)

२—दसणावरणं (उ, ऋ) ।

३—लोगालोगसमाव (बु० पा०) ।

वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं कम्मं बन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं^१ तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ।

सू० ७३—अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए^२ जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं भायमाणे तप्पढमयाए ‘मणजोगं निरुम्भइ २ ता वइजोगं निरुम्भइ २ ता आणापाणुनिरोहं’^३ करेइ २ ता ईसि पंचरहस्सक्खस्वचारद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्ठिसुक्कज्झाणं भियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि^४ कम्मसे जुगवं^५ खवेइ ।

निकखेव-पद

सू० ७४—तओ ओरालियकम्माइ च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहिता उज्जुसेडिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ^६ ।

१—निविण्ण (अ) ।

२—अतोमुहुत्तद्धावसेसाए (बु० पा०) ; अतोमुहुत्तद्धावसेसाउए । (उ, ऋ, बु० पा०) ।

३—मणजोग निरुम्भइ वइजोग निरुम्भइ आणापाणुनिरोह करेइ (बु०) ; मणजोग निरुम्भइ, वइजोग निरुम्भइ, कायजोग निरुम्भइ आणापाणु^० (आ, इ) ।

४—X (उ, ऋ) ।

५—X (उ, ऋ) ।

६—(क) इह च चूर्णिकृता—“सेलेसीए णं मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्झति” इति पाठः, पूर्वत्र च कचित्किञ्चित्पाठ-भेदेनाल्पा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्माभिरुक्तं भूयसीषु प्रतिषु यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (बु० पा०) ।

(ख) सेलेसीएण मन्ते-।—जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए जीवा सिज्झति बुज्झति मुचं^० इति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करंति (चु०) ।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं
 भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए^१ उवदंसिए ।
 —त्ति वेमि ॥

*

तीसइमं अज्झयणं

तवमग्गई

उक्खेव-पदं

१-जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥

२-पाणवहमुसावाया^१
अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।

राईभोयणविरओ
जीवो भवइ अणासवो ॥

३-पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥

४-एएसिं तु विवच्चासे^२ रागदोससमज्जियं ।
'जहा खवयइ भिक्खू'^३ 'तं मे एग्गमणो'^४ सुण ॥

५-जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥

६-'एवं तु'^५ संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पद

७-सो तवो वुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१-पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।

२-विवज्जासे (वृ९) ।

३-खवेइ जं जहा कम्मं (उ, ऋ) ; खवेइ तं जहा भिक्खू (वृ०) ।

४-त मे एग्गमणा (स) ; तमेगग्गमणो (सु) ।

५-एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पदं

८-अणसणमूणोयरिया

भिक्षायरिया य रसपरिच्चाओ ।

कायकिलेसो संलीणया य

बज्झो तवो होइ ॥

९-इत्तिरिया मरणकाले^१, 'दुविहा अणसणा'^२ भवे ।

इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा^३ बिइज्जिया ॥

१०-जो सो इत्तरियतवो

सो समासेण छव्विहो ।

सेद्धितवो

पयरतवो

घणो य 'तह होइ वग्गो य'^४ ॥

११-तत्तो य वग्गवग्गो उ पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।

मणइच्छियचित्तथो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥

१२-जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया ।

सवियारअवियारा^५ कायचिट्ठं पई भवे ॥

१३-अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'^६ य आहिया ।

नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि ॥

१४-ओमोयरियं^७ पंचहा समासेण वियाहियं ।

'दव्वओ खेत्तकालेणं'^८ भावेणं^९ पज्जवेहि य ॥

१-० कालायं (उ, ऋ) ।

२-अणसणा दुविहा (उ, ऋ, वृ०) ।

३-निरकंखा उ (वृ०) ; निरवकंखा उ (सु) ; निरवकंखा (वृ० पा०) ।

४-वग्गो चउत्थोउ (अ) ।

५-सवियारमवियारा (उ, ऋ, वृ०, सु) ।

६-सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ) ।

७-ओमोयरणं (अ, वृ० पा०, ऋ) ।

८-खित्तओ काले (ऋ) ; खेत्त काले य (अ) ।

९-भावओ (अ) ।

१५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं^१ तु जो करे ।

जहन्नेणेगसित्थाई एवं दब्बेण ऊ भवे ॥

१६—गामेनगरेतह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।

खेडे कब्बडदोणमुह- पट्टणमडम्बसंबाहे ॥

१७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥

थल्लिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥

१८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्ति यं खेतं ।

कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥

१९—पेडा य अद्धपेडा

गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।

सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुं

पच्चागया छट्ठा ॥

२०—दिवसस्स पोस्सीणं

चउण्हं पि उजत्तिओ भवे कालो ।

एवं चरमाणो खलु

कालोमाणं मुण्णेयव्वो^२ ॥

२१—अहवा तइयाए पोरिसीए

ऊणाइ घाससेसन्तो ।

चउभागूणाए

वा

एवं कालेण ऊ भवे ॥

२२—इत्थी वा

पुरिसो वा

अलंकिओ वाऽणलकिओ वा वि ।

अन्नयरवयत्थो

वा

अन्नयरेणं व वत्थेणं ।

१—ऊण (अ) ।

२—मुण्णेयव्व (उ, ऋ) ।

- २३—अन्तेण विसेसेण
वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु
भावोमाणं मुणेयव्वो^१ ॥
- २४—दव्वे खेत्ते काले
भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ
पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥
- २५—अट्ठविहगोयरगं तु तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ते भिक्खायरियमाहिया ॥
- २६—खीरदहिसप्पिमाई पणीयं पाणभोयणं ।
परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ॥
- २७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥
- २८—एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए ।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासणं ॥
- २९—एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तरं 'तवं एत्तो'^२ वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥
अब्भितरतव-पदं
- ३०—पायच्छित्तं विणओ
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
'भाणं च विउस्सगो'^३
'एसो अब्भिन्तरो तवो'^४ ॥

१—मुणेयव्वं (उ, ऋ) ।

२—तवो इत्तो (उ, ऋ) ।

३—झाण उस्सगो वि य (उ, ऋ, स) ।

४—अब्भिन्तरओ तवो होइ (उ, ऋ, स) ।

- ३१-आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
 जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥
- ३२-अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं ।
 गुरुभत्तिभावसुस्पृसा विणओ एस वियाहिओ ॥
- ३३-आयरियमाइयम्मि^१ य वेयावच्चम्मि दसविहे ।
 आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥
- ३४-वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्ठणा ।
 अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥
- ३५-अट्ठरुदाणि वज्जिता भाएज्जा सुसमाहिए ।
 धम्मसुक्काइं ज्ञाणाइं ज्ञाणं तं तु बुहा वए ॥
- ३६-सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
 कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥

निकखेव-यदं

- ३७-एव तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी ।
 'सि खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए'^२ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१-आयरिमाईए (उ, ऋ) ।

२-सो सवेत्तुरय अरओ नीरय तु गइ गए (वृ० पा०) ।

एगतीसइमं अज्भयणं

चरणविही

- १—चरणविहि पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥
- २—एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
अंसंजमे नियत्ति च संजमे य पवत्तणं ॥
- ३—रागदोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ^१ मण्डले ॥
- ४—दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ^२ मण्डले ॥
- ५—दिब्बे य जे^३ उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ^४ मण्डले ॥
- ६—विगहाकसायसन्नाणं भाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ^५ मण्डले ॥
- ७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'^६ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ९—पिण्डोगाहपडिमासु भयद्वाणेषु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, बृ० पा०) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४, ५—गच्छइ (अ, बृ० पा०) ।

६—समीतीसु य तहैव य (वृ० पा०) ।

- १०—मयेसु वम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्मंमि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ११—उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १२—किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १३—गाहासोलसएहिं तहा अस्संजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १४—वम्भम्मि नायज्झयणेसु ठाणेसु यऽ समाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १५—एगवीसाए सवलेसु वावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १६—तेवीसड सूयगडे रुवाहिएसु सुरेसु^१ अ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १७—पणवीसणावणाहिं^२ उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १८—अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव य^३ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १९—पावसुयपसंगेसु मोहट्ठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- २०—सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु^४ य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१—देवेसु (वृ० पा०) ।

२—पणु^० (अ) ।

३—उ (उ, ऋ, वृ) ।

४—०णाणि (अ) ।

२१-इह एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई संयां ।
 खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

वतीसद्वमं अज्मयणं

पमायट्टाणं

उक्खेव-पदं

१—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
सच्चस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुणचित्ता
सुणेह एगगहियं^१ हियत्थं ॥

२—नाणस्स सच्चस्स^२ पगासणाए
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं
एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥

३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'^३
सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥

४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं^४ ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

१—एगन्त ° (बु० पा०, सु) ।

२—सच्चस्स (बु० पा०, सु, पा) ।

३—° निसेवणाए (बु० पा०) ; ° निवेसणा य (बु०) ।

४—निउणेह ° (बु० पा०) ।

५—न वा लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो^१
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥
 तण्हा-पदं

६—जहा य अण्डप्पभवा बलागा
 अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहाययणं खु तण्हं^२
 मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥
 ७—रागो य दोसो वि य कम्मबीयं
 कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
 कम्मं च जाईमरणस्स मूलं
 दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥
 ८—दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
 लोहो हओ जस्स न किंचणाइं^३ ॥

उवाय-पद

९—रागं च दोसं च तहेव मोहं
 उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
 जे जे 'उवाया पडिवज्जियव्वा'^४
 ते कित्तिइस्सामि अहाणुपुब्बि ॥

१—अणायरन्तो (बृ० पा०) ।

२—तण्हा (अ) ।

३—किंचनत्थि (बृ० पा०) ।

४—अपाया परि० (बृ० पा०) ।

१०—रसा पगामं न निसेवियव्वा
पायं रसा दित्तिकरा^१ नराणं ।
दित्तं च कामा संमभिद्वन्ति
दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥

११—जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे
समाहो नोवसमं उवेइ ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो
न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥

१२—विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं
ओमासणाणं^२ दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं
पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥

१३—जहा बिरालावसहस्स मूले
न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जे
न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥

१४—न ख्वलावण्णविलासहासं
न जंपियं इंगियपेहियं^३ वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥

१—दित्तिकरा (वृ० पा०) ।

२—ओमासणाए, ओमासणाई (वृ०, पा०) ।

३—० वीहिय (वृ०, सु) ।

१५—अदंसणं चेव अपत्थणं च

अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।

इत्थीजणस्सारियभाणजोगं

हियं सया बम्भवए^१ रयाणं ॥

१६—कामं तु देवीहि विभूसियाहिं

न चाइया खोभइउ^२ तिगुत्ता^३ ।

तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा

विवित्तवासो^४ मुणिणं^३ पसत्थो ॥

१७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स

संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मो ।

नेयारिसं^४ दुत्तरमत्थि लोए

जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥

१८—एए यं संगे समइक्कमित्ता

सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।

जहा महासागरमुत्तरित्ता

नई भवे अवि गंगासमाणा ॥

दुक्ख-पदं

१९—कामाणुगिद्विप्पभवं खु दुक्खं

सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।

जं काइयं माणसियं च किंचि

तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरगो ॥

१—वभवेरे (उ, षु० पा०, ऋ) ।

२—०भावो (उ, ऋ) ।

३—मुणिणो (अ) ।

४—न तारिसं (आ, इ, उ, ऋ) ।

२०—जहा य किंपागफला मणोरमा ।
 रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
 'ते खुहुए जीविय'^१ पच्चमाणा ।
 एओवमा कामगुणा विवागे ॥

२१—जे इन्दियाणं विसया मणुन्ता
 न तेसु^२ भावं निसिरे कयाइ ।
 न याऽमणुन्तेसु मणं पि^३ कुज्जा
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुत्तमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्तमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

रूव-पदं

२३—रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति
 चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुत्तमाहु^४
 दोसस्स हेउं अमणुत्तमाहु^५ ॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्चं^६
 अकालियं पावइ से विणासं^७ ।
 रागाउरे से जह वा पयंगे
 आलोयलोलो समुवेइ मच्चुं ॥

१—ते जीविय खुहुए (अ) ; ते जीविय खुदति (वृ० पा०) ; ते खुहुए जीविय (-सु) ।

२—तेसि (अ) । ३—सु (अ) ।

४—तमणुणमाहु (वृ० पा०) । ५—समणुणमाहु (वृ० पा०) ।

६—निच्च (अ) । ७—किलेस (वृ० पा०) ।

२५—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१
तंसि कखणे से 'उ उवेइ दुक्खं'^२ ।

दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि ख्वं अवरज्झई से ॥

२६—एगन्तरत्ते^३ रुइरंसि ख्वे
अतालसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

२७—ख्वाणुगासाणुगए^४ य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगख्वे ।

चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिद्धे ॥

२८—ख्वाणुवाएण^५ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे^६ ।

वए विओगे य कहि सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे^७ ॥

२९—ख्वे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (बु०, अ) ।

२—समुवेति सव्व (बु० पा०) ।

३—^० रुत्तो (अ) ।

४—^० वय्याणुगए (बु० पा०) ।

५—^० वाए य (अ) ; ^० राणेण (बु० पा०) ; ^० वाए ण (सु) ।

६—^० तन्निओगे (उ) ।

७—अतित्तं ^० (बु०) ; अतित्ति ^० (बु० पा०) ।

३०—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।

मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।

एवं अदत्ताणि समाययन्तो
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

३३—एमेव रूवम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पटुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

३५—सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।

तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरारो ॥

३६—सदस्स सोयं गहणं वयन्ति ॥ ३६ ॥
 सोयस्स सदं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुत्तमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुत्तमाहु ॥

३७—सद्वेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^१ ॥ ३७ ॥
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे हरिणमिगे व^२ मुद्धे^३
 सदे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥

३८—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^४ ॥ ३८ ॥
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किञ्चि सदं अवरज्झई से ॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरंसि सदे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

४०—सद्दाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिसइ ण्णेगख्वे ।
 चित्तेहि ते परियावेइ वाले
 पीलेइ अत्तइगुरु किलिद्धे ॥

१—निच्च (अ) ।

२—व्व (उ, ऋ) ।

३—मुद्धे (अ) ।

४—निच्चं (अ, वृ०) ।

४१—सद्वाणुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

४२—सद्दे अतित्तो य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुद्धिं !
अतुद्धिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

४३—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

४४—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरत्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

४५—सद्वाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—^० वाए य (अ) ; रागेण (वृ० पा०) ; वाए ण (सु) ।

२—अतित्त (वृ) ; अतित्ति (वृ० पा०) ।

४६—एमेव सहम्मि गओ पओसं
 उवेइ, दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो^२
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

गन्ध-पदं

४८—घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्तमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्तमाहु
 समो य जो तेसु स बीयरगो ॥

४९—गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति
 घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्तमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्तमाहु ॥

५०—गन्धेसु^३ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^४
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
 सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ) ।

२—असोगो (अ) ।

३—गंधस्स (अ, ऋ) ।

४—निच्चं (अ) ।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तइगुरू किलिट्ठे ॥

५४—गन्धाणुवाएण^२ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहिं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥

५५—गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।

२—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

३—अतित्त ^० (वृ०) ; अतित्ति ^० (वृ० पा०) ।

- ५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ५८—गन्धानुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- ५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पडुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- ६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
रस-पद
- ६१—जिहाए रसं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरारो ॥

- ६२-रसस्स जिब्भं^१ गहणं वयन्ति
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥
- ६३-रसेसु^२ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^३
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे^४ ॥
- ६४-जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^५
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
'रसं न किञ्चि'^६ अवरज्झई से ॥
- ६५-एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥
- ६६-रसाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तद्दगुरू किलिद्धे ॥

१-जीहा (उ, ऋ) ।

२-रसस्स (अ, ऋ) ।

३-निच्च (अ) ।

४-लोमगिद्धे (अ) ।

५-निच्च (वृ०, अ) ।

६-न किञ्चि रस्स (अ) ।

६७—रसाणुवाएण^१ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहिं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

६८—रसे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

६९—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
 रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

७०—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो
 रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

७१—रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
 निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ? ॥

१—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ॥

२—अतित्त^० (वृ०) ; अतित्ति^० (वृ० पा०) ।

७२—एमेव रसम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पट्टच्चित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

७३—रसे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

फास-पदं

७४—कायस्स फासं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

७५—फासस्स कायं गहणं वयन्ति
कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।
'रागस्स हेउं समणुन्नमाहु'^२
'दोसस्स हेउं'^३ अमणुन्नमाहु ॥

७६—फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्चं^४
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ते
गाहग्गहीए महिसे व ऽरन्ते ॥

१—उ (अ) ।

२—त राग हेउं तु मणुन्नमाहु (अ) ।

३—त दोस हेउस्स (अ) ।

४—निच्चं (अ) ।

७७-जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१

तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।

दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू

न किंचि फासं अवरज्जई से ॥

७८-एगन्तरत्ते रुद्धरंसि फासे

अतालसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले

न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

७९-फासाणुगासाणुगए य जीवे

चराचरे हिसइ ऽणेगरूवे ।

चित्तेहि ते परितावेइ बाले

पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिद्धे ॥

८०-फासाणुवाएण^२ परिग्गहेण

उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।

वए विओगे य कहिं सुहं से ?

संभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥

८१-फासे अतित्ते य परिग्गहे य

सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स

लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१-निच्च (वृ०, अ) ।

२-^०वाए य (अ) ; ^०राणेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

३-अतित्त^० (वृ०) ; अतित्ति^० (वृ० पा०) ।

८२-तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
फासे अतित्तस्स परिगहे य ।

मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

८३-मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।

एवं अदत्ताणि समाययन्तो
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

८४-फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्जकयाइ किञ्चि ? ।

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

८५-एमेव फासम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पडुट्ठचित्तो य' विणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

८६-फासे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

भाव-पदं

८७-मणस्स भावं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।

तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरोगो ॥

८८—भावस्स मणं गहणं वयन्ति
 मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेसु^१ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^२
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे
 करेणुमग्गावहिए 'व नागे'^३ ॥

९०—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^४
 तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किञ्चि भावं अवरज्झई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेरुखे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिद्धे ॥

१—मणेण (अ) ; भावस्स (क्क) ।

२—निच्च (अ) ।

३—गए व्व (अ) ।

४—निच्चं (वृ०, अ) ।

९३—भावाणुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कर्हि सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

९४—भावे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स काएण दुक्खं ॥

१—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

२—अतित्त^० (वृ०) ; अतित्ति^० (वृ० पा०) ।

९८-एमेव भावस्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पट्टुच्चित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

९९-भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

निकखेव-पदं

१००-एविन्दियत्था य मणस्स अत्था
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।

ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं
न वीयरागस्स करेन्ति किञ्चि ॥

१०१-न कामभोगा समयं उवेन्ति
न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।

जे तप्पओसी य परिग्गही य
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥

१०२-कोहं च माणं च तहेव मायं
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।

हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं
नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥

१०३-आवज्जई एवमणेगरूवे
एवंविहे कामगुणेषु सत्तो ।

अन्ते य एयप्पभवे विसेसे
कारुणदीणे हिरिमे वइस्से ॥

- १०४—कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू
पच्छाणुतावेय^१ तवप्पभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे
आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥
- १०५—तओ से जायन्ति पओयणाइं
निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा^२
तप्पच्चयं^३ उज्जमए य रागी ॥
- १०६—विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था
सद्दाइया^४ तावडयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा
निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ॥
- १०७—एवं ससंकप्पविकप्पणासुं^५
संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
'अत्थे य संकप्पयओ'^६ तओ से
पहीयए कामगुणेषु तण्हा ॥
- १०८—स वीयरगो कयसव्वकिच्चो
खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव ज दंसणमावरेइ
जं चञ्जरायं पकरेइ कम्मं ॥

१—पच्छाणुतावेण (सु) ।

२—दुक्ख विमोयणाय (वृ० पा०) ।

३—तप्पच्चया (वृ० पा०) ।

४—वण्णाइया (वृ० पा०) ।

५—० विकप्पणासो (वृ० पा०) ।

६—अत्थे असंकप्पयतो (वृ० पा०) ।

- १०९—सर्व्वं तओ जाणइ पासए य
 अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 अणासवे क्काणसमाहिजुत्ते
 आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥
- ११०—सो तस्स सर्व्वस्स दुहस्स मुक्को
 जं वाहई सययं जन्तुमेयं ।
 दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
 तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥
- १११—अणाइकालप्पभवस्स एसो
 'सर्व्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमगो'^१ ।
 वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता
 कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

तेतीसइमं अज्जमयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

- १—अट्ट कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्वि जहक्कमं^१ ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्तए^२ ॥

कम्म-पद

- २—नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्टेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

- ४—नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाण तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५—निदा तहेव पयला
निदानिदा य पयलपयला य ।
ततो य थीणगिद्धी उ
पंचमा होइ नायव्वा ॥

- ६—चक्खुमचक्खुओहिस्स
दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं^३ तु नवविगप्पं
नायव्वं दंसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (वु० पा०) ।

२—परिमम्मए (वु० पा०) ।

३—एय (अ) ।

- ७—वेयणीयं पि य^१ दुविहं
सायमसायं च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया
एमेव असायस्स वि ॥
- ८—मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तथा ।
दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥
- ९—सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तित्ति पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥
- १०—‘चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं’^२ ।
‘कसायमोहणिज्जं’^३ तु नोकसायं तहेव य ॥
- ११—सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ॥
- १२—नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु^४ आउकम्मं चउव्विहं ॥
- १३—नामं कम्मं तु^५ दुविहं सुहमसुहं ‘च आहियं’^६ ।
सुहस्स उ^७ बहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥
- १४—गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं ।
उच्चं अट्टविहं होइ एवं नीयं पि आहिय ॥
- १५—दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तथा ।
पंचविहमन्तरायं समासेण वियाहियं ॥

१—हु (ऋ) ।

२—चरित्त मोहणिज्ज दुविह बोच्चासि अणुपुव्वसो (वृ० पा०) ।

३—^० वेयणिज्ज य (वृ०) ।

४, ५—× (उ, ऋ) ।

६—वियाहिय (उ, ऋ) ।

७—य (उ, ऋ) ।

१६-एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसगं खेत्तकाले य भावं चादुत्तरं सुण ॥

पएस-पदं

१७-सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं^१ अन्तो सिद्धाण आहियं ॥
१८-सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥

ठिद्धय-पद

१९-उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
२०-आवरणिज्जाण दुण्ह पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥
२१-उदहीसरिनामाणं सत्तरि कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
२२-तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
२३-उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताण उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥

अणुभाग-पद

२४-सिद्धाणऽणन्तभागो य^२ अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसगं सव्व जीवेसु ऽइच्छियं^३ ॥

१-गण्ठ सत्ताण्ह (बु० पा०) ।

२-X (उ, ऋ) ।

३-स इच्छिय (उ, सु) ; अहिच्छिय (स) ।

निक्खेव-पदं

२५—तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया ।
 एएसि संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

चउतीसईमं अज्जयणं . . .

लेसज्जयणं

उक्खेव-पदं

- १-लेसज्जयणं पवक्खामि आणुपुर्व्वि जहक्कमं ।
छहं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥
- २-नामाइं वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे ॥

लेसा-पदं

- ३-किण्हा नीला य काऊयं तेऊ पम्हा तहेव यत्ते ।
सुक्कलेसा य छट्ठा उ^१ नामाइं तु जहक्कमं ॥

वण्ण-पदं

- ४-जीमूयनिद्धसंकासा गवलरिद्धगसन्निभा ।
खंजणंनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥
- ५-नीलाऽसोगसंकासा चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥
- ६-अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥
- ७-हिगुलुयघाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा^२ ।
सुयतुण्डपईवनिभा^३ तेउलेसा उ वण्णओ ॥
- ८-हरियालभेयसंकासा हंलिद्दाभेयसंनिभा^४ ।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ^५ वण्णओ ॥

१-य (उ, ऋ) ।

२-^० च्छावि^० (वृ० पा०) ।

३-सुयसुल्लगसंकासा, सुयतुण्डालत्तदीवामा (वृ० पा०) ।

४-^० सप्पमा (अ, आ, इ) ।

५-य (ऋ) ।

९—संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा^१ ।
 रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ^२ वण्णओ ॥

रस-पदं

१०—जह कडुयतुम्बगरसो
 निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ^३ किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगडुयस्स य रसो
 तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
 तुवरकविट्ठस्स^४ वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
 पक्कविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ^५ तेऊए नायव्वो ॥

१—खीरचूल^० (वृ०) ; खीरघार^०, खीरपूर^० (वृ० पा०) ।

२, ३—य (ऋ) ।

४—तुंवर^० (अ) : तुवर^० (उ) ; अह^० (वृ० पा०) ।

५—य (ऋ) ।

१४—वरवारुणीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
'महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए^१ परएणं^२ ॥

१५—खज्जरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसकररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ^३ सुक्काए नायव्वो ॥
गन्ध-पदं

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स^४ व जहा अहिमडस्स ।
'एत्तो वि'^५ अणन्तगुणो
लेसाणं अप्सत्थाणं ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाण^६ पिस्समाणाणं^७ ।
'एत्तो वि'^८ अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

१—पम्हाउ (अ) ।

२—एत्तो वि अणत्त गुणो रसो उ पम्हाए नायव्वो (बु० पा०) ।

३—य (ऋ) ।

४—^० मडस्स (उ, ऋ) ।

५—एत्तोउ (अ) , इत्तो वि (उ, ऋ) ।

६—गधाण य (बु० पा०) ।

७—पिस्समाणेण (अ) ।

८—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।

फास-पदं

१८-जहं करगयस्स फासो
गोजिब्भाए व सागपत्तोणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१९-जहं बूरस्स व फासो
त्तवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

परिणाम-पद

२०-तिविहो व नवविहो वा
सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
हुसओ तियालो वा
लेसाणं होइ परिणामो ॥

२१-पंचासवप्पवत्तो^१
तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिप्पवारम्भपरिणओ
खुदो साहसिओ नरो^२ ॥

२२-‘निद्धन्धंसंपरिणामो निस्संसो अजिइन्दिओ’^३ ।
एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे ॥

१-^० प्पमत्तो (वृ) ; ^० प्पवत्तो (वृ० पा०) ।

२-निद्धन्धसंपरिणामो निस्संसो अजिइन्दिओ । (वृ० पा०) ।

३-तिल्वारम्भ परिणओ खुदो साहसिओ नरो ॥ (वृ० पा०) ।

- २३—इस्साअमरिसअत्तवो अविज्जमाया 'अहीरियाय'¹ ।
गेद्धी² पओसे य सढे पमत्ते³ रसलोलुए साय गवैसए य ॥
- २४—आरम्भाओ³ अविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो ।
एयजोगसमाउत्तो नील्लेसं तु परिणमे ॥
- २५—वके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउंचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥
- २६—उप्फालगदुड्ढवाई⁴ य तेणे यावि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो काउलेस तु परिणमे ॥
- २७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले ।
विणीयविणए दन्ते जोगवं उवहाणवं ॥
- २८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए⁵ ।
एयजोगसमाउत्तो तेउलेसं तु परिणमे ॥
- २९—पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए ।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥
- ३०—तहा पयणुवाई⁶ य उवसन्ते जिइन्दिए ।
एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥
- ३१—अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि भायए⁷ ।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥

१—अहीरियगयाय (अ) ।

२—य मले (वृ० पा०) ।

३—आरम्भओ (अ) , आरम्मा (उ, ऋ) ।

४—उप्फालदुड्ढवाई (अ) , उप्फालसग⁰ (उ) ; उप्फालग (ऋ) ।

५—हियासए, अणासए (वृ० पा०) ।

६—⁰ याइ (अ) ।

७—साहए (वृ०, सु) , सायए (वृ० पा०) ।

३२—सरागे वीयरगे वा^१ उवसन्ते^२ जिइन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥

ठाण-पदं

३३—असंखिज्जाणोसप्पिणीण^३
 उस्सप्पिणीण जे समया ।
 संखाईया^४ लोगा
 लेसाण हुन्ति ठाणाइं ॥

ठिइ-पदं

३४—‘मुहुत्तद्धं तु’^५ जहन्ना
 तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा किण्हलेसाए ॥

३५—‘मुहुत्तद्धं तु’^६ जहन्ना
 दस उदही पलियमसंखभागमब्बहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा नीललेसाए ॥

३६—‘मुहुत्तद्धं तु’^७ जहन्ना
 तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्बहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा काउलेसाए ॥

१—य (अ) ।

२—सुद्धजोगे (वृ० पा०) ।

३—असखेज्जाणओ उस्सप्पिणीण (अ) ।

४—असखेया (वृ० पा०) ।

५—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

६—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

७—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

३७-‘मुहुत्तद्धं तु’^१ जहन्ना
दोउदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥

३८-‘मुहुत्तद्धं तु’^२ जहन्ना
दस ‘होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया’^३ ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥

३९-‘मुहुत्तद्धं तु’^४ जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्ताहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुकलेसाए ॥

४०-एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वणिगया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥

४१-दस वाससहस्साइं
काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
‘तिण्णुदही ‘पलिओवम
असंखभागं’^५ च उक्कोसा’^६ ॥

१-मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

२-मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

३-उदही हति मुहुत्तमब्भहिया (उ, ऋ) ।

४-मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

५-पलियमसख माग (सु) ; पलियमसंखेज्ज माग (वृ०) ।

६-उक्कोसा तिन्नुदही पलियमसखेज्जमागहिय (वृ० पा०) ।

४२-तिण्णुदही

पलिय-

मसंखभागा जहन्नेण नीलठिई ।

दस उदही

'पलिओवम

असंखभागं'^१ च उक्कोसा ॥

४३-दस उदही

'पलिय-

मसंखभागं" जहन्निया होइ ।

तेत्तीससागराई

उक्कोसा

होइ

किण्हाए ॥'^२

४४-एसा

नेरइयाणं

लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।

तेण

परं

वोच्छामि

तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५-अन्तोमुहुत्तमद्धं

लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।

तिरियाण

नराणं

वा^३

वज्जित्ता

केवलं

लेसं ॥

४६-मुहुत्तद्धं

तु

जहन्ना

उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।

नवहि

वरिसेहि

ऊणा

नायव्वा

सुक्कलेसाए ॥

१-पलिअ असंखभागा (उ, ऋ) ।

२-पलियमसख भाग च (उ) ।

३-दस उदही पलियमसख भाग च जहन्नेण कण्ह लेसाए ।

तेत्तीस सागराह मुहुत्त अहिया उ उक्कोसा ॥ (अ) ॥

४-तु (वृ०) ; च (उ, ऋ) ।

४७-एसा तिरियनराणं
लेसाण ठिई उ वणिगया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८-दस वाससहस्साइं
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९-जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहििया ।
जहन्नेण नीलाए
'पलियमसंखं तु' उक्कोसा ॥

५०-जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहििया ।
जहन्नेण काऊए
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१-तेण परं वोच्छामि
तेउल्लेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाणं च ॥

५२-पलिओवमं^१

जहन्ना

उक्कोसा साम्भरा उ दुण्हऽहिया^२ ।

पलियमसंखेज्जेणं

होई भागेण^३ तेऊए ॥

५३-दस

वाससहस्साइं

तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।

दुण्णुदही

पलिओवम

असंखभागं च उक्कोसा ॥

५४-जा

तेंऊए

ठिई खलु

उक्कोसा सा उ समयमन्भहिया ।

जहन्नेणं

पम्हाए दसउ

मुहुत्तऽहियाइं च उक्कोसा ॥

५५-जा

पम्हाए

ठिई खलु

उक्कोसा सा उ समयमन्भहिया ।

जहन्नेणं

सुक्काए

तेत्तीसमुहुत्तमन्भहिया ॥

अहम्मलेसा-पद

५६-किण्ह॥

नीला

काऊ

तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ^४ ।

एयाहि

तिहि

वि जीवो

दुग्गइं उववज्जई बहुसो^५ ॥

१-पलिओवमं च (अ) ।

२-दुन्नहिया (उ, ऋ) ।

३-तिभागेण (अ) ।

४-अहम^० (अ, बु० पा०) ।

५-X (उ, ऋ) ।

धम्मलेसा-पदं

५७-तेऊ पम्हा सुक्का . . . १-१?
तिन्नि विण्णयाओ धम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो
सुग्गइं उववज्जई बहुसो^१ ॥

उववात-पदं

५८-लेसाहिं सन्वाहिं
पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
'न वि कस्सवि उववाओ'^२
परे भवे अत्थि^३ जीवस्स ॥

५९-लेसाहिं सन्वाहिं
चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
'न वि कस्सवि उववाओ'^४
परे भवे अत्थि^५ जीवस्स ॥

६०-अन्तमुहुत्तम्मि गए
अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेसाहिं परिणयाहिं
जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥

१-× (उ, ऋ) ।

२-न ह कस्सवि उववत्ति (बु०) ।

न वि^० . . . (बु० पा०) ; न ह^० (उ, ऋ, सु) ।

३-भवइ (बु०, सु) ।

४-न ह कस्सवि उववत्ति (बु०) ।

५-भवइ (बु०, सु) ।

निकर्षेव-पदं

६१—तम्हा एयाण^१ लेसाणं
 अणुभागे वियाणिया ।
 अप्पसत्थाओ वज्जित्ता
 पसत्थाओ अहिद्वेज्जासि^२ ॥
 —त्ति बेमि ॥

१—एयासि (उ, ऋ) ।

२—अहिद्विप्प (उ, ऋ) ।

पणतीसइमं अज्जमयणं

अणगारमग्गई

१—सुणेह 'मे एगग्गमणा'^१ मग्गं बुद्धेहि देसियं ।

जमायरत्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥

२—गिह्वासं परिच्चज्ज पवज्जंअस्सिओ^२ मुणी ।

इमे संगे वियाणिज्जा^३ जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥

३—तहेव हिंसं अलियं चोज्ज अबम्भसेवणं ।

इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जे ॥

४—मणोहरं चित्तहरं मल्लघूवेण वासियं ।

सकवाडं पण्डुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥

५—इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिंसम्मि उवस्सए ।

दुक्कराडं निवारेजं^४ कामसगविवद्धणे ॥

६—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एक्कओ^५ ।

पइरिक्के^६ परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥

७—फासुयम्मि अणावाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।

तत्थ सकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥

८—न सयं गिहाडं कुज्जा णेव अन्नेहिं कारए ।

गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दीसई वहो ॥

१—मे एगग्गमणा (उ, ऋ) ।

२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ) ।

३—वियाणेत्ता (अ) ।

४—उ धारेउ (वृ०) ; निवारेउ (वृ० पा०) ।

५—एगओ (उ, ऋ) ; एगया (वृ०) , एक्कतो (वृ० पा०) ।

६—परक्के (वृ०) ; पइरिक्के (वृ० पा०) ।

- ९-तसाणं थावराणं च सुहुमाणं बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥
- १०-तहेव भत्तपाणेसु पयण^१ पयावणेसु य ।
पाणभूयदयद्वाए न पये न पयावए ॥
- ११-जलधन्ननिस्सिया जीवा^२ पुढवीकट्टनिस्सिया^३ ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
- १२-विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥
- १३-हिरणं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विणए कयविक्कए ॥
- १४-किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
- १५-भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती^४ सुहावहा ॥
- १६-समुयाणं उंछमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं 'चरे मुणी'^५ ॥
- १७-अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिण्ण ।
न रसट्ठाए भुजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥
- १८-अच्चणं रयणं जेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥

१-पयणेसु (ऋ) ; पयणे य (अ) ।

२-पाणा (अ) ।

३-^०काय^० (उ) ।

४-भिक्खू वित्ती (उ, ऋ) ।

५-गवेसए (बृ० पा०) ।

- १९—सुक्कभाणं भियाएज्जा अणियाणे अकिचणे ।
 वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥
- २०—निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मो उवट्ठिए ।
 जहिऊण'माणुसं बोन्दि पट्टु दुक्खे विमुच्चई ॥
- २१—निम्ममो निरहंकारो वीयरगो अणासवो' ।
 संपत्तो कैवलं नाणं सासयं परिणिव्वुए ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—चइऊण (उ, ऋ) ।

२—निरासवे (चु०) ।

४२-परिमण्डलसंठाणे भइए से उ वण्णओ ।

गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥

४३-संठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ ।

गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥

४४-संठाणओ भवे तंसे भइए से उ वण्णओ ।

गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥

४५-संठाणओ य चउरंसे भइए से उ वण्णओ ।

गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥

४६-जे आययसंठाणे भइए से उ वण्णओ ।

गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥

४७-एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया ।

इत्तो जीवविभत्ति वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

जीव-पद

४८-संसारत्था य सिद्धा य दुविहाजीवा वियाहिया^१ ।

'सिद्धाणेगविहावुत्ता'^२ तं मे कित्तयओ सुण ॥

सिद्धजीव-पद

४९-इत्थी पुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा ।

सल्लिगे अन्नल्लिगे य गिहिल्लिगे तहेव य ॥

५०-उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य ।

उड्ढं अहे य तिरियं च समुद्दम्मि जलम्मि य ॥

५१-दस 'चेव नपुंसेसु'^३ वीसं इत्थियासु य ।

पुरिसेसु य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्जमई ॥

१-भवति ते (वृ० पा०) ।

२-सत्त्वाणैगविहा सिद्धा (वृ० पा०) ।

३-य नपुंसएसुं (वृ०) ।

- ५२—चत्तारि य गिहिल्लिगे अन्नल्लिगे दसेव य ।
सल्लिगेण य अट्टसयं समएणेगेण सिज्झई ॥
- ५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्ताए जवमज्झऽट्ठुत्तरं^१ सयं ॥
- ५४—‘चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे
तओ जले वीसमहे तहेव^२ ।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए
समएणेगेण उ ‘सिज्झई उ’^३ ॥’^४
- ५५—कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ? ।
कहिं बोन्दि चइत्ताणं ? कत्थ गन्तूण सिज्झई ? ॥
- ५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥
- ५७—वारसहिं जोयणेहिं सब्वट्टस्सुवरिं भवे ।
ईसीपब्भारनामा उ^५ पुढवी छत्तसंठिया ॥
- ५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया ।
तावइयं चैव वित्थिण्णा ‘तिगुणो तस्सेव परिरओ’^६ ॥
- ५९—अट्टजोयणवाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी ॥

१—मज्झे अट्ठुत्तर (अ) ।

२—तहेव य (अ) ।

३—सिज्झइ धुव (उ, ऋ) ।

४—चउरो उड्ढल्लोगमि वीसपहुत्त अहे भवे ।

सय अट्ठुत्तर तिरिए एग समएण सिज्झइ ॥

दुवे समुद्दे सिज्झति सेस जलेसु ततो जणा ।

एसा ह सिज्झणा मणिया पुव्वमाव पडुच्च उ ॥ (बु० पा०) ।

५—x (उ, ऋ) ।

६—तिउण साहिय पडिरय (बु० पा०) ।

६०—अज्जुणसुवण्णगमई

सा पुढवी निम्मला सहावेणं ।

उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य

भणिया जिणवरेहि ॥

६१—संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा ।

सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥

६२—जोयणस्स उ जो तस्स^१ कोसो उवरिमो भवे ।

‘तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे’^२ ॥

६३—तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया^३ ।

भवप्पवंच उम्मुक्का सिद्धि वरगइं गया ॥

६४—उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ^४ ।

तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥

६५—एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य ।

पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥

६६—अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया ।

अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥

६७—लोएगदेसे^५ ते सब्बे नाणदंसणसन्निया ।

संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धि वरगइं गया ॥

ससारत्थजीव-पदं

६८—संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया ।

तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥

१—तत्थ (बु०) ; तस्स (बु० पा०) ।

२—कोसस्सवि य जो तत्थ छब्भागो उवरिमो भवे (बु० पा०) ।

३—य सट्ठिया (अ) ।

४—य (ऋ) ।

५—लोगग^० (बु० पा०) ।

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा ति विहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

पुढवि-पदं

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^१ दुहा पुणो ॥

७१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य^२
हालिदा सुक्किला तहा ।
पण्डुपणगमट्टिया
खरा छत्तीसईविहा ॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे ।
'अयत्तम्बतउय'^३-सीसग-
रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥

७४—हरियाले हिंगुलुए
मणोसिला सासगंजणपवाले ।
अब्भपडलऽब्भवालुय
बायरकाए मणिविहाणा ॥

१—एगमेगे (वृ० पा०) ।

२—X (अ) ।

३—अयव तओ य (अ) ; अय तउय तम्ब (उ, ऋ) ।

७५—गोमेज्जए य रूयगे
अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।

मरगयमसारगल्ले
भुयमोयगइन्दनीले य ॥

७६—चन्दणेरूयहंसगम्भ
पुलए सोगन्धिए य वोद्धव्वे ।

चन्दप्पह्वेरुलिए
जलकन्ते सूरकन्ते य ॥

७७—एए खरपुढवोए भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥

७८—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

७९—संतइं पप्पणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

८०—बावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥

८१—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अमुचओ ॥

८२—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तरं ॥

८३—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—^० तेणाई (अ) ।

२—जहन्नग (अ) ।

आउ-पदं

- ८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरां तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ८५—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पक्कित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥
- ८६—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥
- ८७—सन्तइं पप्पणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- ८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥
- ८९—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायट्ठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥
- ९१—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वणस्सई-पद

- ९२—दुविहां वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^३ दुहा पुणो ॥
- ९३—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—^१ तैणाई (अ) ।

२—जहन्नग (अ) ।

३—एवमेव (अ) ।

९४-‘पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया’^१ ।

रुक्खा गुच्छाय गुम्माय लया वल्ली तणा तथा ॥

९५-लयावलया^२ पव्वगा^३ कुहुणा

जलरुहा ओसहीतिणा^४ ।

हरियकाया य बोद्धव्वा

पत्तेया इति आहिया ॥

९६-साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया ।

आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥

९७-हिरिली सिरिली सिस्सिरिली

जावई केदकन्दली^५ ।

पलंदूलसणकन्दे य

कन्दली य कुडुंबए^६ ॥

९८-लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य ।

कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए^७ तथा ॥

९९-अस्सकणीय बोद्धव्वा सीहकणी तहेव य ।

मुसुण्डी य हलिदा य ऽणेगहा एवमायओ ॥

१००-एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥

१-वारसविह मेएणं पत्तेया उ वियाहिय (बु० पा०) ।

२-वलया य (अ) ।

३-पव्वया (बु०) ; पव्वगा (बु० पा०) ।

४-^० तथा (अ, आ, इ, उ, सु) ।

५-केलि ^० (उ) ।

६-कुडुव्वए (उ, ऋ) ; कुहव्वए (स) ।

७-पुसूरणे (उ) ।

- १०१—संतइं पप्पणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १०२—दस चैव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
 वणप्फईण^२ आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं ॥
- १०३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई वणगाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १०४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥
- १०५—एएसि वण्णओ चैव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥
- १०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥
- १०७—तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।
 इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- तेउ-पद
- १०८—दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- १०९—बायरा जे उ पज्जत्ता नेगहा ते वियाहिया ।
 इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जाला तहेव य ॥
- ११०—उक्का विज्जू य बोद्धव्वा नेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥
- १११—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^३ य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउच्चिहं ॥

१—० तेणाइ (अ) ।

२—वणस्सईण (उ, ऋ, वृ०) ; वणप्फईण (वृ० पा०) ।

३—एगदेसे (अ) ।

- ११२—संतइं पप्पण्णाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- ११३—तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउट्ठिई तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- ११४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायट्ठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ११५—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं ॥
- ११६—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वाउ-पदं

- ११७—दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ११८—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
 उक्कलियामण्डलिया- घणगुजा सुद्धवाया य ॥
- ११९—संवट्ठगवाते य ऽण्णगविहा^१ एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥
- १२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^२ य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥
- १२१—संतइं पप्पण्णाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १२२—तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
 आउट्ठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—ऽण्णगहा (उ, ऋ) ।

२—एगदेसे (अ) ।

१२३-असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायद्विई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१२४-अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥

१२५-एएसि वण्णओ चैव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१२६-ओराला तसा जे उ चउहा^१ ते पकित्तिया ।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चैव ॥

वेइन्दिय-पद

१२७-वेइन्दिया उ^२ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं मेए सुणेह मे ॥

१२८-किमिणो सोमगला चैव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया^३ सखा संखणगा^४ तथा ॥

१२९-पल्लीयाणुल्लया^५ चैव तहेव य वराडगा^६ ।
जलूगा जालगा चैव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०-इइ वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥^६

१३१-सतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१-चउव्विहा (ऋ) ।

२-य (अ, ऋ) ।

३-सप्पीया (आ, इ, ऋ) ।

४-ससलगा (अ) ; सखाणगा (उ) ।

५-गल्लोया^० (आ) , अल्लोया^० (ऋ) ।

६-इस श्लोक के वाद इतना और है :-

एत्तो काल विमाग तु तेसिं वुच्च चउव्विह ॥ (उ)

- १३२—वासाइं बारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १३३—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
 बेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १३४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 बेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं^२ वियाहियं ॥
- १३५—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

तेइन्दिय-पदं

- १३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पक्कित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- १३७—कुन्थुपिवील्लिउड्डंसा उक्कलुद्देहिया तहा ।
 तणहारकट्टहारा मालुगा पत्तहारगा ॥
- १३८—कप्पासऽट्ठिमिजा य त्तिट्ठुगा तउसमिजगा ।
 सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥
- १३९—इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ ।
 लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥
- १४०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १४१—एगूणपण्णऽहोरत्ता^३ उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—जहन्निया (अ) ।

२—० णं (अ) ।

३—एगूणवण्ण^० (उ, ऋ) ।

- १४२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १४३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥
- १४४—एएसि वण्णओ चैव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥
चउरिन्दिय-पदं
- १४५—चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पजत्तमपजत्ता तेसि भेए सुणेह मे ॥
- १४६—अन्धिया पोत्तिया चैव मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य ठिंकुणे कुंकुणे तहा ॥
- १४७—कुक्कुडे सिगिरीडी य नन्दावत्ते य विंछिए ।
डोले भिंगारी^२ य विरली अच्छिवेहए ॥
- १४८—अच्छिले माहए^३ अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।
ओहिंजलिया जलकारी य
नीया तन्तवगाविय^४ ॥
- १४९—इइ चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगस्स एग देसम्मि ते सन्वे परिकित्तिया ॥^५

१—जहन्निया (अ) ।

२—सिगिरीडी (उ, ऋ, स) ।

३—साहिए (अ) ।

४—तवगाइया (उ, ऋ) ।

५—इस श्लोक के पश्चात् इतना और है :—

एत्तो काल विभाग तु तेसि वुच्छ चउव्विह ॥ (उ) ।

- १५०—संतइं पप्पण्णाय्या अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १५१—‘छच्चेव य’^१ मासा उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउरिन्दियआउठिई^२ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १५२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^३ ।
 चउरिन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १५३—अणत्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^४ ।
 ‘विजडंमि सए काए’^५ अन्तरेयं वियाहियं ॥
- १५४—एएसि वण्णओ चैव गन्धओ रसफासओ ।
 ‘संठाणादेसओ वावि’^६ विहाणाइं सहस्ससो ॥

पचिन्दिय-पदं

- १५५—पंचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया ।
 नेरइयतिरिक्खा य मणूया देवा य आहिया ॥

नेरइय-पदं

- १५६—नेरइया सत्तविंहा पुढवीसु सत्तसू भवे ।
 रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया ॥
- १५७—पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा ।
 इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥
- १५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥

१—छच्चेविउ (अ) ।

२—चउरिन्दिया य आउठिई (अ) ।

३—जहन्निया (अ) ।

४—जहन्निया (अ) ।

५—चउरिन्दियजीवाण (उ) ।

६—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

- १५९—संतइं पप्पऽणार्इया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च सार्इया सपज्जवसिया वि य ॥
- १६०—सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- १६१—तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं ॥
- १६२—सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव उ सागरोवमा ॥
- १६३—दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा ॥
- १६४—सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव उ सागरोवमा ॥
- १६५—बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
- १६६—तेत्तीस सागरा^१ ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥
- १६७—जा चेव उ आउठिई नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥
- १६८—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए नेरइयाणं तु अन्तरं ॥
- १६९—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'^२ विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—सागराह (ऋ) ।

२—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

तिरिक्खजोणिय-पदं

१७०-पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।

सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ^१ गन्भवक्कन्तिया तहा ॥

१७१-दुविहावि ते भवे तिविहा

जलयरा थलयरा तहा ।

खहयरा य बोद्धवा

तेसि भेए सुणेह मे ॥

१७२-मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा ।

सुंसुमारा य बोद्धवा पंचहा^२ जलयराहिया ॥

१७३-लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।

एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥

१७४-संतइ पप्पऽणार्इया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च सार्इया सपज्जवसिया वि य ॥

१७५-एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया ।

आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७६-पुव्वकोडीपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया ।

कायट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७७-अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजडंमि सए काए जलयराणं तु अन्तरं ॥

१७८-‘एएसि वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥’^३

१—^० तिरिक्खा य (उ) ।

२—पंचविहा (अ) ।

३—X (अ, ऋ) ।

- १७९-चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयो सुण ॥
- १८०-एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाइगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥
- १८१-भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥
- १८२-लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥
- १८३-संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १८४-पलिओवमाउ^१ तिण्णिउ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्टिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १८५-पलिओवमाउ तिण्णिउ^२ उक्कोसेण तु साहिया ।
पुव्वकोडीमुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १८६-कायट्टिई थलयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- १८७-एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥
- १८८-चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥

१-०इ (उ) ।

२-य (अ) ।

- १८९—लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
 इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ।^१
- १९०—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १९१—पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
 आजड्ढिई खहयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १९२—असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ ।
 पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १९३—कायठिई खहयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
 कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- १९४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 'संठाणावेसओ वावि' विहाणाइं सहस्ससो ॥

मणुय-पदं

- १९५—मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण ।
 संमुच्छिमा य मणुया गढभवक्कन्तिया तहा ॥

१—श्लोक क्रमाक १५७ से १५९ के स्थान पर निम्न श्लोक हैं :—

विजड्ढनि सए काए थलयराणं तु अंतरं ।
 चम्मेय लोम पक्खीय तइया समुग पक्खिया ॥
 वित्तपक्खी उ (य) वोघव्वा पक्खिगो उ चउव्विहा ।
 लोएण देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (अ, ऋ) ।
 विजड्ढनि सए काए थलयराणं तु अंतरं ।
 एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ॥
 संठाण देसओ वावि विहाणाइ सहस्सओ ।
 चम्मे उ लोम पक्खीय तइया समुग पक्खिया ॥
 विययपक्खी य वोघव्वा पक्खिगो य चउव्विहा ।
 लोएण देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (उ) ।

२—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

- १९६—गन्भवकन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया ।
 अकम्मकम्मभूमा य अन्तरद्दीवया तहा ॥
- १९७—‘पन्नरस तीसइ विहा’^१ भेया अट्टवीसइ ।
 संखा उ कमसो तेसि इइ एसा वियाहिया ॥
- १९८—संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहिओ ।
 लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि^२ वियाहिया ॥
- १९९—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २००—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउट्ठिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- २०१—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया^३ ।
 पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^४ ॥
- २०२—कायट्ठिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
 अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- २०३—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 ‘संठाणादेसओ वावि’^५ विहाणाइं सहस्ससो ॥

देव-पद

- २०४—देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्जवाणमन्तर- जोइसवेमाणिया तहा ॥
- २०५—दसहा उ भवणवासी अट्टहा वणचारिणो ।
 पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥

१—तीस पन्नरस विहा (वृ० पा०) ।

२—य (अ) ; × (उ) ।

३—तु साहिया (ऋ) ।

४—जहन्नय (अ) ।

५—संठाण भेयओ या वि (अ) ।

२०६-असुरा^१ नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।

दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७-पिसायभूय जक्खा य

रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।

महोरगा य गन्धव्वा

अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥

२०८-चन्दा सुरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।

दिसाविचारिणो^२ चेव पंचहा^३ जोइसालया ॥

२०९-वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।

कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०-कप्पोवगा बारसहा सोहम्मोसाणगा तहा ।

सणकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥

२११-महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।

आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२-कप्पाईया उ^३ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।

गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं^४ ॥

२१३-हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।

हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥

२१४-मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।

उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१-ठिया^० (आ, उ, ऋ) ।

२-पचविहा (अ) ।

३-य (ऋ) ।

४-तहा (ऋ) ।

- २१५-उवरिमाउवरिमा चैव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य^१ जयन्ता अपराजिया ॥
- २१६-सव्वट्टसिद्धिगा^२ चैव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा^३ णेगहा एवमायओ ॥
- २१७-लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥
- २१८-संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २१९-साहियं सागरं एक्क उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- २२०-पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- २२१-पलिओवम एगं तु वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमऽट्टभागो जोइसेसु जहन्निया ॥
- २२२-दो चैव सागराई उक्कोसेण वियाहिया^४ ।
सोहम्मंमि जहन्नेणं एग च पलिओवमं ॥
- २२३-सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया^५ ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥
- २२४-सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१-X (अ) ।

२-° सिद्धिगा (अ) ।

३-एए (उ, ऋ) ।

४-ठिई भवे (आ, स) ।

५-ठिई भवे (आ, स) ।

- २२५—साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे ।
 माहिन्दम्मि जहन्नेणं साहिया दुन्ति सागरा ॥
- २२६—दस चैव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 वम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥
- २२७—चउद्दस^१ सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 लन्तगम्मि जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥
- २२८—सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 महासुक्के जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमा ॥
- २२९—अट्टारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सहस्सारे जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
- २३०—सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आणयम्मि जहन्नेणं अट्टारस सागरोवमा ॥
- २३१—वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयम्मि जहन्नेणं सागरा अउणवीसई ॥
- २३२—सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणम्मि जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥
- २३३—वावीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयम्मि जहन्नेणं सागरा इक्कवीसई ॥
- २३४—तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढमम्मि जहन्नेणं वावीसं सागरोवमा ॥
- २३५—चउवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 विइयम्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥
- २३६—पणवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तइयम्मि जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥

- २३७—छवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥
- २३८—सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छवीसई ॥
- २३९—सागरा अट्टवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥
- २४०—सागरा अउणत्तीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्टवीसई ॥
- २४१—तीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणत्तीसई ॥
- २४२—सागरा इक्कीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥
- २४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुं पि विजयाईसुं जहन्नेणेक्कीसई^१ ॥
- २४४—अजहन्नमणुक्कोसा^२ तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥
- २४५—जा चेव उ^३ आउठिई देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया^४ भवे ॥
- २४६—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥^५

१—जहन्ना इक्कीसई (उ, ऋ) ।

२—० मणुक्कोस (अ, ऋ) ।

३—य (अ) ।

४—जहन्नमु^० (ऋ, वृ०) ।

५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं ।—

अणत्तकालमुक्कोस वासपुहत्ता जहन्नयं ।

आणयादीण-कप्पाण गेविज्जाण तु अत्तर ॥

सखिज्जसागरक्कोस वासपुहत्ता जहन्नयं ।

अणुत्तराण देवाण अत्तर तु वियाहिय ॥ (उ) ।

२४७—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

‘संठाणादेसओवावि’^१ विहाणाइं सहस्सओ ॥

२४८—संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया ।

रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥

२४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्विहण य ।

सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी ॥^२

सलेहणा-पदं

२५०—तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया ।

इमेण कमजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी ॥

२५१—बारसेव उ वासाइं

संलेहकोसिया^३ भवे ।

संवच्छरं मज्झिमिया^४

छम्मासा^५ य जहन्निया^६ ॥

२५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जहणं^७ करे ।

बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥

२५३—एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे ।

तओ संवच्छरद्वं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥

१—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

२—इलोक क्रमाक २४८, २४९ के स्थान पर चूर्णि मे निम्न दो श्लोक है :—

जीविपजीवे एते णत्था सद्विहण य ।

सव्वन्नुसमतमी जएज्जा सजमे विदू ॥

पसत्थसज्झाणोवगए काल किन्ना ण सजए ।

सिद्धे वा सासए मर्वति देवे वावि महड्ढिए ॥

३—सलेहकोसतो (वृ० पा०) ।

४—मज्झिमलो (वृ० पा०) ; मज्झिमिया (क) ।

५—छम्मासे (अ) ।

६—जहन्नतो (वृ० पा०) ।

७—वित्ति ° (वृ०) ; विगई ° (वृ० पा०) ।

२५४—‘तओ संवच्छरद्धं तु विगिट्ठं तु तवं चरे ।

परिमियं चेव आयामं तंमि संवच्छरे करे ॥’^१

२५५—कोडीसहियमायामं कट्ठु संवच्छरे मुणी ।

मासद्धमासिएण तु आहारेण^२ तवं चरे ॥

२५६—कन्दप्पमाभिओगं^३

किब्बिसियं मोहमासुरत्त च ।

एयाओ

दुग्गईओ

मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥

भावणा-पद

२५७—मिच्छादसणरत्ता सनियाणा हु हिंसगा ।

इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लाहो बोही ॥

२५८—सम्मदंसणरत्ता

अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा

सुल्लाहो तेसिं भवे बोही ॥

२५९—मिच्छादंसणरत्ता

सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा

तेसिं पुण दुल्लाहो बोही ॥

१—परिमियं चेव आयामं गुणुक्कस्स मुणी चरे ।

ततो सवच्छरद्धं पुण विगिट्ठं तु तव चरे ॥ (बृ० पा०) ।

२—खसणेण (बृ० पा०) ।

३—कदप्पमाभिओगं च (अ) ।

- २६०—जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।
अमला असंकलिद्धा
ते होन्ति परित्तसंसारी ॥
- २६१—बालमरणाणि बहुसो
अकाममरणाणि चेव य वहूणि^१ ।
मरिहन्ति^२ ते वराया
जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥
- २६२—बहुआगमविन्नाणा
समाहिउप्पायगा^३ य गुणगाही ।
एएण कारणेणं
अरिहा आलोयणं सोउं ॥
- २६३—कन्दप्पकोक्कुड्याइ^४ तह
सीलसहावहासविगहाहि^५ ।
विम्हावेन्तो य परं
कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥
- २६४—मन्ताजोगं^६ काउं
भूईकम्मं च जे पजंजन्ति ।
सायरसइडिढहेउं
अभिओगं भावणं कुणइ ॥

१—वहूयाणि (इ, उ, ऋ, स) ।

२—मरहन्ति (उ) ; मरिहन्ति (ऋ) ।

३—^० सुपायगा (अ) ।

४—^० कोक्कुड्याइ (वृ०, सु०) ।

५—^० हसण^० (वृ०, सु०) ।

६—मत्तं^० (अ) ।

- २६५—नाणस्स केवलीणं
धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई
किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥
- २६६—अणुबद्धरोसपसरो
तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवि ।
एएहि कारणेहि
आसुरियं भावणं कुणइ ॥
- २६७—सत्थग्गहणं विसभक्खणं च
जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा
जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥
निकखेव-पदं
२६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए,
छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए^१ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

परिशिष्ट-१

दसवेआलिय शब्दसूची

2000

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरों को एक साथ लिया है । जैसे—लोभ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (ङैश) के बाद हैं ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

अ	अ	अ	अ	अ	अ
अ	१६(४)	१	अउल	७	४३
अइउकस	५(२)	४२		६(३)	१५
अइकमित्तु	५(२)	११	अओमय	६(३)	६, ७
अइकम्म	५(२)	२५	अकुस	२	१०
अइहूर	५(१)	२३		१ चू०	सू० १
अइभूमि	५(१)	२४	अंग	८	५७
अइयार	५(१)	८६		१ चू०	१५
अइलाम	६(३)	५	अंगुलिया	४	सू० १८
अइवत्त *			अजण	३	६
-अइवत्ताए	६(२)	१६		५(१)	३३
अइवाय *			अंजली	६(२)	१७
-अइवाएज्जा	४	सू० ११	अंड	८	१५
-अइवायावेज्जा	४	सू० ११	अंडय	४	सू० ६
अइवायत्त *			अतरा	८	४६
-अइवायते	४	सू० ११	अंतलिक्ख	७	५३
अइहील *			अतिय	८	४५
-अइहीलेज्जा	५(१)	६६		६(१)	१२
अईअ	७	८ से १०	अंधगवण्हि	२	८

१—शब्द के सामने दी हुई पहली सख्या अध्ययन और अध्ययन सख्या के बाद कोष्ठगत सख्या उद्देश्य का द्योतन करती है । बाद की सख्या श्लोक की द्योतक है । 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है । 'चू०' चूलिका का संकेत है ।

अंब	७	३३
अबिल	५(१)	६७
अकक्रस	७	३
अकप्प	५(१)	४४
अकप्पिय	५(१)	२७, ४१, ४३, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४
	५(२)	१५, १७
	६	४७
अकाम	५(१)	८०
अकाल	५(२)	४, ५
अकिचण	६	६८
	८	६३
अकित्ति	१ चू०	१३
अकेज्ज	७	४५
अकोउहल्ल	६(३)	१०
	१०	१३
अकोविय	६(२)	२२
अक्कम*		
-अक्कमे	५(१)	७
अक्कुट्ठ	१०	१३
अक्कुहअ	६(३)	१०
अक्कोस	१०	११
अक्खारं	८	२०
अक्खाय	४	सू० १ से ८
	६(४)	सू० १

अक्खोड*

-अक्खोडेज्जा	४	सू० १६
अक्खोडत	४	सू० १६
अखंडफुडिय	६	६
अगंघण	२	६
अगणि	४	सू० २० -
	८	२, ८
	१०	२
अगारि	६	५७
अगाह	७	३६
अगिद्ध	१०	१६
अगुण	५(२)	४४
	६(३)	११
अगुणप्पेहि	५(२)	४१
अगुत्ति	६	५८
अग्ग	५(१)	२
	६(१)	८, ६
अग्गवीय	४	सू० ८
अग्गला	५(२)	६
	७	२७
अग्गि	६(३)	१
	१ चू०	१२
अचक्खुविसअ	५(१)	२०
अचक्खुस	६	२७, ३०
		४१, ४४
अचवल	८	२६

अचित्त	५(१)	८१, ८६
	६	१३
अचित्तमत	४	सू० १३, १५
अचित्त (दे०)	५(१)	१७
	७	४३
अचवविल	५(१)	७८, ७९
अच्चि	४	सू० २०
	८	८
अच्चिमालि	६(१)	१४
अच्छणजोय	८	३
अच्छंद	२	२
अच्छि	८	२०
अजय	४	१ से ६
अजाइया	५(१)	१८
	६	१३
अजाण	६	६
	८	३१
अजीव	४	१२ से १४
	५(१)	७७
अज्ज (आर्य)	६	५३
अज्ज (अद्य)	१ चू०	६
अज्जपय	१०	२०
अज्जय	७	१८
अज्जव	६	६७
अज्जवभाव	८	३८
अज्जिया	७	१५

अज्जप्परय	१०	१५
अज्जमयण	४	सू० १ से ३
अज्जाइयव्व	६(४)	सू० ५
अज्जोयर	५(१)	५५
अट्ट (अर्थ)	३	४, १३
	४	सू० १७
	५(१)	३०, ४०, ४७,
		४६, ५१, ५३,
		५६, ६५, ६७,
		७८, ८४, ८७
	६	११, १६, ३४
		५२, ५५, ६३
	७	४, ७, ८, १३,
		४०, ४६
	८	४२, ५१
	६(२)	१३
	६(३)	२, ४
	६(४)	सू० ६, ७
	१०	८
अट्ठ (अष्ट)	६	७
	८	१३, १४
अट्ठम	८	१५
अट्ठया	६(४)	सू० ६
अट्ठारस	१ चू०	सू० १
अट्ठारसम	१ चू०	सू० १
अट्ठावय	४	३

अट्ठ्य	५(१)	८४
अट्ठ्यप्प	२	६
अणंतनाण	६(१)	११
अणंतहियकामय	६(२)	१६
अणगारिया	४	१८, १९
अणज्ज	१ चू०	१
अणमिज्झिय	१ चू०	१४
अणलस	८	४२
अणवज्ज	७	३, ४६
	१ चू० सू० १	
अणाइण्ण(न्न)	३	१, १०
	७	२
अणाउल	५(१)	१३
अणागय	७	८, ६
	२ चू०	१३
अणावाह	६(१)	१०
अणायण	५(१)	१०
अणायरिय	६	५३
अणायार	६	५६
	८	३२
अणासा	६(३)	६
अणिण्यवास	२ चू०	५
अणिग्गहीय	८	३६
अणित्र	८	५८
	१ चू० सू० १	
अणिमिस	५(१)	७३

अणिस्सिय	७	५७
अणिह	१०	१३
अणु	४ सू०	१३, १५
अणुगय	६	६८
अणुगय	८	२८
अणुगह	५(१)	६४
अणुचिट्ठ *		
-अणुचिट्ठई	५(२)	३०
अणुजाण *		
-अणुजाणति	६	१४
अणुत्तर	४	१६, २०
	८	४२
	६(१)	१६, १७
अणुदिसा	६	३३
अणुन्नय	५(१)	१३
अणुन्नविय	५(१)	१६
अणुन्नवेत्तु	५(१)	८३
अणुपाल *		
-अणुपालए	६	४६
-अणुपालेज्जा	८	६०
अणुपासमाण	२ चू०	१३
अणुप्पत्त	३	१५
अणुफास	६	१८
अणुबंधि	६(३)	७
अणुमाय	५(२)	४६
	८	२४
अणुमोयणी	७	५४

अणुविग	५(१)	२, ६०
	८	४८
अणुवीड	७	४४, ५५
अणुसास *		
-अणुसासयंति	६(१)	१३
अणुसासण	६(४)	२
अणुसासिज्जंत	६(४)	सू० ४
अणुसोय	२ चू०	२, ३
अणुस्सिन्न	५(२)	२१
अणेग	४	सू० ४ से ६
	५(२)	४३
	६(१)	१७
अणोहाडय	१ चू०	सू० १
अतिंतिण	८	२६
	६(४)	५
अत्त	४	सू० १७
	८	३०
	१०	५, १८
अत्तकम्म	५(२)	३६
अत्तगवेसि	८	५६
अत्तट्ठागुरुअ	५(२)	३२
अत्तव	८	४८
अत्तसपग्गहिय	६(४)	सू० ४
अत्थ (अर्थ)	१०	१५
	२ चू०	११
अत्थ (अत्र)	३	१४

अत्थंगय	८	२८
अत्थविणिच्छय	८	४३
अत्थसंजुत्त	५(२)	४३
अत्थिय	५(१)	७३
अदिट्ठवम्म	६(२)	२३
अदिन्न	४	सू० १३
अदिन्नादाण	४	सू० १३
अदीण	५(२)	२६
अदीणवित्ति	६(३)	१०
अदु	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
अदुट्ठ	७	५५
अदुव	५	१५
	६	२, ६, २३
	८	१२
अदुवा	५(१)	७५
	६	६३
	८	१७
अदेत्त	५(२)	२८
अधुव	८	३४
अनियाण	१०	१३
अनिल	६	३६
	१०	३
अनिब्बाण	५(२)	३८
अनिब्बुड	३	७
	५(२)	१८

अन्न (अन्यत्) ४	सू० १० से १६, सू० १८ से २३	अपावभाव	८	६३
५(१)	६, ७१, ८०, ८४, ९७	अपासंत	६	२३
५(२)	१४, १६, १९, ३६	अपि	२	४
६	११, १४	अपिसुण	९(३)	१०
७	४, १३	अपुच्छिय	८	४६
८	५१	अपुट्ट	८	२२
१०	१८	अपुणागम	१०	२१
अन्न (दे०) ७	१९	अपूझ	१ चू०	४
अन्नत्थ	४ सू० ४ से ८	अप्य (आत्मन्) ४	सू० १० से १६, सू० १८ से २३	४
६	५			९
९(४) सू० ६, ७		५(१)	१८, ८०	
अन्नयर	४ सू० २३	५(२)	५, ३६	
६	७, १८, ३२	६	१३, १४, २१, ६७	
अन्नयराग	६ ५९	८	७, ९, ३१, ३४, ३६, ५९, ६१	
अन्ना (दे०) ७	१६			
अन्नाणि	४ १०	९(१)	१५	
अन्नायउच्छ	९(३) ४	९(२)	३, ५, ७, १०	
१०	१६	९(३)	५	
२ चू०	५	९(४)	१, ६	
अन्नेसमाण	५(२) ३०	१०	१५	
अपडिलेहाए	६ ५५	१ चू०	१७	
अपरिसाडय	५(१) ९६	२ चू०	२, १३, १६	

अप्प (अल्प)	४	सू० १३, १५
	५(१)	७४, ६६
	६	१३
	२ चू०	५
अप्पग	६(३)	११
	२ चू०	१२
अप्पगघ	७	४६
अप्पण	६	११
	६(२)	१३
अप्पत्तेय	१ चू०	१२
अप्पत्तिय (दे०)	५(२)	१२
	८	४७
अप्पमासि	८	२६
अप्पभूय	४	६
अप्पमत्त	८	१६
	६(१)	१७
अप्पय	१	२
	१०	१४
अप्परय	६(४)	७
अप्पसन्त	६(१)	५, ७, १०
अप्पसुय	६(१)	२
अप्पहिट्ट	५(१)	१३
अप्पिच्छ	८	२५
अप्पिच्छया	६(३)	५
अप्पियकारिणी	६(३)	६
अफासुय	८	२३

अबंभचरिय	६	१५
अबोहि	४	२०, २१
	६(१)	५, १०
अबोहिय	६	५६
अब्भ	८	६३
	६(१)	१५
अब्भितर	४	१७, १८
अभिकंख *		
-अभिकंखई	१०	१२
-अभिकंखे	१०	१७
अभिकखमाण	६(३)	२
अभिकखि	६(१)	१०
अभिककत	४	सू० ६
अभिकखण	५(१)	१०
	२ चू०	७
अभिगच्छ *		
-अभिगच्छई	४	२१, २२
	६(२)	२
-अभिगच्छेज्जा	५(१)	१४
-अभिगच्छइ	६(२)	२१
अभिगम		
(अभिगम) ६(३)		१५
अभिगम		
(अभिगम्य) ६(४)		६
अभिगिज्झ	७	१७, २०
अभिघाय	६(३)	८

અભિતોસ *		
-અભિતોસેજ્ઞા ૬(૩)	૫	
અભિધાર *		
-અભિધારણ ૫(૨)	૨૫	
અભિનિવેસ *		
-અભિનિવેસે ૮	૨૬, ૫૮	
અભિભૂય		
(અભિભૂત) ૬	૫૬	
અભિભૂય		
(અભિભૂય) ૧૦	૧૪	
અભિમુહ ૬(૧)	૧૦	
અભિરામ *		
-અભિરામયતિ ૬(૪)	૧	
અભિવાયણ ૨ ચૂ૦	૬	
અભિસિત્ત ૬(૧)	૧૧	
અભિહૃદ ૩	૨	
અમૂઢભાવ ૬(૧)	૧	
અમોજ્ઞ ૬	૪૬	
અમચ્છરિ ૨ ચૂ૦	૭	
અમજ્ઞમંસાસિ ૨ ચૂ૦	૭	
અમમ ૬	૬૮	
૮	૬૩	
અમર ૧ ચૂ૦	૧૧	
અમાદ ૬(૩)	૧૦	
અમાણિમ ૧ ચૂ૦	૫	
અમુગ ૭	૬	

અમુચ્છિય ૫(૧)	૧	
૫(૨)	૨૬	
૧૦	૧૬	
અમુય ૭	૫૦	
અમૂઢ ૧૦	૭	
અમોહ ૮	૩૩	
અમોહદંસિ ૬	૬૭	
અમ્મા ૭	૧૫	
અમ્હ ૧	૪	
અયંપિર ૫(૧)	૨૩	
૮	૨૩, ૪૮	
અયસ ૫(૨)	૩૮	
૧ ચૂ૦	૧૩	
અયાણંત ૪	૧૨	
અરદ્ધ ૮	૨૭	
૧ ચૂ૦ સૂ૦ ૧		
અરક્ષિય ૨ ચૂ૦	૧૬	
અરય ૧ ચૂ૦	૧૦, ૧૧	
અરસ ૫(૧)	૬૮	
અરિહ ૮	૨૦	
અરોગિ ૬	૬૦	
અલં ૫(૧)	૭૮, ૭૯	
૭	૨૭	
૮	૬૧	
અલંકાર ૨	૨	
અલદ્ધયં ૬(૩)	૪	

अलाम	५(२)	६
	८	२२
अलाय	४	सू० २०
	८	८
अलोग	४	२२, २३
अलोल	१०	१७
अलोलुअ	६(३)	१०
अल्लीण	८	४०, ४४
अबंदिम	१ चू०	३
अवक्कम *		
(अव + क्रम)		
-अवक्कमे	५(१)	८५
अवक्कम *		
(अप + क्रम)		
-अवक्कमेज्जा	६(१)	६
अवक्कमित्ता	५(१)	८१, ८६
	५(२)	११
अवगम	८	६३
अवाय	७	५७
	८	६३
	६(३)	१४
	१०	१६
अवणय	५(१)	१३
अवणी *		
-अवणेज्जा	४	सू० २३
अवणवाय	६(३)	६
वत्तव्व	७	२, ४३

अवपंगुर *		
-अवपगुरे	५(१)	१८
अवरज्ज *		
-अवरज्जई	६	७
अवररत्त	२ चू०	१२
अवराह	६(२)	१८
अवलविया	५(२)	६
अवलोय *		
-अवलोयए	५(१)	२३
अवह	६	५७
अवाउड	३	१२
अवि	१	१
अविक्रिय	७	४३
अविणीय	६(२)	३, ५, ७, १०, २१
अविस्तास	६	१२
अविहेडअ	१०	१०
अवे *		
-अवेस्सइ	१ चू०	१६
-अविस्सइ	१ चू०	१६
अवेयइत्ता	१ चू०	सू० १
अव्वक्खित्त	५(१)	२, ६०
अव्वहिय	८	२७
अस *		
-सत्ति	१	३
	६	२३, ६१
-होमो	२	८

-अमि	४	सू० ११ से १६	असण	६	४६, ५०
-अत्थि	५(२)	२७		१०	८, ९
	७	४३	असत्थपरिणय	५(२)	२३
	६(१)	१०	असन्भवयण	६(२)	८
	१०	७	असावज्ज	५(१)	६२
	१ चू०	सू० १	असासय	१०	२१
असइ	१०	१३		१ चू०	१६
असकिल्ह	२ चू०	६	असाहु	७	४८
असंजम	५(१)	२६, ६६		६(३)	११
	६	५१	असाहुया	५(२)	३८
	१ चू०	१४	असिषाण	६	६२
असंजय	७	४७	असुइ	१०	२१
असंथड	७	३३	असूइय	५(१)	६८
असंदिद्ध	७	३	अस्सिय	५(१)	११
	८	४८	अह	४	सू० ११ से १६
असंबद्ध	८	२४		५(१)	७७, ६६
असभत	५(१)	१	अहण	१०	६
असविभाणि	६(२)	२२	अहम्म	६	१६
असंसट्ठ	५(१)	३४, ३५	अहम्मसेवि	१ चू०	१३
अससत्त	५(१)	२३	अहर	१ चू०	सू० १
	८	३२	अहागड	१	४
असच्चमोसा	७	३	अहिसा	१	१
असज्जमाण	२ चू०	१०		६	८
असण	४	सू० १६	अहिगरण	८	५०
	५(१)	४७, ४६, ५१,	अहिज्जग	८	४६
		५३, ५७, ५९,			
		६१			

अहिज्जिउं	४	सू० १ से ३
अहिज्जिता	६(४)	३
अहिट्ट	८	६१
-अहिट्टए	६(४)	२
-अहिट्टेज्जा	६(४)	सू० ६, ७
-अहिट्टिज्जासि	१ चू०	१८
अहिट्ठग	६	५४, ६२
अहिय (अहित)	६(१)	४
अहिय (अधिक)	२ चू०	१०
अहियगामिणी	८	४७
अहियास *		
-अहियासए	५(२)	६
	८	२६
-अहियासे	८	२७
अहुणाघोय	५(१)	७५
अहुणोवलित्त	५(१)	२१
अहे	६	३३
अहो	५(१)	६२
	६	२२

आ

आ	१ चू०	६
आइ	६	४६
	७	७

आइक्ख	६	३
-आइक्खइ	८	१४
-आइक्खेज्ज	८	५०
-आइक्खे	८	५०
आइच्च	८	२८
आइद्ध	२	६
आइण्ण	२ चू०	६
आइन्नअ	२ चू०	१४
आउ (अप्)	४	सू० ५
आउ (आयुस्)	८	३४
आउकाइय	४	सू० ३
आउकाय	६	२६ से ३१
आउरस्सरण	३	६
आउल्लग	४	२६
आउस	४	सू० १
	६(४)	सू० १
आगअ	५(१)	८८
आगइ	४	सू० ६
आगम	६	१
	७	११
आगमण	५(१)	८६
आगम्म	५(१)	८६
आगाहइत्ता	५(१)	३१
आघाअ	६	३४
आजीववित्तिया	३	६

आणव *

-आणवेड	२ चू०	११
आणा	१०	१
आणुपुन्वी	८	१
आणुलोमिआ	७	५६
आमिओग	६(२)	५, १०
आभोएत्ताण	५(१)	८६
आम	५(१)	७०
	५(२)	२३
आमग	३	७, ८
	५(१)	७०
	५(२)	१६, २१, २२,
		२४
	८	१०
आमिया	५(२)	२०
आमुस *		
-आमुसेज्जा	४	सू० १६
-आमुसावेज्जा	४	सू० १६
आमुमंत	४	सू० १६
आय	१ चू०	१८
आयइ	१ चू०	१
आयंक	१ चू०	सू० १
आयय	६(४)	५
आययट्टि	५(२)	३४
आययट्टिय	६(४)	२
आययण	६	१५

आयर *

-आयरंति	६	१५, २१, ६३
आयरिय	५(२)	४०, ४५
	८	३३, ६०
	६(१)	४, ५, १०,
		११, १४, १६,
		१७
	६(२)	१२, १६
	६(३)	१
आया *		
-आयए	५(२)	३१
आयाण	५(१)	२६
आयाय	५(१)	८८
आयार	६	५०, ६०
	६(३)	२
	६(४)	१
	६(४)	सू० ७
	२ चू०	४
	७	१३
	८	४६
आयारगोयर	६	२, ४
आयारपणिहि	८	
	८	१
आयारभावतेण	५(२)	४६
आयारमंत	६(१)	३
आयारसमाहि	६(४)	सू० ३, ७
	६(४)	५

दसवेआलिय शब्द-सूची

आयाव *

-आयावयाही २ ५

-आयावयति ३ १२

-आयावेज्जा ४ सू० १६

आयावंत ४ सू० १६

आयावयट्ट ५(२) २

आरभ *

-आरभे ६ ३४

आरक्खिय ५(१) १६

आरहंत ६(४) सू० ७

आराह *

-आराहेइ ५(२) ३६, ४०, ४५

-आराहए ७ ५७

६(१) १६

-आराहयइ ६(३) १

६(४) सू० ४

आराहइत्ताण ६(१) १७

आरुह *

-आरुहे ५(१) ६७

आलव *

-आलवे ७ १६, १६, २१,

२३, ३५, ४२,

४८, ५३

-आलवेज्ज ७ १७, २०

आलिह *

-आलिहेज्जा ४ सू० १८

-आलिहावेज्जा ४ सू० १८

आलिहंत ४ सू० १८

आलोइय

(आलोचित) ५(१) ६१

आलोइय

(आलोक्ति) ६(३) १

आलोअ *

-आलोए ५(१) ६०, ६६

आलोय ५(१) १५

५(१) ६६

आवगा ७ ३६, ३७, ३९

आवज्ज *

-आवज्जेज्जा ४ सू० २३

आवज्जइ ६ ५६

आवण ५(१) ७१

आविअ *

-आवियइ १ २

आवील *

-आवीलेज्जा ४ सू० १६

-आवीलावेज्जा ४ सू० १६

आवीलत ४ सू० १६

आवेउं २ ७

आस *

-आसे ४ ७

आस ७ ४७

८ १३

आसइत्तु ६ ५४

आसंदी	३	५
	६	५३ से ५५
आसण	५(२)	२८
	७	२६
	८	५, १७, ५१
	६(२)	१७
	६(३)	५
	२ चू०	८
आसमाण	४	३
आसय	५(१)	८५
आसव	३	११
	१०	५
	४	६
	२ चू०	३
आसा	६(३)	६
आसाअ *		
-आसायए	६(१)	४
-आसाययई	६(३)	२
आसाइत्ताण	५(१)	७७
आसायण	५(१)	७८
आसायणा	६(१)	२, ५, ६
	८	१०
आसाल्य	६	५३
आसोविस	६(१)	५ से ७
आसु	८	४७
आसुरत्त	८	२५

आहड	५(१)	५५
	६	४८, ४९
	८	२३
आहम्मिय	८	३१
आहर *		
-आहरे	५(१)	२७, ३१, ४२
	५(२)	३३
-आहारए	१०	३
आहार	६	२५, ४६
आहारमइय	८	२८
आहारत्त	५(१)	२८
आहियगि	६(१)	११
	६(३)	१
आहुइ	६(१)	११
इ		
इ	१	४
	३	१४
	५(१)	६५, ६६
इ *		
-एहि	७	४७
इइ	२	४
इगाल(अङ्गार)	४	सू० २०
	८	८
इंगाल(आङ्गार)	५(१)	७
इंगिय	६(३)	१

इंद	६(१)	१४
	१ चू०	२
इदिय	५(१)	१३, २६, ६६
	८	१६, ३५
	१०	१५
	१ चू०	१७
	२ चू०	१६
इच्छ, *		
-इच्छसि	२	७
-इच्छेज्जा	५(१)	२७, ३५, ३७, ८२, ८७, ६५, ६६
	६	४७
-इच्छति	६	१०, १७, ३२, ३७
-इच्छे	६(१)	८
इच्छत	८	३६
इच्छा	५(२)	२७
इष्टाल(वे०)	५(१)	६५
इडिढ	६(२)	६, ६, ११, २२
	१०	१७
इति	२	२
इत्तरिय	१ चू०	सू० १
इत्थ	३	१४
	६(४)	सू० ४ से ७
	१ चू०	सू० १

इत्थंथ	६(४)	७
इत्थी	२	२
	५(२)	२६
	७	१६, १७, २१
	८	५१, ५३, ५६, ५७
	६(३)	१२
	१०	१
इत्थीओ	६	५८
इम	४	सू० ३
इमेरिस	६	५६
इरियावहिया	५(१)	८८
इव	६(२)	१२
इसि	६	४६
	२ चू०	५
इह	४	सू० १
इहलोग	८	४३
	६(२)	१३
	६(४)	सू० ६, ७
ई	५(१)	४५
	८	१०, २१

उ		
उ	४	१
उईर *		
-उईरति	६	३८
उउ	६	६८
उछ	८	२३
	१०	१७
उंज *		
-उज्जेज्जा	४	सू० २०
	८	८
-उंजावेज्जा	४	सू० २०
उंजंत	४	सू० २०
उंडग (दि०)	४	सू० २३
उंडुय (दि०)	५(१)	८७
उक्कट्ट	५(१)	३४
उक्का	४	सू० २०
उक्किट्ट	१	१
	४	१६, २०
उक्खिवित्तु	५(१)	८५
उगम	५(१)	५६
उच्चार	८	१८
उच्चार-भूमि	८	१७, ५१
उच्चावय	५(१)	१४, ७५
	५(२)	७, २५
उच्छह	६(३)	६

उच्छुखण्ड	३	७
	५(१)	७३
	५(२)	१८
उच्छोलणा	४	२६
उज्जाण	६	१
	७	२६, ३०
उज्जाल *		
-उज्जालिजा	४	सू० २०
-उज्जालावेज्जा	४	सू० २०
उज्जालंत	४	सू० २०
उज्जालिया	५(१)	६३
उज्जुदंसि	३	११
उज्जुप्पन्त	५(१)	६०
उज्जुमइ	४	२७
उट्ट *		
-उट्टए	५(१)	४०
उट्टिअ	५(१)	४०
उड्ड	६	३३
उड्ढिय	१ चू०	१२
उण्ह	७	५१
	८	२७
उत्तम	८	६०
	६(२)	२३
	१ चू०	११
उत्तर	५(२)	३
उत्तरजो	६	३३
उत्तार	२ चू०	३

उत्तिग	५(१)	५६
	८	११, १५
उद+उल्ल	६	२४
	८	७
उदओल्ल	४	सू० १६
	५(१)	३३
उदग	४	सू० १६
	५(१)	३०, ५८, ७५
	८	११
उदगदोणी	७	२७
उदर	४	सू० २३
उदाहर *		
-उदाहरिस्सामि	८	१
उद्देसिय	३	२
	५(१)	५५
	६	४८, ४९
	८	२३
	१०	४
उन्नय	७	५२
उप्पज्ज *		
-उप्पज्जए	२ चू०	१
उप्पण	५(१)	६६
	५(२)	३
	१ चू०	सू० १
उप्पल	५(२)	१४, १६, १८
उप्पिलाव *		
-उप्पिलावए	६	६१

उप्पिलोदगा	७	३६
उप्पेहि	१ चू०	सू० १
उप्पुल्ल	५(१)	२३
उब्भिदिया	५(१)	४६
उब्भिय	४	सू० ६
उब्भेइय	६	१७
उमय	४	११
	५(२)	१२
उम्मीस	५(१)	५७
उयर	८	२६
उल्ल	५(१)	२१, ६८
उल्लंघिया	५(१)	२२
उवइट्टु	६(३)	२
उवगय	६(१)	११
उवगरण	४	सू० २३
उवघाइणी	७	११, २६, ५४
उवचिट्ठु *		
-उवचिट्ठुएज्जा	६(१)	११
उवचिय	७	२३
उवज्झाय	६(२)	१२
उवट्ठाइ	१ चू०	सू० १
उवट्ठिय	४	सू० ११ से १६
	६(२)	५, १०
उवणीय	१ चू०	१५
उवन्नन्थ	५(१)	३६
उवभोग	६(२)	१३

१८

उवमा	६(१)	६, ८
	१ चू०	११
उवयार	६(२)	२०
उवरअ	८	१२
उववज्झ	६(२)	५, ६
उववन्न	५(२)	४७
उववाइय	४	सू० ६
उववाय *		
-उववायए	८	३३
उववेय	६(१)	३
उवसंकम *		
-उवसंकमेज्ज	५(२)	१३
उवसकमंत	५(२)	१०
उवसंत	६	६४, ६८
	१०	१०
उवसंपज्जित्ताणं	४	सू० १७
उवसंपया	१ चू०	सू० १
उवसम	८	३८
उवस्सअ	७	२६
उवहण *		
-उवहम्मई	१	४
	७	१३
उवहस *		
-उवहसे	८	४६
उवहि	६	२१

परिशिष्ट-१

उवहि	६(२)	१८
	१०	१६
	२ चू०	५
उवाय	८	२१
	६(२)	४, २०
	१ चू०	१८
उवे		
-उवोत	६	६८
-उवेइ	१०	२१
	२ चू०	१६
उवेत	१ चू०	१७
उव्वट्टण	३	५
	६	६३
	६(१)	१२
उव्विग्ग	५(२)	३६
उसिण	६	६२
उसिणोदग	८	६
उस्सविकया	५(१)	६३
उस्सवित्ताणं	५(१)	६७
उस्सिचिया	५(१)	६३
ऊ		
ऊरु	४	सू० २३
	८	४५

दसवेआलिय शब्द-सूची

ऊस	५(१)	३३
ऊसढ	५(२)	२५
	७	३५

ए

एक	२ चू०	१०
एककय	५(१)	६६
एग	५(१)	३७
	६(१)	३
एगळ	४	सू० १८ से २३
एगइय	५(२)	३१, ३३, ३७
एगत	४	सू० २३
	५(१)	११, ८१, ८५, ८६

एगगाचित्त

५(२)	११
------	----

एगगाचित्त

६(४)	सू० ५
------	-------

६(४)

एकभत्त

६	२२
---	----

एगया

५(१)	६५
------	----

एज्जत

६(२)	४
------	---

ऐय

१	३
---	---

एयांसि

५(१)	६६
------	----

एरिस

६	५
---	---

७

२ चू०

१५

एल्ला	५(१)	२२
एलमूयया	५(२)	४८
एव	४	सू० १०
एव	१	३

एस +

-ऐसेज्जा

एसकाल

एसणा

एसणिय

एहत

६

६(२)

५ से ७

६ से ११

ओ

ओगास

ओगह

६

८

ओघ

ओमज्ज

ओमाण

ओयारिया

ओवघाइय

ओवत्तिया

५(१)

ओववाइय	४	सू० ६
ओवाय	५(१)	४
ओवायव	६(३)	३
ओसविकया	५(१)	६३
ओसन्न	१ चू०	७
ओसन्नदिट्टाहड	२ चू०	६
ओसहि	७	३४
ओसा (दे०)	४	सू० १६
ओह	६(२)	२३
ओहाण	१ चू०	सू० १
ओहारिणी	७	५४
	६(३)	६
ओहाविअ	१ चू०	२

क

क	१	४
कइ	२ चू०	१४
कंटय	५(१)	८४
	६(३)	६, ७
कंत	२	३
कंद	३	७
	५(१)	७०
कंस	६	५०
कंसपाय	६	५०
कक्क	६	६३

कक्कस	८	२६
कज्ज	७	३६
कट्टु	८	३१
	१ चू०	१४
कट्ट	४	सू० १८
	५(१)	६५, ८४
	६(२)	३
	१०	४
कड	४	२०, २१
	५(१)	५६, ६१
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१२
कडुय	४	१ से ६
	५(१)	६७
कण्ण	४	सू० २१
	८	२०, २६, ५१
	६(३)	८
कण्णसर	६(३)	६
कत्थइ	५(२)	८
कन्ना	६(३)	१३
कप्प *		
-कप्पइ	५(१)	२८, ३१, ३८
		४१, ४३, ४
		४६, ४८, ५
		५२, ५४, ५
		६०, ६२, ६

-कप्पइ	५(१)	७२, ७४, ७६	कया	७	५१
-	५(२)	१५, १७, २०	कयाइ	६	६३
-कप्पई	६	५२, ५६, ५६	कर *		
कप्प	५(१)	४४	-काहिसि	२	६
कप्पिय	५(१)	२७	-काही	४	१०
	६	४७	-कुज्जा	५(१)	६४
कव्वड	१ चू०	५		५(२)	६
कम्म *				८	३३, ५२
-कमाही	२	५		६(१)	५
कम	५(१)	१, ४		६(२)	१७
कमिय	२	५		२ चू०	८, ६, १३
कम्म	३	१५	-करेति	६	६७
	४	१ से ६		६(१)	२
	४	२०, २१, २४,	-करिस्सामि	७	६
		२५, २८	-करिस्सई	७	६
	६	६५	-करेहि	७	४७
	८	१२, ३३, ६३	-करे	८	१६
	६(२)	२३	कर	५(१)	१६, २६
	१ चू०	सू० १	करंत	४	सू० १० से १६,
कम्महेउअ	७	४२			१८ से २३
कय (कृत)	५(१)	३४	करग	४	सू० १६
कय (क्रय)	७	४६	करण	६	२६, २६,
	१०	१६			४०, ४३
कयर	४	सू० २		८	४
	८	१४	करेत्ता	५(१)	६३
	६(४)	सू० २ :	करेत्ताणं	३	१४

कलह	५(१)	१२
	२ चू०	५
कलुण	६(२)	८
कलुस	४	२०, २१
कल्लाण	४	११
	५(२)	४३
कल्लाणभाणि	६(१)	१३
कवाड	५(१)	१८
	५(२)	६
कविट्ठ	५(२)	२३
कसायं	५(१)	६७
	७	५७
	८	३६
	६(३)	१४
	१०	६
कसिण	८	३६, ६३
कह	१०	१०
कहं	२	१
	४	७, १२
	६	२, २३, २४
कहा	५(२)	८
	८	५२
	१०	१०
कहि	२ चू०	८
काउस्सग्गकारि	२ चू०	७
काण	७	१२

काम	२	१, ५
	६	१८
	८	५७
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१०
कामय	५(२)	३५
काय	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२६, २६, ४०, ४३
	८	३, ७, ६, २६, ४४
	६(१)	१२
	६(२)	१८
	१०	५, ७, १४
	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
कायतिज्ज	७	३८
कायव्व	६	६
	८	१
कारण	२	७
	५(२)	३
	६(२)	१३, १५
	१ चू०	१
कारिय	६	६४
काल	५(१)	१

काल	५(२)	४ से ६
	७	८
	६(२)	२०
	२ चू०	१२
कालमासिणी	५(१)	४०
कालालोण	३	८
कासव	४	सू० १ से ३
कासवनालिआ	५(२)	२१
कि	३	१४
	४	१०
	५(२)	४७
	६	६४
	७	५
	६(१)	५
	६(२)	१६
	२ चू०	१२, १३
किचि	६	३४
	७	२६
किचव	७	३६
	२ चू०	१२
किच्चा	५(२)	४७
	६(२)	१६
	६(३)	८
किच्चाण	८	४५
क्ति *		
-क्तिइस्स	५(२)	४३

क्ति	६(२)	२
	६(४)	सू० ६, ७
किमिच्छय	३	३
किलाम *		
-किलामेइ	१	२
-किलामेसि	५(२)	५
किर्लिच (दि०)	४	सू० १८
किलेस	१ चू०	१५
किविण	५(२)	१०
कीढ	४	सू० ६, २३
कीय	६	४८, ४९
	८	२३
कीय	६(१)	१
कीयगड	३	२
	५(१)	५५
कीरमाण	७	४०
कील	५(१)	६७
कुंडमोय (दि०)	६	५०
कुथु	४	सू० ६, २३
कुमुडं	१ चू०	७
कुवकुड	८	५३
कुवकुस	५(१)	३४
कुतत्ति	१ चू०	७
कुप्प *		
-कुप्पे	५(२)	२७, ३०
	१०	१०

कुप्पई	६(२)	४
कुप्पेज्ज	८	४७
	१०	१८
कुप्पेज्जा	५(२)	२८
कुमारिया	५(१)	४२
कुमुय	५(२)	१४, १६, १८
कुम्म	८	४०
कुम्मास	५(१)	६८
कुल	२	६, ८
	५(१)	१४, १७, २४
	५(२)	२५
	२ चू०	८
कुललओ	८	५३
कुविय	६(१)	७, ९
कुव्व		
कुव्वइ	५(२)	४२, ४६
	६(४)	६
कुव्वई	५(२)	३५
कुव्वेज्जा	८	२४
कुसग्ग	१ चू०	सू० १
कुसल	६(३)	१५
कुसील	६	५८
	१०	१८
	१ चू०	१२
कुसील्लिग्ग	१०	२०
केज्ज	७	४५

केवल	६(१)	१४
केवलि	४	२२, २३
	२ चू०	१
कोट्ठअ	५(१)	२१, २२
कोट्ठग	५(१)	२७, ८२
कोमुई	६(१)	१५
कोल	४	सू० २२
	५(२)	२१
कोलचुण्ण	५(१)	७१
कोविय	६(२)	२३
कोह	४	सू० १२
	६	११
	७	५४
	८	३६ से ३६
	६(१)	१
	६(३)	१२
ख		
ख	६(१)	१५
खंति	४	२७
खंघ	६(२)	१
खंघबीय	४	सू० ८
खंभ	७	२७
खण	५(१)	६३

खण *		
-खणावए	१०	२
-खणे	१०	२
खत्तिय	६	२
खम *		
-खमेह	६(२)	१८
खलिय	२ चू०	१३
खलीण	२ चू०	१४
खलु	४	सू० १ से ३, ६
	७	१
	६(४)	सू० १ से ७
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१६
खव *		
-खवैति	६	६७
खवित्ता	३	१५
खवित्ताण	४	२४, २५
खवित्तु	६(२)	२३
खाअ *		
-खाएज्जा	८	४६
-खायइ	६(१)	६
खाइम	४	सू० १६
	५(१)	४७, ४६, ५१,
		५३, ५७, ५६,
		६१
	५(२)	२७
	१०	८, ६

खाणु	५(१)	४
खिस *		
-खिसए	८	२६
-खिसएज्जा	६(३)	१२
खिप्प	८	३१
	२ चू०	१४
खु	२	५
खु	६(२)	८
खुहुग	६	६
खुड्डियायारकहा	३	
खुहा	८	२७
खेम	७	५१
	६(४)	६
खेल	८	१८
ना		
गअ(य)	२	१
	४	सू० १८ से २३
	५(१)	२, २४, ८१
	५(२)	६
	६(२)	३, २३
	२ चू०	७
गड	४	सू० ६
	४	१४, १५
	६(२)	१७

गड	६(३)	१५	गणि	६	१
	१०	२१		६(१)	१५
	१ चू०	सू० १		१ चू०	६
	१ चू०	१३, १४, २३	गन्धिय	७	३५
गडिआ	७	२८	गमण	५(१)	८६
गतुं	७	२६, ३०	गय	५(१)	१२
गध	२	२		६(२)	५, ६
	३	२		१ चू०	सू० १
गधण	२	८	गरह *		
गभीर	५(१)	६६	-गरहति	५(२)	४०
गभीर बिजय	६	५५	गरहिय	६	१२
गच्छ *			गरिह *		
-गच्छइ	४	२४, २५	-गरिहसि	५(२)	५
	८	४३	-गरिहामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
-गच्छई	५(२)	३२	गल	१ चू०	६
-गच्छति	५(१)	१००	गव	७	२५
-गच्छामो	७	६	गवेस *		
-गच्छावेज्जा	४	सू० २२	-गवेसए	५(१)	१
-गच्छे	१०	१		५(२)	३
	१ चू०	१४	गहण	८	११
-गच्छेज्जा	४	सू० २२	गहिय	५(१)	६०
	५(१)	४, ६, २४, ६६	गहेऊण	५(१)	८५
	८	२५	गा	७	२४
गच्छंत	४	सू० २२	गाढ	७	४२
गण	६(१)	१५			

गाम	४	सू० १३, १५
	५(१)	२
	२ चू०	८
गाम कंटअ	१०	११
गाय	३	५
	६	६३
गायाभंग	३	६
गारव	६(२)	२२
गावी (दे०)	५(१)	१२
गिण्ह *		
-गिण्हाहि	६(३)	११
गिद्ध	८	२३
	१०	१७
गिम्ह	३	१२
गिरा	७	३, ५, ५२,
		५४, ५५
	६(१)	१२
गिरि	६(१)	६
	१ चू०	१७
गिलित्ता	१ चू०	६
गिह	७	२७
गिहतर निसेब्बा	३	५
गिहत्थ	५(२)	४०, ४५
गिहवई	५(१)	१६
गिहवास	१ चू०	सू० १
गिहि	३	६

गिहि	६	१८
	८	५०
	६(२)	१३
	६(३)	१२
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	६
गिहिजोग	८	२१
	१०	६
गिहिभायण	६	५२
गिहिमत्त	३	३
गिहिसथव	८	५२
गुज्झग	६(२)	१०, ११
गुज्झाणुचरिअ	७	५३
गुण	४	२७
	५(२)	४१
	६	६, ६७
	७	४६, ५६
	८	६०
	६(१)	३, १७
	६(३)	११, १४
	६(४)	४
	१०	१२
	२ चू०	४, १०
गुणओ	२ चू०	१०
गुणप्पेहि	५(२)	४४
गुणव	५(२)	५०

गुत्त	८	४०, ४४
१ चू०	१८	
गुरु	५(१)	८८, ९०
७	११	
८	४४, ४५	
९(१)	१, २, ६, ७.	
	८, १०, १३	
९(२)	१५, २३	
९(३)	२, १४, १५	
गुब्बिणी	५(१)	३६, ४०
गूह *		
-गूहे	८	३२
गेण्ह *		
-गेण्ह	७	४५
-गेण्हावए	६	१४
-गेण्हावेज्जा	४	सू० १३
-गेण्हेज्जा	८	सू० १३
-गेण्हंति	६	१४
गेण्हत	४	सू० १३
गेण्हमाण	६	१४
गेस्य	५(१)	३४
गोच्छ्रा	४	सू० २३
गोण (दे०)	५(१)	१२
गोत्त	७	१७, २०
गोमय	५(१)	७
गोमि	७	१६

गोमिणी	७	१६
गोयर	५(१)	१४
	५(२)	२
गोयरग	५(१)	१६
	५(२)	८
	६	५६
गोरहण (दे०)	७	२४
गोल (दे०)	७	१४, १६
गोला (दे०)	७	१६

घ

घट्ट *		
-घट्टावेज्जा	४	सू० १८
-घट्टेज्जा	४	सू० १८
	८	८
घट्ट त	४	सू० १८, २०
घट्टियाण	५(१)	३०
घण	८	६३
घय	५(१)	६७
घसा (दे०)	६	६१
घाय *		
-घायए	६	६
घोर	६	१०, १५, ६२.
		६५
	९(२)	१४
	१ चू०	१२

च		
च	१	४
चइत्ताणं	५(२)	४८
चउ	६	४६
	७	१,५७
	८	३६,३६
	९(३)	१४
	९(४)	सू० १ से ७
	१०	६
चउत्थ	४	सू० १४
	६	४७
	९(४)	सू० ४ से ७
चउरिदिय	४	सू० ६
चउब्बिह	९(४)	सू० ४ से ७
चगवेर (दे०)	७	२८
चचल	१ चू०	सू० १
चंड	९(२)	३,२२
चदिम	६	६८
	८	६३
चक्खुगोयर	५(२)	११
चक्खुस	६	२७,३०, ४१,४४
चय *		
-चए	९(३)	१२
	१०	१७,२१
-चय	२	५

-चयइ	२	३
	४	१७,१८
	९(४)	७
	१ चू०	१
चर *		
-चर	२	८
-चरसि	५(२)	५
-चरे	४	७,८
	५(१)	२,३,१३
	५(२)	६,२५
	६	२३,२४
	८	२३
-चरेज्ज	५(१)	८,९
	२ चू०	६,११
चरत	५(१)	१०,१५
चरमाण	४	१
चरित्त	२ चू०	६
चरिया	२ चू०	४,५
चलइत्ता	५(१)	३१
चलाचल	५(१)	६५
चाइ	२	२,३
चाउल (दे०)	५(२)	२२
चाउलोदग (दे०)	५(१)	७५
चारु	८	५७
चि	४	सू० ६
	२ चू०	८

वित्त *		
-वित्तए	५(१)	६१
-वित्ते	५(१)	६४
चिक्कण	६	६५
चिट्ट *		
-चिट्ट	७	४७
	८	१३
-चिट्टइ	४	१०
-चिट्टे	४	७
	८	१६
-चिट्टेज्जे	५(२)	११
-चिट्टेज्जा	४	सू० २२
	५(१)	२६
	५(२)	६
	८	११,४५
-चिट्टावेज्जा	४	सू० २२
चिट्ट त	४	सू० २२
चिट्टमाण	४	२
	५(१)	२७
चिट्टित्ताण	५(२)	८
चित्त	१०	१
	१ चू०	सू० १
चित्तमिति	८	५४
चित्तमंत	४	सू० ४ से ८,
		१३,१५
	६	१३

चियत्त (दे०)	५(१)	१७,६५
चिरं	१ चू०	१६
चिरकाल	१ चू०	सू० १
चिराघोयं	५(१)	७६
	१ चू०	सू० १
चुय	१ चू०	३,१३
चुल्लपिड	७	१८
चूलिया	२ चू०	१
चे	१ चू०	१६
चेय	५(१)	२,६०
	६	६६
	१ चू०	१४
चेल	४	सू० २१
चोइय	६	२,४
चोर	७	१२
छ		
छ	३	११
	४	सू० ६,१०
	७	५६
	१०	५
छद	५(१)	३७
	६(२)	२०
	६(३)	१
छंदिय	१०	६

छज्जीवणिया	४	सू० १ से ३	ज		-
	४	२८	ज	१	१
छट्ठ	४	सू० ६, १६, १७	जळ	७	५०
छहु *			जइ (यदि)	२	६
-छहुण	५(१)	८५		५(१)	६४, ६५, ६८
	५(२)	१		५(२)	२
छहुण	६	५१		६	११, १३
छण *				८	२१
-छनति	६	५१		१ चू०	६
छत्त	३	४	जइ (यति)	२ चू०	६
छमा	१ चू०	२	जओ	७	११
छविइय	७	३४		२ चू०	६-
छाय	६(२)	७	जंतलट्टि	७	२८
छारिय	५(१)	७	जतु	१ चू०	१५, १६
छिद *			जक्ख	६(२)	१०, ११
-छिदावए	१०	३	जग (दे०)	५(१)	६८
-छिदाहि	२	५	जग(जगत्)	८	१२
-छिदे	१०	३	जगनिस्सिय	८	२६
-छिदेज्जा	८	१०	जढ	६	६०
छिदित्तु	१०	२१	जण *		
छिन्न	४	सू० २२	-जणति	६(३)	८
	५(१)	७०	जण	२ चू०	२
	७	४२	जत्त	६(३)	१३
छिवाढी (दे०)	५(२)	२०	जत्थ	५(१)	२०, २१
छूह	१ चू०	५		५(२)	४८
छेय	४	१०, ११		७	६

ਜਤ੍ਥ	੨ ਚੂ੦	੧੪	ਜਲ੍ਹਿਯ (ਦਿ੦)	੮	੧੮
ਜਨ੍ਨ	੧ ਚੂ੦	੧੨	ਜਵਣ	੬(੩)	੪
ਜਯ (ਧਤ)	੪	੮, ੨੮	ਜਸ	੫(੨)	੩੬
	੫(੧)	੬, ੮੧, ੮੬,	ਜਸੰਸਿ	੬	੬੮
		੬੬	ਜਸੋਕਾਮਿ	੨	੭
	੫(੨)	੭		੫(੨)	੩੫
	੬	੩੮	ਜਹੁ	੨ ਚੂ੦	੧੧
	੭	੫੬	ਜਹੁਕਕਮ	੫(੧)	੮੬, ੬੫
	੮	੧੬	ਜਹਾ	੧	੨, ੪
ਜਯ (ਧਤ) *				੨	੧੦, ੧੧
-ਜਏ	੮	੧੬		੪	ਸੂ੦ ੩, ੮, ੬
-ਜਏਯਾ	੨ ਚੂ੦	੬		੫(੧)	੬੦
ਜਯਾ	੪	੧੪ ਸੇ ੨੫		੫(੨)	੩੬
	੧ ਚੂ੦	੧ ਸੇ ੭		੬	੬
ਜਰਾ	੬	੫੬		੮	੧, ੫੩, ੫੬,
	੮	੩੫			੫੬
ਜਰਾਭਯ	੪	ਸੂ੦ ੬		੬(੧)	੧੧, ੧੪, ੧੫
ਜਲ	੬(੨)	੧੨		੬(੨)	੩
	੧ ਚੂ੦	ਸੂ੦ ੧		੬(੪)	ਸੂ੦ ੩ ਸੇ ੭
ਜਲ *				੧੦	੨
-ਜਲਾਵਏ	੧੦	੨		੧ ਚੂ੦	੮
-ਜਲੇ	੧੦	੨	ਜਹਾਭਾਗ	੫(੧)	੧੩
ਜਲਭ੍ਰਾਣ	੬	੩੩	ਜਹਾਰਿਹ	੭	੧੭, ੨੦
ਜਲਣ	੬(੧)	੧੧	ਜਹਿ	੫(੧)	੩੫
ਜਲ੍ਹਿਯ	੨	੬	ਜਹੋਵਭ੍ਰੁ	੬(੩)	੨
	੬(੧)	੬	ਜਾਭ	੭	੨੧
				੧੦	੧੬

जाइ	८	३०
	६(४)	७
	१०	१४, २१
जाइस्ता	८	५
जाइपह	६(१)	४
	१०	१४
	२ चू०	१६
जाइमंत	७	३१
जागरमाण	४	सू० १८ से २३
जाण *		
-जाणइ	४	११, २२, २३
-जाणई	४	११
-जाणति	५(२)	४०, ४५
-जाणतु	५(२)	३४
-जाणेज्ज	५(१)	४७, ७६
-जाणेज्जा	७	८
जाण (जानत्)	६	६
	८	३१
जाण (यान)	७	२६
जाणिऊण	५(१)	६६
जाणिस्ता	५(१)	२४
	८	१६
जाणित्तु	८	१३
जाणिय	१०	१८
	१ चू०	११
जाणिया	५(२)	२४
	७	५६

जाय	२	६
	४	सू० २२, २३
जाय *		
-जाएज्जा	५(२)	२६
जायतेय	६	३२
जाला	४	सू० २०
जाव	७	२१
	८	३५
जावत	६	६
जावज्जीव	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५, ६२
जिइदिय	३	१३
	८	३२, ४४, ६३
	६(३)	८, १३
	६(४)	१
	२ चू०	१५
जिण	४	२२, २३
	५(१)	६२
जिण *		
-जिणे	८	३८
जिणत	४	२७
जिणदेसिय	१ चू०	६

३४

परिशिष्ट-

जिणमय	६(३)	१५
जिणवयण	६(४)	५
	१ चू०	१८
जिणसथव	५(१)	६३
जिणसासण	८	२५
जिय	८	४८
जीव #		
-जीवइ	२ चू०	१५
जीव	४	सू० ४ से १८
	४	१२ से १५
	५(१)	६८
	६	१०
	८	२
	६(१)	५
जीविउ	६	१०
जीविय	२	७
	८	३४
	१०	१७
	१ चू०	सू० १, १६
जीवियट्टि	६(१)	६
जुगमाया	५(१)	३
जुत्त	३	१०
	८	४२, ६३
	६(१)	१५

जुत्त	६(२)	१४
	६(४)	४
	१०	१०
जुद्ध	५(१)	१२
जम्ह	२	८, ६
जुव	७	२५
जोइ	२	६
	३	४
	८	६२
जोग	४	२३, २४
	५(१)	१
	७	४०
	८	४, १७, ४२,
		५०, ६१
	६(१)	१५, १६
	२ चू०	१५
जोगय	८	६१
जोय	६	२६, ४०, ४३
जोव्वण	१ चू०	६
मुसिर	५(१)	६६
मोसइत्ता	१ चू०	सू० १

ट		
टाल (दि०)	७	३२
ठ		
ठविय	५(१)	६५
ठाण	५(१)	१६
	६	७, ८, ५८
	६(२)	१७
	६(४)	सू० १ से ३
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	३
ठावय *		
-ठावयई	६(४)	३
ठिअ	६(४)	३
	१०	२०
ठियप्प	६	४६
	१०	१७, २१
ड		
डह *		
-डहेज्जा	६(१)	७
डहर	५(२)	२६
	६(१)	२ से ४
	६(३)	३, १२
ण		
ण	५(२)	२

णं	५(२)	२६
णु	७	५१
णो	६	६
	७	६
त		
त (तत्)	१	२
त (त्वत्)	२	८, ९
तउज्जुय	५(२)	७
तयो	४	सू० २३
	४	१०
	५(१)	६६
	५(२)	३, १३
	६(२)	१
	६(३)	७
तजहा	४	सू० ३
तच्च	४	सू० १३
तज्जणा	१०	११
तज्जायसंसट्ट	२	६
तण	४	सू० ८
	५(१)	८४
	८	२, १०
	१०	४
तणम	५(२)	१६
तण्हा	५(१)	७८, ७९

तत्तनिव्वुड	५(२)	२२	तव	४	२७
तत्तफासुय	८	६		५(२)	६, ४२
तत्तानिव्वुड-				६	१, ६७
भोइत्त	३	६		७	४६
तत्तो	५(२)	४८		८	४०, ६१, ६२
तत्थ	५(१)	५, ६,		९(४)	१, ४
		२५ से २८,		१०	७, १२, १४
		३६ से ३८,		१ चू०	सू० १
		६६, ८३, ८४,	तवण	९(१)	१४
		९५	तवत्तेण	५(२)	४६
	५(२)	११, २७, ४७,	तवसप्पाहो	९(४)	सू० ३, ६
		५०		९(४)	४
	६	७, ८, २४,	तवस्सि	५(२)	४२
		५१, ५२		६	५६
	१ चू०	१		८	३०
	२ चू०	१४		९(३)	१३
तन्निस्सिय	५(१)	६८	तवोक्कम्म	६	२२
तमस	५(१)	२०	तस	४	सू० ९, ११
तयस्सिय	६	२७, ३०,		५(१)	५
		४१, ४४		६	८, २३, २७
तया	४	१४ से २५			३०, ४१, ४४
तरित्तु	९(२)	२३		८	२, ११
तरुणग	५(२)	१६		१०	४
तरुणिया	५(२)	२०	तसकाइय	४	सू० ३
तव	१	१	तसकाय	४	सू० ९
	३	१५		६	४३ से ४५

दसवेआलिय शब्द-सूची

तसिय	४	सू० ६
तह	२ चू०	८
तहप्पगार	४	सू० २३
तहा	५(१)	३०, ४७, ४६, ५१, ५३, ५६, ६१, ७१, ७५
	५(२)	२१
	६	६
	७	३२, ३८, ५७
	८	११, ५६
	९(२)	१८
	१ चू०	११
तहाभूय	८	७
तहामुत्ति	७	५
तहाविह	५(१)	७१, ८४
	१ चू०	१४
तहिं	२ चू०	११
तहेव	५(१)	७१
ता	५(२)	३४
	१ चू०	१५
ताइ	३	१, १५
	६	२०, ३६, ६६, ६८
	८	६२
तारिय	५(१)	६४
तारिम	७	३८

तारा	९(१)	१५
तारिस	५(१)	२८, २९, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६
	५(२)	१५, १७, २०, ३६ से ४१, ४४, ४५
	६	३६, ६६
	८	६३
	१ चू०	१७
तारिसग	४	२६, २७
तालउड	८	५६
तालियट	४	सू० २१
	६	३७
	८	६
ताव	७	२१
	८	३५
ति	६	५६
तिंदुय	५(१)	७३
तिक्ख	६	३२
तिगुत्त	३	११
	९(१)	१४

तिगुत्ति	१ चू०	१८
तित्तग	५(१)	६७
तित्थ	७	३७
तिरिक्खजोणि	५(२)	४८
तिरिक्खजोणिय		
(तिर्यग्ग्योनिक) (ज)	४	सू० ६
तिरिक्खजोणिय		
(तिर्यग्-ग्योनिक) ४	सू० १४	
तिरिच्छसंपाद्म	५(१)	८
तिरिय	७	५०
तिलपप्पडग	५(२)	२१
तिलपिट्ठ	५(२)	२२
तिविह	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२६, ४०, ४३
	८	४
तमस	५(२)	५०
तयस्सिय	६	३७
	७	७०
	४	१५
तिव्व	६(२)	
तु	५(२)	१० २२
वाग	५(१)	० २२
	५(१)	२२
	६(२)	७

तेडदिय	४	सू० ६
तेउ	४	सू० ६
	५(१)	६१
तेउकाइअ	४	सू० ३
तेउकाय	६	३५
तेगिच्छ	३	४
तेण	५(२)	३७, ३६
	७	१२
तेणग	७	३६, ३७
तेल्ल	६	१७
तो	५(१)	६५
तोरण	७	२७
तोस		
-तोसए	६(१)	१६
थ		
थंभ	६(१)	१
	६(३)	१२
थणग	५(१)	४२
थद्ध	६(२)	३
थावर	४	सू० ११
	५(१)	५
	६	६, २३
	१०	४
थिगाल (दि०)	५(१)	१५
थिर	७	३५
थूल	४	सू० १३, १५
	७	२२

थेर	६(४)	सू०	१ से ३
थेरअ	१	चू०	६
थोव	५(१)	७८	
	८	२६	
व			
वड	४	सू०	१०
	६(२)	४, ८	
वडंग	४	सू०	२३
वत	१	५	
	३	१३	
	४	६	
	५(१)	६	
	६	३	
	८	२६	
	६(४)	५	
वतपहोयणा	३	३	
वतवण (दि०)	३	६	
वतसोहण	६	१३	
वसण	४	२१, २२	
	५(१)	७६	
	६	१	
	७	४६	
वग	५(१)	४५	
	८	२, ६	

वगमवण	५(१)	१५
वगमट्टिआ	५(१)	३, २६
वच्छ	*	
-वच्छसि	२	६
वट्टव	२ चू०	४
वट्टूण	५(१)	२१
	५(२)	३१, ४६
	६	२५
	८	५४
वमअ (दि०)	७	१४
वमइत्ता	५(१)	१३
वम्म	७	२४
वया	४	१०
	६(१)	१३
वयाहिगारि	८	१३
वरिसणिय	७	३१
वलय	*	
-वलाहि	५(१)	७८
ववदव	५(१)	१४
वव्वी	५(१)	३२, ३५, ३६
वस	६	७
वह	*	
-वहे	६	३३
वा *		
-वाए	५(१)	६१, ६३
	५(२)	१४, १६

-दावए	५(१)	४६,८०
-देज्ज	५(२)	२७
-देज्जा	५(१)	४६
दाइय	५(२)	३१
दाढा	१ चू०	१२
दाण	१	३
	५(१)	४७
दायग	५(२)	१२
दायव्व	२ चू०	२
द्वार (द्वार)	५(१)	१५
	५(२)	६
द्वार (द्वार)	१ चू०	८
द्वारग	५(१)	२२,४२
दारुण	८	२६
	६(२)	१४
दावय	५(१)	४६,६७
दाहिणओ	६	३३
विज्जमाण	५(१)	३५ से ३८
दिट्ठ	५(१)	६६
	६	६,५१
	८	२०,२१,४८
दिट्ठि	८	५४
दिट्ठिवाय	८	४६
दित्त	५(१)	१२
दिन्न	५(२)	१३
दिया	४	सू० १८ से २३

दिया	६	२४
दिव्व	४	सू० १४
	४	१६,१७
	६(२)	४
दिस्स	७	५३
	१०	१२
दीसय	५(२)	२८
दीह	६	६४
	७	३१
दु	४	१४
	५(१)	३७,३८, १००
	७	१
दुक्कर	३	१४
दुक्ख	२	५
	३	१३
	८	२७
	१०	११
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	११,१६
दुक्खसह	८	६३
दुग्गअ	६(२)	१६
दुग्गइ	५(१)	११
	६	२८,३१,३५, ३६,४२,४५
दुग्घ	५(२)	१

दुम्बर	६	५
दुन्विण	१ चू० सू० १	
दुम्भ	७	२४
दुष्ट	७	५५, ५६
दुत्तोसभ	५(२)	३२
दुन्नामधेज्ज	१ चू०	१३
दुप्यज्ज	२ चू०	१४
दुप्यजीवि	१ चू० सू० १	
दुप्यडिक्कंत	१ चू० सू० १	
दुप्यडिलेहग	५(१)	२०
	६	५५
दुबुद्धि	६(२)	१६
दुम	१	२
	६(२)	१
दुमपुप्फिया	१	
दुम्मइ	५(२)	३६
दुम्मणिय	६(३)	८
दुरहिट्टिय	६	४, १५
दुरासय	२	६
	६	३२
दुल्ल	६(३)	७
दुल्लर	६	६५
	६(२)	२३
दुरुद्धर	६(३)	७
दुरुहमाण	५(१)	६८
दुल्लह	४	२८

दुल्लभ	१ चू० सू० १	
दुल्लह	४	२६
	५(१)	१००
दुव्वाई	६(२)	३
दुव्विहिय	१ चू०	१२
दुस्समा	१ चू० सू० १	
दुस्सह	३	१४
दुस्सेज्जा	८	२७
दुह	६(२)	५, ७, १०
	१ चू०	१४, १५
	२ चू०	१६
दुहव	७	१४
दुहवो	६(२)	२१
दूरवो	५(१)	१२, १६
	६	५८
देंतिय	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६ १५, १७, २०
	५(२)	
देव	१	१
	४	सू० ६
	७	५०, ५२
	६(२)	१०, ११
	६(४)	७

देवकिब्बिस ५(२) ४६, ४७

देवत्त ५(२) ४७

देवया १ चू० ३

देवलोय (ग) ३ १४

१ चू० १०

देस २ चू० ८

देसिय ५(१) ६२

६ ८

देह ५(१) ६२

६ २१

८ २७

१ चू० १७

देहपलोयणा ३ ३

देहवास १० २१

दोक्क ४ सू० १२

दोस २ ५

५(१) ११, ६६, ६६

५(२) ३५, ३७

६ १६, २५, २८,

३१, ३५, ३६,

४२, ४५

७ ५६

८ ३५

६(३) ११

दोसन्न ७ १३

ध

धम्म १ १

२ १०

४ १६, २०

८ ३५

६(२) २

६(३) ८

१० २०

१ चू० सू० १

१ चू० १२, १२,

१३

२ चू० १

धम्मकामी ६(१) १६

धम्मजीवि ६ ४६

धम्मज्झाण १० १६

धम्मट्ठकहा ६

धम्मत्थकाम ६ ३

धम्मपण्णत्ति ४

४ सू० १ से ३

धम्मपय ६(१) १२

धम्मसासण १ चू० १७

धर ८ ४६

धाय (दे०) ७ ५१

धार *

-धारण ५(१) १६

-धारंति ६ १६

धारण	३	४
	५(१)	६२
धिम्मअ	२ चू०	१५
धिरत्थु	२	७
धीर	३	११
	७	४, ७, ४७
	२ चू०	१४
धुण *		
-धुणइ	४	२०, २१
	६ (४)	४
	१०	७
-धुणंति	६	६७
धुणिय	६(३)	१५
धुन्नमल	७	५७
धुयमोह	३	१३
धुव	८	१७, ४२
धुवजोग	१०	१०
धुवजोगि	१०	६
धुवसीलया	८	४०
धूमकेउ	२	६
धूया	७	१५
धूवणेति	३	६
धेणु	७	२५
धोय	५(१)	७६
धोयण	६	५१

न	१	२
नई	७	३८
नंगल	७	२८
नक्खत्त	८	५०
	६(१)	१५
नगर	४ सू०	१३, १५
	५(१)	२
	२ चू०	८
नगिण	६	६४
नच्चा	५(१)	१६, २६, ७७
	७	३६, ४०
	८	३४, ४६, ५६
	६(१)	२, ४
	६(३)	१
नत्तुणिय	७	१८
नत्तुणिया	७	१५
नमस *		
-नमसे	६(१)	११
-नमसंति	१	१
	६(२)	१५
नमोक्कार	५(१)	६३
नर	५(२)	४६
	७	५, ५३
	८	५६
	६(२)	४, ७, ६, २२

नर	६(३)	६	नायपुत्त	५(२)	४६
	१ चू०	१८	नारी	२	६
नरय	५(२)	४८		८	५२, ५४, ५५
	१ चू०	६		६(२)	७, ६
नव	६	६७	नालिआ	५(२)	१८
नह	७	५२	नालीया	३	४
नहंसि	६	६४	नावा	७	२७, ३८
ना *			नास *		
-नाहिइ	४	१०, १२, १३	-नासेइ	८	३७
नाग	२	१०	नास	६(१)	५
	६(१)	४	नासण	८	३७
	१ चू०	८, १२	नासा	८	५५
नाण	४	१०, २१, २२	निउण	६	८
	६	१		६(३)	१५
	७	४६		२ चू०	१०
	६(४)	३	निव *		
	१०	७	-निदामि	४	सू० १० से १६ १८ से २२
नाणा	६(१)	११	निकाय	४	सू० ६, १०
नाणापिड	१	५	निक्खंत	८	६०
नाभि	७	२८	निक्खम *		
नाम	४	सू० १ से ३	-निक्खमे	५(२)	४
नाम *			निक्खम्म	१०	१, २०
-नामेइ	७	४	निक्खित्त	५(१)	५६, ६१
नामविज्ज	७	१७, २०	निक्खिवित्ताणं	५(१)	३०
नाय	६(२)	२१	निक्खिवित्तु	५(१)	४२

निक्खिद *

-निक्खिदे	५(१)	८५
निगामसाइ	४	२६
निग्गंथ	३	१, १०, ११
	६	४, १०, १६,
		२५, ४६,
		५२, ५४
निग्गंथत्त	६	७
निग्गहण	३	११
निच्च	५(२)	३६
	६	२२
	८	३, ११, १६,
		५३
	६(१)	१२
	६(३)	४
	६(४)	१, ४
	१०	१, १२, २१
	२ चू०	१५
निच्छिद्य	१ चू०	१७
निज्जरट्टिय	६(४)	४
निज्जरा	६(४)	सू० ६
निज्जायकवरयअ	१०	६
निज्झा *		
-निज्झाए	८	५४, ५७
निट्ठाण	८	२२
निट्ठिय	७	४०

निण्हव *

-निण्हवे	८	३२
निहा	८	४१
निहिंस *		
-निहिंसे	७	१०
	८	२२
निहेसवत्ति	६(२)	१५, २३
निद्धणे	७	५७
निप्पुलाअ	१०	१६
निमंत *		
-निमंतए	५(१)	३७, ३८
-निमतेज्ज	५(१)	६५
निमित्त	८	५०
नियच्छ *		
-नियच्छंति	६(२)	१४
नियट्ट *		
-नियट्टेज्ज	५(१)	२३
नियडि (निकृति)	५(२)	३७
नियडि		
(निकृति) (मत्त)	६(२)	३
नियत्तण	६(३)	३
नियत्तिय	५(२)	१३
नियम	२ चू०	४
नियाग	३	२
	६	४८
निरअ (य)	१ चू०	१०, ११

निरासय	६(४)	४ -
निरुभित्ता	४	२३, २४
निखक्केस	१ चू०	सू० १
निवार *		
-निवारए	२	१
निवेस *		
-निवेसयति	६(३)	१३
निव्वडिय	६	२४
निव्वाण	५(२)	३२
निव्वाव *		
-निव्वावए	८	८
-निव्वावेज्जा	४	सू० २०
निव्वावत	४	सू० २०
निव्वाविथा	५(१)	६३
निव्विद *		
-निव्विदए	४	१६, १७
निव्विगइ	२ चू०	७
निसत	६(१)	१४
निसन्न	५(१)	४०
निसिर *		
-निसिर	८	४८
निसीअ *		
-निसीए	८	४४
-निसीएज्ज	५(२)	८
-निसीएज्जा	४	सू० २२
	५(१)	४०

-निसीएज्जा	८	५
-निसीयावेज्जा	४	सू० २२
निसीयंत	४	सू० २२
निसीहिया	५(२)	२
निसेज्जा	३	५
	६	५४, ५६, ५६
निस्सकिय	५(१)	५६, ७६
	७	१०
निस्सर *		
-निस्सरई	२	४
निस्सिंचिया	५(१)	६३
निस्सिय	१०	४
निस्सेणि	५(१)	६७
निस्सेस	६(२)	२
निहा *		
-निहावए	१०	८
-निहे	१०	८
निहुअ	२	८
	६	३
निहुअप्प	६	२
निहुइंदिय	१०	१०
नीम	५(२)	२१
नीय	५(२)	२५
	६(२)	१७
नीयदुवार	५(१)	२०
नीरय	३	१४
	४	२४, २५

नोलिआ	७	३४
नीसा (दे०)	५(१)	४५
नीसेस	५(१)	८८
नु	२	१
	६(१)	५
नेउणिय	६(२)	१३
नेरइय	४	सू० ६
	१ चू०	१५
नो	२	४

प

पहरिकक्या	२ चू०	५
पइट्टिय	४	सू० २२
पईव	६	३४
पउज *		
-पउजे	८	४०
	६(१)	१२
	६(३)	२, ३
पउत्त	५(१)	६७
पउम	५(२)	१४, १६
पउमग	६	६३
पओअ	६(२)	१६
पओय	७	५२
पक	१ चू०	७
पच	३	११

पंच	४	सू० १७
	- ६(३)	१४
	१०	५
पंचम	४	सू० १५
पंचिदिय	४	सू० ६
	७	२१
पंजलि	६(१)	१२
पंडा	७	१२
पंडिय	२	११
	५(२)	२६, २७
	६(४)	१
	१ चू०	११
पंत	५(२)	३४
पसुखार	३	८
पकुव्व *		
-पकुव्वई	५(२)	३२
	६(२)	१६
पक्क	७	३२, ३४, ४२
पक्कम *		
पक्कमति	३	१३
पक्खओ	८	४५
पक्खंद *		
-पक्खदे	२	६
पक्खलंत	५(१)	५
पक्खि	७	२२

पक्खोड * -पक्खोडावेज्जा ४ सू० १६ -पक्खोडेज्जा ४ सू० १६ पक्खोडंत ४ सू० १६ पगइ ६(१) ३ पगड ५(१) ४७, ४६, ५१, ५३ ८ ५१ १ चू० सू० १ पञ्चग ८ ५७ पञ्चक्खओ ६(३) ६ पञ्चक्ख ५(२) २८ पञ्चक्ख * -पञ्चक्खामि ४ सू० ११ पच्चुपन्न ७ ८ से १० पच्छा ५(१) ६१ ६(२) १ १ चू० २ से ८ पच्छाकम्म ५(१) ३५ ६ ५२ पज्जय ७ १८ पज्जव १ चू० १६ पज्जालिया ५(१) ६३ पज्जया ७ १५ पज्जुवास * -पज्जुवासेज्जा ८ ४३ पट्टवेत्ताणं ५(१) ६३	पट्टिय २ चू० २ पड * -पडइ ६ ६५ पडंत ५(१) ८ पडागा १ चू० सू० १ पडिआय * -पडिआयई १० १ पडिकुट्ट ५(१) १७ पडिकोह ६ ५७ पडिकंत ४ सू० ६ पडिकम्म * -पडिकम्मामि ४ सू० १० से १६, सू० १८ से २२ -पडिकम्मे ५(१) ८१, ६१ ५(२) ४ पडिगाह * -पडिगाहेज्ज ५(१) २७, ५६, ७७ ६ ४७ ८ ६ पडिगाह ४ सू० २३ ५(२) १ पडिघाअ ६ ५७ पडिच्छ * -पडिच्छेज्जा ५(१) ३६, ३८ पडिच्छन्न ५(१) ८३ पडिच्छन्न ८ ५५
---	---

पडिच्छिद्य	५(१)	८०.
पडिजागर *		
-पडिजागरेज्जा	६(३)	१
पडिण	६	३३
पडिणीय	६(३)	६
पडिनिस्सिअ	४	सू० २२
पडिन्नव *		
-पडिन्नवेज्जा	२ चू०	८
पडिपुच्छिऊण	५(१)	७६
पडिपुण	६(४)	५
पडिपुन्न	८	४८
पडिबंध	२ चू०	१३
पडिबुद्धजीवि	२ चू०	१५
पडिबोह *		
-पडिबोहएज्जा	६(१)	८
पडिमा	१०	१२
पडिय	१ चू०	२
पडियरिय	६(३)	१५
पडियाइक्ख *		
-पडियाइक्खे	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६
	५(२)	१५, १७, २०

पडियाइयण	१ चू०	सू० १
पडिलेह *		
-पडिलेहए	५(१)	३७
-पडिलेहसि	५(२)	५
-पडिलेहेज्जा	५(१)	२५
	८	१७
पडिलेहिता	८	१८
पडिलेहिताण	५(१)	८२
	६(२)	२०
पडिलेहिय	४	सू० २३
पडिलेहिया	५(१)	८१, ८६, ८७
पडिवज्ज *		
-पडिवज्जई	४	२३, २४
पडिवज्जमाण	६(१)	२
पडिवज्जिया	१०	१२
पडिसलीण	३	१२
पडिसमाहर *		
-पडिसमाहरे	८	५४
पडिसाहर *		
-पडिसाहरेज्जा	२ चू०	१४
पडिसेह *		
-पडिसेहए	६(२)	४
पडिसेहिय	५(२)	१३
पडिसोय	२ चू०	२, ३
पडिहयपन्नक्खाय-		
पावक्कम्म	४	१८ से २३

पदम	४	सू० ११
	४	१०
	६	८
पणम	५(१)	५६
	८	११, १५
पणास *		
-पणासेइ	८	३७
पणिय	७	४५
पणियट्ट	७	३७, ४६
पणिहाय	८	४४
पणीय	५(२)	४२
पणीयरस	८	५६
पणुल्ल *		
-पणुल्लेज्जा	५(१)	१८
पत्त (पत्र)	४	सू० २१
	६	३७
	८	६
	६(२)	१
पत्त (प्राप्त)	६(२)	६, ६, ११
पत्तेय	१०	१८
	१ चू०	सू० १
पत्थ *		
-पत्थए	५(२)	२३
	६	६०
	८	१०, २८
पन्नत्त	६(४)	सू० १ से ३

पन्नत्ति	८	४६
पन्नव	७	१ से ३, १३,
		१४, २४, २६,
		२६, ३०, ३६,
		४४, ४७
पवत्त *		
-पवत्तेज्जा	५(२)	८
पवत्तु	१ चू०	४
पमव	६(२)	१
पभास *		
-पभासई	६(१)	१४
पमज्जित्तु	८	५
पमज्जिय	४	सू० २३
पमाण	२ चू०	११
पमाय	६	१५
	६(१)	१
पमेइल	७	२२
पय	८	३१, ५०
	६(१)	११
	६(४)	सू० ४ से ७
	६(४)	६
	१ चू०	सू० १
पय *		
-पए	१०	४
-पयावए	१०	४
-पयावेज्जा	४	सू० १६

दसवेआलिय शब्द-सूची

५१

पयध	२ चू०	७
पयंग	४	सू० ६, २३
पयत्तच्छिन्न	७	४२
पयत्तपक्क	७	४२
पयत्तलट्ठ	७	४२
पयल *	()	
-पयलेंति	१ चू०	१७
पयाय	७	३१
पयाव	६	३४
पयावत	४	सू० १६
पर	५(१)	४
	६	११, १४, ३७
	७	१३, ४०, ५४
		५७
	८	४७, ६१
	६(१)	५
	६(२)	१३
३	६(४)	सू० ५
	१०	८, १८, २०
	२ चू०	११, १३
परक्कम *		
-परक्कमे	५(१)	६, २४
	५(२)	७
-परक्कमेज्जा	८	४०
परक्कम	२ चू०	४
परक्कम्म	८	३२

परगव	७	४३, ७, ७
परघर	५(२)	२७
परम	६	५
"	६(२)	२
परमग्गसूर	६(३)	८
परम दुच्चर	६	५
परमाहम्मिय	४	सू० ६
परम्मूह	६(३)	६
परलोग	६(४)	सू० ६, ७
परागार	८	१६
परिकिन्न	१ चू०	७
परिक्खभासि	७	५७
परिगय	६(२)	८
परिगिज्झ	८	३३
	६(३)	२
परिगेण्ह *		
-परिगेण्हज्जा	४	सू० १५
परिगेण्हत	४	सू० १५
परिगह	४	सू० १५
	६	२०
परिगह *		
-परिगहे	६	२१
परिज्जुण	६(२)	८
परिट्ठप्प	५(१)	८१, ८६
परिट्ठप्प *		
-परिट्ठवेज्जा	५(१)	८१

पत्स		
पत्सइ	५(२)	३७, ४३
पहाण	४	२७
पहार	६(१)	८
	१०	११
पहारगाढ	७	४२
पहोण	३	१३
पहोइ	४	२६
पाइम	७	२२
पाईण	६	३३
पाण (प्राण)	४	सू० ६, ११
	४	१ से ६
	५(१)	३, ५, २०,
		२६
	५(२)	७
	६	८, १०, २३,
		२४, २७, ३०,
		४१, ४४, ५५,
		५७, ६१
	७	२१
	८	२, १२, १५
पाण (पान)	४	सू० १६
	५(१)	१, २७, ३१,
		३६, ४१ से
		४४, ४८, ५०,
		५२, ५४, ५८,

पाण (पान)		६०, ६२, ६४,
		७५, ८६
	५(२)	३, १०, १३,
		१५, १७, २८,
		३३
	६	४६, ५०
	८	१६
	६(३)	५
	२ चू०	६, ८
पाणक (ग)	५(१)	४७, ४९, ५१,
		५३, ५७, ५९,
		६१
	१०	८, ९
पाणहा	३	४
पाणाइवाय	४	सू० ११
पाणिपेज्जा	७	३८
पामिच्च	५(१)	५५
पाय (पाद)	३	४
	४	सू० १८, २३
	५(१)	७, ६८
	८	४४, ५५
	६(१)	५, १०
	६(२)	१७
	१०	१५
पाय (पात्र)	६	१६, ३८, ४७
	८	१७

पायखज्ज	७ ७	३२	-पासे	२ चू०	१४
पायव	६(२)	१२	-पासेज्ज	८	१२
पारत्त	८	४३	-दीसंति	६(२)	५ से ७
पारेत्ता	५(१)	६३	पास	७ ४	६
पाव	४	७ से ६	पासवण	८	१८
		१५, १६	पासाय	५(१)	६७
	५(२)	३२, ३५		७	२७
	६	६७	पाहन्न	६(३)	५
	७	(५, ११)	पिअ *		
	८	३६	-पिए	२१०	(२)
	१०	१८	-पियावणे	२१०	२
	१ चू० सू०	१	पिउस्सिया	७	१५
	२ चू०	१०	पिंड	६	४७
पाव *			पिण्डपाय	५(१)	८७
-पावई	६(१)	१७	पिंडेसणा	५	
पावग (य)			पिज्जेमाण	५(१)	४२
(पापक)	४	१ से ६	पिट्ठ	५(१)	३४
		१०, ११		५(२)	२२
	८	२२	पिट्ठो	८	४५
	६(४)	४	पिट्ठिमस	८	४६
	१०	७	पिण्णाग	५(२)	२२
पावग (पावक)	६	३२	पिय	२	३
	६(१)	६७	पियाल	५(२)	२४
पावार	५(१)	१८	पिव	५(१)	८
पास *				५(२)	३६, ३७
-पासइ	२ चू०	१३	पिव	८	५४

पिवासा	८	२७
	६(२)	८
	१ चू०	१६
पिवीलिया	४	सू० ६, २३
पिसुण	६(२)	२२
पिहिय	४	६
	५(१)	१८, ४५
पिहुखज्ज	७	३४
पिहुज्जण	१ चू०	१३
पिहुण (दे०)	४	सू० २१
पिहुणहत्य (दे०)	४	सू० २१
पीइ	८	३७
पीढ	५(१)	६७
पीढा (य)	४	सू० २३
	५(१)	४५
	६	५४
	७	२८
पीण *		
-पीणेइ	१	२
पीणिय	७	२३
पील *		
-पीलेइ	८	३५
पीला	५(१)	१०
पुंछ *		
-पुंछे	८	७
-पुंछेज्ज	८	१४

पुगल	४	सू० २१
	५(१)	७३
पुच्छ *		
-पुच्छेज्जा	५(१)	५६
-पुच्छंति	६	२
पुज्ज	६(३)	१ से ६
		८ से १४
पुड	८	६३
पुट्ठ (पृष्ट)	८	२२
पुट्ठ (स्पृष्ट)	७	५
पुढविकाइय	४	सू० ३
पुढविकाय	६	२६ से २८
पुढविजीव	५(१)	६८
पुढवी	४	सू० ४, १८
	८	२, ४
	१०	२, ४, १३
पुढो	४	सू० ४ से ८
पुण	४	सू० ६
पुणभभव	८	३६
पुण (पुण्य)	४	१५, १६
	५(१)	४६
	१०	१८
	१ चू०	सू० १
पुण्ण (पूर्ण)	७	३८
पुत्त	२ चू०	१
पुत्त	७	१८
	१ चू०	७

पुष्प	१	२ से ४	पुष्करत्त	२ चू०	१२
	५(१)	२१, ५७	पून्वि	५(१)	६१
	५(२)	१४, १६		१ चू०	सू० १
	८	१५	पूअ *		
	६(२)	१	-पूययामि	६(१)	१३
पुम	७	२१	-पूयंति	५(२)	४५
	६(३)	१२		६(२)	१५
पुरओ	५(१)	३	पूइअ	५(२)	४३
	८	४५	पूइकम्म	५(१)	५५
पुरक्कार	१ चू०	सू० १	पूइम	१ चू०	४
पुरत्थ	८	२८	पूई	५(१)	७८, ७९
पुराण	६(४)	४		५(२)	२२
	१०	७	पूय	५(१)	७१
पुरिस	५(२)	२६	पूयण	१०	१७
	७	१६, २०		२ चू०	६
पुरिसकारिया	५(२)	६	पूयणट्ठि	५(२)	३५
पुरिसोत्तम	२	११	पेच्छ *		
पुरेकड	६	६७	-पेच्छइ	८	२०
	७	५७	पेम	८	२६, ५८
	८	६२	पेह *		
	६(३)	१५	-पेहेइ	६(४)	२
पुरेकम्म	५(१)	३२	पेहमाण	५(१)	३
	६	५३	पेहा	२	४
पुल	१०	१६	पेहाए	७	२६, ३०
पुव्व	३	१५		८	१३
पुव्वउत्त	५(२)	३	पेहिय	८	५७

५८

परिशिष्ट-१

पोगल	८	६,५८,५६
पोय	८	५३
	१ चू०	सू० १
पोयय	४	सू० ६
पोरबीय	४	सू० ८

फ

फल्ल	५(२)	२६
	७	११
फल	३	७
	४	१ से ६
	५(२)	२४,४७
	७	३२,३३
	८	१०
	६(१)	१
	६(२)	१

फल्लग	४	सू० २३
	५(१)	६७
फल्लह	५(२)	६
	७	२७
फाणिय	५(१)	७१
	६	१७
फास	८	२६

फास *

-फासे	४	१६,२०
	१०	५
फासुय	५(१)	१६,८२,६६
	८	१८

कुम * (दि०)

-कुमावेज्जा	४	सू० २१
-कुमेज्जा	४	सू० २१
कुमंत	४	सू० २१

व

वंध	४	१५,१६
	६(२)	१४
	१ चू०	सू० १

बंध *

-बंधड	६	६५
-बंधई	४	१ से ६
बंधण	१०	२१

	१ चू०	७
बंधचेर	५(१)	६
	६	५७,५८

	६(१)	१३
बंधयारि	५(१)	६

	८	५३,५५
बद्ध	१ चू०	७
बण्य	७	१८

बलाहय	७	५२
बहिद्धा	२	४
बहु	४	सू० ६, १३
बहुभट्टिय	५(१)	७३
बहुउज्जिम्य		
धम्मिय	५(१)	७४
यहुकटय	५(१)	७३
बहुनिव्वट्टिम	७	३३
बहुवाहड	७	३६
बहुल	६	३६, ६६
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	४
बहुवित्थडोदगा	७	३६
बहुविह	४	१४, १५
बहुसभूय	७	३३, ३५
बहुसम	७	३७
बहुसलिला	७	३६
बहुस्सुय	८	४३
	१ चू०	६
वायर	४	सू० ११
बाल	६	७
	१ चू०	१
बाहिर	४	सू० २१
	४	१७, १८
	८	६, ३०

बाहु	४	सू० २३
	१ चू०	सू० १
बिदु	१ चू०	सू० १
विड	६	१७
विल्ल	५(१)	७३
विहेलग	५(२)	२४
वीय (बीज)	३	७
	४	सू० २२
	५(१)	३, १७, २१, २६, २६, ५७
	५(२)	२४
	६	२४
	८	१०, ११, १५
	१०	३
वीय (द्वितीय)	८	३१
	२ चू०	११
बीयत्तह	४	सू० ८
बुद्ध	१	५
	५(२)	५०
	६	२१, २२, ३६, ५४, ६६
	७	२, ५६
बुद्धवयण	१०	१, ६
बुद्धि	८	३०
	६(१)	३, १४, १६
बुद्धिम	१ चू०	१८

वू *			भत्त	१	३
बूया	६	११		५(१)	१,४१,४३,
	७	१७,२०,२३,			४४,४८,५०,
		२५			५२,५४,५८,
वेइदिय	४	सू० ६			६०,६२,६४.
बोवळ	५(१)	३४			८६
बोहि	५(२)	४८		५(२)	३,७,१०,
	१ चू०	१४			१३,१५,१७,
					२८
				६(३)	५
				२ चू०	६
भंग	४	सू० २१	भद्गा	५(२)	३३
भंत (भ्रान्त)	४	सू० ६		८	२२
भंत (भदन्त)	४	सू० १० ते १६,	भमर	१	२,४
		१८ ते २३	भय *		
भक्त्त *			-भएज्ज	८	५१
-भक्त्ते	६(१)	७,९	भय	४	सू० १२
भक्त्तर	८	५४		६	११
भगव	४	सू० १ ते ३		७	५४
	६(४)	सू० १		८	२७,५३
भगवंत	६(४)	सू० १ ते ६		१०	११,१२
भज्जिभ	७	३४	भव *		
भज्जिय	५(२)	२०	-भवन्ति	१	५
भट्ट	७	१६	भवंत	६	२
भट्टा	७	१६		८	१
भट्ट	१ चू०	१२	भविताणं	४	१८,१६

भस्स *			भासा	७	११, २६, ५६
-भस्सई	६	७		८	४७, ४८
भाइणेज्ज	७	१८		६(३)	६
भाइणेज्जा	७	१५	भासिय	५(२)	४६
भाअ *				६	२५
-भायए	१०	१२		२ चू०	१
भायण	५(१)	३२, ३५, ३६, ६६	भासुर	६(३)	१५
भारह	६(१)	१४	भिद *		
भाव	२	६	-भिदावेज्जा	४	सू० १८
	७	१३	-भिदे	८	४
२ चू०	८			६(१)	६
भाव *			-भिदेज्ज	६(१)	६
-भावए	६(३)	१०	-भिदेज्जा	४	सू० १८
भावतेण	५(२)	४६	भिदत	४	सू० १८
भावसवअ	६(४)	५	मिक्खा	५(१)	१, ६६
भाबियप्प	६(३)	१०		५(२)	५०
१ चू०	६		मिक्खु	४	सू० १८ से २३
भास	६(१)	३		५(१)	६६, ८७
भास *				५(२)	४ से ६, २५, ३६, ३८, ५०
-भासेज्ज	७	१, २		६	६१, ६५
भासत	४	७		८	१, २०
भासमाण	४	६		६(१)	१५
	५(१)	१४		६(२)	१६
	८	४६		१०	१ से २१
भासा	७	१, ४, ७,		२ चू०	६, ११

मिक्खुणी	४	सू० १८ से २३	भूमिभाग	५(१)	२५
मिति	४	सू० १८	भूय	४	१ से ६, ६
	८	४		५(१)	५
मिक्खिमूल	५(१)	८०		६	३, ५, ३४,
मिक्खुगा (दि०)	६	६१			५१
भीम	६	४		७	११, २६
भुंज *				८	१२, १३, ५०
-भुंजंति	०	२		१ चू०	सू० १
	६	२५, ५२	भूयस्त्व	७	३३
-भुंजादेज्जा	४	सू० १६	भेत्तुं	६(१)	८
-भुंजे	५(०)	१	भेयाययणवज्जि	६	१५
	१०	८६	भेरव	१०	११, १२
-भुंजेज्ज	५(१)	८३, ६६ ६७	भेसज	८	५०
-भुंजेज्जा	४	सू० १६	भो	६(१)	१२
	५(१)	६६		१ चू०	सू० १
	८	०३		२	११
भुंजंत	८	सू० १६	भोग	८	३४
	८	७, ८		१ चू०	सू० १
	६	५०		१ चू०	१ १४, १६
भुंजमाण	८	५	भोच्चा	५(२)	३३
	५(१)	३७, ३८, ८४		१०	६
भुंजित्तु	१ चू०	१८	भोच्चाणं	५(२)	२
भुज्ज	१ चू०	सू० १	भोत्तुं	२	६
भुज्जमाण	५(१)	३६		५(१)	८७
भुत्त	५(१)	३६	भोय	२	३
भूमि	५(१)	२४		४	१६, १७
	८	५२			

भोयण	५(१)	२७, २८, ३१, ३६, ४२, ६८	मच्छ	१ चू०	६
	५(२)	२६, ३३	मज्ज *		
	६	२२	-मज्जइ	६ (४)	२
	८	१६, २३, ५६	-मज्जेज्जा	८	३०
भोयणजाय	५(१)	७४	मज्जग	५(२)	३६
भोयराय	२	८	मज्जप्पमाय	५(२)	४२
			मज्झ	७	५५
				६(१)	१४, १५
				१ चू०	सू० १
				१ चू०	१५
मड	५(१)	७६	मट्टिया	५(१)	३३
	६(२)	२२	मड	७	४१
	२ चू०	१	मण	१	१
मडअ (दे०)	७	२८		२	४
मगल	१	१		४	सू० १० से १६, सू० १८ से २३
मच	५(१)	६७		५(२)	२३
	६	५३		६	२६, २६, ४०
मन	८	५०			४३
	६(१)	११		८	३, १०, १६
मथु	५(१)	६८			२८
	५(२)	२४		६(१)	१०
मव	५(१)	२			७
	६(१)	२ से ४		१ चू०	१५
मगदतिया (दे०)	५(२)	१४, १६		=	५८
मगा	५(१)	६			
	२ चू०	११	मपुण्ण		

मणुय	४	सू० ६
	७	५०
	१ चू०	सू० १
मणुस्स	७	२२
	१ चू०	सू० १
मणोसिला	५(१)	३३
मत्त (मत्त)	१०	१६
मत्त (अमत्र)	६	५१
मत्थयत्थ	४	२५, २६
मद्दव	८	३८
मन्त *		
-मन्तंति	६	३६, ६६
-मन्नेज्ज	१०	५
ममत्त	२ चू०	८
ममाइय	६	२१
ममाय *		
-ममायंति	६	४८
मय	६(४)	२
	१०	१६
मया	६(१)	१
मरण	२	७
	६(४)	७
	१०	१४, २१
मरणंत	५(२)	३६, ४१, ४४
मरिज्जिउ	६	१०
मल	८	६२
	६(३)	१५

मल्ल	३	२
मसाण	१०	१२
मह	५(१)	६६
	६	१६
	१०	२०
	१ चू०	१०
महग्घ	७	४६
महप्प	८	३३
महब्भय	६(३)	७
	१०	१४
महल्ल	७	२६, ३०
महल्लग (य)	५(२)	२६
	७	२५
	६(३)	१२
महव्वय	४	सू० ११ से १५,
		१७
	१०	५
महाकाय	७	२३
महागर	६(१)	१६
महाफल	८	२७
महायत्त	६(२)	६, ६, ११
महायारक्कहा	६	
महालय	७	३१
महावाय	५(१)	८
महावीर	४	सू० १ से ३
	६	८

दसवेआलिय शब्द-सूची

६५

महि	५(१)	३
	६	२४
महिद्विय	६(४)	७
महिया	४	सू० १६
	५(१)	८
महु	५(१)	६७
महुकार	१	५
महुर	५(१)	६७
महेसि	३	१, १०, १३
	५(१)	६६
	६	२०, ४८
	८	२
	६(१)	१६
	१ चू०	१०
मा	२	८
	५(२)	३१
	७	५०, ५१
माउल	७	१८
माउल्ला	५(२)	२३
माउस्सिया	७	१५
माण	५(२)	३५
	८	३६ से ३९
	६(४)	२
माण	६(३)	१३
माणरिह	६(३)	१३
माणव	७	५२, ५४

५२

माणस	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
माणिम	१ चू०	५
माणिय	६(३)	१३
माणुस	४	सू० १४
	४	१६, १७
मामग	५(१)	१७
माया (मात्रा)	५(२)	१
माया (माया)	८	३६ से ३९
मायण्ण	५(२)	२६
मायामोसा	५(२)	३८, ४६
	८	४६
मायासल्ल	५(२)	३५
माख्य	८	२
मार		
मारे	६(१)	७
मालोहड्ड	५(१)	६६
माहण	५(२)	१०
	६	२
मिअ	६(२)	३
मिच्छा	६(१)	२
मित्त	८	३७
मिय	५(१)	२४
	७	५५
	८	१६, ४८
मियासण	८	२६

मिहोक्ता	८	४१	मुम्भुर	४	सू० २०
मीसजाय	५(१)	५५	मुसा	४	सू० १२
मुअ *				६	११
-मुच्चड	२ चू०	१६		७	२,५
-मुच्चई	६(४)	७	मुसावाय	४	सू० १२
मुच *				६	१२
-मुच	७	४५	मुह	४	सू० २१
	६(३)	११	मुहाजीवि	५(१)	६६,१००
मुड	४	१८,१६		८	२४
	६	६४	मुहादाड	५(१)	१००
मुक्क	६(१)	१५	मुहालद्ध	५(१)	६६
मुच्छा	६	२०	मुहुत्तदुक्ख	६(३)	७
मुच्छिय	१ चू०	१	मूल	३	७
मुणालिया	५(२)	१८		५(१)	७०
मुणि	५(१)	२,११,१३,		६	१६
		२४,८८,६३		८	१०,३६
	५(२)	६,३४		६(२)	१,२
	६	१५	मूलगत्तिया	५(२)	२३
	७	४०,४१,५५	मूलय (ग)	३	७
	८	७,८,४४,		५(२)	२३
		४६	मूलबीय	४	सू० ८
	६(३)	१४,१५	मेत्त	६	१३
	१०	१३,२०	मेरग	५(२)	३६
	२ चू०	६	मेह	७	५२
मुत्त (मुक्त)	१	३	मेहावि	५(१)	८३
मुत्त (मूत्र)	५(१)	१६		५(२)	४२,४६

मेहावि	८	१४	रण	४	सू० १३, १५
	६(१)	१७	रम *		
	६(३)	१४	-रमंतो	१ चू०	६
मेहुण	४	सू० १४	-रमे	८	४१
	६	१६, ६४	-रमेज्ज	१ चू०	११
मोक्ख	४	१५, १६	-रमेज्जा	६(१)	१०
	५(१)	६२	रय (रत)	१	३, ५
	६(१)	५, ७, ६, १०		४	२७
	६(२)	२, २२		५(२)	२६
	१ चू०	सू० १		६	१, १७, ६७
मोसा	६	१२		७	४६
मोह	१ चू०	८		८	४१, ६२
				६(३)	५, १४
				६(४)	३ से ५
य				१०	६, १२, १४,
य	१	२			१६
याण *				१ चू०	१०, ११
-याणई	४	१२	रय (रजस्)	४	२०, २१
-याणाइ	४	१२		५(१)	७२
	५(२)	४७		६(३)	१५
			रयहरण	४	सू० २३
र			रस	१	२
रइवक्का	१ चू०			५(२)	३६, ४२
रक्खियब्ब	२ चू०	१६		६(२)	१
रज्ज	१ चू०	४		१०	१७

रसदया	७	२५
रसनिज्जूढ	८	२२
रसय	४	सू० ६
रस्ति	१ चू०	सू० १
रह	६(२)	१६
रहजोगा	७	२४
रहस्त (रहस्थ)	५(१)	१६
रहस्त (ह्रस्व)	७	२५
राइ	४	सू० १६
राइणिय	८	४०
	६(३)	३
राइभत्त	३	२
राइभोयण	४	सू० १६, १७
	६	२५
राओ	४	सू० १८ से २३
	६	२३, २४
राग	२	४, ५
	८	५७
	६(३)	११
राय	५(१)	१६
	६	२
	१ चू०	४
रायपिड	३	३
रायमच्च	६	२
रासि	५(१)	७
रिक्त	३	१३

रिद्धिमंत	७	५३
रोअ *		
-रोयंति	१	४
रुक्ल	५(२)	१६
	७	२६, ३०, ३१
	८	२, १०
रुय	४	सू० ६
रुप्य	८	६२
रुढ	४	सू० २२
	७	३५
रुव	८	१६
	१०	१६
रुवतेण	५(२)	४६
रोअ *		
-रोयए	५(१)	७७
रोइय	१०	५
रोगि	७	१२
रोम	६	६४
रोमालोण	३	८
रोयंत	५(१)	४२
ल		
लक्ख	२ चू०	२
लज्जा	५(२)	५०
	६	१६

लज्जा	६(१)	१३
लज्जासम	६	२२
लद्ध	२	३
	५(१)	६७
	२ चू०	२
लद्धु	५(२)	३१, ३३
	८	१, २६
	६(३)	४
लद्धूण	५(२)	४७
लभ *		
-लब्धामो	१	४
-लब्धिही	५(२)	४८
-लभेज्जा	२ चू०	१०
लभित्ता	१०	८, ६
लभित्तु	४	२८
लयण	८	५१
लया	४	सू० ८
ललिङ्गदिय	६(२)	१४
लव *		
-लवे	७	४०, ४८
	८	५२
-लवेज्ज	७	१७
	८	२१
लवण	५(१)	६७
लविय	८	५७

लह *		
-लहई	८	४२
-लहई	७	५५
लहुत्त	५(२)	१२
लहुभूयविहारी	३	१०
लहुत्सग	१ चू०	सू० १
लाइम	७	३४
लाभ	८	२२, ३०
	१०	१६
लाभमट्टिम	५(१)	६४
लुद्ध	५(२)	३२
लूस *		
-लूसए	५(१)	६८
लूसिए	१०	१३
लूहवित्ती	५(२)	३४
	८	२५
लेलु	४	सू० १८
	८	४
लेव	५(१)	४५
	५(२)	१
लोम (ग)	१	३
	४	२२, २३, २५
	६	५, ८, १२, १५
	७	४८, ५७
	६(२)	७
	२ चू०	३, १५

लोढ (दे०)	५(१)	४५	वन्द *		
लोण	३	८	-वन्दे	५(२)	३०
	५(१)	३३	-वन्देज्जा	६(२)	१७
	६	१७	वन्दण	२ चू०	६
लोद्ध	६	६३	वन्दमाण	५(२)	२६
लोभ	५(२)	३१	वन्दिल	५(२)	३०
	६	१८	वन्दिम	१ चू०	३
	८	३६ से ३६	वक्क	८	३
लोह	४	सू० १२		६(३)	२
	७	५४	वक्ककर	६(३)	३
			वक्कसुद्धि	७	
			वच्च	५(१)	१६, २५
व			वच्छया	५(१)	२२
व (इव)	१	३	वज्ज		
	८	६१ मे ६३	-वज्जए	५(१)	११, ५५
	६(३)	१३		५(२)	४२
	१ चू०	३, ४, ७, १२,		६	२८, ३१, ३५,
		१७			३६, ४२, ४५
व (वा)	५(१)	५		७	४१
वड	८	४६	-वज्जयंति	६	१०, १६, ४६
वझमय	६(३)	६	-वज्जेज्ज	१०	२०
वत	२	७	वज्जंत	५(१)	३
	१०	१	वज्जिय	५(१)	६६
	१ चू०	सू० १	वज्झ	७	२२, ३६
वतय	२	६	वट्ट	७	३१

वट्ट *		
-वट्टइ	६(३)	३
वड्ड *		
-वड्डई	५(२)	३८
	८	३५
वड्डण	५(१)	११
	६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५, ५८
	८	३६
वण	७	२६, ३०
वणस्सइ	४	सू० ८
	६	४० से ४२
वणस्सइकाइय	४	सू० ३
वणिमय (दे०)	५(१)	५१
वणीमर्ग (दे०)	५(२)	१०, १२
	६	५७
वण्ण	६(४)	सू० ६, ७
वण्णिय	६	२२
वण्णिया	५(१)	३४
वत्तव्व	७	११
वत्ति	१ सू०	१५
वत्थ	२	२
	४	सू० १८, १९, २३
	५(२)	२८
	६	१६, ३८, ४७

वत्थिकम्म	३	६
वमण	३	६
वम *		
-वमे	८	३६
	१०	६
वय (वच्) *		
-वएज्जा	४	सू० १२
-वक्खामो	७	६
-वायावेज्जा	४	सू० १२
वय (व्रत-)	४	सू० १६
	५(१)	१०
	६	७, ६२
वय (वड्) *		
-वए	५(२)	२६
	७	६, १२, २२, २५, ३१, ३२, ३४, ३६, ३८, ४३, ४४, ५०, ५१
	६(२)	१६
-वएज्ज	७	३३, ५६
	६(२)	१८
-वएज्जा	७	५२, ५४
	१०	१८
-वयावए	६	११
वय (वचस्)	५(२)	४६

वय(वचस्)	६	१७, २६, २६,	वह *		
		४०, ४३	-वहई	६(२)	१६
	१०	७	वहण	१०	४
वय * (व्रज्)			वा	४	११
-वयाहि	७	४७	वा	१ चू०	२
वयंत	४	सू० १२	वाड	४	सू० ७
वयण	२	१०	वाडकाइय	४	सू० ३
	८	३३	वाडकाय	६	३६
	६(२)	१२	वाय	२	६
	६(३)	८		६	३८
	१०	५		७	५१
वयणंकर	६(२)	१२		१ चू०	१७
वयतेण	५(२)	४६	वाय	१०	१५
ववेय	१ चू०	१२	वायत	५(१)	८
वस	२	१	वाया	४	सू० १० से १६,
	१०	१			सू० १८ से २३
वस *				८	१२, ३३
-वसेज्जा	२ चू०	६, ११		६(३)	७
वसंत	१ चू० सू०	१		१ चू०	१८
वसाणुअ	५(१)	६		२ चू०	१४
वसुल (दि०)	७	१४, १६	वारधोयण	५(१)	७५
वसुला (दि०)	७	१६	वारय	५(१)	४५
वह	६	१०, ४८, ५७	वास (वर्ष)	५(१)	८
	६(१)	१		२ चू०	११
	६(२)	१४	वास (वास)	१ चू० सू०	१
	१ चू० सू०	१	वासंत	५(१)	८

दसवेआलिप शब्द-सूची

७३

वाससइ	८	५५
वासा	३	१२
वाहि	८	३५
वाहिम	७	२४
वाहिय	६	६, ५६, ६०
	७	१२
विइत्ता	६(१)	२
विइत्तु	१०	१४
विउल	५(२)	४२
	६(४)	६
विउलट्टाणभाइ	६	५
विउहिताण	५(१)	२२
विकत्थ *		
-विकत्थयई	६(३)	४
विककय	७	४६
	१०	१५
विककायमाण	५(१)	७२
विकखलिय	८	४६
विगप्पिय	८	५५
विगलित्तैदिय	६(२)	७
विग्गहूओ	८	५३
विजाण *		
-विजाणेज्जा	७	२१
विज्जमाण	५(१)	४
विज्जल	५(१)	४
विज्जमाय	१ चू०	१२

विडिम	७	३१
विणय	५(१)	८८
	७	१
	८	३७, ४०
	६(१)	१
	६(२)	२, ४, २२, २३
	६(३)	२, ३
	६(४)	१
विणयसमाहि	६	
	६(४)	सू० १ से ४
विणासण	८	३७
विणिगूह *		
-विणिगूहई	५(२)	३१
विणिच्छय	८	४३
विणिज्जा *		
-विणिज्जाए	५(१)	१५, २३
विणित्तए	५(१)	७८, ७६
विणिय	६(२)	२१
विणियट्ट *		
-विणियट्टंति	२	११
-विणियट्टेज्ज	८	३४
विणी *		
-विणिएज्ज	२	४, ५
विगीयतण्ह	८	५६
वितह	७	४
वित्ति	१	४

वित्ति	५(१)	६२
	५(२)	२६
	६	२२
विन्नाय	४	सू० ६
(विज्ञात)		
विन्नाय	८	५८
(विज्ञाय)		
विष्पइण्ण	५(१)	२१
विष्पमुक्क	३	१
विपिट्टिकुब्ब *		
-विपिट्टिकुब्बइ	२	३
विभूषण	३	६
विभूसा	६	६४
	८	५६
विभूसावत्तिय	६	६५, ६६
विमण	५(१)	८०
विमल	६	६८
	६(१)	१५
विमाण	६	६८
विय	८	४८
वियक्खण	५(१)	२५
	६	३
	८	१४
वियड	५(२)	२२
	६	६१
वियडभाव	८	३२

वियत्त	६	६
वियागर *		
-वियागरे	७	३७, ४५, ४६
वियाण *		
-वियाणई	४	१३, १४
	५(२)	३७
	१०	१५
वियाणंत	४	१३
वियाणिता	५(१)	११
	६	२८, ३१, ३५,
		३६, ४२, ४५
वियाणिया	८	३४
	६(३)	११
	१ चू०	१८
विरय	४	सू० १८ से २३
विरस	५(१)	६८
	५(२)	३३, ४२
	१०	१६
विराय *		
-विरायई	८	६३
	६(१)	१४
विरालिया	५(२)	१८
विराह *		
-विराहेज्जासि	४	२८
विस्स *		
-विस्संति	६(२)	१

विरेयण -	३	६
विलिह *	३	६
-विलिहावेज्जा	४	सू० १८
-विलिहेज्जा	४	सू० १८
विलिहत	४	सू० १८
विवज्ज*		
-विवज्जए	५(१)	१५, ७५
	५(२)	४६
	७	४, ७
	८	४१, ४६, ५५
-विवज्जयामि	२ चू०	१३
-विवज्जेज्जा	५(१)	३६
	६	२४
विवज्जअ	५(२)	४१, ४३
विवज्जइत्ता	१०	१६
विवज्जत	६	४६
विवज्जण	२ चू०	५, ६
विवज्जयत	१०	३
	२ चू०	१०
विवज्जिय	६	५५
	८	५१
विवज्जेत्ता	५(२)	४
विवङ्गण	८	५७
विवण्ण	५(२)	३३
विवण्णछंद	६(२)	८
विवत्ति	६	५७
	६(२)	२१

विवित्त	८	५२
विवित्तचरिया	२-चू०	—
विविह	५(१)	३६
	५(२)	२७, ३३
	६	२७, ३०, ४१
	—	४४
	८	१०, १२
	६(४)	—४—
	१०	८, ६, १२
	१ चू०	१८
विस	८	५६
	६(१)	६
	१ चू०	१२
विसम	५(१)	४
विसय	८	५८
विसीअ *		
-विसीएज्ज	५(२)	२६
विसीदत	२	१
विसुज्ज *		
-विसुज्जई	८	६२
विसुद्ध	६(३)	४
विसोत्तिया	५(१)	६
विसोहिठाण	६(१)	१३
विह	६(४)	सू० ४
विहगम	१	३

विहम्म *			बुग्गह	७	५०
-विहम्मड	१ चू०	७	बुग्गहिय	१०	१०
विहर *			बुच्च *		
-विहरामि	४	सू० १७	-बुच्चवति	१	५
-विहरे	८	५६		७	४८
-विहरेज्ज	२ चू०	१०	बुज्झ *		
-विहरेज्जासि	५(२)	५०	-बुज्झइ	६(२)	३
विहारचरिया	२ चू०	५	बुट्ठ	७	५१, ५२
विहि	५(२)	३		८	६
विहिंसंत	६	२७, ३०, ४१,	वुत्त	६	५, २०, ४८,
		४४			५४-
विहुयण	४	सू० २१		८	२
	६	३७		६(२)	१६
	८	६	वेणइय	६(१)	१२
वीअ *			वेय	६(४)	सू० ४
-वीए	१०	३	वेयइत्ता	१ चू०	सू० १-
-वीएज्ज	८	६	वेयावडिय	३	६
-वीएज्जा	४	सू० २१		२ चू०	६
-वीयावए	१०	३	वेर	६(३)	७
-वीयावेज्जा	४	सू० २१	वेरमण	४	सू० ११ से १७
वीयत	४	सू० २१	वेल्लुय	५(२)	२१
वीयण	३	२	वेल्लोइय	७	३२
वीयावेउण	६	३७	वेस	५(१)	६, ११
वीसम *			वेहिम	७	३२
-वीसमेज्ज	५(१)	६३	वोक्कंत	६	६०
वीसमंत	५(१)	६४	वोसट्ठ	५(१)	६१

वोसङ्गचत्तदेह	१०	१३
वोसिर *	-	-
-वोसिरामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
-वोसिरे	५(१)	१६
व्व	२	६
	८	४०
	१ चू०	५, ६

त्त

स	४	सू० ८
	४	१७, १८
	५(१)	८७
	६	६
	८	२
	२ चू०	१
सअ	५(१)	६
सआ	६	६८
सई	५(२)	२०
सइकाल	५(२)	६
सइत्तु	६	५३
सकट्टाण	५(१)	१५
सकण	६	५८
सकप्प	२	१
	१ चू०	सू० १

संकम	५(१)	४, ६५
संका	७	६
सकिय	५(१)	४४, ७७
	७	७
संकिलेस	५(१)	१६
सकुचिय	४	सू० ६
सखडि	७	३६, ३७
सग	१०	१६
संघट्ट		
-सघएट्ट	८	७
सघट्टइत्ता	६(२)	१८
सघट्टिया	५(१)	६१
सघाय	४	सू० २३
सजइदिय	१०	१५
संजम	१	१
	२	८
	३	१, १०
	४	१२, १३, २७
	६	१, ८, १६,
		४६, ६०, ६७
	७	४६
	८	४०, ६१
	६(१)	१३
	१०	७, १०
	१ चू०	सू० १

संजमजीविय	२ चू०	१५	संत	५(२)	११
संजय	२	१०		६(३)	१३
	३	११, १२		६(१)	५
	४ सू० १८ से २३		संभत	१ चू०	८
	४	१०	संताण	१ चू०	८
	५(१)	५ से ७,	संतुट्ट	५(२)	३४
		२२, ४१, ४३,	संतोस	६(३)	५
		४८, ५०, ५२,	संतोसओ	८	३८
		५४, ५६, ५८,	संथर		
		६०, ६२, ६४,	-संथरे	५(२)	२
		६६, ७७, ८३,	संथार	८	१७
		८६, ९७		६(३)	५
	५(२)	१, ८ से ११,	सथारग	४ सू० २३	
		१३, १५, १७,	संघि	५(१)	१५
		२८, ५०	संपडिलेहियव्व	१ चू० सू० १	
	६	१४, २६, २६,	संपविडज्ज		
		३४, ४०, ४३	-संपडिवज्जइ	६(४)	सू० ४
	७	४६, ५६	संपडिवाइय	२	१०
	८	३, ४, ६,	संपडिवाय		
		१३, १४, १६,	-संपडिवायए	६(२)	२०
		१८, २४	संपणोल्लिया	५(१)	३०
	१०	१५	सपत्त	५(१)	१
संजाय	७	२३	संपत्ति	६(२)	२१
संजोग	४	१७, १८	संपन्न	६	१
संठाण	८	५७		७	४६
संढिम्भ (दि०)	५(१)	१२		८	५१

संपमज्जिता	५(१)	८३
सपय	७	७
सपराय	२	५
संपत्तिसय	१ चू०	१८
सपहास	८	४१
	१०	११
संपाविउकाम	६(१)	१६
संपिक्ख *		
-संपिक्खई	२ चू०	१२
संपुच्छण	३	३
सफुस *		
-सफुसावेज्जा	४ सू०	१६
-सफुसेज्जा	४ सू०	१६
सफुसत	४ सू०	१६
सबाहुण	३	३
संवुड	२	११
सभिन्नवित्त	१ चू०	१३
समुच्छिय	७	५२
सरक्खण	६	२१
सलिह *		
-सलिहे	८(४)	७
सलिहिताण	५(२)	१
सलुचिया	५(२)	१४
सलोग	५(१)	२५
संवच्छर	२ चू०	११
सवर	४	१६, २०

सवर	५(२)	३६, ४१, ४४
	१०	५
	२ चू०	४
सवर *		
-सवरे	८	३१
संवहण	७	२५
सवुड	५(१)	८३
	६(४)	५
संसअ	५(१)	१०
	६	३४
ससग्गि	५(१)	१०
	६	१६
	८	५६
ससट्ठ	५(१)	३४, ३६
ससट्ठकप्प	२ चू०	६
ससक्त	६	२४
संसार	२ चू०	३
ससारसायर	६	६५
ससेइम		
(संस्वेदज)	४ सू०	६
ससेइम		
(ससेक्किम)	५(१)	७५
सक्क	६(३)	६
सक्कणिज्ज	२ चू०	१२
सक्करा	५(१)	८४

सक्कार *		
सक्कारण	६(१)	१२
सक्कारेति	६(२)	१५
सक्कारण	१०	१७
सक्कुरि	५(१)	७१
सगास	५(१)	८८, ९०
	५(२)	५०
	८	४४
	६(१)	१
सन्नमोसा	७	४
सन्वरय	६(३)	१३
सन्वदाइ	६(३)	३
सन्वा	७	२, ३, ११
सन्वामोसा	७	२
सन्चित्त	३	७
	४	सू० २२
	५(१)	३०
	५(२)	१४, १६
	१०	३
सजोइय	८	८
सज्झाण	८	६२
सज्झाय	५(१)	६३
	८	४१, ६१, ६२
	१०	६
	२ चू०	७
सढ	६(२)	३
सत्त	४	सू० ४ से ८

सत्ति	६(१)	८, ९
सत्तुचुण्ण	५(१)	७१
सत्य	६	३२
	६(२)	८
	१०	२
सत्यपरिणय	४	सू० ४ से ८
सद्	८	२६
	६(४)	सू० ६, ७
	१०	११
सद्धा	८	६०
सद्धि	५(१)	६५
सन्निर (दि०)	५(१)	७०
सन्निवेस	५(२)	५
सन्निहि	३	३
	६	१७, १८
	८	२४
सन्निहिलो	१०	१६
सप्पि	६	१७
सप्पुरिस	२ चू०	१५
सवीय	४	सू० ८
सवीयग	८	२
समिक्खु	१०	
सम	१	५
	२	४
	६(३)	११
	१०	५, ११, १३
	२ चू०	१०

दसवेआलिय शब्द-सूची

८१

समझकांत	१ चू०	६
समं	२ चू०	६
समण	१	३
	४ सू०	१ से ३
	४	२६
	५(१)	३०, ४०, ४६,
		५३, ६७
	५(२)	१०, ३४, ४०,
		४५
समणधम्म	८	४२
समणुजाण *		
-समणुजाणंति	६	४८
-समणुजाणामि	४	सू० १० से १६,
		सू० १८ से २२
-समणुजाणेज्जा	४	सू० १० से १६,
		सू० १८ से २२
समत्त	८	६१
समाउत्त	७	४६
समागय	५(२)	७
समाण	१ चू०	१०
समायर *		
-समायरामि	२ चू०	१२
-समायरे	४	११
	५(२)	४
	८	२१, ३१, ३५
समारभ	३	४

५४

समारंभ	६	२८, ३१, ३५,
		३६, ३६, ४२,
		४५, ५१
समारंभ		
-समारंभावेज्जा	४	सू० १०
-समारंभेज्जा	४	सू० १०
समारंभंत	४	सू० १०
समावन्न	५(२)	२
	१ चू०	सू० १
समावयंत	६(३)	८
समासेज्ज	८	४५
समाहि (ही)	६(१)	१६
	६(४)	सू० १ से ७
	६(४)	२ से ६
	२ चू०	४
समाहिय	५(१)	२६, ६६
	८	१६
	१०	१
समीरिय	८	६२
समुक्कस *		
-समुक्कसे	५(२)	३०
	८	३०
	१०	१८
समुद्धर *		
-समुद्धरे	१०	१४

समुपेक्षिया	७	५५
समुपपन्न	७	४६
समुप्येहे	७	३
	८	७
समुयाण	५(२)	२५
	६(३)	४
	२ ब्रू०	५
समुवे *		
-समुर्वेति	६(२)	१
समुस्तय	६	१६
समोसढ	६	१
सम्म	४	६
	५(१)	६१
	६(४)	सू० ४
	१ ब्रू०	सू० १
	२ ब्रू०	१३
सम्महमाण	५(१)	२६
सम्मद्विट्ठि	४	२८
	१०	७
सम्मद्विया	५(२)	१६
सम्मय	८	६०
सम्माण	५(२)	३५
सम्मुच्छिन्न	४	सू० ८, ६
सय	५(१)	६
	७	५५

सय *		
-सय	७	४७
	८	१३
-सये	४	७, ८
सयं	४	सू० १० से १६
	५(२)	३३
सयण	२	२
	५(२)	२८
	७	२६
	८	५१
	२ ब्रू०	८
सयमाण	४	४
सयय	५(२)	३८
	८	४०
	६(१)	१३
	६(३)	१३, १५
	२ ब्रू०	१६
सयल	६	४
सया	१	१
	४	२८
	५(१)	१४
	५(२)	२५
	७	५५, ५६
	८	३२, ४१, ६१
	६(३)	६, १०
	६(४)	४
	१०	३, ६, ७, २१

सरीर	१०	१२
	१ चू०	१६
सरीसिव	७	२२
सलागा	४	सू० १८
सवक्कसुद्धि	७	५५
सविज्जविज्जा	६	६६
सव्वओ	६	३२
	७	१
सव्व	३	१०
सव्वत्तग	४	२१, २२
सव्वत्थ	६	२१
	७	४४
सव्वभाव	८	१६
सव्वसो	७	१
	८	४७
	६(४)	७
सव्वमुक्कस	७	४३
ससक्ख	५(२)	३६
ससरक्ख	४	सू० १८
	५(१)	७, ३३
	८	५
ससार	७	३५
ससि	६(१)	१५
ससिणिद्ध	४	सू० १६
	५(१)	३३
सह	१०	११

सह *		
-सहई	६(३)	८
-सहे	१०	११
-सहेज्ज	६(३)	६
सहाय	२ चू०	१०
सहेउ	६(३)	६
सहेत्तु	३	१४
साइ	१ चू०	सू० १
साइम	४	सू० १६
	५(१)	४७, ४६, ५१,
		५३, ५७, ५६,
		६१
	५(२)	२७
	१०	८, ६
सागर	६(३)	१४
सागरोवम	१ चू०	१५
साण	५(१)	१२, २२
	७	१६
साणी	५(१)	१८
सामत्त	५(१)	६, ११
सामणिय	७	५६
	१०	१४
सामण्ण	२	१
	४	२८
	५(१)	१०
	५(२)	३०
	१ चू०	६ ;

सामण्णपुब्बय	२		साहीण	२	३
सामिणी	७	१६	साहु	१	३,५
सामिय	७	१६		५(१)	५,६२,
सामुद्द	३	८			६४ से ६६
साय	४	२६		५(२)	४३
सायग	४	२६		६	१२
सारक्ख	५(२)	३६		७	४८, ४९
सारिस	१ चू०	१०		८	५२
साला	७	३१		९(३)	११
सालुय	५(२)	१८		२ चू०	४
सावज्ज	६	३६, ६६	सिअ	४	सू० २१
	७	४०, ४१, ५४	सिंगबेर	३	७
	१ चू०	सू० १		५(१)	७०
सासय (शाश्वत)	४	२५	सिंघाण	८	१८
	९(४)	७	सिंच		
सासय (स्वाशय)	७	४	-सिंचति	८	३६
मासवनालिआ	५(२)	१८	सिंघव	३	८
साहददु	५(१)	३०	सिंघलि	५(१)	७३
साहण	५(१)	६२	सिक्ख		
साहम्मिय	१०	६	-सिक्खे	७	१
साहस	९(२)	२२		९(१)	१, १२
साहा	४	सू० २१	सिक्खमाण	९(२)	१४
	६	३७	सिक्खला	६	३
	८	६		९(२)	१२, २१
	९(२)	१	सिक्खिअण	५(२)	५०
साहारण	१ चू०	सू० १	सिंघ	९(२)	२

सिज्म *			सिर	६(१)	८, १२
-सिज्मंति	३	१४	सिरी	६(२)	४
सिणाण	३	२		१ चू०	१२
	५(१)	२५	सिला	४	१८
	६	६०, ६३		५(१)	६५
सिगाय *				८	४, ६
-सिगायति	६	६२	सिलेस	५(१)	४५
सिगायत	६	६१	सिलोग	६(४)	सू० ४ से ७
सिणेह	८	१५		१ चू०	सू० १
सित्त	६(२)	१२	सिव	७	५१
सिद्ध	४	२५	सिहि	६(१)	३
	६(४)	७	सीईभूय	८	५६
सिद्धि	४	२४, २५	सीओदय	६	५१
	६	६८		८	६
	६(१)	१७		१०	२
सिद्धिमग्ग	३	१५	सीय	६	६२
	८	३४		७	५१
सिप्प	६(२)	१३, १५		८	२७
सिया	२	४	सील	६(१)	१४, १६
	५(१)	२८, ४०, ७४,	सीस	४	सू० २३
		८२, ८४		६(१)	६
	५(२)	१२, ३१, ३३	सीह	६(१)	८, ६
	६	१८, ५२	सुअलकिय	८	५४
	७	२८	सुड	८	३२
	८	३, २५, ४७	सुउद्धर	६(३)	७
	६(१)	७, ६	सुए	१०	८

सुकड	७	४१
सुकक	५(१)	६८
सुककीय	७	४५
सुगंध	५(२)	१
सुगगइ	४	२६, २७
सुछिन्न	७	४१
सुट्टिअप्प	३	१
	६(१)	३
सुण *		
-सुणेइ	८	२०
-सुणेज्जा	५(१)	४७
-सुणेह	५(२)	३७, ४३
	६	४, ६
	८	१
सुणित्तु	२ चू०	१
सुत्तिथा	७	३६
सुतोसअ	५(२)	३४
सुत्त (सुस)	४	सू० १८ से २३
	६(१)	८
सुत्त (सूत्र)	१०	१५
	२ चू०	११
सुदसण	१ चू०	१७
सुदुल्लह	५(२)	४८
सुद्ध	५(१)	५६
सुद्धपुढवी	८	५
सुद्धागणि	४	सू० २०

सुद्धोदग	४	सू० १६
सुनिट्ठिय	७	४१
सुनिसिय	१०	२
सुपक्क	७	४१
सुपन्नत्त	४	सू० १ से ३
सुप्पणिहिदिअ	५(२)	५०
सुभासिय	२	१०
	६(१)	१७
	६(३)	१४
सुमिण	८	५०
सुय	४	सू० १
	८	२०, २१, ३०, ६३
	६(१)	३, १४, १६
	६(२)	२
	६(४)	सू० १, ५
		३
	१०	१६
	२ चू०	१
सुयक्खाय	४	सू० १ से ३
सुयग्गाहि	६(२)	१६
सुयत्थधम्म	६(२)	२३
सुयसमाहि	६(४)	सू० ३, ५
	६(४)	३
सुर	६(१)	१४
सुरक्खिय	२ चू०	१६
सुरा	५(२)	३६

सुलुट्ट	६(१)	५
सुलुट्ट	७	४१
सुलभ	१ चू०	१४
सुलह	४	२७
सुविक्रीय	७	४५
सुविणीय	६(२)	६, ६, ११
सुविसुद्ध	६(४)	६
सुविहिय	२ चू०	३
सुसंतुट्ट	८	२५
सुसंवुड	१०	७
सुसमाजत	६	३
सुसमाहिइंदिय	७	५७
सुसमाहिय	३	१२
	५(१)	६
	६	२६, २६, ४०,
		४३
	८	४
	६(४)	६
	१०	१५
	२ चू०	१६
सुस्सुत *		
-सुस्सुसइ	६(४)	२
-सुस्सुसए	६(१)	१७
सुस्सुसमाण	६(३)	१, २
सुस्सुसा	६(२)	१२
सुह	४	२६

सुह	६(१)	१०
	६(२)	६, ६, ११
	१०	११
	२ चू०	३
सुहड	७	४१
सुहर	८	२५
सुहावह	६	३
	६(४)	६
सुहि	२	५
सुहुम	४	सू० ११
	६	२३, ६१
	८	१३ से १५
सुइय	५(१)	६८
सुइया	५(१)	१२
सूर	८	६१
से (दे०)	४	सू० ६, ११ से १६,
		सू० १८ से २३
सेज्जा	४	सू० २३
	५(१)	८७
	५(२)	२
	६	४७
	८	१७, ५२
	६(२)	१७
	६(३)	५
	२ चू०	८
सेज्जायरपिड	३	५

सेढि	१ चू०	५
सेडिया	५(१)	३४
सेणा	८	६१
सेय	२	७
	४	सू० १ से ३
सेव	४	सू० १४
	५(२)	३४
	८	६
सेवंत	४	सू० १४
सेविय	६	३७, ६६
सेलेसी	४	२३, २४
सेत	५(१)	३६
	२ चू०	१२
सोउमल	२	५
सोअ *		
-सोएज्जा	५(२)	६
सोंडिया	५(२)	३८
सोक्ख	८	२६
	१ चू०	११
सोगाइ	५(१)	१००
	८	४३
सोच्चा	२	१०
	४	११
	५(१)	५६, ७६
सोच्चाण	६(१)	१७
	६(३)	१४

सोच्चाणं	८	२५
सोय	६(२)	३
सोरडिया	५(१)	३४
सोवक्केस	१ चू०	सू० १
सोवच्चल	३	८
सोह *		
-सोहई	६(१)	१५
सोहि	५(२)	५०
ह		
हं	१ चू०	सू० १
हंदि (दि०)	६	४
हड	२	६
हण *		
-घायए	६	६
-हणे	६	६
	८	३८
हत्य	४	सू० १८, २१, २३
	५(१)	३२, ३५, ३६.
		६८, ८५
	८	४४, ५५
	१०	१५
हत्यग	५(१)	७८, ८३
हत्थि	१ चू०	७

हय (हय)	५(१)	१२
	६(२)	५, ६
	१ चू० सू०	१
हय (हत)	१०	१३
हरतणुग (वे०)	४	सू० १६
हरिय	४	सू० २२
	५(१)	३, २६, २६,
		५७
	५(२)	१६
	८	११, १५
	१०	३
हरियाल	५(१)	३३
हल	७	१६
हला	७	१६
हव *		
-हवति	६(३)	७
-हवेज्ज	८	२४, २६
	१०	६
	१ च०	१७
-हवेज्जा	१०	१, १३
	२ चू०	७
हव्ववाह	६	३४
हसत	५(१)	१४
हस्सकुहव	१०	२०
हाभ *		
-हायति	८	३५

५५

हाणि	२ चू०	६
हालहल	६(१)	७
हाव *		
-हावएज्जा	८	४०
हास	४	सू० १२
हासमाण	७	५४
हिगुलअ	५(१)	३३
हिस *		
-हिसई	४	१
	६	२७, ३०, ४१,
		४४
-हिसति	६	२६, २६, ४०,
		४३
-हिसेज्ज	५(१)	५
-हिसेज्जा	८	१२
हिसग	६	११
हिम	४	सू० १६
	८	६
हिय	४	सू० १७
	५(१)	६४
	७	५६
	८	३६, ४३
	६(४)	२, ६
	१०	२१
हीणपेसण	६(२)	२२

हील *		
-हीलए	६(३)	१२
-हीलंति	६(१)	२
	१ चू०	१२
हीलणा	६(१)	७, ६
हीलयंत	६(१)	४
हीलिय	६(१)	३
हु	२	३
हे	७	१६
हेच	५(१)	६२
	६(२)	२०
	६(४)	सू० ७
हेट्ट	१ चू०	१३
हेमंत	३	१२
हो *		
-हवइ	४	२५
	६	६०
-होइ	४	१ से ६
	५(२)	३२

-होइ	६	६०
	६(१)	१, ४
	१०	४
	१ चू० सू०	१
	१ चू०	२ से ६
-होउ	७	५०, ५१
-होजज	५(१)	५७, ५६, ८०
	७	५१
-होज्जा	५(१)	६, ६१
	५(२)	१२
	७	२६
-होज्जामि	५(१)	६४
-होंति	२ चू०	४
-होमो	२	८
-होहिसि	२	५
हो	७	१६
होउकाम	२ चू०	२
होयव्वय	८	३
होल (दे०)	७	१४, १६
होला (दे०)	७	१६

परिशिष्ट-२

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरो को एक साथ लिया है । जैसे—लोभ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशाचिह्न (ङैश) के बाद है ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

अ	अङ्क	अङ्क	अङ्क	अङ्क	अङ्क
अ	११६	-	२३३, ६३	अङ्क	१ ३३
अङ्	२		२७, ४६		२० ७
अङ्गज्ज	१		३४	अङ्क	१ ३४
अङ्कम *				अङ्क	१६ ८
-अङ्कमो	१	-	३३	अङ्क	१६ सू० १०
-अङ्कमइ	२६	-	सू० १		१६ १२
अङ्गय	१०		५ से १४	अङ्क	२० ५६
	२२		२७	अङ्क	२६ २८
अङ्क	१६		५	अङ्क	११ ५
अङ्क	३३		२४	अङ्क	
अङ्क	७		२१	अङ्क	२७ २
अङ्क	१६		५२	अङ्क	
अङ्क	१६		७२	अङ्क	८ ६
				अङ्क	३६ २५३

१—इस कोष्ठक की संख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं ।

२—इस कोष्ठक का संख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं ।

अइवेला	२	६,२२
अइसय	२६	सू० ३८
अइय	२३	८५
	२५	७१
	३३	१७
अइयार	२६	३६,४०,
		४७,४८
अउणतीस	३६	२४०
अउणतीसड	३६	२४१
अउणवीस	३६	२३०
अउणवीसड	३६	२३१
अउत्त	१६	२६
अउल	२	३५
	२०	५,१६
	३६	६६
अंक	३४	६
	३६	६१,७५
अंकुस	६	६०
	७२	४६
अंग	२	३
	३	१
	१२	४३,४४
	१६	४
अंग	२०	१६
	२८	२१,२३
अंगअ	२२	३६

अंगण	७	१
अंगविज्जा	८	१३
अंगवियार	१५	७
अंगुल	२६	१४,१६
अंगुलि	२६	२३
अंजण	३४	४
	३६	७४
अंजलिकरण	३०	३२
अंड	३२	६
अंन	१४	५१
	२२	१५
	२८	४१,५८,६१,
		७३
	२६	सू० १
	३६	५६,६१
अंतक	२३	८४
	३५	१
अंतकाल	१३	२२
अंतकिरिया	२६	सू० १४
अंतग	३२	१६
अंतगवेसि	१४	५१
अंतमूहुत्त	३४	६०
अंत	१६	सू० ७
	१६	७४
	२०	२०
	३६	८२,६०,

अंतर	१०४, ११५, १२४, १३४, १६८, १७७, १८६, १९३, २०२, २४६	अंतोमुहुत्त	३६	८० से ८२, ८८ से ९०, १०२ से १०४, ११३ से ११५, १२२ से १२४, १३२ से १३४, १४१ से १४३, १५१ से १५३, १६८, १७५ से १७७, १८४ से १८६, १९१ से १९३, २०० से २०२, २४६
अंतरद्वीवय	३६ १९६	अंधगवण्ह	२२	४३
अतरमासिल्ल	२७ ११	अंधयार	२२	३३
अंतरा	२२ ३३		२३	७५
अंतराय	१४ ७		२८	१२
	२६ सू० ७१	अधिय	३६	१४६
	३२ १०८	असहर	१३	२२
	३३ ३, १५, २०	अंसु	२०	२८
अतरिच्छा	२० २१	अकपमाण	२१	१९
अतरेण	१ २५	अकड	१	११
	२६ सू० ३४, ३५	अकम्म	२६	सू० ७१
अंतरेय	३६ १४, १३४, १४३, १५३	अकम्मचेट्टु	१२	२६
अतल्लिक्ख	१२ २५	अकम्म (भूम)	३६	१९६
	१५ ७			
	२१ २३			
अतो	२२ ३३			
	२३ ४५			
	३३ १७			
अंतोमुहुत्त	२६ सू० ७२			
	३३ १९, २१, २२			
	३४ ४५			

अकम्मया	२६	सू० १
अकरण्या	२६	सू० ३२
अकरेत	६	६
अक्लेवरसेणि	१०	३५
अकसाय	२८	३३
	३०	३
अकाड	१३	३४
अकाऊण	१३	२१
अकाऊणं	१६	१६
अकाम	५	३
	६	५३
अकामकाम	१५	१
अकाममरण	५	२, १६, १७
	३६	२६१
अकाममरणिज्ज	५	
अकारि	६	३०
अकाल	१	३१
अकालिय	३२	२४, ३७, ५०,
		६३, ७६, ८६
अकिचण	२	१४
	१४	४१
	२१	२१
	२५	२७
अकिचण	२६	सू० ४७
	३५	१६
	१४	१५

अकित्तण	३२	१५
अकिरिया	१८	२३, ३३
	२६	सू० २८
अकिरियाअ	२६	सू० २८
अकुअंहुल	११	१०
	३४	२७
अकुक्कुअ	२	२०
	२१	१८
अकुय	१	३०
अकुव्वमाण	१३	२१
अकोहुण	११	५
अक्कोस	१	३८
	२	सू० ३
	१५	३
	१६	३१
अक्कोस *		
-अक्कोसैज्ज	२	२४
अक्ख	५	१४, १५
अक्ख *		
-अक्खाहि	१२	४०
अक्खय	११	३०
अक्खर	२६	सू० ७२
अक्खाय	२	सू० १
	५	२
	८	८, १३, २०
	१६	सू० १

अक्खाय	१८	४३
	२३	६३
	२४	३
	२६	सू० १
अक्खेद	२५	१३
अगणि	१२	२७
	१६	४७
	३६	१०६
अगार	१	२६
अगारत्थ	५	१६
अगारधम्म	२६	सू० ३
अगारव	३०	३
अगारवास	२	२६
अगारि	५	१६, २३
	२७	२२
अगिलायअ	२६	१०
अगिह	१५	१६
अगुणि	२८	३०
अगुत्त	३४	२१
अग (अग्र)	७	२३, २४
	६	४४
	१०	२
	२०	१५
अग (अग्र्य)	१४	३१
अगमाहिंसी	१६	१
अगगला	६	२०

अग्गि	२	७
	६	१२
	१२	३६
	१४	१०, १८, ४३
	१६	३६, ६६
	२०	४७
	२३	५०, ५२, ५३
	२५	१८, १६
	३२	११
	३६	२०६
अग्गिहोत्त	२५	१६
अग्ग *		
-अग्घइ	६	४४
अचक्किय	११	३१
अचक्खु	३३	६
अचर्यंत	२५	१३
अचवल	११	१०
	३४	२७
अचिन्तण	३२	१५
अचित्त	२५	२४
अचियत्त (दि०)	११	६
	१७	११
अचिर	१४	५२
	२४	१७
अचेल	२	सू० ३
अचेलग (अ)	२	१२, १३, ३४
	२३	१३, २६

अचोदय	१	४४
अच्च *		
-अच्चिमो,		
अच्चमु	१२	३४
अच्चत	१८	५२
	२०	५
	३२	१,११०,
		१११
अच्चणा	३५	१८
अच्चय	१०	१
अच्चि	३६	१०६
अच्चिमालि	५	२७
अच्चुय	३६	२११, २३३
अच्चे *		
-अच्चेइ	१३	३१
अच्छ	१२	२६
अच्छ *		
-अच्छइ	३१	३ से २०
-अच्छहि	२२	१६
अच्छत	१६	७८
अच्छण	२६	७
अच्छि	२०	१६, २०
अच्छिरोडअ	३६	१४८
(दे०)		
अच्छिल (दे०)	३६	१४८
अच्छिवेहअ	३६	१४७
(दे०)		

अच्छेरेग	६	५१
अजय	४	१
अजहन्न	३६	२४४
अजाइय	२	२८
अजाणग	२५	१८
अजाणमाग	१४	२०
अजिइंदिय	१२	५
	३४	२२
अजिण	५	२१
अजिय	२३	३८
अजीव	२८	१४, १७
	३६	२ से ४,
		१३, १४,
		२४८, २४६
अजीवविभत्ति	३६	४७
अजोगत्त	२६	सू० ३७
अजोगि	२६	सू० ३७
अज्ज (अद्य)	२	३१
	६	७
	१०	३१
	१२	१७
	१३	६
	१४	२८
अज्ज *		
-अज्जयन्ते	१३	१२

अज्ज (अर्थ)	१३	२७, ३२
	१४	४५
	२०	६, ८
अज्जव	६	५७
	२६	सू० १
अज्जवघण	२५	२०
अज्जवया	२६	सू० ४८
अज्जिय	१	४२
	१८	१६
अज्जुण	२६	६०
अज्जत्थ	६	६
	१४	१६
अज्जप्पजोग	२६	सू० ५४
अज्जप्पज्झाण-		
जोग	१६	६३
अज्जयण	२६	सू० १, ७३
अज्जवसाण	१६	७
अज्जवाय	१२	१६, १८, १६
अज्जुसिर	२४	१७
अट्ट	३०	३५
	३४	३१
अट्टालाग	६	१८
अट्टिय	२	३२
	२०	२५
अट्ट (अर्थ)	१	८, २५, ३३
	३	५

अट्ट (अर्थ)	४	४
	५	८
	६	४, १३
	७	२५, २६
	८	३, १२
	९	८, ११, १३,
		१७, १६, २३,
		२५, २७, २६,
		३१, ३३, ३७,
		३६, ४१, ४३,
		४५, ४७, ५०
	११	३२
	१२	३, ६, ३५
	१४	४, ३२
	१५	१०
	१६	१
	१८	२१
	१९	८०
	२०	८
	२२	१५, १६
	२५	५, ७, ६, १०
	२६	३२, ३४
	२८	३६
	२९	सू० १, ७३
	३२	१०५
	३५	१०, १७

अदृष्ट (अष्टन्) १०	१३
११	४
२२	५
२४	१, १०
२६	१६
२८	३१
२९	सू० ११, ४९
३३	१, ३, २३
३६	५२ से ५४, ५९, २२१
अद्वय १०	३७
अद्विभा ३६	२२१
अद्विभा २४	२
२६	३
३६	२४१
अद्विभा १२	२४
अद्विभा २९	सू० ३१, ७१
३०	२५
३३	१४
३६	२०७
अद्विभा ३६	२३९
अद्विभा २९	सू० ७१
३६	१९७, २४०
द्विभा ३६	१९, २०५
द्विभा ३६	२२९
द्विभा २२	४४

अद्विभा १	४६
अद्विभा १९	५
अद्विभा २६	३३
अद्विभा ४	५
१०	९
१९	४७, ४८, ७३
२८	८
२९	सू० ५, ७१
३४	१० से १३, १५ से १९
३६	१८६, १९३
अद्विभा (ग) ६	१, १२
२०	३१
३३	१७
अद्विभा ३६	१४, ८२, ९०, १०३, ११५, १२४, १३४, १४३, १५३, १६८, १७७, २०२, २४६
अद्विभा २९	सू० ७
अद्विभा ३३	२४
अद्विभा १९	४५, ४९ से ५१, ५३, ५८, ६१, ६४ से ६७

अणंताणुबन्धि	२६	सू० १	अणभिद्दुए	३५	७
अणगारं	१	१	अणमिल्लसमाण	२६	सू० ३३
	२	१४, २८	अणलंक्रिय	३०	२२
	८	१६	अणवक्खमाण	१२	४२
	६	१६	अणवज्ज	१६	२७
	११	१	अणवदग्ग	२६	सू० २२
	१८	४, ६ से १०,	अणसण	१६	६२
		१८, १६		३०	८, ६, १२
	२५	५, २७, ४२	अणाड	३२	१११
	२६	सू० ३, ६, ७,		३६	१२
		४१, ६१, ७२	अणाइण	१६	१
	३१	१८	अणाडय	२६	सू० २२
अणगारमग्गइ	३५			३६	८
अणगारसीह	२०	५८	अणाईय	३६	६५, ७६, ८७,
अणगारिया	१०	२६			१०१, ११२,
	२०	३२, ३४			१२१, १३१,
	२१	१०			१४०, १५०,
अणच्चाविय	२६	२५			१५६, १७४,
अणच्चासायण	२६	सू० ४			१८३, १६०,
अणट्ठ (अनर्थ)	५	८			१६६, २१८
	१८	३०	अणात्त	१७	६, १३, १४
अणट्ठ (अनष्ट)	१८	४६	अणागय	५	६
अणह्यत्त	२६	सू० २६		१२	३२
अणत्थ	१४	१३		१४	२८
अणन्तिय	६	४८		१८	५२
अणभिग्गहिय	२८	२६	अणावाय	५	१८

18238

अणाद्विय	११	२७	अणाहया	२०	२३ से २७,
अणाण	२	४०, ४१			३०, ३८
अणाणत्त	३६	७७, ८६,	अणिण्य	२	१६
		१००, ११०,	अणिदिय	३५	१६
		११६	अणिगाम	१४	१३
अणाणुबंघि	२६	२५	अणिग्गह	११	२, ६
अणाबाह	२३	८०, ८३		१७	११
	३५	७	अणिच्च	१८	११, १२
अणाय	२०	२६		१६	१२
अणायार	३६	२६७	अणिन्दिगंगी	१२	२०
अणारिय (अ)	१२	४	अणिमिस	१६	६
	१८	२७	अणियअ	६	१६
	३४	२५	अणियट्ट	७	२५, २६
अणावाय (अ)	२४	१६, १७	अणियत्त	१४	१४
	३०	२८	अणियमेत्ता	८	१४
अणाविल	१२	४६	अणिघाण	३५	१६
अणासन्न	१	३३	अणिल	१४	१०
	२०	७	अणिस्स	३२	३१, ४४, ५७,
अणासव	१	१३			७०, ८३, ८६
	३०	२, ३, १०६	अणिस्सर	२२	४५
	३५	२१	अणिस्सिअ	१६	६२
अणासायणा	२६	सू० १६	अणीहारि	३०	१३
अणासायमाण	२६	सू० ३३	अणुकंप *		
अणाह	२०	६, १२, १५	-अणुकम्मे	१५	१२
		से १७, ५६	अणुकंपअ (ग)	१२	८
अणाहत्त	२०	५४		२०	६

अणुकपअ	२६	सू० २६
अणुकांपि	१३	३२
	२१	१३
अणुक्कसाइ	२	३६
	१५	१६
अणुक्कोस		
(अनुक्रोश)	२२	१८
अणुक्कोस		
(अनुत्कर्ष)	३६	२४४
अणुण	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२
अणुगम *		
-अणुगमिस्सम	१४	३४, ३६
अणुगय (अ)	४	१३
	१५	१५
	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२
अणुगिज्ज *		
-अणुगिज्जेज्जा	२	३६
अणुगिद्ध	२०	५०
अणुगिद्धि	३२	१६
अणुगीय	१३	१२
अणुगगह	१२	३५
	२५	३७
अणुचित *		
-अणुचिन्ते	१६	६

अणुच्च	१	३०
अणुजा *		
-अणुजाइ	१३	२३
	२०	४०
अणुजाण *		
-अणुजाणह	१६	१०
अणुजाण	८	८
अणुजीघ *		
-अणुजीवन्ति	१८	१४
अणुज्जुअ	३४	२५
अणुणंत	१४	११
अणुतप्प *		
-अणुतपेज्ज	२	३०, ३६
अणुतावअ	१०	३३
अणुत्तर	२	३७
	६	१७
	७	२७
	६	२
	१०	३५
	१३	३४, ३५
	१८	३८ से ४०, ४२, ४३, ४७
	१६	६५, ६८
	२०	५२
	२१	२३
	२२	४८

अणुत्तर	२५	४२, ४३,
	२६	सू० १, ६०, ७१
	३६	२१२, २१६
अणुन्नभ	२१	२०
अणुन्नाभ	१६	८४, ८५
	२३	२२
अणुपरियट्ट *		
-अणुपरियडन्ति	८	१५
अणुपस्तभ	६	१६
अणुपालइत्ता	२६	सू० १
अणुपालिउं	१६	३४
अणुपालिया	१६	६५
	३६	२५०
अणुपुब्बसो	५	२६
	२४	१६
	२६	३६, ४७
	३०	२६
	३६	४७, १०६
अणुपेहि	१३	१५
अणुप्पत्त	३	७
	२८	३
अणुप्पविस *		
-अणुप्पविसे	२	१४
अणुप्पेहा	२६	सू० १, २२
	३०	३४
अणुप्पेहि	५	११

अणुबंघ	१६	११
अणुबंघण	२६	सू० ४५
अणुबद्ध	४	२
	३६	२६६
अणुब्भड	२६	सू० २६
अणुभविउं	२०	३१
अणुभाग	३३	२४, २५
	३४	१
अणुभाव	२६	सू० २२
	३४	१
अणुमन्न *		
-अणुमन्नेक्क	१४	१२
अणुमन्निय	१६	२३
अणुमय	३६	२४६
अणुमाणित्ताण	१६	८६
अणुमुयंत	३०	२३
अणुय	१	१३
अणुरत्त	२०	२८, ५८
	३२	३२, ४५, ५८,
		७१, ८४, ९७
	३६	२६०
अणुराग (य)	५	७
	१३	१५
अणुल्लय (दि०)	३६	१२६
अणुवघाइय	२४	१७
अणुवत्ति	७	२६

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

अणुववायकारअ १	३	अणुसासिय १	६
अणुवसत १६	४२	अणुस्सियत्त २६	सू० ४६
अणुवाअ ३२	२८, ४१, ५४,	अणुस्सुय ५	१३, १८
	६७, ८०, ९३	अणुस्सुयत्त २६	सू० २६
अणुवाइ १६	सू० १२	अणुस्सुया २६	सू० २६
अणुव्वय *		अणुरत्त १३	५
-अणुव्वयाम १३	३०	अणूण २६	२८
-अणुव्वयन्ति १८	१४	अणेग ४	११
अणुव्वय २०	२८		७
अणुसकम *			८
-अणुसंकमन्ति १३	२५		१६
अणुसंचर *			२१
-अणुसंचरे १८	३०		२३
अणुसठि २०	१		२८
अणुसर *			२६
-अणुसरेज्जा १६	सू० ८		३२
अणुसरमाण १६	सू० ८		२७, ४०, ५३,
अणुसरित्ता १६	सू० ८		६६, ७६, ९२,
अणुसास *			१०३
-अणुसासन्ति १	२७	अणेगअ १६	८२
-अणुसासम्मी २७	१०	अणेगख्ववुगा २६	२७
अणुसासत १	३८	अणेगविह ३६	४८
अणुसासण १	२८, २९	अणेगसो १६	५४, ६०, ६२,
	६		६६
	१०	अणेगहा ३६	६४, ६६, ६९,
	२०		१०६, ११०,
अणुसासिडं २०	५६		११६, १३०,

अणेगहा	३६	१३६, १४६, १८१, २१६	अत्त (आत्मन्) १२	४६
			१८	५३
अणेसणिज्ज	२०	४७	अत्त (आर्त)	६
अण्णव	५	१	अत्तगवेसअ	२
	१०	३४	अत्तगवेसि	१६
	२३	७०, ७३	अत्तट्ठगुरु	३२
अत्तक्केमाण	२६	सू० ३३		२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२
अत्तर	८	६	अत्तट्ठिय	१२
अत्तव	३४	२३	अत्तपन्नह	१७
अत्ताल्लि	३२	२६, ३६, ५२, ६५, ७८, ६१	अत्थ (अन्न)	७
अत्ति	३२	२६ से ३१, ३७, ४२ से ४४, ५५ से ५७, ६८ से ७०, ८१ से ८३, ८४ से ८६	१४	३
			२७	१२
			२८	३२
			अत्थ (अर्थ)	१
			१२	३३
			१३	१०, १२
			१६	८, ६
अत्ति	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ७०, ६३	१८	१३, ३४
अत्तुट्ठि	३२	२६, ४२, ५५, ६८, ८१, ६४	२०	१, १६
			२३	३२, ८८
			२४	८, २६
अत्तुरिय	२६	२४	२६	सू० २, ४८
अत्तेणग	२१	१२	३०	११
अत्त (आत्मन्)	२	१७	३२	१, ३, ४,
७		२५, २६		१००, १०७

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

अत्थओ	२८	२३	अदुव	१	१७
अत्थत्त	१७	१६	अदुवा	२	१२
अत्थिकायघम्म	२८	२७		४	५
अथिर	१७	१३		२१	१६
अथिरव्वय	२०	४१	अद्दाय	१८	५०
अदसण	३२	१५	अद्दीण	७	२१
अदसणि	२८	३०	अद्दीणव	७	२२
अदसणिज्ज	१२	७	अब्ब (अध्वन्)	६	१२
अदट्ठु	४	५		७	५, १८
अदत्त	१२	१४, ४१	अद्ध (अर्घ)	२६	३५
	१६	२७		३४	३४ से ३६,
	२५	२५			४५
	३०	२		३६	२५३ से २५५
	३२	२६, ३१, ४२	अद्धपेडा	३०	१६
		से ४४, ५५,	अद्धा	७	१८
		५७, ६८, ७०,		२६	सू० २२, ७२
		८१, ८३, ६४,		३४	४६
		६६		३६	८
अदत्तहारि	३२	३०, ४३, ५६,	अद्धाण	६	१२
		६६, ८२, ६५		७	५
अदय	१५	११		१६	१८, २०
अदित	६	४०		२३	६०
अदिस्स	२३	२०	अद्धासमय	३६	६
अदीण	२	५, ३२	अघम्म	७	२६
अदीणमण	२	३		३६	७, ८
अदु	२	२३	अधीर	८	६
	८	१२			
	३३	१६			

अधुव	८	१	अन्न (अन्यत्)	२७	१२
अनिगह	२०	३६		२६	सू० ४
अनिहेस	१	३		३०	२३
अनियट्टि	२६	सू० ४१, ७२		३२	१०३
अनियाण	१६	६१		३५	८
	३६	२५८	अन्न (अन्न)	१२	६ से ११,
अन्तिय	१	८, १६			१६, ३५
	५	३१		२०	२६
	७	१२, २३		२५	८, १०
	१८	१८, १६	अन्नओ	२५	६
	२५	४२	अन्नमन्न	१३	५. ७
अन्तेउर	६	३, १२	अन्नयर	५	२५, ३२
	२०	१४		३०	२२
अन्न (अन्यत्)	१	३३	अन्नयराग	२६	३१
	२	२१	अन्नया	२१	८
	७	५	अन्नमलिग	३६	४६, ५२
	६	४२	अन्नहा	२८	१८
	१३	२५	अन्नाएसि	२	३६
	१४	१४, ४०, ४२	अन्नाण	२	सू० ३
	१८	१६		१८	२३
	२०	३८		२८	२०
	२३	२८		२६	सू० २४
	३४	३६, ४४, ४६,		३२	२
		५४, ५६, ६४,	अन्नायएसि	१५	१
		६६, ७४, ७६	अन्निअ	१८	४३
	२४	१५		२०	१३, ५२

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

१०६

पज्जत्त	१४	३६	अपि	१	१३, २६, ४०
	३६	७०, ८४, ६२,	अपीहेमाण	२६	सू० ३३
		१०८, ११७,	अपुट्ठ	१	१४
		१२७, १३६,	अपुणञ्चव	३	१४
		१४५	अपुणरावन्ति	२६	सू० ४४
अपज्जवसिय	३६	८, १२, ६५,	अपुणागम	२१	२४
		७६, ८७,	अपुरक्कार	२६	सू० ७
		१०१, ११२,	अपुहत्त	२६	सू० ११
		१२१, १३१,	अप्प (आत्मन्)	१	६, १५, १६,
		१४०, १५०,			२५, ३६, ४०
		१५६, १७४,		२	४१
		१८३, १६०,		४	१०
		१६६, २१८		५	११, ३०
अपडिक्कत	१३	२६		६	२, ७
अपडिक्कमित्ता	२६	२२		८	११, १६
अपत्थ	७	११		९	३६
अपत्थण	३२	१५		१०	२८
अपत्थणिज्ज	२६	सू० ४७		११	३२
अपत्थेमाण	२६	सू० ३३		१४	४६
अपर	१६	१७		१५	१५
अपराजिय	३६	२१५		१८	२६
अपरिकम्म	३०	१३		१६	२३
अपरिगह	२१	१२		२०	१२, ३५ से
अपरिसाडिय	१	३५			३७, ३६, ४१
अपलिमथ	२६	सू० ३४		२१	१५
अपाहेअ	१६	१८		२२	३६

अप्य (आत्मने)	२३	३८
	२७	१५, १७
	३४	२६, ३१
अप्य (अल्प)	१	३५
	११	११
	१३	१०
	२५	२४
	२६	सू० २२, ३६
अप्यकम्म	१६	२१
अप्यकुक्कुय	१	३०
अप्यग	१८	२७
अप्यच्चक्खाय	६	८
अप्यडिपूय	१७	५
अप्यडिवद्ध	२६	सू० ३०
अप्यडियद्धया	२६	सू० १, ३०
अप्यडिह्व	३	१६
अप्यडिलेह	२६	सू० ४३
अप्यडिवाह	२६	सू० ७२
अप्यडिहय	११	१८, २१
	२६	सू० १०
अप्यण	१	२५
अप्यणिय	२०	८८
अप्यभक्खि	१५	१६
अप्यमज्जिअ	१७	७
अप्यमत्त	४	६, ८, १०
	६	१२, १६
	१६	सू० १ से ३

अप्यमत्त	१६	२६
	२६	सू० ४२
अप्यमाय	१३	२६
अप्यय	२	६
	६	६
	१६	६४
अप्यरय	१	४८
अप्यवड्य	१५	१०
अप्यसत्थ	१६	६३
	२६	२८
	२६	सू० ७
	३४	१६, १८, ६१
अप्याण	१	६
	६	३४ से ३६, ६१
	२५	८, १२, १५, ३३, ३७
	२६	सू० ६०
	३६	२५०
अप्याणग्गिख	४	१०
अप्यायक	३	१८
अप्पिच्छ	२	३६
अप्पिय (अप्रिय)	१	१४
	६	१५
	११	१२
	२१	१५

अप्यय (अर्पित) ३	१५
अप्पुट्टाइ १	३०
अप्फोव (दि०) १८	५
अफल १४	२४
अफुसमाण २६	सू० ७३
अबंधण १६	६१
अबधव १६	६१
अवंम ३५	३
अवंमचरि १२	५
अवमचेर १६	२८
अबल ४	६
	१० ३३
	१४ ३५
	२१ १४
अबहुत्सुय ११	२
अबाल ७	३०
अवाह २३	८३
अवीय २०	२२
अबोहेत २६	४४
अन्मतार २८	३४
	३० ७
अन्मपडल ३६	७४
अन्मवालुया ३६	७४
अन्मिन्तर १६	८८
	३० २६, ३०

अन्मुट्ट *	
-अन्मट्टेइ २६	सू० ३२, ५०, ७१
अन्महिय ३४	३५ से ३७, ४६, ५०, ५४, ५५
अन्माइय १४	२१ से २३
अन्मुट्टाण २	३८
	२६ ४, ७
	३० ३२
अन्मुट्टिच्चा २६	सू० ५०
अन्मुट्टिय ६	६
अन्मुदय ६	५१
अन्मुवगअ १८	३६
अमय १८	११
अमयदाय १८	११
अभाव १	६
अमिओग १२	२१
	३६ २६४
अमिकलि १४	६
	३२ १७
अमिक्ख १४	३७
अमिक्खण ११	२, ७
	१६ ३
	१७ ८, १५, १६
	२७ ४, ११

अभिगच्छ ^१		
-अभिगच्छइ	१	४२
अभिगम	२८	१६
अभिगमरुइ	२८	२३
अभिगम्म	१४	१७
अभिगगह	३०	२५
अभिजा ^२		
-अभिजायइ	३	१६
अभिजाइय	११	१३
अभिजाण ^३		
-अभिजाणामि	२	४०, ४२
अभिजाय	३	१८
	१४	६
अभिणिकलम ^४		
-अभिणिकलमई	६	२
-अभिणिकल-		
माहि	१३	२०
अभिणिकलमत	६	५
अभितत्त	१६	६०
अभितुर ^५		
-अभितुर	१०	३४
अभित्युणंत	६	५५, ५६
अभिघार ^६		
-अभिघारए	२	२१
अभिनन्द ^७		
-अभिनन्देज्जा	२	३३
अभिनिकलंत	६	४

अभिनिक्खम्म	१४	३७
अभिनिविट्ठ	१४	४
अभिण्येअ	५	३१
अभिभूय		
(अभिभूय)	२	सू० १ से ३
	२	१८
	१५	३
	३२	३०, ४३, ५६,
		६६, ८२, ९५
अभिभूय		
(अभिभूत)	१४	४
	१५	१५
अभिराम	१३	१७
अभिराय ^८		
-अभिराएज्जा	२१	११, १५
-अभिरायए	३५	६
अभिलस ^९		
-अभिलसइ	२६	सू० ३३
अभिलसणिज्ज	१६	सू० ११
अभिलसिज्ज-		
माण	१६	सू० ११
अभिवन्दिअण	२०	५६
अभिवन्दिता	२३	८६
अभिवन्दिअ	१२	२१
अभिवायण	२	३८

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

अभिसमे *			अमित	१५	१६
-अभिसमेइ	१३	३०		२०	३७
-अभिसमेम	२०	६	अमिय	३२	१०४
अभिहण *			अमुंच	३६	८१, ८६, १०३, ११४, १२३, १३३, १४२, १५२
-अभिहणे	२	१०			
अभिहय	२३	५३	अमुच्छिय	३५	१७
अभिहिय	२८	२७	अमुत्त	१४	१६
अभोगि	२५	३६	अमुहरि	१	८
अभइ	४	२	अमूढदिट्ठि	२८	३१
अमणुन्न	२६	सू० ६३ से ६७	अमोक्ख	२८	३०
	३२	२१ से २३, ३५, ३६, ४८, ४९, ६१, ६२, ७४, ७५, ८७, ८८	अमोसली	२६	२५
			अमोह	१४	२१ से २३
			अमोहण	३२	१०६
			अम्बग	७	११
अमणुन्नया	३२	१०६		३४	१२, १३
अमम	२१	२१	अम्बिल	३६	१८, ३२
अमय	१७	२१	अम्मा	१६	२, ६, १०, ११, २४, ४४, ७५, ७६, ८४ से ८६
अमरिस	३४	२३		२१	१०
अमल	३६	२६०			
अमहरघय	२०	४२	अम्ह	१	१
अमाड	११	१०	अम्हारिस	१३	२७
	२६	सू० ५	अय (अज)	७	७, ८
	३४	२७			
अमाणुस	३	६			

અય (અયસ્)	૧૨	૨૬
	૧૬	૬૭
	૩૬	૭૩
અયંતિય	૨૦	૪૨
અયસી	૧૬	૫૫
	૩૪	૬
અયાણંત	૮	૭
અયાણય	૧૨	૩૧
અર	૧૮	૪૦
અરઢ	૨	સૂ૦ ૩
	૨	૧૪, ૧૫
	૧૦	૨૭
	૨૧	૨૧
	૩૨	૧૦૨
અરજ્જંત	૧૬	૬
અરણી	૧૪	૧૮
અરણ્ણ (ન્ન)	૧૬	૭૬, ૭૭
	૩૨	૭૬
અરય (અરત)	૧૭	૧૫
અરય (અરજસ)	૧૮	૪૦
અરહ	૬	૧૭
	૨૩	૧
અરહંત	૨૬	સૂ૦ ૫૧
અરિ	૨૦	૨૦, ૪૮
અરિઢ્ઢ	૩૪	૪
અરિઢ્ઢને(ણિ) મિ	૨૨	૪, ૫, ૨૭

અરિહ *		
-અરિહ્ઢ	૧૧	૧૪
અરિહ	૩૬	૨૬૨
અલ્લિ	૩૬	૪, ૬, ૬૬,
		૨૪૮
અલં	૬	૩
	૬	૪૬
અલંકિય	૧૮	૧૬
	૩૦	૨૨
અલઢ	૨	૩૦
અલ્લસ	૩૬	૧૨૮
અલામ	૨	સૂ૦ ૩
	૨	૩૧
	૧૪	૩૨
	૧૬	૬૦
	૩૫	૧૬
અલામયા	૧૬	૩૨
અલિત	૨૫	૨૬
અલિય	૧	૧૪
	૩૫	૩
અલોગ (અ)	૨૬	સૂ૦ ૭૧
	૩૬	૨, ૭, ૫૬
અલોલ	૩૫	૧૭
અલોલુય	૨	૩૬
	૨૫	૨૭
અલ્લીણ	૨૩	૬

अवउज्झ *

-अवउज्झइ	१७	६
	१६	२२
अवउज्झऊण	६	५५
अवउज्झमय	१०	३०
अवकंल *		
-अवकले	६	१३
अवगय	२८	२०
अवगाहिया	१०	३३
अवचिट्टु *		
-अवचिट्टे	१४	१८
अवणअ	२१	२०
अवणवाइ	३६	२६५
अवत्तासिय	१६	६
अवघसि	४	७
अवपेक्ख *		
-अवपेक्खसि	६	१२
अवबुज्झ *		
-अवबुज्झसे	१८	१३
अवमन्न *		
-अवमन्नह	१२	२६
अवमाण	१६	६०
अवरज्झ *		
अवरज्झइ	७	२५, २६
	३२	२५, ३८, ५१,
		६४, ७७, ६०

अवलम्ब *

-अवलम्बइ	२६	सू० २०
अवलम्बमाण	२६	सू० २०
अवलिय	२६	२५
अवस	७	१०
	१३	२४
	१८	१२
	१६	१६, ५६, ५७,
		६३, ६४
अवसन्न	१३	३
	३२	७६
अवसीय *		
-अवसीयई	२७	१५
अवसेस	१२	१०
	२६	२०, ३५
	२६	सू० ७३
अवसोहिय	१०	३२
अवहिअ	३२	८६
अवहेडिय	१२	२६
अवि	१	११, १७
अविगाह	२६	सू० ७४
अविज्जा	६	१
	३४	२३
अविणीय	१	३
	११	२, ६, ६
अवियार	३०	१२

११६

परिशिष्ट-२

अविरथ	३४	२१, २४
अविष्कास	२६	२८
अविबन्ध	२०	४४
अविसंवायण	२६	सू० ४६
अविसारय	२८	२६
अविस्साम	१६	३५
अविहेड्य	१५	१५
अवेक्खंत	२३	१५
अवेयण	१६	२१
अव्वक्खित्त	१८	५०
	२०	१७
अव्वगमण	१५	३, ४
अव्वाबाह	२६	सू० ४
अस *		
-अत्थि	२	७, २७, २८, ४४, ४५
	४	१, ३
	५	६
	६	१४
	१२	३२, ३५
	१३	१०
	१४	१५, २७ से २६
	१७	२
	१६	४४, ७४
	२०	४६
	२३	६६, ८१

-अत्थि	३२	१७
	३६	६६
-अमि	१२	६
	१४	३०
	१६	१०, ६६, ७०
	२०	६, ३३
-अमु	८	७
-असि	६	५८
	१०	३२, ३४
	१२	७, ११
	१३	३२, ३३
	१८	१०
	१६	३४
	२०	८, १२, ४०, ५६
	२२	४१, ४३
-आसिमो	१३	५
-आसी	६	५
	१२	१
	१३	६७
	१८	२८
	२०	५, १८
	२१	१
	२२	१ से ३
	२३	८८
	२५	१

-सिया	१	८,४०	असंजम	३१	२	—
	२	३१	असंजय (अ)	१७	६	—
-सन्ति	५	२,२०		२०	४३	
	८	६		२६	४४	
असई	५	३	असथड	२१	२२	—
	६	३०	असपहिट्ट	१५	३,४	
	१६	४५	असंबुद्ध	१	३	
असकिलिट्ट	३६	२६०	असम्भन्त	२२	३६	
असंख	३४	४६,५०	असंलोअ	२४	१६,१७	
असखकाल	३६	१३,८१,८६,	असविभाणि	११	६	
		१०४,११४,		१७	११	
		१२३	अससत्त	२	१६	
असखभाग	३४	३५ से ३७,		२५	२७	
		४१ से ४३,	असच्च	१	१४	
		५३	असच्चमोसा	२४	२०,२२	
	३६	१६२	असज्जमाण	१४	६	
असखय				२६	सू० ३१	
(असंस्कृत)	४			३२	५	
	४	१	असण (असान)	२	३०	
असखय				१६	६२	
(असंख्यक)	६	४८	असण (असन)	३४	८	
असखिज्ज	३४	३३	असणि	२०	२१	
असंखिज्जइम	३४	४८	असत्त	१३	३२	
असखेज्ज	३४	५२	असन्त	६	५१	
असंखेज्जइम	३६	१६१		१४	१८	
असगया	२०	६	असवल	२६	सू० १२	

असन्ध	२१	१४
असमंजस	४	११
असमाण	२	१६
असमारभन्त	१२	४१
असमाहि	२७	३
	३१	१४
असरण	६	१०
असाय	३३	७
असायावेय-		
गिज्ज	२०	४२
	२६	सू० २३
असावज्ज	२४	१०
असासय	८	१
	१३	२०, २१
	१४	७
	१६	१२, १३
असाहु	१	२८
असाहुख्व	२०	४६
असि	१६	३७, ५५
असिहे	८	२
असिपत्त	१६	६०
असिप्पजीवि	१५	१६
असिय	१६	१२
असील	५	१२
	११	५
	२०	४६

असुइ	१६	१२
असुभ	२१	६
	२४	२६
असुय	१४	८
असुर	१२	२५
	३६	२०६
असुह	१०	१५
	१३	२८
	३३	१३
असेवमाण	१२	४१
अस्स	१	१२, ३७
	२०	१४
	२३	५५, ५७, ५८
अस्सजय	३१	१३
अस्सकण्णी	३६	६६
अस्सस		
-अस्सासि	२	४१
अस्साय	१६	४७, ४८, ७४
अस्सविली	२३	७१
अस्सिय (अ)	१३	१५
	१८	६
	२८	६
	३५	२
अस्सुयपुब्ब	२०	१३
अह (अथ)	२	४१
अह (अहन)	१४	१४

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

अहक्खाय	१४	५०
	२८	३३
अहक्खायचरित	२६	सू० ५६
अहम	६	५४
	१३	१८
अहम्म	४	१३
	५	१५
	७	२८
	१४	२४
	१७	१२
	२८	७ से ६
	३६	५
अहम्मलेसा	३४	५६
अहम्मिदु	७	४, २८
अहवा	३०	१३
अहस्सर	११	४
अहाउय	३	१६
	२६	सू० ७३
अहाच्छद	२०	५०
अहाणुपुव्वी	३२	६
अहि	१६	३८
	३४	१६
	३६	१८१
अहिसया	३	८
अहिंसा	२१	१२
अहिक्षव *		
-अहिक्षवर्ह	११	११

अहिगच्छ *

-अहिगच्छंति	२३	३५
अहिगम	२६	सू० ६०
अहिगय	२८	१७
अहिगार	१४	१७
अहिज्ज	१२	१५
	१४	६
अहिज्जंत	२८	२१
अहिज्जिता	१	१०
अहिट्टा *		
-अहिट्ठेज्जा	११	३२
-अहिट्ठेज्जासि	३४	६१
अहिट्ठिय	६	४
अहित्त	२	६
अहिय	१४	१०
	२२	१०
	३१	१६
	३२	५
	३४	३४, ३८, ३९,
		५२, ५४
	३६	१८५, १६२,
		२१६, २२१,
		२२३, २२५
अहियास *		
-अहियासए	२	२३, ३२
	१५	३, ४

-अहियासएज्जा	२१	१८	आड (दि०)	२३	४३
अहिवर्द्ध	११	१६, २२, २३		२४	१८
अहीण	१०	१७, १८		२६	सू० ३
अहीय	१४	१२		३०	१५, १८, २६,
अहीरिया	३४	२३			३१
अहीलणिज्ज	१२	२३		३१	१७
अहुणेववन्न	५	२७		३२	१०६
अहे	६	५४		३६	६६, ११०,
	३६	५०, ५४			११६, १३०,
अहेउ	१८	५१, ५३			१३६, १४६,
अहो (अहो)	६	५६, ५७			१८०, १८१,
	१२	३६			२१६
	१८	३१	आडअ (य)	२५	१७
	१६	१५		३०	२७, ३३
	२०	६		३२	१०६
	२१	६		३६	१३८
अहो (अहन्)	१४	१४	आडक्ख +		
अहो (अघस्)	१६	४६	-आडक्ख	१२	४५
अहोरत्त	३६	११३, १४१	आडच्च	२६	८
अहोराय	१८	३१		३४	७
आड (आ+पा) *			आडण्ण	१	१२
-आडए	१०	२६		११	१६, १७
आड (आ+ठा) *				१६	११
-आडए	२४	१४		१६	५२
आड (दि०)	१६	२७, ५१, ६६,		२०	३
		६७		२७	१

उत्तररजभयण शब्द-सूची

१२१

आउ (अपे) ३६	६६, ८४, ८८, ८६, ६०	आउत्तया २०	४०
आउ (आयुष) ७	१०, १२, १३, २४, २७	आउर २	५
१०	३	१५	८
१४	७	३२	२४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६
१८	२६	आउस २	सू० १
३३	१२	१६	सू० १
३४	२	१७	२
३६	१०२	२६	सू० १
आउअ (य) ४	६	आएस ७	१ से ४, ६
७	४, ७, २४	३६	६
२६	सू० २३, ४२, ७३	आगअ (य) ५	६
आउकम्म ३२	२, १२, २२	७	६, १४, १५
आउककाय (अ) १०	६	१०	३४
२६	३०	१२	७, ६
आउकखय ३	१६	१४	४५
३२	१०६	१८	५, २६
आउट्टिइ ३६	८०, ८८, ११३, १२२, १३२ से १४१, १५१, १६७, १७५, १८४, १६१, २००, २४५	२१	२, ५, १०
आउत्त १६	२६	२३	३, १५, १६
		२६	४६
		२६	सू० ४३
		आगन्तु २५	२०
		आगच्छ* १२	६
		-आगच्छइ २०	४३
		२६	सू० २, ३

१२२

परिशिष्ट-२

-आगच्छऊ	२२	८
आगम	३६	२६२
आगमिस	२६	सू० २४
आगम्म	१	२२
	१४	३
	१८	६
आगर	१६	५,४६
	३०	१६
आगार	१	२
आगास	६	४८,६०
	१२	३६
	१६	३६
	२८	७,८
	३६	२,६ से ८
आवविअ	२६	सू० ७४
आवायाय	५	३२
आणय	३६	२११,२३०
आणा	१	२,३
	२०	१४
	२८	२०
	२६	सू० १,११
आणापाणु	२६	सू० ७३
आणारुड	२८	१६,२०
आणी *		
-आणेइ	२१	७
आणुपुव्वी	१	१

आणुपुव्वी	२	१
	३	७
	११	१
	३३	१
	३४	१
आतव	२८	१२
आदाअं	१४	३८
आदाण	२४	२
आदाय	२	१७,४३
	५	३०
	६	१३
	१८	५१
आदेसओ	३६	८३,६१,
		१०५,११६,
		१२५,१३५,
		१४४,१५४,
		१६६,१७८,
		१८७,१९४,
		२०३,२४७
आनम *		
-आनमति	६	३२
आपुच्छ	२१	१०
आपुच्छणा	२६	२,५
आपुच्छित्ताण	२०	३४
आभरण	१३	१६
	२२	६,२०

उत्तररञ्जयण शब्द-सूची

१२३

आभिओग	३६	२५६
आभिनि (ण)		
-बोहिय	२८	४
	३३	४
आमंत *		
-आमन्तयामो	१४	७
आमंतिअ	१३	३३
आमय	३२	११०
आमिस	८	५
	१४	४६
	३२	६३
आमोयमाण	१४	४४
आमीस	६	१२८
आय	२	१५
	८	१६
	१३	१०
	१४	१०
	१५	२
आयक	५	११
	१०	२७
	१६	सू० ३ से १२
	१६	७८
	२१	१८
	२६	३४
आयगवेसंअ	१५	५
आयगुत्त	१५	३
	२१	१६

आयय *		
-आययई	३२	२६
आयय	३६	२१, ४६, ५८
आययगतु-		
पञ्चागया	३०	१६
आययट्टिय	२६	सू० ३४
आययण	३२	६
आयर *		
-आयरे	२४	७
	३०	३७
आयरत	१	४२
	३५	१
आयरियं(आचार्य)	१	२०, ४०, ४१,
		४३
	८	१३
	१६	सू० ३ से १२
	१७	४, ५, १७
	१८	२२
	२०	२२
	२७	११
	३०	३३
आयरिय-		
(आचरित)	१	४२
	६	८
आयव	२	३५
आयहिअ	२१	१२

१२४

परिशिष्ट-१

आया *			आराम	१६	१५
-आयएज्ज	६	७	आराह *		
-आययन्ति	३	७	-आराहए	१२	१२
आयाण	६	७		१७	२१
	१३	१६	-आराहेड	२६	सू० १५, १७
आयाणनिक्खेव	१२	२	आराहअ	२६	सू० १, ४६, ५१,
	२०	४०			५४
आयाम	३६	२५३ से २५५	आराहइत्ता	२६	सू० १
आयामग	१५	१३	आराहणया	२६	सू० १
आयाय	३	११			२५, ४६, ७२
आयार	११	१	आराहणा	२६	सू० १५
	२०	५२	आराहिय	८	२०
	२३	११	आरिअत्त	१०	१६
	२६	सू० १७	आरिय	२	३७
आरभ	१३	३३		८	८
	१४	४१		१८	२५
	१६	२६	आरियभाण	३२	१५
	२४	२१, २३, २५	आरियत्तण	१०	१७
	२६	सू० ३	आरूह *		
	३४	२१, २४	-आरूहइ	१७	७
आरभ *			आरूढ	२२	१०
-आरभे	८	१०		२३	५५, ७०
आरण	३६	२११, २३२	आलम्बण	२४	४, ५
आरण्णग	१४	६		२६	सू० ३४
आरभडा	२६	२६	आलय	१६	१, ११
आरसंत	१६	५३, ६८		१६	१४

आलय	३६	२०८
आलव *		
-आलवे	१	१०
आलवंत	१	२१
आलसिअ	२७	१०
आलस्स	११	३
आलुय	३६	६६
आलोइत्ता	१६	सू० ६
आलोएमाण	१६	सू० ६
आलोय (आ+लोक) *		
-आलोएइ	१६	४
-आलोएज्जा	१६	सू० ६
आलोय (आ+लोक्) *		
-आलोएज्ज	२६	४०, ४८
आलोय	३२	२४
आलोयण	१६	४
	२१	८
आलोयणया	२६	सू० १
आलोयणा	२६	सू० ६
	३६	२६२
आलोयणारिह	३०	३१
आवई	७	१७
आवज्ज *		
-आवज्जई	३२	१०३, १०४
आवट्ट	३	५
	२५	३८

आवडिय	२५	४०
आवन्न	४	४
	६	१२
आवर *		
-आवरेइ	३२	१०८
आवरण	३३	६
आवरणिज्ज	३३	२०
आवसह	१३	१३
	३२	१३
आवस्सिथा	२६	२, ५
आवाय	२४	१६
आवास	५	२६
	१६	१२
आवि	१	१७
आविद्ध	२२	४४
आविल	३२	२६, ४२, ५५,
		६८, ८१, ६४
आवेउं	२२	४२
आस	४	८
	६	५
	११	१६
	१८	६, ८
आसअ	२८	६
आससा	२६	सू० ३६
आसण	१	२१, २२, ३०,
	२	२१

१२६

परिशिष्ट-२

आसण	७	८
	१५	४,११
	१६	सू० ३
	१७	१३
	२६	सू० १,३२
	३०	२८,३२,३६
	३२	१२
आसणया	२६	सू० ३२
आसन्न	१	३४
	२४	१८
आसम	६	४२
आसमपय	३०	१७
आसव(आश्रव)	१८	५
	१६	६३
	२०	४५
	२८	१४,१७
	२६	सू० १२,१४,५६
	३४	२१
आसव		
(आसव)	३४	१४
आससा	१२	१२
आसा	१२	७
	३२	२७,४०,५३,
		६६,७६,६२
आसाज		
आसाण्ड	२६	सू० ३४

आसाढ	२६	१३,१५,१६
आसायणा	३१	२०
आसिय	१६	१२
आसीवित	६	५३
	१२	२७
आसुपन्न	४	६
आसुर	३	३
	८	१४
आसुरस्त	३६	२५६
आसुरिया	७	१०
	३६	२६६
आसेवण	३०	३३
आसोज	२६	१३
आह		
-आहिज्जइ	२६	सू० १
आहज	१८	७
आहच्च	१	११
	३	६
आहरित्तु	१६	७६
आहाकम्म	३	३
	५	१३
आहार	१५	१२
	१६	सू० ६
	१६	३०
	२४	११,१५
	२६	सू० १,३२,३६

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१२७

आहार	३०	१३, १५	-एन्ति	७	१६
	३१	८	इ	२	४०
	३२	४	इइ (ति)	२	७
	३५	२०	इओ	१३	३२
	३६	२५५		२०	३२, ४७
आहार *			इंगाल	३६	१०६
-आहारेइ	१७	१५, १६	इंगिय	१	२
-अहारेज्जा	१६	सू० ६		३२	१४
आहारित्ता	१६	सू० ६	इंद	२०	२१
आहारेत्ता	१६	सू० १०	इंदक	३६	१३८
आहारेमाण	१६	सू० ६, १०	इंदगोवग	३६	१३६
आहिय	२४	१	इदत्त	६	५५
	२८	८, ३३	इदनील	३६	७५
	३०	१३, २४, २५,	इदिय	१६	सू० १ से ३, ५
		२७, ३१, ३३		१६	११
	३३	७, १३, १४,		२३	३८
		१६, १७		२४	८, २४
	३६	५, ६, २०,		३२	११, १२, २१
		७७, ६५,			१०४
		१५५, १५६,		३५	५
		१७२, २०६	इदियगाम	२५	२
			इदियगेज्ज	१४	१६
			इंदियत्थ	३१	७
				३२	१००, १०६
इ *			इंघण	१४	१०
-एइ	७	३		३२	११
	२०	४६, ५०			

इक	८	१६
	१०	१४
	२८	८
इककग	१३	२५
इककतीस	३६	२४२
इककतीसइ	३६	२४३
इककवीस	३६	२३२
इककवीसइ	३६	२३३
इकखाग	१६	३६
इच्छ *		
-इच्छइ	१२	२२
	१५	५
	१७	१६
-इच्छसि	१४	३८
	२७	४२
-इच्छह	१२	२८
-इच्छामि	२०	५६
	२२	४१
-इच्छामो	१२	४५
-इच्छे	१	१२
	३२	४
-इच्छेज्जा	६	२६
	३२	४
-इच्छं	२६	६
-इच्छिज्ज	३२	१०४
इच्छंत	१	६

इच्छा	६	४८
इच्छाकाम	३५	३
इच्छाकार	२६	३,६
इच्छिअ	२२	२५
	२३	३१
	३०	११
इट्ठ	१६	१३
	२२	२
इड्ढि	२	४४
	७	२७
	१२	३७
	१३	११
	१६	८७
	२२	१३,२१
	२७	६
	३५	१८
	३६	२६४
इड्ढिमंत	५	२७
	२०	१०
इण्हि	१२	३२
इत्तरिय (अ)	१०	३
	३०	६ से ११
इत्तिय	३०	१८
इत्तो	५	१७
	३६	७८
इत्थ	१६	सू० १२

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१२६

इत्थिया	१४	६, १६
इत्थी	१	२६
	२	सू० ३
	२	१६, १७
	५	१०
	७	६
	८	१६
	१२	४१
	१६	सू० ३ से १२
	१६	३
	३०	१२
	३२	१३ से १५,
		१७
	३५	७
	३६	४६, ५१
इत्थीवेय	२६	सू० ६
इम	१	१५
इय	२४	२
इयर	२०	६०
इर *		
-इरियामि	१८	२६
इरिया	६	२१
	१२	२
	२०	४०
	२४	२, ४, ८
	२६	३२

इरियावहिय	२६	सू० ७२
इव	११	२४
इसि	१२	१६, २१, २४,
		३०, ३१, ४४,
		४७
	२१	२२
इसिज्भय	२०	४३
इत्सरिय	१८	३५
	२०	१४
इत्सा	३४	२३
इह	२	सू० १
इहं	१२	७, ११
	१३	१४
	१७	२०
	१६	४७, ४८, ६२
	३६	५६
इहलोइअ	१५	१०
ईसाण	३६	२२३
ईसाणग	३६	२१
ईसि	२६	सू० ७३
ईसीपब्मार	३६	५७
ईह *		
-ईहइ	७	४

उ			उक्कोस	३६	१२३, १२४,
उ	१	८			१३२ से १३४
उइ *					१४१ से १४३,
-उइन्ति	२१	१६			१५१ से १५३,
उइज्ज *					१६० से १६६,
-उइज्जन्ति	२	४१			१६८, १७५ से
उंछ	३५	१६			१७७, १८४ से
उक्कुडुअ	१	२२			१८६, १९२,
उक्कत्त	१६	६२			१९३, २०१,
उक्कल	३६	१३७			२०२, २१६ से
उक्कलिया	३६	११८			२४३, २४६
उक्का	३६	११०	उक्कोसिय	३३	१६
उक्कुद् *				३६	८०, ८८,
-उक्कुद्द	२७	५			१०२, १२२,
उक्कोस	५	३			१६७, २४५,
	१०	५ से १४			२५१
	३३	२१ से २३	उग्ग	१८	५०
	३४	३४ से ३६,		१६	२८
		४१ से ४३,		२०	५३
		४६ से ५०		२२	४८
		५२ से ५५		३०	२७
	३६	१३, १४, ५०,	उग्गअ	२३	७६, ७८
		५३, ८१, ८२,	उग्गतव	१२	२२, २७
		८६, ९०,	उग्गाम	२४	१२
		१०३, १०४,	उग्गाअ		
		११३ से ११५,	-उग्घाएइ	२६	सू० ७, ७२

उत्तररजभयण शब्द-सूची

१३

उच्च	३३	१४
उच्चागोय	३	१८
	२६	सू० ११
उच्चार	२४	२, १५, १८
	२६	३८
	२६	सू० ७३
उच्चारसमिह	१२	२
उच्चावय	२	२२
	१२	१५
उच्चोयअ	१३	१३
उच्छु	१६	५३
उज्जम		
उज्जमए	३२	१०५
उज्जहिता	२७	७
उज्जाण	१८	३४
	१६	१
	२०	३
	२२	२३
	२३	४, ८
	२५	३
उज्जुअ	१६	८८
उज्जुकड	१४	४१
	१५	१
उज्जुजड	२३	२६

उज्जुभाव	२१	२०
	२६	सू० ६, ७०
उज्जुसेढि	२६	सू० ७४
उज्जुयभूय	३	१२
उज्जेय (उद्योत)	२३	७५, ७६, ७८
	२८	१२
उज्जोय (उद्योग)	२२	३६
उज्जिता	१४	४६
उद्विअ	१८	३१
उद्वित्ता	२	२१
उड्डवड	११	२५
उड्डस	३६	१३७
उड्ड	३	१३, १५
	६	१३
	१२	२६
	१६	४६, ५१, ८२
	२६	२४
	२६	सू० ७४
	३६	५०
उड्डलोअ	३६	५४
उण्ह	२	६
	१५	४
	१६	३१, ४७, ६०,
	३६	२०
उण्हअ	३६	३६

१३२

परिशिष्ट-२

उत्तम	६	६,५७ से	उत्तिम	२२	१३,२३
		५६	उदग (क,अ)	७	२३
	१०	१८,१६		८	८
	११	३१,३२		११	३०
	१२	४७		१२	३६,३८,३९
	१३	१०		२३	६५,६६
	१४	३७		२८	१२
	१८	४१	उदग	११	२०
	१९	६७		१३	३५
	२०	५०,५२,५५		१४	२
	२३	५१,६३,६८	उदय	२३	४८
	२५	६,१७,३३,	उदहि	११	३०
		३७		३३	१६,२१,२३
उत्तमद्व	२०	४६		३४	३५ से ३७,
उत्तमंग	१२	२६			४१ से ४३,
	२०	२१			५३
उत्तर	३	१४	उदार	१४	३५
	५	२०,२६	उदाहर *		
	१२	१	-उदाहरिस्सामि	२	१
	३३	१६	-उदाहरे	५	१
	३६	५३,५४		११	४
				२२	३६
उत्तरगुण	२६	११,१७	-उदाहरित्था	१२	८
उत्तरज्झाय	३६	२६८		१३	१५
उत्तरित्ता	३२	१८			
उत्ताणग	३६	६०	उदाहु *		
उत्तिद्वन्त	११	२४	-उदाहरित्था	१२	८
				१३	१५

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

उदाहु	६	१७
	१४	६
	२०	५४
उदिण	१८	१
उदीर *		
-उदीरेड	१७	१२
उदीरिय	२६	सू० ७२
उद्दायण	१८	४७
उद्देस	३१	१७
उद्देसिय	२०	४७
उद्देहिया	३६	१३७
उद्धत्तु	२५	३३, ३७
उद्धत्तुकाम	३२	६
उद्धरण	२६	सू० ६
उद्धरिअ	२३	४५
उद्धरित्ता	२३	४६
उद्धरित्तु	२३	४८
उद्धाडय	१२	१६
उप्पडय	२	३२
	६	६०
उप्पज्ज *		
-उप्पज्जइ	१७	२
उप्पह	२४	५
	२७	४
उप्पाअ *		
-उप्पाएइ	२६	सू० १८, २२

उप्पायग	३६	२६२
उप्पायण	२४	१२
	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३
उप्फालग	३४	२६
उप्फिड *		
-उप्फिडई	२७	५
उभ	२३	६, १०
उभओ	११	१७
	२८	६
उभय	१	२५
उम्मग	२३	५६, ६१, ६३
उम्मज्ज	७	१८
उम्मत्त	१८	५१
उम्माय	१६	सू० ३ से १२
उम्मुक्क	३६	६३
उयहि	१६	३६
उर	२०	२८
उरग	१४	४७, ३६, १८१
उरब्भ	७	४
उरब्भिज्ज	७	
उराल	१५	१४
	३६	१०७
उल्ल	२२	३३
	२५	४०

१३४

परिशिष्ट-

उल्लंघन	१७	८
	२४	२४
उल्लव	११	२
उल्लविय	१६	४
उल्लिअ	१६	६४
उल्लोय	३५	४
उवइट्ट	१	४४
	२८	१६
उवउत्त	२४	७, ८
	२६	सू० १२
उवउत्तया	२४	६
उवएसण	२८	१५
उवएसरुड	२८	१६, १६
उवओग	२८	१०, ११
उवखड	१२	११
उवग	२६	२७
उवगअ	२१	२३
	२६	सू० १३, १८, ३६
उवगरण	१२	४
उवघाइ	१	४०
उवचि		
-उवचिणाइ	२६	सू० २३
उवचिट्ट		
-उवचिट्ठे	१	२०
-उवचिट्ठेज्जा	१	३०
उवजोइय	१२	१८

उवज्झाय	१७	४, ५
उवट्टिता	८	१५
उवट्टिअ (य)	१२	३
	२०	२२
	२५	५
	३२	१०७
	३५	२०
उवणिग्गअ	१८	१
उवणी		
-उवणिज्जड	१३	२६
उवणीअ (य)	४	१, ६
	१३	२१
उवदसिअ	२०	५४
	२५	३५
	२६	सू० ७४
उवभुज		
-उवभुजइ	२०	२६
उवभोग	३२	३२, ४५, ५८,
		७१, ८४, ६७
	३३	१५
उवमा	४	६
	७	१५
	६	५३
	१४	४७
	१८	२८
	१६	११

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१३५

उवमा	२०	३
	३२	२०
	३६	६६
उवरञ (य)	६	६
	१५	२
उवरि	३६	५७
उवरिम	३६	६२, २१३, २१४, २१५
उवल	३६	७३
उवलद्ध	२८	२४
उवलभ *		
-उवलभामि	१६	१३
उवलिप्य *		
-उवलिप्पई	२५	३६
उवलेव	२५	३६
उववज्ज *		
-उववज्जइ	३	१७
	७	२७ से २६
	३४	५६, ५७
-उववज्जति	८	१४
उववत्तिग	२६	सू० १५
उववन्त	६	१
	१३	१
	१७	१
	२०	४४
उववाअ	३४	५८, ५९

उववाइय	५	१३
उववाय *		
-उववायए	१	४३
उववायकारअ	१	२
उववूह	२८	३१
उववेय	१	१३
	१२	१३
	१३	१० से १३
	२०	५१
उवसत	२	१५
	६	१
	१५	१५
	३४	३०, ३२
उवसपज्जित्ताण	२६	सू० ३४
उवसंपदा	२६	४, ७
उवसग्ग	२	२१
	२६	३४
	३१	५
उवसत्त	३२	२६, ४२, ५५
		६८, ८१, ९४
उवसम	३२	११
उवसोहिय	१०	३७
	१८	३४
उवस्सअ	२	२३
	३५	५

१३६

परिणिष्ट-

उवहस *			-उवेड	२०	४६, ५२
-उवहसन्ति	१२	४		२१	२०
उवहाण	२	४३		३२	११, २४ मे
उवहाणव	११	१४			२६, २६, ३३,
	३४	२७, २६			३७ से ३६,
उवहि	१२	४			४२, ४६, ५०
	१६	८४			से ५२, ५५,
	२४	११, १५			५६, ६३, मे
	२६	सू० १, ३५			६५, ६८, ७२,
उवागज (य)	१३	८			७६ मे ७८,
	१४	५२			८१, ८५, ८६
	२३	४			से ६१, ६४,
	२५	३			६८. १०१,
उवागम्म	१४	६			१०६
	१६	६	-उवेह	१२	२८
उवाय	३२	६	-उवेमो	१२	३३
उवायओ	२३	४१	उवेय	६	६
उवासग	३१	११	उवेह *		
उविच्च	१३	३१	-उवेहे	२	११
उवे *			-उवेहेज्जा	२	२५
-उवेति	३	१६	उवेहमाण	२१	१५
	४	२, ४	उव्विग	१४	५१
	७	२०	उसिण	२	सू० ३
	३२	१०१		२	८
-उवेइ	४	८		२१	१८
	१५	६	उसुयार	१४	१

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१३७

उसुयारिज्ज	१४	
उस्स	३६	८५
उस्सप्पिणी	३४	३३
उस्सिचणा	३०	५
उस्सिय	१०	३५
उस्सुला (दे०)	६	१८
उस्सेह	३६	६४

ऊ

ऊ	१२	११
ऊण	७	१३
	३०	२१
	३४	४६
ऊणोयरिया	३०	८
ऊर	१	१८
ऊत्त	३६	७३
ऊत्तसिय	२०	५६
ऊत्तिय	२२	११

ए

ए *		
-एइ	२०	५०
-एन्ति	७	१६
-एहि	२२	३८

६१

एउं	४	१०
एक्क	१३	३
	१४	३४, ३६, ४०
	३६	१८१
एक्कअ	३५	६
एक्कसीइ	३४	२०
एक्कारत्त	२८	२३
एग	१	२६, ३३
एगअ	२	२०
एगइअ	२६	सू० २
एगओ	१४	२६
	३१	२
एगंत	६	४, १६
	१६	३८
	२२	३५
	२६	सू० ३२
	३०	२८
	३२	२, ३, १६,
		२६, ३६, ५२,
		६५, ७८, ६१
एगंतदिट्ठोअ	१६	३८
एगत्तर	३६	२५३
एगखुर	३६	१८०
एगा	१	१०
एगग	२६	सू० १, २६, ३१,
		सू० ४०, ५४, ५७

एगग	३२	१
	३५	१
एगगचित्त	२६	सू० ३१, ५४
एगगमण	२६	सू० १, २६
	३०	१
	३५	१
एगवर	१५	१६
एगचित्त	२०	३८
एगच्छत्त	१८	४२
एगत्त	२८	१३
	३६	११, ६५
एगपक्ख	१२	११
एगभूय	१६	७७
एगमण	३०	४
	३६	१
एगया	२	६, १३
	३	३, ४
एगराय	२	२३
	५	२३
एगविह	३६	७७
एगवीस	३१	१५
एगामोसा	२६	२७
एगीभाव	२६	सू० ४०
एगूणपण	३६	१४१
एज्जंत	१२	४
एत्तिअ	१३	३३

एत्तो	१६	४७, ४८, ७३
	३०	२६
एत्थ	१२	१५, १८
	१८	८
एमेव	१४	१८
	२०	५०
एय (एतद्)	२	१३
एय (एव)	२४	१६
एयारिस	१३	२६
	१७	२०
	२२	१३
	३२	१७
एरिस	१२	११, ३७
	१६	६
	२०	१५
एलय	७	१, ७
एलिकख	७	२२
एव	१	१५
एव	१	४, ५
एवविह	३२	१०२
एवमेव	१४	१५, ४३
	१६	८२
एस *		
-एसिज्जा	३५	१६
-एसेज्जा	१	७
	२	३०

उत्तरजभाषण शब्द-सूची

१३६

-एसेज्जा	६	२
	८	११
एसणा	१	३२
	२	४
	६	१६
	८	११
	१२	२
	२०	४०
	२४	२, १२
	३०	२५
एसन्त	३०	२१
एसणिज्ज	१२	७
	१६	२७
	३२	४
एसमाण	१४	१४
एसित्ता	१	३२
एह *		
-एहए	६	३५
एह	१२	४३, ४४
ओ		
ओइण्ण	५	१४
	१०	३२
	१६	५५
	२२	२३

ओकार	२५	२६
ओगाढ	२४	१८
	३६	२५८, २५९
ओगाह	२८	६
ओगाह *		
-ओगाहड	२८	२१
ओगाहणा	३६	५०, ५३, ६०, ६२, ६४
ओघ	२१	२४
ओभास *		
-ओभासइ	२१	२३
ओम	३०	१५
ओमचरथ	३०	२४
ओमचेलअ	१२	६, ७
ओमरत्त	२६	१५
ओमाण	२७	१०
ओमासण	३२	१२
ओमोयरिय	३०	१४
ओयण	७	१
ओरस	६	३
ओराल	३६	१२६
ओरालिय	२६	सू० ७४
ओरुज्जमाण	१४	२०
ओरोह	६	४
	२०	५८
ओवग्गहिय	२४	१३

ओवहिय	३४	२५
ओवाय	१	२८
ओस (दि०)	१०	२
ओसप्पिणी	३४	३३
ओसह	१६	७६
	३२	१२
ओसहि	११	२६
	२२	६
	३२	५०
	३६	६५
ओह	१०	३०
	१४	१७
	२३	८४
	३२	३३, ३४, ४६,
		४७, ५६, ६०,
		७२, ७३, ८५,
		८६, ९८, ९९,
	३४	४०
ओहरिय	२६	सू० १३
ओहारिणी	१	२४
ओहि	३३	६
ओहिजलिय	३६	१४८
ओहिनाण	२३	३
	२८	४
	३३	४
ओहोवहि	२४	१३

क		
क	२	२३
कडय	३५	१४
कओ	६	१०
कख *		
-कखाए	५	३१
-कखे	४	१३
	६	४
	७	७
	१४	२७
कखा	१६	सू० ३ से १२
कखामोहणिज्ज	२६	सू० २१
कंचण	३५	१३
कचि	२०	६
कंचुय	६	२२
	१६	८६
कटग	१०	३२
	१६	५२
कठ	१२	६, १८
	२०	४८
कतार	१६	४६
	२७	२
	२६	सू० २३, ३३, ६०
कंथअ (ग)	११	१६
	२३	५८
कद	३६	६७, ६८

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

१४१

कंद *			कटुहार	३६	१३७
-कन्दन्ति	६	१०	कड	१	११
कंदंत	१६	४६		२	४०, ४१
कंदप्य	३६	२५६, २६३		४	३
कडली	३६	६७		६	१४
कदिय	१६	सू० ७		१३	६, १०, २८
	१६	५	कडुय (अ)	१६	११
कटु	१६	४६, ५१		३४	१०
कवोय	११	१६		३६	१८, ३०
कस	६	४६	कड्डोकड्ड	१६	५२
कक	१३	१३	कणकुंडग	१	५
कक्कर	७	७	कणिट्टग	२०	२६, २७
कक्खड	३६	१६, ३४	कण्ह	३६	६८
कच्छभ	३६	१७२	कण्हलेसा	३६	२५६
कज्ज	८	१७	कण्हुई	१	७
	२२	१७		२	४०, ४६
	२३	१३	कण्हुहर	७	५
	२४	३०	कत्तु	१३	२३
	२५	३८		२०	३७
	२६	सू० ५	कत्तिय	२६	१५
कट्ट	१	११	कत्तो	३२	३२, ४५, ५८,
	३	२			७१, ८४, ६७
	२०	४७	कत्थ	३६	५५
	३६	२५३, २५५	कत्थई	२	२७
कट्ट	१२	३०, ३६	कन्ना	२२	६ से ८, २८,
	३५	११			३१, ४०

१४२

परिविष्ट-२

कप्य	३	१५
	१६	६२
	२३	२७
	३२	१०४
कप्य *		
-कप्यङ्ग	३०	१८
-कप्यण	६	२
कप्यणी	१६	६२
कप्यविमाण	२६	सू० १५
कप्याईय	३६	२०६, २१२
कप्यासऽट्टिमिज	३६	१३८
(दे०)		
कप्यिय	१६	६२
कप्योवग	३६	२०६ से २११
कब्बड	३०	१६
कम*		
-कम्मइ	५	२२
कम	३०	५
	३२	१११
	३६	२५०
कमलावई	१४	३
कमसो	१४	११, ५१
	३६	१६७
कम्पिल्ल	१३	२, ३
	१८	१, ३
कम्म	१	१७, ४३

कम्म	२	४०, ४१
	३	२, ६, ७, १३
	४	२ से ४
	५	११, १२
	६	३, १०, १३,
		१४
	७	६, २०
	८	६, १५
	९	२२
	१०	४, १५
	११	३१
	१२	४०, ४४
	१३	८ से १०,
		१६, २३, २६,
		३२
	१४	२, ५, २०
	१८	१७, ४८
	१९	५३, ५५, ५७
	२०	५२
	२१	६
	२२	४८
	२५	२८, ३१, ३२,
		४३
	२८	३६
	२९	सू० २, ७, ११,
		सू० १६, १७, १९,

कम्म	२६	सू० २१, २३, २४, सू० ३०, ३३, ३८, सू० ४४, ६३ से सू० ७२, ७४	कय (कृत)	१८	१७
				२०	५७
				२२	६, २१
				२४	१७
	३०	१, ६		३२	३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७,
	३१	३			१०८
	३२	७, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८, १०८	कय (क्रय)	३५	१३, १४, १५
			कयंजलि	२०	५४
	३३	१, १०, ११, १३, १४, १७, १८, २०, २५		२५	३५
			कयत्थ	३२	११०
			कयमड	२३	१४
कम्मसं (सत्कर्म) ३		२०	कयर	२	सू० २
	२६	सू० ४२, ५६, ६२, सू० ७२, ७३		१२	६, ७, ४३
				१६	सू० २
कम्मकिञ्चिस ३		५	कया	१	२२
कम्मपयडि २६	सू० २३		कयाइ	१	११
कम्मप्यवीअ १३	२४		कर	१	२, ३, २६
कम्मभूप ३६	१६६			८	२
कम्मय ८	१			१३	२७
कम्मलेसा ३४	१		कर		
कम्मसपया १	४७		-अकासी	१	१०
कम्हिचि १५	२			१३	१, २६
कय (कृत)	८	१७		१४	२०
	१३	१५, ३३	-करति	१६	१६
	१४	१६		१६	६६

करिस्तद्धि	२	२३	कुञ्जा	४	२
	२३	७५, ७६, ७७		२६	५, ११, १३
करे	३०	१५			२०, २१, २७
	३६	२५०, २५४			३६, ३७, ४१
करेड	४	४			४६, ४८
	१५	१०		३१	२
	२०	४८		३२	२१
	२६	मू० ३, ४, ६		३५	=
		मू० २६, २८, ४२	करकांड	१८	४५
		मू० ५६, ५८, ६१	करक्य	१८	५१
		मू० ६०, ७३, ७४	करगय	३४	१८
करेज्ज	२६	३३, ५०	करण	२६	५
करेति	६	६२		२८	मू० १७
	१२	३२	करणगुणसेडि	२८	मू० ७
	२२	४८	करणसक्क	२८	मू० १, ५०
	२७	१३	करणमत्ति	२८	मू० ५२
	२८	मू० १	करवत्त	१८	५१
	३२	१००	करेडं	१८	३८, ४०
	३६	२६०	करेत	६	५८
करेह	२५	३७	करेणु	११	=
करेहि	१३	३२		३२	=८
कारण	३५	=	करेता	२८	मू० ७३
काहानि	१७	२	करेमाण	२८	मू० ३, ७३
काहिल्लि	=	२०	कल्लं	१८	५०
काहिल्लि	२२	४४	कल्लकल्लंत	१८	६८
कुञ्जा	१	१७, १८	कल्लत्त	६	१५
	२	१८, ३३, ३८			

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

कलह	८	४	कसिण	८	१६
	११	१३		१५	३, ४, ६
	१७	१२		२१	११
	२६	सू० ४०		२६	सू० ७२
कला	६	४४	कह	२३	६०
	२१	६	कह *		
कलि	५	१६	-कहसु	२३	२८, ३४, ३६,
कलिग	१८	४५			४४, ४६, ५४,
कल्ल	२०	३४			५६, ६४, ६६,
कल्लाण	१	३८, ३६			७४, ७६
	२	२३, ४२	-कहय	२५	१५
	११	१२	-कहेज्जा	१६	सू० ४
कवल	१६	३७	-कहेति	१३	३
कवाड	३५	४	-काहए	२०	५३
कविट्ट	३४	१२, १३	कहं	७	२२
कविल	८	२०	कहा	१६	सू० ४
कस	१	१२		२६	२६
	१२	१६	कहावण	२०	४२
कसाय (अ)	१६	६१	कहि	१६	६
	२३	३८, ५३	कहिंवि	८	२
	२६	सू० १, ३७, ४०	कहिता	१६	सू० ४
	३१	६	कहेमाण	१६	सू० ४
	३६	१८, ३१	काइय	३२	१६
कसायज	३३	११	काउ	३४	३, १२, ४१,
कसाय-					५०, ५६
मोहणिज्ज	३३	१०	काउं (कर्तुम्)	२२	२१

काउं (कृत्वा)	२२	३५	काम	१६	१०
	३६	२५४		२०	१५
काउज्जुयया	२६	सू० ४६		२५	२६, ४१
काउलेसा	३४	६, २६, ३६		३२	५, १०, १६,
काउस्सग	२६	३८, ४०, ४१,			१६
		४२, ४६, ४८		३५	५
		से ५१	कामकम	१४	४४
	२६	सू० १, १३	कामखंघ	३	१७
काऊण	२०	७, ५६	कामगुण	१०	२०
	२६	४२		१३	१५, १७, ३०
	२६	सू० २, १८		१४	४, ११, १६,
काऊणं	६	२८			१७, ३१, ३५,
	१६	२१			४०, ५०
कागिणी	७	११		१६	१०
काणण	१६	१		३२	२०, ८६,
काम	३	१५	कामदुहा	२०	१०३, १०७
	४	१०	कामभोग	५	३६
	५	४, ६		१३	५, ७
	७	८, १२,		१४	२८, २९, ३४
		२३ से २५			६, १३, ४३,
	८	४, ६, १४		१६	४६
	९	५१, ५३		१८	१३, १४
	१३	१०, १७, ३५		१९	४८
	१४	१४, ४५, ४७		२६	२८
	१६	२	कामरूवि	५	सू० ३
	१८	३४		३२	१०१
				६	२७
					१५

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

काय	२	३७	कायगुत्तया	२६	सू० १,५६
	३	३	कायगुत्ति	२४	२
	५	१०, २३	कायचिट्ठा	३०	१२
	६	११	कायठिड	३६	८१, ८६,
	८	१०, १४			१०३, ११४,
	१०	२०			१२३, १३३,
	१२	७			१४२, १५२,
	१५	१२			१६७, १७६,
	२१	२२			१८६, १९३,
	२४	२५			२०२, २४५
	२५	२५	कायर	२०	३८
	३०	३६		२१	१७
	३१	८	कायबोस्सग	२६	४६
	३२	६३, ७४, ७५,	कायव्व	२६	६, १०
		८१, ८२, ८६	काय-		
	३६	६०, १०३	समाधारणया	२६	सू० १, ५६
		१०४, ११४,	कारअ	६	३०
		११५, १२३,	कारडत्ताण	६	१८, २४
		१२४, १३३,	कारण	६	८, ११, १३,
		१४२, १५२,			१७, १९, २३,
		१५३, १६८,			२५, २७, २९,
		१७७, २४६			मे ३३, ३७,
					३६, ४१, ४३,
					४४, ४७, ५०
कायकिलेस	३०	८, २७		२०	२४
कायगुत्त	१२	३		२२	१६, ४२
	२२	४७		२३	१३, २४, ३०
	२६	सू० ५६			

१४८

परिशिष्ट-२

कारण	२४	४
	२६	३१
	२७	१०
	२८	१
	३१	८
	३६	२६२, २६६
कारव *		
-कारवे	२	३३
कारिस	१२	४३, ४४
काखण	३२	१०३
काल	१	१०, ३१, ३२
	४	६
	५	३१, ३२
	१०	५ से १२
	१२	६, ६, २७
	१३	२२, ३१
	१४	१३, २६, ५२
	१६	८
	१८	३२
	१९	२६
	२०	८, ४५
	२१	१४
	२३	५
	२४	४, ५, १०,
		१७
	२५	४

काल	२६	२०, २२, ३७,
		४४, ४५
	२८	७, ८, १०
	२९	सू० १, १६, २३
	३०	१४, २०, २१,
		२४
	३२	१, २८, ३१,
		४१, ४४, ५४,
		५७, ६७, ७०,
		८०, ८३, ८३,
		९६, १११
	३५	१९
	३६	११, १३, ७८,
		१११, १२०,
		१५८, १७३,
		१८२, १८६,
		१८९, १९३,
		२१७
कालओ	२४	६, ७
	३६	३
कालकंखि	६	१४
कालकूड	२०	४४
काला	२२	५
कालधम्म	३५	२०
कालिजर	१३	६
कालिय	५	६

काली	२	३
कालोमाण	३०	२०
काविलीय	८	
कावोया	१६	३३
कासग	१२	१२
कासव	२	सू० १ से ३
	२	१,४६
	२५	१६
	२६	सू० १
कासी	१३	६
	१८	४८
कि	६	७
किचण	६	१४,४०
	३२	८
किचि	१	१४
किपाग	१६	१७
	३२	२०
किपुरिस	३६	२०७
किचव	१	१८,४४,४५
	१४	१५
	३२	१०८
किचव *		
-किचवड	४	३
किचवा	२	१५
	६	२०,२१

किचवा	१८	५०
	२०	१
किट्टइत्ता	२६	सू० १
किड्डा	१६	६
किणत	३५	१४
किणह	३६	१६,२२,७२
किणह्लेसा	३४	४,२२,३४
किणहा	३४	३,१०,४३,
		४८,४६,५६
कित्त *		
-कित्तइस्सामि	३२	६
कित्तयअ	२४	६
	३६	४८,१७९,
		१६५,२०४
कित्ति	१	४५
	११	१५
	१४	३
	१८	३६,४६
किन्नर	१६	६
	२३	२०
	३६	२०७
किन्बिसिय	३६	२५६,२६५
किमि	३६	१२७
किरिया	१८	२३,३३
	२८	१६,२५
	३१	७,१२

किरियारुद्ध	२८	२५	कुओ	६	१०
किलन्त	१६	५६		१५	५
किलिट्ट	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ९२	कूकुण (दे०)	३६	१४६
किलिन्न	२	३६	कुच	१४	३६
किलिस *			कुचिअ	२२	२४
-किलिस्सई	२७	३	कुंजर	११	१८
किलेस	२१	११	कुडल	६	५
	३२	३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७		६	६०
किलेसडत्ता	२०	४१		२२	२०
किस	२	३	कुंथु	३	४
कीड	३	४		१८	३६
	३६	१४६		३६	१३७
कीडा	१	६	कुंद	३४	६
कीयगड	२०	४७		३६	६१
कील *			कुंभी	१६	४६, ५१
-कीलंति	१८	१६	कुक्कुडय	१७	१३
-कीलए	१६	३	कुक्कुड	३६	१४७
	२१	७	कुगहीय	२०	४४
कीलिय	१६	सू० ८	कुच्च	२२	३०
कीव	१६	४०	कुट्टिम	१६	४
कीस *			कुट्टिय	१६	६६, ६७
-कीसंति	१६	१५	कुडुंबअ	३६	६७
कुइय	१६	सू० ७	कुडुम्ब	१४	३७
	१६	५, १२	कुडु	१६	सू० ७
				२५	४०

उत्तरजभाषण शब्द-सूची

कुण *

-कुणई

कुणत

कुणमाण

कुतित्थि

कुदंसण

कुदिट्ठि

कुद्ध

कुप्प *

-कुप्पइ

-कुप्पह

-कुप्पेज्ज

कुप्पवयण

कुप्पह

कुमार

कुमारग

१६

२६

३६

२६

१४

१०

२८

२८

१२

१८

२०

२७

११

१२

१

२३

२३

१२

१४

१६

२२

१४

१६

२२

१४

७६

२७, २६

२६३ से २६६

२६

२४, २५

१८

१८

३६

२०

१०

२०

६

८, १२

३३

६

६३

६०

१६, २०, २४,

३२

३

६७

८

११

कुमारसमण

कुमुय

कुम्मास

कुररी

कुल

कुलल

कुविय

कुव्व *

-कुव्वइ

-कुव्वन्ति

-कुव्वेज्ज

-कुव्वेज्जा

कुस

२३

१०

८

२०

१३

१४

२०

२३

२५

१४

१

१२

१

५

२०

६

१

६

८

७

६

१०

१२

२३

१७

२, ६, १६,

१८

२८

१२

५०

२

२, २६

४०, ४२

१५

१

४६

४१

२८

४४

४

२३

२६

१४

१५

२

२३, २४

४४

२

३६

१७

१५२

परिशिष्ट-२

कुसचीर	२५	२६	केवल	३	१६
कुसल	१२	३८, ४०, ४४		१८	३५
	२५	१६		२८	४
कुसील	१	१३		३३	४, ६
	१७	२०		३४	४५
	२०	५१		३५	२१
कुसीलरुव	२०	५०	केवलवरनाण-		
कुसीललिग	२०	४३	दंसण	२६	सू० ७२
कुसुम	२०	३	केवलि	१६	सू० ३ से १२
	३४	८, १७, १६		२२	४८
कुहग	३६	६८		२६	सू० ४२, ५६, ६२
कुहाड	१६	६६		३६	२६५
कुहुण	३६	६५	फेस (क्लेग)	५	७
कुहेडविज्जा	२०	४५		१६	१२
कूड	५	५	केस (केग)	१०	२१ से २६
	२०	४२		२२	२४, २५, ३०,
कूडजाल	१६	६३			३१
कूडसामली	२०	३६	केसर	१८	३, ४
कूर (कूर)	५	४, १२	केसलोय	१६	३३
कूर (कूर)	१२	३४	केसव	२२	२, ६, २७
कूवंत	१६	५४	केसि	२३	२, ६, १४
केदकंदली (दे०)	३६	६७			१६, १८, २१,
केयण	६	२१			२२, २५, ३१,
केयव्व	३५	१५			३७, ४२, ४७,
केरिस	२३	११			५२, ५७, ६२,
केलास	६	४८			६७, ७२, ७७,

केसि	२३	८२, ८६, ८८, ८९	कोविय	१५	१५
केसिगोयमिज्ज	२३		कोस (कोष)	६	४६
कोइलच्छद	३४	६	कोस (क्रोश)	३६	६२
(दे०)			कोसम्बी	२०	१८
कोउग (य)	२२	६	कोसलिय	१२	२०, २२
	२३	१६	कोह	१	१४
कोऊहल	१५	६		४	१२
	२०	४५		६	३६, ५४, ५६
कोक्कुय	३६	२६३		११	३
कोट्ट	३०	१७		१२	१४
कोट्टग	२३	८		२४	६
कोट्टागार	११	२६		२५	२३
कोडि	८	१७		२६	सू० १, ६८
	१८	१०		३२	१०२
	३०	६		३४	२६
	३४	४६	कोहण	२७	६
	३६	१७५, १८५, १६२, २०१	कोहवेयणिज्ज	२६	सू० ६८
कोडिकोडि	३३	१६, २१, २३	कोहि	११	७
कोडीसहिअ	३६	२५५			
कोत्थल (दे०)	१६	४०	ख		
कोल	१६	५४	खअ *		
कोलाहलग	६	५, ७	-खज्जइ	१२	१०
कोव	१२	३१	खज	३४	४
कोवय *			खड	१६	६६
-कोवए	१	४०		३४	१५

१५४'

परिधि

खंत	२०	३२,३४	खत्तिय	१५	६
खंति (न्ति)	१	६,२६		१८	२०
	३	८,१३		२५	३१
	५	३०	खम *		
	६	२०,५७	-खमाह	१२	३०,३१
	२०	६	-खमे	१८	८
	२२	२६	खम	१४	२८
	२६	सू० १,४७,६८		१८	५२
खंतिकखम	२१	१३		३१	१३
खथ	३६	१०,११	खमानणया	२६	सू० १,१८
खग	६	१०	खय	६	१३
खज्जूर	३४	१५		२०	३३
खड्डुया	१	३८	खर	३६	७१,७२
खण	१४	१३	खरपुढवी	३६	७७
	१६	१४	खल (अप+सू)*		
	२०	३०	-खलाहि	१२	७
	३२	२५,३८,५१,	खल (स्खल) *		
		६४,७७,६०,	-खलेज्ज	१२	१८
		१०८	खलु	१	१५
खण *			खलुक	२७	३,८,१५
-खणह	१२	२६	खलुंकिज्ज	२७	
खण्डिय	१२	१८,३०	खव *		
खत्त	१२	१८	-खवेइ	२६	सू० २,८,११,
खत्तिय	३	४,५			सू० १६,२५,३०,
	६	१८,२४,२८,			सू० ३४,४२,५६,
		३२,३८,४६			सू० ६२,७२,७३

१५६

परिशिष्ट-२

खेय	१५	१५
खेल	८	५
	२४	१५
खेल्ल *		
-खेल्लन्ति	८	१८
खेव *		
-खेवेज्ज	२१	१८
खेविय	१६	५२
खोडा	२६	२५
खोभइलं	३२	१६
बा		
गय	१	२२, ४३
	७	१८
	६	३, १०, ३६,
		३७
	११	३१
	१३	१८, २५, ३५
	१४	४२
	१६	सू० ५
	१८	६, ३६
	१९	७
	२०	३३
	२१	२४
	२६	सू० ८
	३२	३३, ४६, ५६,
		७२, ८५, ९८
	३३	१८
	३६	६३

गई	५	१२
	७	१६, १७
	९	५४
	१०	३७
	११	३१
	१३	३५
	१८	२५, ३८, ४०,
		४२, ४३, ४७
	१९	६७
	२०	१
	२३	६५, ६६, ६८
	२८	१, ६
	२९	सू० ७४
	३४	२, ४०
गगा	१६	३६
	३२	१८
गठिभेय	६	२८
गठियसत्त	३३	१७
गड	८	१८
	१०	२७
गडोपय	३६	१८०
गंतव्व	१८	१२
	१९	१६
गंसा	२९	सू० ७४
गंतुं	६	२६
गंतुण	३६	५५, ५६

उत्तरजभयण शब्द-सूची

१५७

गंथ	८	४	गघिअ	२२	२४
गघ	१२	३६	गंभीर	११	३१
	१६	सू० १२		२७	१७
	१६	१०	गगण	२२	१२
	२०	२६	गग्ग	२७	१
	२८	१२	गच्छ *		
	२६	सू० ४६, ६५	-गच्छ	१२	७
	३२	४८ से ६०		१६	८५
	३४	२, १६, १७	-गच्छई	३	३
गघओ	३६	१५, १७, २२		५	५
		से ४६, ८३,		११	६
		६१, १०५,		१८	१७
		११६, १२५,		१६	१६, २१, ८०,
		१३५, १४४,			८१
		१५४, १६६,		२०	४५, ४७
		१७८, १८७,		२३	५६
		१६४, २०३,		२७	६
		२४७		३२	१६
गघण	२२	४३	-गच्छन्ति	५	२८
गघवास	३४	१७		७	१०
गघव्व	१	४८		८	७
	१६	१६		१४	४४
	२३	२०		१८	२५
	३६	२०७		२३	६१
गघहत्थि	२२	१०		२८	३
गंधार	१८	४५		३४	६०

गच्छसि	६	१८, २४, २८, ३२, ३८, ४६, ५८	गमिस्सामो	१४	२६
	१०	३२, ३५	गमिस्ससि	२३	७०
गच्छामि	१३	३३	गमण	१६	३७
गच्छे	२	६		२६	५
	५	२४	गमित्तए	१०	३४
गच्छेज्जा	२	२१	गय	१८	३
	८	१		३६	१८०
गच्छंत	५	१३	गयण	२६	२०
	१६	१८ से २१	गया	११	२१
गण	१०	१	गयाणीय	१८	२
	१५	६	गयास	१६	६१
	३४	५१	गग्हणया	२६	सू० १, ८
	३६	२०८	गग्हा	१	४२
गणण	२६	२७		२१	१५, २०
गणहर	२७	१	गरहिय	१७	२०
गणिभाव	२७	१	गरुय	३६	१६
गत	१६	१३	गल	१६	६४
	१६	६१	गलि	१	१२, ३७
गद्भालि	१८	१६, २२		२७	१६
गद्दह	२७	१६	गव	६	५
गब्भवक्कंतिथ	३६	१७०, १६५, १६६	गवल	३४	४
गम *			गवेस *		
गमिस्सामु	१४	३१	गवेसए	६	१६
				१०	३०
				२६	३१

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

१५६

गवेसअ	२	१७
	११	३२
	२५	६
	३४	२३
गवेसणा	२४	११
गह *		
-गहन्ति	४	१
गह	२५	१७
	३६	२०८
गहण	२३	३२
	२४	११
	२६	सू० २
	३२	२३, २३, ३५,
		३६, ४८, ४६,
		६१, ६२, ७४,
		७५, ८७, ८८
	३६	२६७
गहाय	४	२
	१३	२२
गह्मिअ	१६	६४, ६५
गहीअ	४	३
	३२	७६
गाढ	१०	४
गाणंगणिअ	१७	१७
गाम	२	१८
	६	१६

गाम	१०	३६
	३०	१६
गामकंटग	२	२५
गामाणुगाम	२	१३
	२३	३, ७
	२५	३
गामि	१४	३३
	२३	७१
गाय	२	६, ३४, ३६
गारत्थ	५	२०
गारव	१६	८६, ६१
	२७	६
	३१	४
गारविअ	२७	६
गाह	३२	७६
	३६	१७२
गाहा	१३	१२
गाहासोलसअ	३१	१३
गाहिय	१७	४
गिज्झ *		
-गिज्झेज्जा	८	१८
गिज्झ	१६	४, ५
	२३	५१
गिज्झा	२६	३५
गिण्हंत	२४	१३

१६०

परिशिष्ट-२

गिद्ध (गृद्ध)	५	४,५,१०	गिहत्थ	२	१६
	७	६		५	२२,२८
	८	११,१४		२३	१६
	१३	१५,२८,३०,		२५	२७
		३३	गिहवास	५	२४
	१८	७		३५	२
	२०	३६	गिहि	७	२०
	३२	५०,६३,८६		१५	१०
	३५	१७		१७	१६
गिद्ध (गृध्र)	१४	४७	गिहिलिग	३६	४६,५२
	१६	५८			
गिद्धि	३२	२४,३७,५०,	गीय	१३	१४,१६
		६३,७६,८६		१६	सू० ७
	३४	२३		१६	५,१२
गिरा	१२	१५	गीवा	३४	६
गिरि	११	२६	गुंजा	३६	११८
	१२	२६	गुच्छ	३६	६४
	१६	४१	गुण	४	११,१३
	२२	३३		६	६
गिलाण	५	११		१२	१
गिह	६	७,२४		१३	१२,१३,१७
	१३	१३,२४		१४	१०,१७
	१४	७,६,२१		१८	४६
	१५	१६		१६	५,२४,३५,
	३५	८,६			३६,४७,४८
गिहकम्म	३५	८		२०	५१,५२,६०

उत्तरजम्भप्रण शब्द-सूची

गुण	२५	३३	गुम्मी	३६	१३८
	२८	५, ६, ३०	गुरु	१	२, ३, १६,
	२९	सू० १, ३६, ४५		७	२०
	३१	१८		१७	६
	३२	५		२६	१०
	३४	१० से १३,			७, ८, २१,
		१५ से १६			२२, ३७, ४०
	३६	५८			से ४२, ४५,
	३२	५			४८ से ५१
गुणओ	३६	२६२		२९	सू० १, ५
गुणगाहि	२९	सू० ३६	गुरुअ	३२	३
गुणत्तण	२३	१०		१६	३५
गुणवंत	१६	६८		३६	३६
गुणावह	७	१२	गुरुकुल	११	१४
गुणिय	१६	७३	गुरुभति	३०	३२
	१२	१७	गूढ	२५	१८
गुत्त	१६	सू० १ से ३	गेण्ह		२४
	१६	८८	गेण्हह	२५	२७
	२०	६०	गेण्हण	१६	२३
	३४	३१	गेद्धि	३४	७६
गुत्ति	१२	१७	गेहय	३६	२१२
	२४	१, १६, २६	गेविज्ज	३६	२१५
	२६	३४	गेविज्जग	३६	६१
	२८	२५	गेह	६	१८
	३४	३१		१७	२०
	३६	६४		१६	
गुम्म					

१६२

गेहि	६	४
गो	६	४०
	३४	१६, १८
गोच्छ्रगा	२६	२३
गोण	३६	१८०
गोत्त	३	२
	१८	२१, २२
	२६	सू० ४४, ७३
	३३	२३
गोपुर	६	१८
गोमुत्ति	३०	१६
गोमेज्जअ	३६	७५
गोय	२६	सू० ४२
	३३	३, १४
गोयम	१०	१ से ३७
	१८	२२
	२२	५
	२३	६, ६, १४
		से १८, २१,
		२२, २५, २८,
		३१, ३४, ३५,
		३७, ३६, ४२,
		४४, ४५, ४७,
		४६, ५०, ५२,
		५४, ५५, ५७,
		५६, ६०, ६२

परिशिष्ट-२

गोयम	२३	६४, ६७, ६६, ७०, ७२, ७४, ७७, ७६, ८२, ८५, ८६, ८८, ८९
गोयर	१६	८०
गोयरग	२	२६
	३०	२५
गोयरिया	१६	८३
गोलय (अ)	२५	४०, ४१
गोवाल	२२	४५
गोहा	३६	१८१
घ		
घण	३०	१०
	३६	११८
घत्तु	१८	७
घत्थ	१६	१४
घय	३	१२
	१४	१८
घर	६	२६
	२१	५
	३०	१८
घरणी	२१	४
घाण	१०	२३
	३२	४८, ४९

उत्तरजमराण शब्द-सूची

घाणिदिय	२६	सू० १,६५
घास	२	३०
	८	११
	३०	२१
	२	८,३६
घिसु	१२	३६
घुट्ट	७	१४
घेत्तूण	१२	१८
	४	६
घोर	१४	५०
	१८	२५
	१६	३३,७२
	२०	२१
	२२	३१
	२३	५०,७५
	२५	३८
	१२	२३,२७
घोरपरकाम	१४	५०
	२३	८६
घोरल्ल	१२	२५
घोरल्लव	१२	२३,२७
घोरासम	६	४२
घोस	११	१७
	३०	१७

च	१	६
च	१	१६
चइल(त्यक्तवा)	१८	३२
चइलं(त्यक्तु)	१३	३०
चइऊण	७	१,६१
	६	३३
	१३	२१
चइऊण	१	४६
चइत्ता	१४	३६,३८,४१
	१८	५
चइत्ताणं	१	५
	६	४२
	६	४४
	१८	१६
	१६	१६
	२७	५५,५६
	३६	४८
	१	२०
चइत्तु	१३	१३
	१६	१,१७
चइयल्ल	३	२३
चउ	१८	४
	२४	११,१४,१७
	२६	१
	२८	२०
	३०	

चउ	३४	४०	चउरिदिय	३६	१४५, १४६,
	३६	५२ से ५४,			१५१, १५२
		२४३	चउरिदियकाय	१०	१२
चउक्क	१६	४	चउविह	३६	१७६
	२४	१२	चउवीस	३६	२३५, २३६
	३६	२५२	चउव्विह	१६	३०
चउत्थ	२४	२०		२४	२०
	२६	२, १२, १६,		२८	१८
		१८, २६, ३६,		३३	१२
		४३, ४४		३६	४, १०, ११,
	३३	१२			७८, १११,
	३६	१६३, २३७			१२०, १५५,
चउद्दस	११	६, २२			१५८, १७३,
	३६	२२७, २२८			१८२, १८८,
चउप्पय	१३	२४			१८६, २०४,
	२६	१३	चउव्वीसत्थम	२६	२१७
	३६	१७६			सू० १, १०
चउब्भाअ (ग)	२६	८, १६ से	चउहा	३६	१२६
		२२, ३७, ४५	चंचल	१८	१३
चउभाग	३०	२१	चंड	१	१३
चउर (इंदिय)	३६	१२६		१७	८
चउरंग	३	२०		१६	७२
चउरगिणी	२२	१२	चंडाल	३	४
चउरंस	३६	२१, ४५	चंडालिय	१	१०, ११
			चंद	११	२५
				२३	१८

चंद	२५	१६, १७	चम्मा	३६	१८८
	३६	२०८	चय		
चंदण	१६	६२	-चयड	२६	सू० ४
	३६	७६, १२६		३१	४
चंदप्यह	३६	७६	-चयति	१३	३१
चंपा	२१	१, ५	-चयसि	६	५१
चक्का	६	६०	चयरित्तकर	२८	३३
	११	२१	चर *		
	१४	४	-चर	४	६, ८, १०
	२२	११		१८	३३
चक्कवट्टि	११	२२		२२	४३
	१३	४	-चरड	१७	८
	१८	३६ से ३८,		१६	७७
		४१	-चरन्ति	१२	१५, ४१
चक्खिदिय	२६	सू० १, ६४		१४	३५
चक्खु	५	५		२३	८३
	१०	२२	-चरिज्ज	२१	१२, १३
	१६	४	-चरिस्ससि	१६	४३
	२४	७, १४	-चरिस्सामि	१४	३२, ४१
	२६	३५		१५	१
	३२	२२, २३		१६	८४, ८५
	३३	६	-चरिस्सामु	१४	७
चक्खुफास	१	३३	-चरिस्सिमो	२३	३८
चक्कर	१६	४	-चरे	१	३२
चत्त	६	१५		२	३, ४, १५,
	१२	४२			१८, १९
	१६	८६			

चरे	४	७	चरम	३४	५६
	६	१६	चरमाण	३०	२०, २३
	६	४६	चराचर	३२	२७, ४७, ५३,
१०	३६				६६, ७६, ६२
१२	४०		चरिष्ठं		
१४	४७		(चरितुम्) १६	३७	
१५	३		चरिष्ठं		
१६	१५		(चरित्वा) २१	२३	
१८	१५, ३१, ३७,		चरित्त	१६	३८
	४१, ४३, ४७,			२०	५२
	५१			२२	२६
३५	१६			२३	३३
३६	२५२, २५३,			२६	३६, ४७
	२५५			२८	२, ३, ११,
चरेज्ज	२	१७			२५, २६, ३५
	१५	२		२६	सू० १, १२, १५,
चरंत	२	६			३२, ५६, ६०,
	४	११			६२, ७२
चरण	१८	२२, २४	चरित्तगुत्त	२६	सू० ३२
	१६	६४	चरित्तगुत्ति	२६	सू० ३२
	२३	२, ६	चरित्तधम्म	२८	२७
	२४	५, २६	चरित्तमोहण	३३	१०
	२८	३०	चरित्तमोहणिज्ज	२६	सू० ३०
	३३	८	चरित्ता	१८	२५
चरणविहि	३१			२६	५२
	३१	१		३१	१

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

चरित्ताण	२६	१	चिइ	१३	२५
चरित्ताणं	१६	८१, ८२	चित *		
	२२	४८	-चितए	२	७, १२, २६,
चरिम	२३	२७			४४, ४५
	३६	५६, ६४	-चितिज्ज	२६	३६, ४७
चरिय	१६	६७	-चितेइ	२२	१८
चरिया	२	सू० ३	चितइत्ताण	२०	३३
चवल	६	६०	चितंत	१६	५६
चवेड	१६	६७	चिता	१४	२२
चवेडा	१	३८		२३	१०
चाइय	३२	१६	चिच्चा	७	२८
चाउज्जाम	२३	१२, २३		६	४
चाउप्पाय	२०	२३		१८	२०
चाउरंत	११	२२	चिच्चाण	१०	२६
	१६	४६	चिट्ट *		
	२६	सू० २३, ३३, ६०	-चिट्टइ	१	४७
चाउरंगिज्ज	३			३	१२
चामर	२२	११		१०	२
चारि	१६	८३		२१	२१
चारित्त	१३	३५		२३	४५, ५०
	२८	३३	-चिट्टई	२७	६
चारु	१६	४	-चिट्टिसि	१०	३४
चारुपेहिणी	२२	७		२३	३५
चारुभासिणी	२२	३७	-चिट्ठंति	३	१५
चावेयव्व	१६	३८		२३	७५
चास	३४	५	-चिट्ठे	१	१६, २६

-चिट्ठेज्ज	१	३३	चित्तसम्भूज्ज	१३	
-चिट्ठेज्जा	१	३२	चित्तहर	३५	४
-विट्ठन्ती	२५	१७	चित्ता	२२	२३
चिट्ठमाण	२	२१	चिय	७	७
चिण *			चिया	१६	५७
-विणाइ	३२	३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ६८	चिर	२०	४१, ४३
चिण	२१	२२	चिरकाल	१०	४
चित्त (चित्त)	१	१३	चीर	५	२१
	८	१८	चीवर	२२	३४
	१४	४	चुण्णिय	१६	६७
	२२	३४	चुय (अ)	३	१६
	२६	सू० २६		७	१०
	३२	१, १२, १४, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ६८		१४	१
चित्त (चित्र)	६	१०		१८	२६
	१३	२३, ६, ११, १३, १५, २८, ३५	चुलणी	२०	४७
	३०	११	चूडामणी	१३	१
	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२	चे	२२	१०
चित्त (चैत्र)	२६	१३	चे	१६	सू० ३ से १२
चित्तपत्तय	३६	१४८	चेडय	६	६, १०
चित्तमंत	२५	२४		२०	२
			चेच्चा	१३	२४
				१४	५०
				१५	१६
				१८	३४, ४७
			चेट्टा	१२	२६
			चेय	१८	३२, ५०
				२०	१७, ५८

उत्तररज्जयण शब्द-सूची

१६६

चोडय	६	६, ११, १२, १७, १९, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०, ६१	छंद	१९ २१ २६ ३१ १२ २६ ३० ३४ ३६	७५ १६ ३, ६ ८ ४१ २६, ३२ १९, ३६ ३ १६५, २३९
	१७	१६			
	१८	४४			
	१९	५६	छद्रय	२६	३
चौज्ज	३५	३		३०	११
चोयण	१	२८	छद्रिया	१३	७
चोर	३२	१०४	छत्त	१८ २२ ३६	४२ ११ ५७
			छत्तग	३६	६०
छ	२६	१६, २५, ३०, ३१, ३३	छत्तीस	३६	७७, २६८
	३१	८	छत्तीसइविह	३६	७२
	३३	१८	छन्न	२५	१८
	३४	१, २१	छन्भीम	३६	६२
	३६	१५१, २५१	छवि	२२	५
छउम	२	४३	छेबित्ताण	२	७
छउमत्थ	२८	१९, ३३	छेविपन्व	५	२४
छंदे	४	८	छेवीसइ	३६	२३८
	१८	३०	छेन्विह	२८	३४
				३०	७, १०

छव्वीस	३६	२३७
छाया	२८	१२
छिद *		
-छिद	६	४
-छिदड	२०	३६
	२७	७
-छिदई-	१६	८६
-छिदे	२	२
छिदाव *		
-छिदावए	२	२
छिदित्तु	१४	३५
	२३	४३
छिदिया	१०	३७
छिता	१४	४८
	२३	४१, ४६
छिद	२६	सू० १२
छिन्न	१४	२६, ४१
	१५	१, ७
	१६	५१, ५४, ५५,
		६०, ६२, ६६
	६३	२८, ३४, ३६,
		४४, ४६, ५४,
		५६, ६४, ६६,
		७४, ७६, ८५,
		८६
	२५	३४

छिन्नसोय	२१	२१
छिन्नाल	२७	७
छिन्नावाय	२	५
छुमिता	१८	३
छुरिया	१६	६२
छुहा	१६	१८, २०, ३१
छूढ	२५	४०
छेअ	७	१६
	३०	१३
छेतु	२०	४८
छेत्तूण	७	३
छेओवट्टावण	२८	३२
छेयण	२६	सू० ४, ६१
ज		
ज	१	२१
जअ	६	३४
जइ (यदि)	१	१७
	१२	१७, २८
	१३	३२
	१४	३६
	१८	१७
	२०	३२
	२२	१६, ४१, ४८
	२५	२३, २४

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१७१

जइ (यति) २४	१२, १४, २१, २३, २५	जक्ख	२३	२०
२६	३८	जग	८	१०
जइत्ता (जित्वा) ६	३५		१४	३६, ४३
जइत्ता			१६	२५
(याजयित्वा) ६	३८	जगई	१	४५
जइय २५	३६	जट्ट	२५	२८
जओ १	७, २१	जट्टा	६	३८
१२	२	जडि	५	२१
जंत २२	३३	जण *		
जतिय ३२	१२	-जणयड	२६	सू० २ से ७३
जतु ३	१	जण	४	१
७	६		५	७
१४	४२		६	३०
१६	१५		१०	१८, १६
२३	६०		१२	२५, २८, ३३
२८	७, ८		१३	१४, १८
३२	२५, ३८, ५१, ६४, ७७, ६०, ११०		१६	सू० १२
जंपिय ३२	१४		१६	१
जक्ख ३	१४, १६		२२	१७, २७
५	२४, २६	जणअ	३२	३, १५
१२	७, २४, ३२, ४०, ४५	जणडत्ता	२२	=
१६	१६	जणडत्ता	२६	-सू० ५७
		जणणी	१६	२
		जणवय	६	४
		जणवयकहा	२६	२६

१७२

परिनिह-२

जत्ता	१६	८	जय (यत्)	१	३५-
	२३	३२		१२	२
जत्तिम	३०	२०		२४	१२, १४, २१,
जत्थ	५	१२			२३, २५
	७	२७		२६	३८
	९	२६	जय (यत्) *		
	१७	१३	-जए	३३	२५
	१८	१३	जय (यज्) *		
	१९	१५	-जयई	१२	४२
	२३	८१		२५	४
	२४	३	-जयामो	१२	४०
जन्त	९	३८	जर्यंत (जयत्)	४	११
	१२	१७, ४२	जर्यंत (जर्यंत)	३६	२१५
	२५	४, ५, ७,	जयघोस	२५	१, ३४, ४२,
		११, १४, ३६			४३
जन्तइज्ज	२५		जयणा	२४	४, ६
जन्तट्टि	२५	१६	जया	१४	४०
जन्तवाई	२५	१८		१८	१२
जन्तवाड	१२	३		१९	७८, ८०
जमजन्त	२५	१		२६	१९
जम्बू	११	२७	जरा	४	१
जम्म	१४	५१		१३	२६
	१९	१५, ४६		१४	४, १४, २३
	२०	५५		१९	१४, १५, २३,
जम्मण	३६	२६७			४६
जय (जय)	१८	४३		२३	६८, ८१

जल	१६	५६	जवण	८	१२
	२३	५१, ५३		३५	१७
	२५	२६	जवमज्म	३६	५३
	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ७६, ८६, ९६	जवस	७	१
	३५	११	जवोदग	१५	१३
	३६	५०, ५४, २६७	जवोदण	१५	१३
जलत	११	२३	जस (यशस्)	३	१३, १८
	१६	४६, ५६, ५७, ७०		७	२७
जलकंत	३६	७६	जससि	५	२६
जलकारि	३६	१४८		२१	२३
जलण	३६	२६७	जसा	१४	३
जलयर	३६	१७१, १७२, १७५ से १७७	जसोकासी	२२	४२
जलरुह	३६	६५	जह	१०	२, ३३
जलागम	३०	५		१६	५६
जलूग	३६	१२६		२०	४२, ४४
जल्ल (दि०)	२	सू० ३	जह *		
	२	३७	-जहाड	१४	३२
	१६	३१		१५	६
जल्लिय (दि०)	२४	१५		१६	८४
जव (यव)	६	४६	-जहासि	१२	४५
	१६	३८	-जहिज्ज	१५	१
जव (जव)	११	१६	जहवकम	१४	११
				२२	१२
				२३	४३
				२६	४०, ४८
				३३	१
				३४	१, २

१७४

परिशिष्ट-२

जहन्न	३०	१५	जहन्निय	३६	१२२, १३२,
	३४	३४ से ३६,			१४१, १५१,
		४२, ४६, ४६,			१७५, १७६,
		५०, ५२, ५४,			१८४, १८५,
		५५			१९१, १९२,
	३६	५०, ५३,			२००, २०१,
		१६० से १६७,			२२१, २५१
		२१६, २२०,	जहा	१	४
		२२२ से २४३,	जहाजाय	२२	३४
		२४५	जहाठाण	३	१६
जहन्निय (ग) ३६		१४, ८१, ८२,	जहाणुपुव्वी	२६	सू० ७२
		६०, १०२	जहाथाम	३०	३३
		से १०४,	जहानाय	२३	३८, ४३, ४६,
		११४, ११५,			४८
		१२३, १२४,	जहाफुड	१६	७६
		१३३, १३४,	जहाभूय	२०	५४
		१४२, १४३,		२५	३५
		१५२, १५३,	जहामट्ट	२५	२१
		१६८, १७७,	जहाय	१४	२
		१८६, १९३,		२०	५१
		२०२, २४६	जहावाइ	२६	सू० ५२
जहन्निय	३३	१६, २१ से	जहासुत्त	३५	१६
		२३	जहासुय	१	२३
	३४	४१, ४३, ४८,	जहासुह	१७	१
		५३		१६	८४, ८५
	३६	१३, ८०, ८८,	जहाहिय	२०	२३
		८९, ११३,			

जहिऊण	३५	२०	जाइ	२२	४०
जहि	१२	१३		३२	७
जहिच्छ	२३	२२	जाइपह	६	२
जहिताण	१८	४०	जाइय	२	२८
जहितु	२१	११	जाईसरण	१६	७, ८
जहोइय	२२'	२१	जाण +		
जा * (जन्)			-जाणइ	५	६
-जायइ	१६	७८		२८	३५
-जायए	१	४५		३२	१०६
-जायति	३२	१०५	-जाणामि	१३	२७
जा * (या)				१७	२
-जाइ	३	१२ -		१८	२७
-जति	७	२१	-जाणासि	२५	११, १२
	६	५३	-जाणाह	१२	१५
	१४	२४, २५	-जाणाहि	१२	१०
	२२	३२		१३	११
जाम	१३	२, १२	-जाणे	१४	२७
	२०	३५		१८	२६
जाइ	३	२		२०	१६
	१	१, २	-जाणंति	३६	२६१
	१२	५, १३, १४,	जाण (जाणत)	५	१४
		३७	जाण (यान)	७	८
	१३	१, ७, १८,	जाणमाण	१३	२६
		१६	जाणय	२०	४२
	१४	४, ५	जाणिऊण	३६	१
	१६	८	जाणित्ता	१	३४

१७६

परिशिष्ट-२

जाणिय	२१	१४	जाल	१४	३५, ३६
जाय *				१६	६५
-जायइ	२२	६		३२	६
-जायाहि	२५	६	जाला	३६	१२६
जाय	७	२	जाला	३६	१०६
	८	४	जाव	२	३७
	१४	६, १२, १८,		४	१३
		२२, २६, ३४		७	३
	१६	४३		२६	सू० ७२
	२१	४	जावइ	३६	६७
	२२	४८	जावत	६	१
	२५	२६	जावज्जीव	१६	२५, ३५
	२७	१४		२२	४७
जायखन्ध	११	१६	जि *		
जायग	२५	६, ६	-जयइ	३१	७ से २१
जायणजीवि	१२	१०		३६	१
जायणा	२	सू० ३	-जिणैज्ज	६	३४
	१६	३२	-जीयन्ति	७	१३
जायतेय	१२	२६	जिइदिय	१२	१, ३, १७,
जायरूव	२५	२१			२२
	३५	१३		१५	१६
जाया	८	११		२२	२५, ३१, ४७
जायाइ	२५	१		२६	सू० ४३
जारिस	१६	७३		३०	३
	२७	८, १६		३४	३०, ३२
जारिसय	३४	१२ से १४-	जिच्च	७	२२
			जिच्चामाण	७	२२

उत्तरप्रमाण शब्द-सूची

१७७

जिम्बा	२	सू० १ से ३
जिण *		
-जिए	२३	३६
-जिणह	२६	सू० ४७
जिण	२	४५
	१०	३१
	१६	१७
	१८	४३
	२०	५०, ५५
	२१	१२
	२२	२८
	२३	१, ५, ६३,
		७८
	२४	३
	२८	१, २, ७,
		१८, १९, २७,
		३३
जिणमग	२२	३८
जिणवयण	३६	२६०, २६१
जिणवर	३६	६०
जिणसासण	०	६, १८, १९,
		३२, ४६
जिणिद	१४	२
जिणित्तार्ण	२३	३६
जिणित्तु	२३	३८
जिम्मा	१०	२४

जिम्मा	३२	६२
	३४	१८
	३५	१७
जिम्मिदिय	२६	सू० १, ६६
जिय (जित)	५	१६
	७	१७ से १९
	८	३६
	२३	३६
जिय (जित्)	२२	१८, १९
जीमूय	३४	४
जीव	२	२७
	३	७
	७	१६
	८	३
	१०	५ से १४
	१२	४४
	२३	७३
	२६	५२
	२८	३, १०, ११,
		१४, १७
	२९	सू० १ से ७२
	३०	२, ३, २७
	३१	१
	३२	२७, ४०, ५३,
		६६, ७६, ८३
	३३	१, १८, २४

१३७८

परिधि: २

जीव	३४	५६ से ६०
	३५	११
	३६	२, ३, ४, ५
		६ से ७, ८, ९
		१०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००
		१०५, ११५, १२५, १३५, १४५, १५५, १६५, १७५, १८५, १९५, २०५, २१५, २२५, २३५, २४५, २५५, २६५, २७५, २८५, २९५, ३०५, ३१५, ३२५, ३३५, ३४५, ३५५, ३६५, ३७५, ३८५, ३९५, ४०५, ४१५, ४२५, ४३५, ४४५, ४५५, ४६५, ४७५, ४८५, ४९५, ५०५, ५१५, ५२५, ५३५, ५४५, ५५५, ५६५, ५७५, ५८५, ५९५, ६०५, ६१५, ६२५, ६३५, ६४५, ६५५, ६६५, ६७५, ६८५, ६९५, ७०५, ७१५, ७२५, ७३५, ७४५, ७५५, ७६५, ७७५, ७८५, ७९५, ८०५, ८१५, ८२५, ८३५, ८४५, ८५५, ८६५, ८७५, ८८५, ८९५, ९०५, ९१५, ९२५, ९३५, ९४५, ९५५, ९६५, ९७५, ९८५, ९९५, १००५
		२४८, २४९, २५० से २५९

जीव *

जीव	७	३
	१५	७
जीवामो	६	१४
जीवत	१८	१४
जीवघण	३६	६६
जीवलो	१८	११, १२
जीवविमिति	३६	४७
जीवो	६	२१
जीवाजीविमिति	३६	
जीवि	२०	४५
जीविय	४	१, ७
जीविय	८	१४

जीविय	१०	१, २
	१२	२१, ४२
	१३	२१, २६
	१४	३२
	१५	६
	१८	१३
	१९	६०
	२०	४३
	२२	१५, २६, ४२
	२६	सू ३६
	३२	२०

जीविय

जोहा

जीविय	१०	३
जोहा	१२	२६
	३२	६१
जुम	१६	५६
जुड	७	२७
	१३	११
	२२	१३
जुडम	१८	२८
जुडम	५	२६
जुज		
जुजे	१	१८
जुजण	२४	२४
जुग	२७	७
जुगमित	२४	७

अन्तर्यामिण शब्द-सूची

१७६

जुगव	२८	२६
	२६	सू० ७२, ७३, ७४
	३६	५३
जुज्म		
-जुज्माहि	६	३५
जुज्म	६	३५
जुण्ण	१४	३३
जुत्त (योजन)	१६	५६
जुत्त (युक्त)	१	८, २३
	६	२२
	१८	४
	१६	५६, ८८
	३२	१०६
जुम्ह	१२	७
जुयल	२२	६, १०
जुवराय	१६	२
जूव	१२	३६
जूह	११	१६
जे	२२	२१
जेट्ट	२०	२६, २७
	२३	१५
जेट्टुग	२२	१०
जेट्टामूल	२६	१६
जेम		
-जेमेइ	१७	१६
जोअ	२७	२

जोअ *		
जोएई	२७	३
जोइ	१२	३८, ४३, ४४
	३५	१२
जोइय	२७	८
जोइस	३४	५१
	३६	२०४, २०८, २२१
जोइसंगविड	३५	७, ३६
जोइसिय	३६	२०५
जोग	७	२४
	१२	४४
	२१	१३
	२६	सू० १, ५, ३४
		३८, ६०, ७३
	३१	२०
	३४	२२, २४, २६, २८, ३०, ३२
	३६	२५०, २६४
जोगव	११	१४
	३४	२७, २६
जोगसच्च	२६	सू० १, ५३
जोगा	३२	४, १५
जोज्ज (दि०)	२७	
जोणि	३	५, ६, १६
	७	१६, २०

जोयण	२६	३५
	३६	५७ से ५६,
		६१, ६२
जोवण	२१	६
जोह	११	२१

मिळक *		
-मिळजइ	२०	४६
मिया *		
-मियाएज्जा	३५	१६
-मियायइ	१८	४
	२६	१२, १८, ४३
मियायमाण	२६	सू० ७३

३६

मंम	२६	सू० ४०
मविय	१८	५
मसोयर	२२	६
मा *		
-माएज्ज	१	१०
-माएज्जा	३०	३५
-मायइ	१८	५
-मायए	३४	३१
माण	१८	४, ६
	२०	५७
	२६	१२, १८, ४३
	२६	सू० १३
	३०	३०, ३५
	३१	६
	३२	१०६
माणगुत्त	२६	सू० ५५
माय	१२	२१
मायमाण	२६	सू० ७३

ठ

ठव *		
-ठवेज्ज	१	६
	८	११, १६
ठवित्ताण	१८	३७, ४६
ठवेत्तु	६	२
ठाण	५	२, ४, १२,
		१३, २८
	६	६, ५८
	११	३, ४, ६,
		१०
	१२	४३, ४४, ४७
	१६	सू० १ से ३, १२
	१६	१४
	१८	२३
	२०	५२

उत्तराञ्जलि शब्द-सूची

१८१

ठाण	२३	८० से ८२,	ठिच्चा	३	१६
		८४	ठिय	१२	७, ११, २५
	२४	१०, २४		१३	३२
	२६	५, ३३		१६	४
	२८	६		२०	५५
	२९	सू० ५०		२१	८
	३०	२७, ३६		२२	२२, ३३
	३१	१४, २१		३२	१७
	३४	२, ३३			
ठावइत्ताण	६	३२	छ		
ठिइ	७	१३	छम्भ	६	१२, १४
	३३	१६, २०, २२	छम्भमाण	६	१४
	३४	२, ३४ से		१४	४२, ४३
		४२, ४४, ४५,	छमर	११	१३
		४७ से ५०,	छस *		
		५३ से ५५	-छसई	२७	४
३६		१२, १३, ७६,	छह *		
		८७, १०१,	-छहन्ति	२३	५०, ५१, ५३
		११०, १२१,	-छहेज्ज	१८	१०
		१३१, १४०,	-छहेज्जा	१२	२८
		१५०, १५६,	छहिय	१३	२५
		१७४, १८३,	छोल	२६	१४७
		१६०, १६६,			
		२१८ से २२०,	छ		
		२२४ से २४४	छंक (दि०)	१६	५८
ठिइय	२६	सू० २३	ठिकुण (दि०)	३६	१४६

१८२

पश्चिमिष्ट

पा.			तजो		
णं	६	१२	२	४	
णाम	१४	१२	३	४	
णीहु	३६	६८	५	८, १६, ३१	
णु	४	१	७	२, ६, १०,	
पहविअ	२२	६		१८	
पहार्ण	२०	२६	८	६, १८	
हाय	१२	४५ से ४७	९	२४, २८, ३२,	
पहुसा	६	३		३८, ४६	
			१६	सू० ११	
			१८	६, १६	
			१९	४३, ८४	
त	१	२	२०	१०, ३१, ३४,	
तअ	३६	५४		३५, ५२	
तडअ	२६	२, १२, १८,	२१	१२	
		३१, ४३	२२	१७, २२, ३८	
	२८	४	२३	१	
	२६	सू० ७२	तजहा	२	सू० ३
	३३	४		१६	सू० ३
	३६	१६२, १८८,	ततवग	३६	१४८
		२३६	ततुजे	२	३५
तइया	६	५	तस	३६	२१, ४४
तउय	१६	६८	तक्क		
	३६	७३	तक्कै	२६	सू० ३४
तजसमिजग	३६	१६८	तक्कर	६	२८
तओ	१	०	तच्च (तथ्य)	२०	१
				२८	१

उत्तरज्जगण शब्द-सूची

तच्च (तृतीय)	२६	सू० २
तच्छिञ्	१६	६६
तज्ज *		
-तज्जण	२	३१
तज्जणा	१६	३२
तज्जिञ्	२	८, ३५
तण	२	३४, ३५
	६	७
	१२	३६
	२३	१७
	३६	६४
तणफाम	२	सू० ३
	१६	३१
तणहार	३६	१३७
तणु	१४	४७
तणुय	१४	३४
तणुयर्	३६	५६
तण्हा	१६	१८, २०, ३१, ५६
	२६	सू० ४६
	३२	६, ८, ३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ६५, १०७
तत्त (तश्च)	१६	६८
तत्त, (तच्च)	२३	२५

तत्तो	२१	११
	३०	११, १५
तत्थ (तत्र)	२	२१
तत्थ (अस्त)	१६	७१
तदुभय	१	२३
	२६	सू० २१
तप्प *		
-तप्पड	१४	१६
तप्पओसि	३२	१०१
तप्पच्चइय	२६	सू० २, ६३ से ६७
तप्पच्चय	३२	१०५
तप्पडमया	२६	सू० ७२, ७३
तप्पुरक्काग	२४	८
तम	७	१०
	१४	१२
	२३	७५
तमतम	२०	४६
तमतमा	३६	१५७
तमा	३६	१५७
तम्ब	१६	६८
	३६	७३
तम्ममुत्ति	२४	८
तय (तक)	२२	३५
तय (तत्त)	१४	३६
तयर्	१२	२२

१८४

परिनिष्ठ-२

तथा	१४	४०
	१६	८०
तत्र *		
-तत्र	२२	३१
-तत्रन्ति	८	६
	२३	७३
-तत्रिस्सन्ति	१८	५२
-तत्रिहन्ति	८	२०
तत्रिजं	१६	४२
तत्रित्ता	२१	२४
तत्रियच्च	१६	३६
तत्रण	२०	८
	३४	७, १२
तल	१६	४
तव	१	१६, ४७
	२	४३
	३	८, २०
	५	२८
	६	२०, २२, ४६
	१२	४, ३७, ४४
	१३	३५
	१४	५, ८, १६, ३५, ५०
	१८	१५, ३१, ३७, ४१, ५०
	१९	५, ३७, ७७, ६४, ६७

तव	२०	४१
	२२	४८
	२३	५३
	२५	१८, ३०, ४३,
	२६	३४, ४७, ५०
		५१
	२७	१६
	२८	२, ३, ११,
		२५, ३४ से
		३६
	२९	सू० १, २८, ४३,
		६०
	३०	१, ६ से ८,
		१०, ११, २६,
		३०, ३७,
		१०४
	३६	२५२ से २५५
तत्रण	३०	५
तवमगर्गइ	३०	
तवस्सि	२	२२२, ३४,
		४४
	३	११
	१२	१०
	१५	५, ६
	२३	१०
	३२	४, १४, २१

तवोकम्म	१७	१५	तहेव	६	३६
	१६	८८	ता	१३	३२
तवोघण	१३	१७	ताइ	८	४, ६
	१८	४		११	३१
	२०	५३		२१	२२
तस	५	८		२३	१०
	८	१०	ताडिअ	१६	६७
	१६	८६	ताण	४	१, ५
	२०	३५		६	३
	२४	१८		१४	१२, ३६, ४०
	२५	२२	ताय	१४	६, २३
	२६	३०		१६	११, ७३
	३५	६	ताय *		
	३६	६८, १०६,	-तायए	६	१०
		१०७, १२६	-तायन्ति	५	२१
तह	१८	१४		२५	२८
तहक्कार	२६	३, ६	तायग	१४	८
तहप्पगार	४	१२	तार *		
तहा	५	२	-तारइस्सामि	१६	२३
तहाकारि	२६	सू० ५२	तारा	३६	२०८
तहाभूय	५	३०	तारिस	२७	८, १६
तहाविह	८	४		३५	५, १४
	२४	१५	तासुण्ण	१६	३६
तहि	१२	८	ताल *		
तहिय	२८	१४, १५	-तालर्थति	१२	१६, २५
तहिय	१२	३६	तालउड	१६	१३

तालणा	१६	३२	तिगडुय	३४	११
तालिस	५	३१	तिगिच्छ *		
ताव	७	३	-तिगिच्छड	१६	७८
तावडय	३२	१०६	तिगिच्छग	२०	२२
	३६	५८	तिगिच्छा	२०	२३
तावस	२५	२६, ३०	तिगिच्छिय	१५	८
ताहे	१६	७८	तिगुत्त	६	२०
ति	५	३२		३०	३
	७	१४		३२	१६
	२०	६०	तिगुत्ति	१६	८८
	३३	६		२०	६०
	३४	१७, १६, २१,	तिण	३६	६५
		४१, ४२, ५६,	तिण्ण	५	१
		५७		१०	३४
	३६	५८, ११३,		२६	१, ५२
		१२२, १६१,		३१	१
		१६२, १८४,	तितिकख *		
		१८५, २००,	-तितिकखएज्जा	२१	१५
		२०१	-नितिकखे	२	५, १४
तिडुय (ग)	१२	८	तिनिकखा	२	२६
	२३	४, १५		२६	३४
	३६	१३८	तित्त	३६	१८
निकव	११	१६, २०	तित्तअ	३६	२६
	१६	६२	तित्थ	१२	४५, ४६
	२०	२०	तित्थवम्म	२६	सू० २०
	३४	११	तित्थयर	२६	सू० ४४

तिपया	२६	१३
तिभाग	३६	६४
तिमिर	११	२४
तिय	१६	४
	२०	२१
	२६	१६
	३१	४
तिरिक्ख	३३	१२
	३६	१५५, १७०
तिरिक्खजोणि	१६	१०
	२०	४६
तिरिक्ख-		
जोणिय	२६	सू० ५
तिरिक्खत्तण	७	१६
तिरिच्छ	१५	१४
	२१	१६
तिरिय	३४	४४, ४५, ४७
	३६	५०
तिरियलोय	३६	५४
तिरोड	६	६०
तिल	१४	१८
तिलोय	१६	६७
तिविह	१५	१२
	२५	२२
	३३	८
	३४	२०

तिविह	३६	६८, ६९
		१०६, १०७,
		१७१, १६६
तिव्व	१६	७२
	२३	४३
	२६	सू० २३
	३२	२४, २५, ३७,
		३८, ५०, ५१,
		६३, ६४, ७६,
		७७, ८६, ९०,
	३४	२१
तीय	२६	सू० १३
तीर	१०	३४
	१३	६, ३०
तीरडत्ता	२६	सू० १
तीस	३६	२४१
तीसड	३३	१६
	३६	२४२
तीसडविह	३६	१६७
तु	२	७
तुय	१६	५२
तुंड	३४	७
तुंदिल्ल	७	७
तुंका	३४	१०
तुच्छ	४	१३
	१३	२५

तुङ्ग	१८	१६	तैउक्काय	१०	७
	२०	५४	तैउलेसा	३४	७, २८, ३७,
	२५	६, ३५			५१
तुङ्गि	३२	२६, ४२, ५५,	तैऊ	३४	३, १३,
		६८, ८१, ९४			५२ से ५४
तुमतुम	२६	सू० ४०	तैगिच्छा	२	३३
तुयट्टण	२४	२४		२०	२३
तुरिय (तुर्य)	२२	१२	तैण	१४	३
तुरिय (त्वरित)	२२	२४, २५		७	५
तुला	१६	४१		३४	२६
तुलिया	५	३०	तैत्तीस	३१	२०
	७	१६		३३	२२
तुलियाण	७	३०		३४	३४, ३६, ४३,
तुन्नर	३४	१२			५५
तुसिणीय	१	२०		३६	१६६, २४३,
	२	२५			२४४
तूर			तेयाल	३४	२०
-तूरन्ति	१३	३१	तेरिच्छ	२५	२५
तैअ	११	२४		३१	५
	१२	२३	तेरिच्छिअ	२६	सू० ३
	१८	१०	तेल्ल	१४	१८
तेइदिय	३६	१२६, १३६,		२८	२२
		१४१ से १४३	तेवीस	३१	१६
तेइदियकाय	१०	११		३६	२३४, २३५
जेउ	२६	३०	तो	६	६०
	३६	१०७, १०८,		२३	६१
		११३ से ११५		२६	२४

उत्तररजभयण शब्द-सूची

तोत्त	१६	५६	थावर	२५	२२
तोत्तअ	२७	३		३५	६
तोत्तगवेसअ	१	४०		३६	६८, ६९,
तोलेड	१६	४१			१०६
तोसिय	२३	८६	थिर	१	३०
थ				२६	२४
थभ	११	३	थिरीकरण	२८	३१
थणिय	१६	सू० ७	थी	१६	१, ३ से ६,
	१६	५			११
	३६	२, ६	थीकहा	१६	२, ११
थद्ध	११	२, ६	थीणगिद्धि	३३	५
	१७	५, ११	थीहु	३६	६८
	२७	१०	थुड	२६	४२
थल	८	६		२६	सू० १, १५
	१२	१२	थुणित्ताण	२०	५८
	१३	३०	थूलवय	१	१३
थलयर	३६	१७१, १७६, १८४, १८६	थेर	१६	सू० १ से ३
				२७	१
थलि	३०	१७	थोव	१०	२
थव	२६	सू० १, १५		३२	१००
थामव	२	२, २२	दइय	१६	२
थाव *			दंड	५	८
-थावए	२	३२		८	१०
थावर	५	८		१२	१८, १९
	८	१०		१५	७
	१६	८६		१६	६१
	२०	३५			

१६०

परिशिष्ट-२

दंड	२०	६०
	३१	४
दंत (दान्त)	१	१५, १६
	२	२७
	११	४
	१२	४१
	१६	१५
	२०	३२, ३४, ५३
	३४	२७, २९, ३१
	३५	१७
दंत (दन्त)	१२	२६
	१६	२७
दस	२	सू० ३
	२	१०
	१५	४
	१६	३१
	२१	१८
दसण	२	सू० ३
	६	१७
	८	३
	१६	६४
	२२	२६
	२३	३३
	२४	५
	२६	३६, ४७

दंसण	२८	१ से ३, १०, ११, २५, २६, ३५
	२९	सू० १, २, १०, १५, ५८, ६१, ७२
	३२	१०८
	३३	६, ८, ९
	३६	६६, ६७
दसणावरण	३३	२, ६
दसणावरणिज्ज	२९	सू० ७२
दसि	६	१७
दसिअ	२९	सू० ७४
दक्ख	१	१३
दच्चवा	६	३८
दट्ठु	१४	७
दट्ठुं (दृष्ट्वा)	१	१२
	४	५
	१३	३०
	२२	३५, ३६
दट्ठुं (दृष्टुम्)	३२	१४
दट्ठूण	१४	४
	२२	३६
दट्ठूण	१३	२८
दड्डु	१६	५०, ५७

दढ	११	१७
	१७	२
	१८	५१
	२७	१६
	२६	सू० ३२
दढवस्म	३४	२८
दढव्वअ	२२	४७
दत्त	१	३२
	७	५
दप्प	१६	६
दम	१८	४३
	१६	४२, ६३
दमिय	३२	१२
दमीसर	१६	२
	२२	४, २५
दमेयव्व	१	१५
दम्मत्त	१	१६
दया	५	३०
	१८	३५
	२०	४८
	२१	१३
	२६	३४
	३५	१०
दरिसण	१६	११
	१६	७

दल *		
दलामि	२२	८
दलाह	१२	१२
दलेज्ज	८	१६
दलित्तु	१४	३६
दव	१७	८
दवगि	१४	४२
	१६	५०
	३२	११
दव्व	१८	१६
	२२	४५
	२८	५, ६, ८, ९,
		२४
	३०	१५, २४
दव्वलो	२४	६, ७
	३०	१४
	३६	३
दव्वजाय	२६	६
दस	१६	सू० १ से ३
	२३	३६
	३४	३५, ३८, ४१,
		४२, ४८, ५३,
		५४
	३६	५१, ५२,
		१०२, १६०,
		१६३, १६४,

दस	३६	२१६, २२०, २२६, २२७
दसंग	३	१६
	२६	४
दसण्ण	१३	६
	१८	४४
दसण्णभट्ट	१८	४४
दसम	१६	सू० १२
	२६	४
दसविह	३०	३१, ३३
	३१	१०
दसहा	२३	३६
	३६	४, ६, १८, २०५
दसा	३१	१७
दसार	२२	११, २७
दसुय	१०	१६
दहि	१७	१५
	३०	२५
दा *		
-दण	६	४०
-दाहामि	२५	६
-दाहामु	१२	११, १६
-दाहिई	२७	१२
-दाहित्य	१२	१७
-दिज्जाहि	२०	२४

-देह	१६	७६
	२१	३
	२६	२६
-देज्जा	७	१
दाढा	११	२०
दाण	१२	३६
	३३	१५
दाणव	१६	१६
	२३	२०
दाणि	१३	२०
दायण	३०	३२
दायार	१३	२५
दार (दार)	१४	३७
	१८	१४, १६
	१६	१६, ८७
दार (द्वार)	१६	६३
	२०	४५
	२६	सू० १४
दारग (अ)	१४	५३
	२१	५
दारुण	२	२५
	६	७
	१६	३३
	२०	२१
दास	१	३६
	३	१७

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१६३

दास	६	५
	८	१८
	१३	६
दाह	२०	१६
दाहिणभाव	२६	सू० ११
दिगिच्छा	२	सू० ३
	२	२
दिच्छ *		
-दिच्छसि	२२	४४
दिज्जमाण	१२	२२
दिट्ठ	५	५
	१२	४७
	१५	१०
	१६	६
	२२	३४
	२८	१८, २३
दिट्ठि	८	७
	१८	३३
	१६	६
दिट्ठिवाज	२८	२३
दिट्ठिसपल्ल	१८	३३
दिण	२६	११
दित्त (दीप्त)	१२	६
	१६	३६
दित्त (दत्त)	३२	१०
दित्तिकर	३२	१०

६८

दिन्न	६	७
	१२	२१
दिप्पंत	३	१४
दिय	१४	१२, ४४
	२५	७, १३, ३३,
		३८
दिया	२६	सू० ३१
दिव	५	२२
दिवस	२४	५
	२६	११
	३०	२०
दिवायर	११	२४
दिव्व	१२	३६
	१४	६
	१५	१४
	१८	२५, २८
	२१	१६
	२२	६, १२
	२५	२५
	२६	सू० ३
	३१	५
दिम्बिय	७	१२
दिस	३६	२०६
दिसा	३	१३
	६	१२
	७	१०

दिसा	१६	८२	दीहकालिय	१६	सू० ३ ते १२
	२७	१४	दीहाउय	५	२७
	३३	१८	हु	५	२
दिसाविचारि	३६	२०८		८	२०
दिसी	२७	१४		२२	२
दिस्स	६	६, ७		२६	१४
	१४	४६		३३	२०
	२२	१४		३४	५२, ५३
	२३	१६		३६	२२४, २२५
दीण	३२	१०३	हुअ	१८	६
दीव (दीप)	४	५		२२	१४
दीव (द्वीप)	२३	६५, ६७, ६८	हुहुहि	१२	३६
	३६	२०६	हुक्कड	१	२८
दीव *			हुक्कर	२	२८
-दीवण	३५	१२		१६	१६
दीस *				१६	२५ से २७,
-दिसई	१०	३१			३७, ३९, ४१,
-दीसड	१०	१७			४२, ५२
	१२	३७		३५	५
	१८	२०	हुक्ख	२	३२
	३५	८		५	२५
-दीसन्ति	१६	७३		६	१, ८, ११
	२३	४०		८	१, ८
दीह	६	१२		१३	३, १४, २३
	१४	७		१४	१३, ३२, ३३,
	२६	सू० २३			५१, ५२
	३२	११०			

उत्तरजर्मणं बान्द-सूची

१६५

दुक्ख	१६	१०, १२, १५, ३२, ३३, ४०, ४५, ६१, ७३, ७१, ८५, ९०, ९८	दुक्ख	३२	८६, ९०, ९१, - ९५, ९७ से १००, १०५, १११ १, २०
	२०	२३ से २७, ३०	दुक्खम	२०	३१
	२३	८०	दुक्खजेज्जा	१६	३१
	२६	१, १०, २१, ३८, ४१, ४३, ४६	दुक्खिय	३	६
	२८	३६		१८	१५
	२९	सू० २, ४, २६, ३७, ४२, ४५, ५६, ६२, ७४	दुखुर	३६	१८०
	३२	१, ७, ८, १६, २५, २६, ३०, ३२ से ३४, ३८, ३९, ४३, ४५ से ४७, ५१, ५२, ५६, ५८ से ६०, ६४, ६५, ६६, ७१ से ७३, ७७, ७८, ८२, ८४, ८५,	दुगुंछिज्ज	१३	१६
			दुगुंछणा	२०	४०
			दुगुंछमाण	४	१३
			दुगुंछा	३२	१०२
			दुग्गइ	३४	५६
				३६	२५६
			दुक्क	२६	सू० ३४
			दुक्कय	१४	४६
			दुक्कर	१६	२४, ३८
			दुज्जय	६	३४, ३६
				१३	२७
				१६	१३, १४
			कुट्ट	२३	५५, ५८
				२७	१५
			कुट्टवाइ	३४	२६
			कुत्तर	१६	३६
				३२	१७

दुहंत	२७	७	दुय (द्रुत)	२२	१४
	३२	२५, ३८, ५१,	दुय (द्विक)	३१	६
		६४, ७७, ९०	दुरंत	१०	६
दुहम	१	१५		३२	३१, ४४, ५७,
दुद्ध	१७	१५			७०, ८३, ९६
दुपंच	२६	७	दुरणुपालअ	२३	२७
दुपय	१३	२४	दुरप्प	२०	४८
दुपया	२६	१३	दुराख्ह	२३	८१, ८४
दुप्पट्टिय	२०	३७	दुरासय		
दुप्पघंसय	६	२०	(दुराशय)	१	१३
दुप्परिचवय	८	६	दुरासय		
दुप्पहंसय	११	२०, ३१	(दुरासद)	११	३१
दुप्पूरअ	८	१६	दुरुत्तर	५	१
दुब्बल	२७	८	दुल्लह	१०	४
दुब्बिम	३६	२८	दुल्लह	३	१, ८ से
दुब्बिमगंध	३६	१७			१०, २०
दुब्बूय	१७	१७		७	१८
दुम	१०	१		१०	१६ से १९
	११	२७		३६	२५७, २५९
	१३	३१	दुल्लहवोहियत्त	२९	सू० ५८
	१९	६६	दुल्लहय	१०	२०
	२०	३	दुव	८	२०
	३२	१०		२२	२
दुमपत्तय	१०			३६	५३, ५४,
दुम्मुह	१८	४५			२५३
दुम्मेह	७	१३	दुवालसंग	२४	३
	२५	४१			

दुविह	७	१८	दुस्सील	५	२१, २२
	२१	२४		२५	२८
	२३	२४, ३०	दुस्सीस	२७	८
	२४	१३	दुह	२	३२
	२८	३४		१८	१७
	३०	७, ६, १२,		१६	७१
		३७		२०	२५, ३७
	३३	७, ८, १०,		२८	१०
		१३, १४		३२	३३, ४६, ५६,
	३६	४, १७, ४८,			७२, ८५, ६८,
		६८, ७०, ७१,			११०
		८४, ६२, ६३,	दुहओ	५	१०, २३
		१०८, ११७,		७	१७
		१२७, १३६,		६	५४
		१४५, १७०,		११	१५
		१७१, १७६,		१३	१८
		१८१, १६५,		१४	२६
		२०५, २०६,		१७	२१
		२१२, २४८		२०	४६
दुव्वह	१६	३५		२४	१४
दुव्विसह	२१	१७	दुहा	३६	७०, ८४, ६२,
दुव्विसोज्झ	२३	२७			१०८, ११७
दुसमयद्विद्वय	२६	सू० ७२	दुहाकज्ज	२३	२६
दुसय	२४	२१	दुहावह	१३	१६, १७
दुस्साहड	७	८		१६	११
दुस्सील	१	४, ५	दुहि	७	३

६८

हि	१६	१८, १६
	२०	४६
	३२	२६, ३१, ४२, ४४, ५५, ५७, ६८, ७०, ८१, ८३, ८४, ८६
हिअ	६	१०
	१६	७१
	३२	३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ८६
कुहिल	११	६
कुर	२४	१८
	३२	३
कूस	६	४६
	१२	६
	१६	सू० ७
देय	२५	८
देव	१	४८
	३	१५
	५	२५
	७	१२, १६, २३, २६, २६
	१०	१४, २३
	११	२७
	१२	२१
	१३	७, ३२

परिशिष्ट-२

देव	१४	१
	१६	१६
	१६	३
	२१	७
	२२	२१, २२
	२३	२०
	२६	सू० ५
	३३	१२
	३४	४४, ४७
	३६	१५५, २०४, २०६, २१२, २४५, २४६
देवई	२२	२
देवग	३२	१६
देवत्त	७	१७
देवय	७	२१
देवलोग (य)	३	३
	६	१, ३
	१३	७
देविद	६	११, १३, १७, १६, २३, २७, २६, ३१, ३३, ३७, ३६, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०
	१२	२१

देवी	१४	३,३७,५३	देह	७	२,१०,२६
	३२	१६		१२	२५,४२
देस	२१	३		१६	१६
	३६	२,५,६,		२१	१८
		१०,११,६७,		२३	५१
		७८,८६,		२४	१५
		१००,१११,	देह *		
		१२०,१३०,	देहइ	१६	६
		१३६,१४६,	दो	५	२५
		१५८,१७३,		८	१७
		१८२,१८६,		१३	३,५
		१६८,२१७		१४	३,५
देसिअ (य)				२२	२,४८
(देसित)	५	४		३४	३७
	१६	१७		३६	२२२
	२१	१२	दोगुछि	२	४
	२३	१२		६	७
	२८	५	दोगुदग (अ)	१६	३
	३५	१		२१	७
देसिय (देसिक) १०		३१	दोगगइ	७	१८
देसिय				८	१
(देवसिक) २६		३६,४०		९	५३
देह	१	४८		२६	सू० ५
	२	२	दोच्च	३६	१६१
	५	३१	दोणमुह	३०	१६
	६	१३	दोस (दोष)	१	२४

दोस (दोष)	४	१३	ध	४	२
	८	२,५	घण	७	८
१०	३७			१०	२६, ३०
१२	४६			१२	६, २८
१४	४१ से ४३			१३	१३, २४
१७	२१			१४	११, १४, १६,
२१	१६				१७, ३८, ३९
२३	४३			१६	२६, ६८
२५	२१			२०	१८
२७	२१		घणिय (दि०)	१३	२१
२८	२०			२६	सू० २३
२९	सू० १, ६३ से		घणु	६	२१
	६७, ७२		घन्त	११	२६
३०	१, ४			१३	२४
३१	३			१६	२६
३२	२, ७, ६,			३५	१०
	२२, २३, २५,		घमणि	२	३
	२६, ३०, ३६,		घम्म (घर्म)	१	४२
	३८, ४२, ४३,			२	१३, ३७, ४२
	४६, ५१, ५५,			३	८, ११, १२
	५६, ६१, ६२,			५	१५, ३०
	६४, ६८, ६९,			७	१५, २८, २९
	७५, ७७, ८१,			८	१६, २०
	८२, ८८, ९०,			९	२, ४४
	९४, ९५			१०	१८, २०

धम्म (धर्म)	११	१५	धम्म (धर्म)	३२	१७
	१२	३३, ४६		३६	७, ८
	१३	२, १५, २१,	धम्म (धर्म्या)	१६	८
		२६, ३२		३०	३५
	१४	१७, २०, २५,		३४	३१
		२८, ४०, ५०,	धम्मकहा	२६	सू० १, २४
		५१		३०	३४
	१५	१	धम्मचित्ता	२६	३३
	१६	सू० ३ से १२,	धम्मजाण	२७	८
		१५, १७	धम्मज्झाण	१८	४
	१७	१	धम्मतित्थयर	२३	१, ५
	१८	१८, २५, ३३,	धम्मत्थिकाय	३६	५
		३४	धम्मरुद्ध	२८	१६, २७
	१९	१९, २१, ४३,	धम्मलेसा	३४	५७
		७७, ९८	धम्मसद्धा	२६	सू० १, २, ४
	२०	१, ४४, ५८	धम्मायसिय	३६	२६५
	२१	१२, २३	धम्माराय	२	१५
	२२	४६	धम्मिदु	७	२६
	२३	११ से १३,	धर	६	१७
		२४ से २६,		११	२१
		२६, ३१, ५८,		१२	१, १५
		६८, ८७		१६	५
	२५	७, ११, १४,		२२	५
		१६, ३६, ४२			
	२८	७ से ९	धर *		
	२९	सू० ४६, ५१	-धरिज्जति	३०	२७

घरिस *			धीर	१४	३५
-घरिसेह	३२	१२		१५	३
घाउ	३४	७		१८	३३, ५१, ५३
घार *			धीरत्त	७	२६
-घारए	२	३७	धुत्त	५	१६
	१६	६	धुय	३	२०
-घारेज्जा	१	१४	धुरा	१४	१७
घारेह	१६	६८		१६	६८
घार	३५	१२	धुव	७	१६
घारइत्ता	२०	४३		१६	१७
घारा	१६	३७, ५६, ६२		२०	५२
	२३	५३		२३	८१
घारि	१४	१७	धुवगोयर	१६	८३
घारेखं	१६	३३	धूमणेत	१५	८
घारेयन्व	१६	२४, २८	धूमाभा	३६	१५७
घावत	१६	५६	धूयरा	२१	३
घिइ	६	२१	धूया	१२	२०
	२७	८	धूव	३५	४
	३२	३	धेणु	२०	३६
घिइम	१६	१५	घोरेय	१४	३५
	१८	३६			
घिइमत	२२	३०	न		
	२६	३३	न	१	७
घिरित्थु	२२	२६, ४२	नई(दी)	११	२८
धीर	१	२१		१६	५६
	७	२६			

नई(दी)	२०	३६
	३२	१८
नउय	७	१३
नंदण	१६	३
	२०	३, ३६
नदावत्त	३६	१४७
नदि	११	१७
नक्खत्त	११	२५
	२५	११, १४, १६
	२६	१६, २०
	३६	२०८
नग	११	२६
	१३	६
नगर	२	१८
	६	२०, २८
	१०	३६
	१६	४
	२१	२
	३०	१६
नग (य) रसंढल	२३	४, ८
नगरी	२३	३
नगिणिण	५	२१
नगगइ	१८	४५
नगगखइ	२०	४६
नच्चा	१	४१, ४५
	२	सू० १ से ३

नच्चा	२	१३, २६, ३१,
		३५, ४१
	८	१६
	३२	१६
नच्चावाण	८	११
	१४	१७
नट्ट	१३	१४, १६
नत्थि	१४	१५
नपुस	३६	५१
नपुंसग	३६	४६
नपुंसगवेय	२६	सू० ६
नपुसवेय	३२	१०२
नम		
-नमइ	१	४५
-नमसंति	१६	१६
-नमेइ	६	६१
नमसन्त	२५	१७
नमि	६	२, ३, ५, ८,
		११, १३, १७,
		१६, २३, २५,
		२७, २८, ३१,
		३३, ३७, ३९,
		४१, ४३, ४५,
		४७, ५०, ६१,
		६२
	१८	४५

२०४

परिणिष्ट-२

नमिपवज्जा	६	
नमो	२०	१
	२३	८५
नय	२८	२४
	३६	२४६
नयण	२०	२८
	३४	४
नयर	१३	३
	१८	१
	१९	१
	२२	१, ३
नयरी	२०	१८
नर	१	६
	४	२
	७	११, २०
	९	४८
	१३	१०, १२, १८,
		२२, २६
	१५	६
	१६	१३
	१८	१०, १६, २५
	२०	३८
	२१	१७
	२५	४१
	३२	१०, ३२, ४५,
		५८, ७१, ८४,
		९७

नर	३४	२१, २४, ४५,
		४७
नरग(य)	३	३
	४	२
	५	१२, २२
	६	७
	७	४, ७, १६,
		२८
	१३	३४
	१८	२५
	१९	१०, ४८, ७२,
		७३
	२०	४६
नरदेव	१४	४०
नरवह	१३	२८
नराहिव(अ)	९	३२
	१३	१५
	१८	५, १८, ३५,
		३६, ४१
	२०	१६, ३३, ५९
नरिद	१२	२१
	१३	१८
	१४	३०
	१८	४६
	२०	१३
नरीसर	१८	४०

नलकूबर	२२	४१
नव (नवन्)	२६	२५
	२८	१४
	२९	सू० ३८
	३३	६
	३४	४६
नव (नव)	२९	सू० ३८
नवणीय	३४	१९
नवम	२६	४
	३६	२४२
नवरं	१९	७५
नवविह	२९	सू० ७२
	३३	११
	३४	२०
नवहा	३६	२१२
नह (नख)	१२	२६
नह (नभस्)	१४	३६
	२६	१९
	२८	९
ना *		
-नाहिई	२०	४८
नाइ	१	३९
	१३	२३
	१९	८७
	२०	११
नाउ	१२	४५

नाग	२	१०
	१३	३०
	१४	४८
	२२	४६
	३२	८९
	३६	२०६
नागराय	२१	१७
नाण	६	१७
	८	३
	१८	३२
	१९	९४
	२०	५१
	२१	२३
	२२	२६
	२३	३३
	२४	५
	२५	३०
	२६	३९, ४७
	२८	१ से ५,
		१०, ११, २५,
		३०
	२९	सू० १, १५, ५७,
		६०, ६१, ७२
	३२	२
	३५	२१
	३६	६६, ६७,
		२६५

२०६

परिशिष्ट-२

नाणधर	२१	२३
नाणस्सावर-		
णिज्ज	३३	२
नाणा	३	२
	५	१६
	११	२६, २६, ३०
	१२	३४
	१८	३०
	२०	३
नाणावरण	३२	१०८
	३३	४
नाणावरणिज्ज	२६	सू० १६, १६, ७२
नाणाविह	३	२
	२३	३२
नाणि	२	१३
	६	१७
	२८	५
नाम	८	१, १०
	११	२७
	१२	१, २०
	१४	१
	१७	२
	१८	१, २१, २२, ३६, ३६, ४३
	२०	१८
	२१	१

नाम	२२	१, ३ से ५
	२३	१, ४
	२५	४
	२६	२, ३
	२८	२०, २५
	२९	सू० ४२, ४४, ७३
	३३	१३, १६, २१,
		२३
	३४	३
	३६	५७
नामअ	२१	४
नामओ	२५	१
नामकम्म	३३	३
नाय	२०	२६
नायज्झयण	३१	१४
नायपुत्त	६	१७
नायय (नायक)	१३	२५
नायय (अ)		
(ज्ञातक)	१८	२४
	३६	२६८
नायव	३	१८
नायव्व	२६	१५
	२८	१८, १६, २१, २२, २४, २६,
		२७
	३०	११

नायव्व	३३	५,६	निदणया	२६	सू० १,७
	३४	१० से १३,	निदा	१२	३०
		१५, ३४ से		१६	६०
		३६, ४६		२६	६
नाराय	६	२२	निव	३४	१०
नारी	८	१६	निकेय	३२	४
	१३	१४	निककंख	२६	सू० ३५
	१५	६	निककखिय	२८	३१
	१६	११	निककस *		
	२२	४४	-निककसिज्जइ	१	४,७
नावा	२३	७० से ७३	निकखंत	१८	१६, ४४, ४६
नावि	२३	७३		२५	४२
नास	२	२७	निकखम		
नास *			-निकखमई	२२	२३
-नासइ	१४	१८	-निकखमसु	२५	३८
-नस्ससि	२३	६०	निकखमे	१	३१
-नस्सामि	२३	६१	निकखमत	३२	५०
नाह	२०	६ से १२,	निकखमण	२२	२१
		१६, ३५, ५५,	निकखमिअ	२२	२२
		५६	निकिखव *		
निअय	१६	१७	-निकिखवेज्जा	२४	१४
निउण	६	२०	निकिखवंत	२४	१३
	३२	४, ५	निकिखवित्ताण	२६	३६
निउत्त	२६	१०	निगम	२	१८
निओइउं	२६	६		३०	१६
निओइय	१२	२१			

निगिण्ह *		
-निगिण्हाड	२८	३५
-निगिण्हामि	२३	५६, ५८
निगगन्थ	१६	सू० ३ से १२
	२१	२
	२६	१, ३३
निगगन्थी	२६	३३
निगगय	७	१४
	१२	२६
	१६	८७
	२७	१२
निगगह	२६	सू० १, ६३ से
		६७
निगगाहि	२५	२
निच्च	१	४४
	२	२८
	११	१४
	१३	३१
	१४	१६
	१५	३
	१७	१०
	१६	३, २६, ७१
	२३	८८
	३१	३ से २०
निच्चल	२२	४७
निच्चसो	१६	४, ७, १०, १४

निच्छथ	२३	३३
निच्छिन्न	३६	६७
निज्जंत	२२	१४
निज्जर *		
-निज्जरिज्जइ	३०	६
-निज्जरेइ	२६	सू० ६, ३२, ३७, ५८, ६३ से
		७१
निज्जरण्या	२६	सू० ३३
निज्जरा	२८	१४
	२६	सू० १६, २४
निज्जरापेहि	२	३७
निज्जा *		
-निज्जाइ	८	६
निज्जाअ	२०	२
	२२	१३
निज्जाण	२१	६
निज्जिअ	६	५६
	२३	३५
निज्जिण्ण	२६	सू० ७२
निज्जूहण	३६	२५२
निज्जूहिऊण	३५	२०
निज्झाइत्ता	१६	सू० ६
निज्झा *		
-निज्झाएज्जा	१६	सू० ६
निज्झायमाण	१६	सू० ६

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२०६

निट्ठ * -निट्ठवेइ २६ सू० ५० निट्ठिय ८ १७ निण्हव * -निण्हविज्ज १ ११ निट्ठमोक्ख २६ १८, ४३ निट्ठहे * -निट्ठहेज्जा १२ २३ निट्ठा १७ ३ ३३ ५ निट्ठानिट्ठा ३३ ५ निट्ठेस १ २ निट्ठ ३४ ४, ५ ३६ २० निट्ठअ ३६ ४० निट्ठत २५ २१ निट्ठधस (दे०) ३४ २२ निट्ठण * -निट्ठणे ३ ११ निट्ठणित्ताण १६ ८७ निनाअ २२ १२ निन्न १२ १२ निन्नेह १४ ४६ निप्पडिकम्मया १६ ७५ निप्परिगाह १४ ४६ निप्पिवास १६ ४४

निबंघ * -निबन्धई २६ सू० ५, ११, २४, ४४ निब्भअ २६ सू० १८ निब्भेरिय(दे०) १२ २६ निभ ३४ ४, ६ से ८ निमंतण २ ३८ निमंतयंत १४ ११ निमंतिय २० ५७ निमज्जिउं ३२ १०५ निमित्त १७ १८ २० ४५ ३६ २६६ नियेस १६ ७४ निम्मम १६ ८६ ३५ २१ निम्ममत्त १६ २६ निम्मल ३६ ६०, ६१ निम्मोयणी १४ ३४ नियच्छ * -नियच्छइ १५ ६ नियठधम्म २० ३८ नियग १ ७ १२ ८ २२ १३

नियट्ट *			निरंगण	२१	२४
-नियट्टई	२	४३	निरंतराय	३२	१०६
नियडिल्ल	३४	२५	निरविकय	६	५६
नियणठ	१२	१६	निरट्ट	१	८, २५
	१५	११		२०	५०
	१७	१	निरट्टग	२	४२
	२०	५१	निरट्टिय	२०	४६
नियत्त *			निरत्थिय	१८	२७
-नियत्तेइ	२६	सू० ८, ३३	निरय	८	७
-नियत्तेज्ज	२४	२१, २३, २५	निरवकांखा	३०	६
नियत्त	१४	४१	निरवेक्ख	६	१५
	१६	६१	निरस्साय	१६	३७
नियत्तण	२४	२६	निरस्साविणी	२३	७१
नियत्ति	३१	२	निरहकार	१६	८६
नियम	१६	५		३५	२१
	२०	४१	निराणंद	२२	२८
	२२	४०	निरामिस	१४	४१, ४६, ४६
नियय	१४	१६	निरारभ	२	१५
नियाग	२०	४७		२०	३२, ३४
नियागट्टि	१	७, २०	निरालब्ध	२६	सू० ३४
नियाण	१३	१, ८, २८	निरावरण	२६	सू० ७२
	१५	१	निरासव	२०	५२
	१८	५२		३०	६
	२६	सू० ६	निरुभ *		
	३६	२५७, २५६	-निरुभइ	२६	सू० ५, १४, ४१,
निरइयार	२६	सू० १७			७३

निष्ठाइ	१	३०	निव्वत्त		
निच्छ	२६	सू० १२	-निव्वत्तइ	३२	३२, ४५, ५८,
निस्मिन्ता	२६	सू० ७३			७१, ८४, ९७
निस्वहिय	२६	सू० ३५	-निव्वत्तेइ	२६	सू० ४, ११, ३६-
निरोबलेद्ध	२१	२२	निव्वत्तयंत	३२	१०६
निरोह	४	८	निव्वाण	३	१२
	७	२६		११	६
	२६	सू० २६, ५६, ७३		१६	६८
निलय	३२	१३		२१	२०
निव	१८	८		२३	८३
	२०	३८		२८	३०
निवज्ज *			निव्वावार	६	१५
-निवज्जइ	२७	५	निव्वाहण	२५	१०
निवड *			निव्विण्ण	१४	२
-निवडइ	१०	१		१६	१०, ५०
निवाय	२	३५	निव्वितिगिच्छ	२८	३१
निवारण	२	७	निव्वियार	२६	सू० ५५
निवारेउ	३५	५	निव्विसय	१४	४६
निवाम	३२	१३	निव्वुय	२६	सू० १३
निविज्ज *			निव्वेय	१८	१८
-निविज्जन्ति	३	५		२६	सू० १, ३
निव्विज्ज	११	२	निसत्त	१	८
निवेस			निसग्ग	२८	१६, १७
-निवेसइ	२७	५	निसग्गच्छ	२८	१८
निवेसइत्ता	३२	१४	निसण्ण	२३	१८
निवेसण	१३	१८, १९	निसन्त	२०	४

२१२

निसम्म

१०

३७

सू० १ से ३

१६

६७

१६

निसामित्ता

६

७, ११, १३,
१७, १९, २३,
२५, २७, २९,
३१, ३३, ३७,
३९, ४१, ४३,
४५, ४७, ४९

निसामिया

१७

निसिर *

-निसिरे

निसीअ (य) *

-निसीएज्ज

-निसीएज्जा

-निसीयई

निसीयण

निसीहिया

निसूरण

निसेज्जा

निसेवण

निसेव *

-निसेवएं

निसेवय

निसेविय

निसेवियव्व

निस्संकिय

निस्संग

निस्संगत्त

निस्संस

निस्सल्ल

निस्सिय

निस्सेयस

निस्सेस

निहत्तण

निहय

निहिय

निहुय (अ)

नो *

-नित्ति

-नेइ

नीइकोविअ

१०

२०

३२

२८

१६

२६

३४

२६

३०

८

३५

८

८

२२

२३

१२

११

१६

२०

२२

१४

१३

२१

१८, १९

३

१०

३१

८६

सू० ३१

२२

४१, ४६

३

१०

११

५

३

१६

४१

३२

१५

४१

३८

४३

१२

२२

९

नीण *			नेम *		
-नीणेद्	१६	२२	-नेइ	२६	१६
नीय	१	३४	नेमाउय	३	६
	३३	१४		४	५
	३६	१४८		७	२५
नीयागोय	२६	सू० ११		१०	३१
नीयावत्ती	११	१०	नेत्त	१२	२६
नीयावित्ति	३४	२७	नेरइअ (य)	१०	१४
नीरअ	६	५८		२६	सू० ५
	१८	५३		३३	१२
नीरस	१५	१३		३४	४४
नील	३४	४२		३६	१५५ से १५७, १६७, १६८
	३६	१६, २३, ७२	नेह	१३	१५
नीललेसा	३४	५, २४, ३५		२६	सू० ४६
नीलवत	११	२८	नेहपास	२३	४३
नीला	३४	३, ११, ४६, ५०, ५६	नो	१	११
नीलासोग	३४	५	नोकसाय	३३	१०
नीसक	१६	४१	नोकसायज	३३	११
नीहर *					
-नीहरन्ति	१८	१५			
नीहारि	३०	१३			
नीहास	२२	२८			
नु	४	१			
नूण	२	४०			

प

पड (पति)	१४	३६
पइ (प्रति)	३०	१२
पइगिज्म	२१	३

२१४.

परिशिष्ट-२

पइट्टा	२३	६५, ६८	पाएसगा	२६	सू० २३
पइट्टिय	३६	५५, ५६, ६३		३३	१६, १७, २४
पइण्णग	२८	२३	पओग	२६	सू० ३६
पइण्ण	३०	११		३२	३१, ४४, ५७,
पइण्णवाड	११	६			७०, ८३, ९६
पइण्णि	६	६	पओयण	२३	३२
पइत्त	२०	५३		३२	१०५
पइत्ता	२३	३३	पओस	८	२
पइरिक्क	२	२३		३२	२६, ३३, ३६,
	३५	६			४६, ५२, ५६,
पईव	२३	२, ६			६५, ७२, ७८,
	३४	७		३४	८५, ९१, ९८
पउज *			पओस *		२३
-पउजन्ति	८	१३	-पओसए	२	११, २६
	३६	२६४	पओसकाल	२६	१६
-पउजेज्ज	२४	१३	पंक	१	४८
पउजमाण	२०	४५		२	१७, ३६
पउमगुम्म	१३	१	पकजल	१३	३०
पउर	८	१	पंकाभा	३६	१५७
	३२	११	पंख	१४	३०
पउस्स *			पंच	१	४७
-पउस्सइ	१५	११		११	३
-पउस्से	४	११		१२	४२
पाएस	३३	१८		१७	२०
	३६	५, ६, १०		१६	१०, ४३, ८८

पंच	२१	१२	पंचिन्दिकाय	१०	१३
	२२	२४	पंचिन्दियत्त	१०	१८
	२३	३६, ८७	पंचिन्दियया	१०	१७
	२६	सू० ७३	पंजर	१४	४१
पंचम	२३	१७		२२	१४, १६
	२६	३	पंजलि	२०	७
	३०	११		२५	१३
	३३	५	पंजलिउड	१	४१
	३६	१६४		२६	६
पंचविह	१६	१०	पंजलीउड	१	२२
	२८	४, ५		२५	१७
	२९	सू० ७२	पङ्ग	१६	सू० ३
	३३	४, १५	पङ्गिय	१	६, ३७
	३६	२०५		४	६
पचसिक्खिय	२३	१२, २३		५	३, १७
पचहा	२४	८		६	२
	३०	१४, ३४		७	१६, ३०
	३६	१५, १६, २१,		८	६२
		८५, ११७,		१६	६६
		१७२, २०८,		२२	४६
		२१६		२४	२७
पचाल	१३	१३, २६, ३४		३०	३७
	१८	४५		३१	२१
पंचिदिय	६	३६	पङ्गियमाणि	६	१०
	३६	१२६, १५५,	पङ्गु	३६	७२
		१७०	पङ्गुय	१०	१

पंडुर	३५	- ४ -	पक्कम *		
	३६	६१	-पक्कमई	३	१३
पंडुरय	१०	२१ से २६		१६	८२
पंत	८	१२	-पक्कमंति	२७	१४
	१२	४		२८	३६
	१५	४	पक्क	५	२३
पंतकुल	१५	१३		२६	१४, १५
पंय	२	५		२७	१४
पंसु	१२	६, ७	पक्कओ	१	१८
पक्क	३१	१८	पक्कन्द *		
पकर *			-पक्कन्द	१२	२७
-पकरेति	१	१३	पक्कपिड	१	१६
-पकरेड	२६	सू० २३	पक्क	४	६
	३२	१०८		६	१५
-पगरेह	१२	३६		१३	३१
पक्किण	१२	१३		१४	३०
पक्कितिय	३६	१६, १८, १९,		१६	५८, ७६
		२१, ८५, ८४,		२०	३
		८६, ११७,		३२	१०
		१२६, १२७,		३६	१८८
		१३६, १४५	पक्कणी	१४	४१
पक्क			पगड	१३	८, ९
पक्क	११	७	पगभ *		
	२७	११	-पगभई	५	७
पक्क	१६	४६, ५७	पगर*		
	३४	१३	-पगरेह	१२	३६

पगाढ	५	१२ --
	-१६	७२
पगाम	१४	१३, १६, ३१
	३२	१०
पगामभोइ	३२	११
पगामसो	१७	३
पगार	३२	१०६
पगास	२०	४२
पगासण	३२	२
पगिज्झ *		
-पगिज्झेज्जा	८	१६
पगिज्झ	१४	५०
पच्चग	१६	४
पच्चकवाण	२६	२६
	२६	सू० १, १४, ३४
		से ४२
पच्चणुह्व *		
-पच्चणुहोड	१३	२३
पच्चमाण	३२	२०
पच्चय	२३	३२
पच्चवाय	१०	३
पच्चुप्पन्न	७	६
पच्छा	२	४१
	४	७, ६
	५	१३
	१०	३३

पच्छा	१४	२६, ३१-
	१७	१
	१६	११, १३, ४३
	२२	३४, ३८
	२६	सू० २६, ३३, ४२,
		५६, ६२, ७२
	३२	३१, ४४, ५७,
		७०, ८३, ६६
पच्छाणुताव	२०	४८
	२६	सू० ७
	३२	१०४
पच्छाणुतावए	१०	३३
पच्छायइत्ता	१२	८
पच्छिप	२३	२६, ८७
पजह *		
-पजहामि	१२	४६
	१४	३२
-पजहे	१५	६
पजुंज *		
-पजुंजई	६	३०
पज्जम	३५	१६
पज्जत्त	३६	७०, ७१, ८४,
		८५, ६२, ६३,
		१०८, १०६,
		११७, ११८,
		१२७, १३६,
		१४५

पज्जलण	१४	१०
पज्जलिअ	११	२६
पज्जव	२८	५, ६, १३
	२९	सू० ८, ५७ से
		५६
	३०	१४
पज्जवचरअ	३०	२४
पज्जुवट्ठिअ	६	६१
	१८	४६
पट्टण	३०	१६
पट्टित	१६	५५
पट्ट	५	१
पट्टिय	२३	६१, ६३
	२७	४
पड *		
-पडइ	२७	५, ६
-पडति	१८	२५
पड	१६	८७
पडत	१४	२१
	१६	६०
पडिकूल	१२	१६
पडिकूल *		
-पडिकूलेइ	२७	११
पडिकम्म *		
-पडिकम्मामि	१८	३१
-पडिकम्मे	१	३१

पडिक्कम	१६	७६
पडिक्कमण	२६	सू० १, १२
पडिक्कमिता	२६	३७
पडिक्कमित्तु	२६	४१, ४५, ४६
पडिगाह *		
-पडिगाहेज्ज	१	३४
पडिग्घाअ	६	५४
पडिचोय *		
-पडिचोएइ	१७	१६
पडिच्छ *		
-पडिच्छई	१२	३५
	२६	२६
पडिच्छन्न	१	३५
पडिठप्प	१४	६
पडिणीय	१	३, ४, १७
पडितप्प *		
-पडितप्पइ	१७	५
पडित्थद्व	१२	५
पडिनियत्त *		
-पडिनियत्तइ	१४	२४, २५
पडिपुच्छ *		
-पडिपुच्छई	२०	७
पडिपुच्छणाया	२६	सू० १, २१
पडिपुच्छणा	२६	२, ५
पडिपुण्ण	८	१६
	६	४६

पडिपुण	११	२५, २६, ३०
	२६	सू० ७२
	३२	१
पडिप्पह	२७	६
पडिवुद्धजीवि	४	६
पडिमंत *		
-पडिमतेड	१८	६
पडिमा	२	४३
	३१	६, ११
पडियर *		
-पडियरसी	१८	२१
पडिय	२६	सू० ६०
पडिहव	१	३२
	२३	१६
पडिस्वन्तु	२३	१५
पडिस्वया	२६	सू० १, ४३
पडिलभ *		
-पडिलभे	१	७
पडिलेह *		
-पडिलेहड	१७	१४
-पडिलेहए	२६	२२, २३, ३५, ३७, ४५
-पडिलेहे	२६	२४
-पडिलेहेड	१७	६, १०
-पडिलेहिज्ज	२६	३८
पडिलेहणया	२६	सू० १, १६

पडिलेहणा	१७	६
	२६	२६, ३०
पडिलेहा	२६	१६, २८
पडिलेहिता	२४	१४
	२६	८, २०, २३
पडिलेहिताण	२६	२१
पडिलेहिया	२६	४४
पडिवज्ज *		
-पडिवज्जड	२३	८७
	२६	सू० ७
-पडिवज्जई	२३	५६
-पडिवज्जए	३	१०
-पडिवज्जति	३	८
-पडिवज्जामि	२६	५०
-पडिवज्जयामो	१४	२८
पडिवज्ज	२१	२०
पडिवज्जअ	२	४३
पडिवज्जमाण	२६	सू० १७
पडिवज्जियव्व	३२	६
पडिवज्जिया	३	२०
	५	१५
	७	२८
	२१	१२
पडिवत्ति	२३	१६
	२६	सू० ५

पडिवन्न	२६	सू० ३,५ से द, सू० ३२, ३७, ४२, सू० ६२	पडुच्च	३६	१४०, १५०, १५६, १७४, १८३, १६०, १६६, २१८
पडिसजल *					
-पडिसंजले	२	२४	पडुप्पन्न	२६	सू० १३
पडिसविवक्ख *			पढम	५	४
पडिसविवक्खे	२	३१		२०	१६
पडिसंघ *				२४	१२
-पडिसघए	२७	१		२६	२, १२, १८,
पडिसंलीण	११	१३			२८
पडिसिद्ध	२५	६		२८	३२
पडिसेव *				३४	५८
-पडिसेवन्ति	२	३८		३६	१६०, २३४,
पडिोवि	३६	२६६			२५२
पडिोह *			पणग	३६	१०३, १०४
-पडिसेहए	२५	६	पणगमट्टिया	३६	७२
पडिसेहिय	१५	११	पणट्टु	४	५
पडिसोअ	१६	३६	पणयाल	३६	५८
पडिसोत्त	१४	३३	पणवीस	३१	१७
पडिस्सुअ	२६	६		३६	२३६
पडिस्सुण *			पणाम *		
-पडिस्सुणे	१	१८, २१, २७	-पणामए	१६	७६
पडिहय	३६	५५, ५६		२२	२०
पडुच्च	३६	१२, ७६, ८७, १०१, ११२, १२१, १३१,	पणिहाणव	१६	८, १४
			पणिहि	२३	११
			पणीय	१६	सू० ६

उत्तररजभायण शब्द-सूची

पणीय	१६	७, १२
	३०	२६
	३६	२३७
पणुवीसइ		
पणोल्ल #		४०
-पणोल्लयामो	१२	२८
पण	१	१५
पत्त	५	३
	७	
	१२	४७
	१८	३८, ४०, ४२,
		४३, ४७
	१६	५६, ६१, ६५
	२०	४८
	२१	१७
	२२	४८
	२५	२, ४३
	२६	सू० ७४
पत्त (पात्र)	६	१५
पत्त (पत्र)	६	६
	३६	५६
पत्तअ (प्राप्तक)	२६	सू० ४५
पत्तअ (पत्रक)	१०	१
पत्तहारग	३६	१३७
पत्तिअ	१	४१
पत्तियाइत्ता	२६	सू० १
पत्तो	१२	२४
	१४	३

पत्तो
पत्तोसरीर

पत्थ #

पत्थए

पत्थेइ

पत्थेसि

पत्थ

पत्थिअ

पत्थिव

पत्थेमाण

पदुइ

पद्दोस

पवावत

पन्न

पन्नत्त

पन्नरस

पन्नव

३६

३६

२

३५

२६

६

१४

२१

६

१८

२०

६

३२

१२

२३

१५

८

१६

२८

२६

११

३६

१२

२४

३२१

६३, ६५

६४

६

४, १३, १८

सू० ३४

४२, ५१

४८

३

३२, ५१

११

१६, १६

५३

३३, ४६, ५६,

७२, ८५, ६८

३२

५६

२, १५

८

सू० १ से १२

२, ७

सू० ११

१०

१६७

३६

१०

२२२

परिशिष्ट-२

पन्मवय	७	१३	पभा	५	२७
पन्नविअ	२६	सू० ७४		२२	७
पन्ना	२	सू० ३		२३	१८
	२	३२		३४	५, ६
	२३	२५, २८, ३४,	पभाय	२०	३४
		३६, ४४, ४६,	पभाव	१६	६७
		५४, ५६, ६४,		२६	सू० २४
		६६, ७४, ७६,		३२	१०४
		८५	पभाव '		
पप्य	३६	६, ७६, ८७,	-पभावेड	२६	सू० २४
		११२, १२१,	पभावग	२६	सू० ७२
		१३१, १४०,	पभावणा	२८	३१
		१५०, १५६,	पभास '		
		१७४, १८३,	-पभासई	१८	२३
		१६०, १६६,	-पभाससे	१२	१६
		२१८	पभीय	५	११
पप्य -			पभु	१६	३४
पप्योति	१४	१४	पभूय	१२	१०, ३५
पप्फोड *				१३	११, १३
-पप्फोडे	२६	२४		१४	१६, ३१
पप्फोडणा	२६	२६		२०	२, १८
पवन्ध	११	७, ११	पमज्ज '		
पव्भट्ठ	८	१४	-पमज्जेज्ज	२४	१४
पभकर	२३	७६	-पमज्जेज्जा	२६	२४
पभव -	३२	६, ७, १६,	पमत	४	१, ५, ६
		१०३, १११		६	१६

पमत्त	१४	१४	पय ^१		
	१७	८ से १०	-पए	२	२
	२६	३०	-पये	३५	१०
	३४	२३	पय (पयस्)	११	१५
पमाण	२६	२७	पयञ	१	२७
	२८	२४	पयग	३	४
पमाय *				१२	२७
-पमायए	४	१		३२	२४
	१०	१ से ३६		३६	१४६
पमाय	१०	१५	पर्यग्वीहिया	३०	१६
	११	३	पयट्टिय	४	२
	१४	१५	पयडि	३३	६
	२०	३६	पयण	१२	६
	२६	२७		३५	१०
पमाट्टाण	३२		पयणु	३४	२६
पमुह	१७	११	पयणुय	३४	२६
पमोक्ख	२५	१३	पयणुवाड	३४	३०
	३२	१, १११	पयर	३०	१०
पमोय ^२			पयलपयला	३३	५
*पमोयति	१४	४२	पयला	३३	५
पम्हलेसा	३४	८, ३०, ३८	पयह ^३		
पम्हा	३४	३, १४, ५४,	-पयहति	१४	३४
		५५, ५७	-पयहेज्ज	४	१२
पय (पद)	१	२६	पयहित्तु	१८	४६
	४	७	पया	३	२
	२६	२८		४	३
	२८	२२		१३	३२

२२४

परिशिष्ट-२

पया #		पर	२६	३५
-पयाद्	१३ २४		२८	१६
पयार	३२ १०४		२६	सू० ३४,६१
पयाव'			३२	२६,४२,५५,
-पयावए	२ २			६८,८१,६४
	३५ १०		३४	४७,५१,५८,
-पायए	३५ ११			५६
पयावण	३५ १०		३६	२६३
पयाहिणा	६ ५६	परअ	३४	१४
	२० ७,५६	परंदम	७	६
पर	१ १६,२५	परंपर	३२	३४,४७,६०,
	२ १०,२०,२४,			७३,८६,६६
	३०,४४	परंपरा	३२	३३,४६,५६,
	४ ४,१३			७२,८५,६८
	५ ५,६	परकड	१	३४
११ ३२			३५	६
१२ ६,३१		परवकम	६	२१
१३ २१,२४			११	१७
१५ ११,१२			१८	५१
१८ १७,२७,२६		परगेह	१७	१८
१९ १६,२१		परज्म	४	१३
६० ३५,४६		परत्थ	१	१५
२१ १०			४	५
२४ १७			१७	२०
२५ ८,१२,१५,		परपासंड	१७	१७
३३,३७		परम	२	२६

परम	३	१, ६, १२	परिकंख *		
	६	३४	-परिकंखए	७	२
	१८	१५	परिकिण्ण	११	१८
	१६	७१	परिकित्तिय	३०	३६
	२०	५, २०, २१,		३६	१४६, २१७
		५८	परिक्खीण	७	१०
	२६	सू० ३६	परिगय	२	२
	३५	७	परिगिज्ज	१	४३
परमंत	१८	३१	परिक्खेवि	११	८, १२
परमट्टपअ	२१	२१	परिगिण्ह *		
परमत्थ	२८	२८	-परिगिण्हइ	२७	१६
परमाणु	३६	१०, ११	परिगह	२	१६
परमाहम्मिअ	३१	१२		७	६
परलोग(य)	५	११		१२	६, १४, ४१
	१६	६२		१३	३३
	२२	१६		१४	४१
	२६	सू० ५१		१६	२६
	३४	६०		३०	२
परसमय	२६	सू० ६०		३२	२८ से ३०,
पराइय	२२	३६			४१ से ४३,
	३२	१२			५४ से ५६,
पराजिअ	६	५६			६७ से ६९,
	१३	१			८० से ८२,
परायण	७	६			८३ से ८५
	१४	५१			
परिड *			परिगहि	३२	१०१
-परियंति	२७	१३	परिचज्ज	१७	१८

परिचवज्ज	१८	१२,४८
	३५	२
परिचवत	१४	३८
	२२	२६
परिचवय *		
-परिचवयई	६	३
परिच्चाअ (य)	१६	२६
	२६	सू० ३
परिच्चाइ	१७	१७
परिजुण्ण	२	१२
परिजूर *		
-परिजूरइ	१०	२१ से २६
परिणम *		
-परिणमे	३४	२२, २४, २६, २८, ३०
परिणय (अ)	३४	१३, २१, ५८ से ६०
	३६	१६ से २१
परिणाम	१६	१७
	२२	२१
	३४	२, २०, २२
	३६	१५, १७
परिणिट्ठिय	२	३०
परिणिब्बुअ *		
-परिणिब्बुए	३५	२१

परितप्प *		
-परितप्पई	५	११, १३
परितप्पमाण	१४	१०, १४
परित्तसंसारि	३६	२६०
परिताव	२	३६
परिताव '		
-परितावेइ	३२	२७, ५३, ६६, ७६, ६२
-परियावेइ	३२	४०
परिदाह	२	८
परिदेव *		
-परिदेवए	२	८, १३, ३६
परिधाव		
-परिधावई	२३	५५, ५८
परिनिब्बव *		
-परिनिब्बवेइ	१२	२०
परिनिब्बा *		
-परिनिब्बाएइ	२६	सू० २६, ४२, ५६, सू० ६२, ७४
-परिनिब्बायंति	२६	सू० १
परिनिब्बुअ	३६	२६८
परिनिब्बुड	५	२८
	१०	३६
	१४	५३
	१८	२४, ३५
परिन्नाय		
(परिज्ञात)	२	१६

परिन्नाय			परियागय	५	२१
(परिज्ञाय)	४	७	परियायवम्म	२१	११
	१२	४१	परियाव	२	८
	१५	८, ६		२०	५०
परिभत्त *			परियावस *		
-परिभत्तई	३	६	-परियावसे	१८	५३
	७	२५	परिरञ्ज	३६	५८
परिभावय	१७	१०	परिरक्खिय	१८	१६
परिभास *			परिरक्खियंत	१४	२०
-परिभासई	१८	२०	परिवज्ज *		
परिभुज *			-परिवज्जए	१	१२
-परिभुजामो	१३	६		१६	३, ७, १०,
परिभोगेसणा	२४	११			१४
परिभोय	२४	१२		१८	३३
परिमंडण	१६	६		३५	३, ६
परिमडल	३६	२१, ४२	-परिवज्जेज्ज	१८	३०
परिमिय	३६	२५४	-परिवज्जेज्जा	१६	६
परिमुञ्ज *			परिवज्जण	३०	२६
-परिमुञ्जए	६	२२	परिवज्जयत	२१	१३
परियट्ठणया	२६	सू० १	परिवज्जित्तु	२४	१०
परियट्ठणा	२६	सू० २२	परिवत्त *		
	३०	३४	-परिवत्तए	३३	१
परियट्ठ त	१२०	३३	परिवाडी	१	३२
परियण	६	४	परिवारयंत	१३	१४
	२०	५८	परिवारिय	११	२५
	२२	३२		१४	२१ से २३

२२८

परिशिष्ट-†

परिवारिय	१८	२
	२२	११
परिविस्स	१४	६
परिवुड	२०	११
	२२	२२, २३
परिवूढ	७	२, ६
परिब्बअ *		
-परिब्बए	२	१६
	६	१२, १४, १५
	१५	१, ८, ९, १३
-परिब्बएज्जा	२१	१५
परिव्वयत	२	सू० १ से ३
	१४	१४
परिसंक्रमाण	४	७
परिसप्प	३६	१७६, १८१
परिसा	२२	२१
	२३	८६
	२५	१३
परिसिच *		
-परिसिचई	२०	२८
-परिसिचेज्जा	२	६
परिसुक्क	२	५
परिपुज्झ *		
-परिसुज्झई	२८	३५
परिसुद्ध	२४	४
परिसोसिय	१२	४

परिहर *		
-परिहरे	१	२४
परिहरिय	१२	६
परिहायंत	३६	५६
परिहार-		
विमुद्धीय	२८	३२
परिहिय	२२	६
परी *		
-परियंति	२७	१३
परीसह	२	सू० १ से ३
	२	१, ५, १४,
		१८, ४६
	१६	३२
	२१	११, १७, १९,
		२२
	२६	सू० ४७
	३१	१५
परीसहपविभत्ति २		
परूवणा	३६	३
परूव्विअ	२६	सू० ७४
पलंदु	३६	६७
पलंब	२६	२७
पलाय *		
-पलायए	२७	७
पलायण	१४	२७
पलाल	२३	१७

उत्तरजमयेंण शब्द-सूची

पलास	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९६	पल्हायण	२६	सू० १८ ६३
पलिउंच *			पवच	३६	
-पलिउचन्ति	२७	१३	पवक्ख *		१
पलिउंचग	३४	२५	-पवक्खामि	२६	१
लिओवम	३४	४२, ५२, ५३		३१	१
	३६	१८४, १८५, १९१, २००, २०१, २२० से २२३	पवज्ज *	३४	
		२२, २३	-पवज्जई	१६	१८, २०
पलित	१६		पवज्जा	३५	२
पलिमंथ *		२१	पवङ्कु *		१७
-पलिमथए	६	३५ से ३७, ४३, ४८ से ५०, ५२	-पवङ्कुई	८	२१
पलिय	३०	१६२	पवत्त	३४	२६
	३६		पवत्ताण	२४	२, ३
पली *		३४		३१	२१, २३, २५
-पलेइ	१४	३६	पवत्तमाण	२४	१७
-पलेति	१४	१८	पवत्तिय	२०	२, २८
पलोभित्ता	८	२४	पवन्न	१४	१३, २४, ३०
पल्लघण	२४	१६	पवयण	२३	३
पल्ली	३०	१२६		२४	२६
पल्लोय	३६	१६		२८	सू० २४
पल्हत्थिया	१	२	पवयणमाया	२६	१, २७
पल्हाय	१६			२४	सू० १२
				२६	१६, २०, २७ से २९
			पवर	११	२०
				१७	

पवह	११	२८
पवाइ	४	१३
पवाल	३६	७४
पविट्ठ	२	२६
	१३	३४
	१६	८३
पवित्तविक्रय	२३	१४
पवित्त	१२	६
पविभत्ति	२	१
पवियक्कण	६	६२
	१६	६६
	२२	४६
पवेइय(अ)	२	सू० १ से ३
	२	१, ४६
	५	१७
	१३	१३
	२६	४, ७
	२६	सू० १
पवेविय	२२	३६
पवेस *		
-पवेसत्ति	७	१६
-पवेसे	२०	२०
पवेस	३६	२६७
पव्व	२	३
पव्वइउ	२२	२६
पव्वइत्ताण	२०	३६

पव्वइय	१०	२६
	१३	२
	१५	१०
	१७	१, ३
	१८	२०, ४७
	२०	८, ३४
	२२	३२
पव्वग	३६	६५
पव्वज्जा	६	६
	१३	१४
	१८	३६
	२२	२८
पव्वय	६	४८
पव्वय *		
-पव्वइस्सामि	१६	१०
-पव्वए	१८	३४, ४६
	२०	३२
	२१	१०
-पव्वया	१६	७५
पव्वयंत	६	५
	२५	२०
पव्वाय *		
-पव्वावेसी	२२	३२
पसंतचित्त	३४	२६, ३१
पसंसा	१५	५
	१६	६०

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

पसंसिअ	१४	३८
पसज्ज *		
-पसज्जसि	१८	११, १२
पसत्थ	१२	४४, ४७
	१४	६
	१६	६३
	२६	२८
	२६	सू० ५, ८, १३, सू० ४३
	३२	१३, १६, ११०
	३४	१७, १६, ६१
पसन्न	१	४६
	१२	४६
	१८	२०
पसमिक्ख	१४	११
पसर	३६	२६६
पसर *		
-पसरई	२८	२२
पसव *		
-पसवई	२१	४
पसाय *		
-पसायए	१	१३, ४१
पसायपेहि	१	२०
पसारिय	१	१६
	१२	२६

पसाह *		
-पसाहि	१३	१३
पसाहिता	१८	४२
पसाहिय	२२	३०
पसिद्धि	२६	२६
पसिण	१८	३१
पसीअ *		
-पसीयंति	१	४६
-पसीयंतु	२३	८६
पसु	३	१७
	६	५
	६	४६
	१६	सू० ३
	२५	२८
	३०	२८
पसुत्त	२०	३३
पसूय	१४	२
	२३	५१
पस्स (हण्ट्वा)	६	१२
पस्स (पण्य)	७	२८, २६
पह	१०	३१, ३२
	२०	५१
पहण *		
-पहणे	१८	४८
पहय	१२	३६
पहसिय	२०	१०

२३२

परिशिष्ट-२

पहा	२८	१२
पहा *		
-पहीयए	३२	१०७
पहाण	१६	६७
पहाणमग्ग	१४	३१
पहाणि	३	७
पहाणव	२१	२१
पहाय	४	२,१०
	१४	३५,३७,४०
	२१	१६
पहाव *		
-पहावई	२७	६
पहीण	५	२५
	१४	२६,३०
	२१	२१
	२८	३६
पहू	१६	२२
	३५	२०
पा *		
-पाहि	१६	५६
पाअ	१८	८
	१६	४६
	२०	७
पाइय	१६	६८,७०
पाउं (पातुम्)	१७	२
	१६	३६

पाउं (पीत्वा)	१६	८१
पाउकर *		
-पाउकरिस्सामि	१	१
	११	१
-पाउकरे	१८	३२
	३६	२६८
पाउण *		
-पाउणिज्जा	१६	सू० ३ से १२
पाउरण	१७	२
पागड	२६	सू० ४३
पागार	६	१८,२०
पाडिम	१६	५४,५६
पाढव	३	१३
पाण (प्राण)	१	३५
	२	११
	६	६
	८	७ से ६
	१२	३६
	१७	६
	२२	१४,१६
	२४	१८
	२५	२२
	२६	२५
	२६	सू० १८,४३
	३५	१२

पाण (पान)	२	३
	६	१४
	१२	११, १६, ३५
	१५	११, १२
	१६	सू० ६, १०
	१६	७, १२
	१६	७६, ८०
	२०	२६
	२५	१०
	२६	३१
	२७	१४
	३०	२६
	३५	१०, ११
पाणय	३६	२११, २३१
पाणवत्तिया	२६	३२
पाणवह	३०	२
पाणाइवाय	१६	२५
पाणि (पाणि)	२	२६
	२६	२५
पाणि (प्राणिन्)	३	५, ६
	६	६
	७	२०
	१०	४
	२२	१७, १८
	२३	६५, ६८, ७५, ७६, ७८, ८०
	२६	३४

पाणिय -	१०	- २८
	१६	८१
पाय (पाद)	१	१६
	६	६०
	१२	२६, ३३
	१७	१४
	१६	४६
पाय (पात्र)	६	७
पाय (प्रायस्)	३२	१०
पायं	१२	३६
पायकंबल	१७	७, ६
पायच्छित्त	२६	सू० १, १३, १७
	३०	३०, ३१
पायत्ताणिय	१८	२
पायव	१६	५२
पार	१०	३४
	२३	७०, ७१
	३६	६७
पारअ	२०	४१
पारग	१८	२२
	२३	२, ६
	२५	७, ३६
पारण	२५	५
पारणअ	१२	३५
पारित्ता	२६	५०
पारिय -	२६	४०, ४२, ४८, ५१

२३४

परिशिष्ट-१

पारेवय	३४	६
पालइत्ता	१३	३५
	२६	सू० १, ७३
पालिअ	२१	१, ४
पान्निया	१	४७
पालियाणं	२०	५२
पालो (दे०)	१८	२८
पाव	४	२
	६	१०
	११	८, १२
	१२	३६, ४०
	१४	२०
	१६	५३, ५५, ५७
	२०	४७
	२१	२४
	२५	२८
	२८	१४, १७
	२९	सू० १७, ३३, ५६
	३०	६
	३१	३
	३२	५
पाव *		
-पावड	३२	२४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६
-पावेसु	२२	२५
पावअ	३	१२

पावकारि	४	३
	१८	२५
पावग (पापक)	१	१२
	२	२३, ४२
	६	८
	११	८
	१३	२४
	२१	६
	२५	२१
	३०	१
पावग (य)	८	६
	१३	२५
पावदिट्ठि	१	३८, ३९
	२	२२
पावयण	२१	२
पावसमण	१७	३ से १६
पावसमणिज्ज	१७	
पावसुयपसंग	३१	१६
पाविय	८	७
	१३	१६
	१६	५७
पास *		
-पास	४	२
-पासई	१८	६
	१६	५
	२०	४
	२१	८

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

तसए	३२	१०६
तसे	६	४
तस (पादा)	४	७
	६	२
	१६	५२, ६३
	२३	४० से ४२
	१४	४७
पास(पाद्व)	२०	३०
	२३	१, १२, २३,
		२६
	२७	५
तस (पक्ष्यत्)	१८	५
तसण्ड	२३	१६
पासण्ड	२३	६३
पासमाण	८	४
पासवण	२४	१५
	२६	३८
पासाज(य)	६	७, २४
	१६	४
	२१	७, ८
पासिल्लण	१२	४
	२१	६
पासिता	१८	६
	२०	५
पासित्तु	१२	२५

पासिया

पासेत्ता
पाहेव
पिउ

पिड

पिडवाय

पिडोगह

पिडोल्य (दे०)

पिच्छ

पिज्ज

पिटुओ

पिट्टि

पिय (प्रिय)

१२	२०, ३०, ३१
२२	३४
२२	१५
१६	२०
१२	२२
१६	२, ८४
१	३४
२	३०
६	१४
१५	१३
६	१६
३५	१६
३१	६
५	२२
३४	५
४	१३
१	१८
२	१५
१२	२६
१	१४
६	१५
१४	५
१६	६६, ७०
२१	१५
३४	२८

२३६

परिशिष्ट-

पिय (पितृ)	६	३	पिहे *		
	१३	२२	-पिहेड	२६	सू० १२
	२०	१८, २४	पोड *		
	२१	७	-पोडई	२०	२१
सुंकर	११	१४	पोडिअ	१६	१८, १६
पियंवाइ	११	१४	पोढ	१७	७
पियदंसण	२१	६	पोणिअ	७	२
पियधम्म	३४	२८	पीय	२०	४४
पियर	१८	१५	पीयअ	३६	२५
	१६	६, २४, ४४,	पील *		
		७५, ७६, ८६	-पीलेइ	३२	२७, ४०, ५३,
	२१	१०			६६, ७६, ६२
पियायण	६	६	पीला	२२	३७
पिव	१६	६७	पोलिय	१६	५३
पिवासा	२	सू० ३	पोह *		
	२	४	-पोहए	२	३८
पिबोलि	३६	१३७	-पीहेइ	२६	सू० ३४
पिबोलिया	३	४	पुंगव	२२	१३
पिसाय	१२	६, ७	पुगल	२८	७, ८, १२
	३६	२०७		३६	२०
पिसुण	५	६	पुच्छ	२७	४
पित्समाण	३४	१७	पुच्छ *		
पिहिय	१६	६३	-पुच्छ	२३	२२
	२६	सू० १२	-पुच्छई	१६	७६
पिहुंड	२१	२, ३		२५	१३
			-पुच्छसी	१८	३२

२:७

उत्तररज्ज्वयण शब्द-सूची

पुच्छामि २३
पुच्छेज्जा १

पुच्छणा ३०
पुच्छमाण १
पुच्छिञ्ज २५
पुच्छिञ्जग २०
पुञ्ज १

पुञ्जसत्थ ५
पुट्ट (पुट्ट) १

पुट्ट (स्पुट्ट) २

पुट्ट (पुट्ट) ७
पुट्टविककाय १०
पुट्टवी ६

पुट्टो

पुण

३

१

पुणो

पुणग (पूर्ण)

पुणग (पुण्य)

१२, ४१

६

६

१६, १६, २६,

३४

२

२८

६

३१

७५

३१

२०

२६

२६

५६

२६

३२

३६

१०८

३१

१२

२०

१२

१३

१०, ११, २०,

२१

२१

२१

२१

पुण्य (पुण्य)	१८	७	पुराओ	१	१८
	२१	२४	पुरंदर	११	२३
	२८	१४, १७		२२	४१
पुण्यपय	१८	३४	पुरात्यओ	३२	३१, ४४, ५७,
पुण्यमासी	११	२५			७०, ८३, ९६
पुत्त	१	३६	पुरा	१३	६
	६	३		१४	२०
	६	२, १५		१६	६, १३
	१३	२५	पुराकअ(य)	१४	२
	१४	५, ६, १२,		१६	८
		२६, ३०, ३६	पुराकाउ	७	२४
	१८	१५, ३७, ४६	पुराण	८	१२
	१६	२, १६, २४,		१४	१
		३४, ३५, ३८,		२०	१८
		७५, ८४, ८५,	पुरिम	२३	२६, २७, ८७
		८७, ९७		२६	२५
	२०	२५	पुरिमताल	१३	२
	२२	२, ४	पुरिस	६	१
पुत्तय	१४	५		८	६, १८
पुप्फ	६	६		१३	३१
	१२	३६		१४	१४, ३८
	३४	६		३०	२२
पुमत्त	१४	३		३६	५१
पुमित्थियवेय	३२	१०२	पुरिससिद्ध	३६	४६
पुर	६	४	पुरिसोत्तम	२२	४६
	१४	१	पुरी	२२	२७
	२०	१४, १८		२५	२, ४

उत्तरजमयण शब्द-सूची

पुरे	१४	१	पुव्वय	१	४८
पुरेकड	१०	३	पुव्वसंथव	६	४
	१३	१६	पुव्वि	१२	३२
	२१	१८		१४	५२
पुरोहिथ(अ)	१४	३,५,११,	पुव्विल्ल	२६	८,२१
		३७,५३	पुहत्त	२८	१३
		७६		३६	११,१७६,
पुल्य	३६	१२			१८५,१६२,
पुलाग	८	४६			२०१
पुव्व	१	४०	पुहत्त	३६	६५
	२	१५,१६	पूइ	७	२६
	३	८,६	पूइअ	१	४८
	४	१३		१२	४०,४५
	६	२		१७	२१
	८	१५		२३	१
	१३	८	पूइकण्णी	१	४
	१६	सू० ६,४६ से	पूयण	३५	१८
	१६	५१,६०	पूया	१५	५,६
		४३		२१	१५,२०
	२५	२४		२६	७
	२६	२६,३६		३४	६
	२८	६,३३,३८,	पूर	४	३
	२६	सू० ६३ से ७१	वेळव	६	५८
		४६		१८	१३
	३४	१७५,१७६,		१७	३
	३६	१८५,१६२,	वेळवा	२६	सू० १,७२
		२०१	वेळज		

पेडा	३०	१६
पेस	१६	२६
पेसल	८	१६
पेसिय	२७	१३
पेह *		
-पेहे	२४	७
-पेहेज्ज	२	२७
पेहा	६	४
पेहाए	१	२७
पेहिय	१६	४
	३२	१४
पोक्खरिणि	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९९
पोत्तिया	३६	१४६
पोत्था	२०	१६
पोम	२५	२६
पोय	१४	३०
	२१	२
पोराणिया	६	१
	१६	८
पोरिसी	२६	१२, १३, १८, २२, ३१, ३६, ३७, ४३ से ४५
	३०	२१
पोखस	३	१७
	६	५

पोखसी	३०	२०
पोल्ल (दे०)	२०	४२
पोस *		
-पोलेज्ज	७	१
पोम	२६	१३, १५
पोसह	५	२३
	६	४२
पोसिय	२७	१४
फ		
फंद *		
-फन्दन्ति	१४	४५
फग्गुण	२६	१५
फग्ग	२२	३०
फरसु	१६	६६
फरिस	२६	सू० ४६
फस्स	१	२७, २९
	२	२५
फल	२	४०, ४१
	६	६
	१२	१८
	१३	३, ८, १०, ११, २०, २९, ३१
	१५	१०
	१६	११, १७

उत्तरजमयण शब्द-सूची

फल	२३	४८
	२६	सू० ११, १७
	३२	१०, २०
फल *		
-फलेइ	२३	४५
फला	१७	७
फलह	३६	७५
फालिअ	१६	५४, ६२, ६४,
		६६
फास	४	११, १२
	१०	२५
	१६	सू० १२
	१६	१०
	२१	१८
	२८	१२
	२६	सू० ६७
	३२	७४ से ८६
	३४	२, १८, १६
	३६	२०
फास *		
-फासए	५	२३
-फासयई	२०	३६
-क से	६२	४७
-फासेज्ज	२१	२२
फासइता	२६	सू० १
फासओ	३६	१५, १६, २२

फासओ

फासओ	३६	६१, १०५,
		११६, १२५,
		१३५, १४४,-
		१५४, १६६,-
		१७८, १८७,
		१६४, २०३,-
		२४७, - ७
फासिदिय	२६	सू० १, ६७
फासय	१०	२०
फासुय	१	३४
	२३	४, ८, १७
	२५	३
	३५	७
फिट्ट *		
-फिट्टई	२०	३०
फुड	१६	४४
फुस *		
-फुसई	२	६
-फुसति	४	११
	१०	२७
	२१	१८
फुस	२२	१२
फुसंत	१२	३६
फेण	१६	१३
फोवकनास		
(दि०)	१२	६

व	वन्वड	२८	सू० ३८, ६३ से
वज्रम् *			७१
वज्रमह	८	५	२९७
वज्रमति	८	३०	१६
वज्रम्	३०	८	४८
वज्रमजो	८	३५	२०
वज्रमाण	१४	४६	२८
	२३	८०	सू० २३
वडित	३२	६३	४
वड	१४	४५	१०
	१६	५१, ५२, ६३,	१३
		६५	१८
	२३	४०	१६
	२८	सू० ६, २३, ३३,	२०
		३८, ६३ से	३४, ५५
		७२	४
	३३	१	४
वडग	३३	१८	१५
वन्व	६	८	१२
	१४	१६	१३
	१६	३२, ६८	१६
	२५	२८	२१
	२८	१४	३१
	२८	सू० १, ५, २३	१२
वन्व *			३१
वन्वड	२८	सू० २, ६, २३,	१२
			३१
			१६
			२५
			२६
			३०
			३४

उत्तरजमेयण शब्द-सूची

वम्भचेर-

समाट्टिण १६

वम्भण २५ १६, २६ से ३१

वम्भदत्त १३ १, ४, ३४

वम्भयारि १२ ६, २२

१६ सू० १ से १३

१६ १६

२१ १३

३२ ११, १३

वम्भलोग(अ) १८ २६

३६ २१०, २२६

वम्भवय(अ) १६ ३३

३२ १५

वल ३ १८

६ ४

१० २१ से २६

११ २१

१८ १

२१ १४

वलभट्ट १६ १

वलव ११ १८

२५ २८

वल्सिरी १६ २

वला १६ ५८

वलागा ३२ ६

बहि

बहिया

बहु

१४ १

६

१२

२५

३

४

६

७

८

९

१०

१२

१४

१७

२०

२१

२२

२३

२५

२६

२८

३१

३३

४, १७

१३

३८

३

६, ८, १०,

१५

१२

२

८

१५

८, १६

३, १६

१६

७, १०, १३

११

३८

१७

१७ से १८,

२७, ३२

१६, ४०, ६०,

७५

२४

५२

सू० १, ५, २३

१

७, १३

२४४

परिशिष्ट-२

वहु	३५	१२
	३६	२५०, २६१
बहुमअ	१०	३१
बहुमाण	१३	४
	२६	सू० ५
बहुय	१	१०
	१६	६५
बहुल	१०	१५
	१६	सू० १ से ३
	२६	१५
	२६	सू० ४०
बहुविह	१६	८६
बहुसो	६	१
	१६	६३
	३४	५६, ५७
	३६	२६१
बहुस्सुअ(य)	५	२६
	११	१५ से ३०
	२२	३२
बहुस्सुअपूज्ज	११	
बहुहा	१४	१०
बाढ	१२	३५
बायर	३५	६
	३६	७०, ७१, ७२, ८४ से ८६, ९२, ९३,

वायर	३६	१००, १०८, १०९, १११, ११७, ११८, १२०
वायरकाय	३६	७४
वारगा	२२	२२, २७
वारस	३६	५७, १३२, २५१
वारसंगविज	२३	७
वारसहा	३६	२१०
वाल	१	३७
	२	२४
	५	३, ४, ७, ९, १२, १५ से १७
	६	१०
	७	४, ५, १०, १७, १९, २८ ५, ७
	८	४४
	१२	५, ३१
	१३	१७
	१७	४
	३२	३, १७, २६, २७, ३९, ४०, ५२, ५३, ६५, ६६, ७२, ७६, ९१, ९२

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२४५

बालगवी	२७	५
बालगपोड्या	६	२४
बालत्त	७	२८
बालभाव	७	३०
बालमरण	३६	२६१
बाला	२०	२६
बावत्तरि	२१	६
बावोस	२	सू० १ से ३
	३१	१५
	३६	८०, १६५,
		१६६, २३३,
		२३४
बाह *		
-बाहइ	३२	११०
बाहल्ल	३६	५६
बाह्वा	१६	३६
	२२	३५
बाहिर	२८	२१, ३४
	३०	७
बाहिरअ	१६	८८
बाहिरग	३०	२६
बाहिरिय	१२	३८
बाहु	१२	२६
त्रिज्जिय	३०	६
विइय	१०	३०
	२६	२, २४

विइय	२६	सू० ७२
	३६	२३५
विन्दु	१०	२
	२८	२२
विराल	३२	१३
विल	२४	१८
	३२	५०
बीअ	२४	१२
	२६	१२, १६, १८,
		४३
	२८	३२
वीय	१	३५
	१२	१२
	१७	६
	२४	१८
	३२	७
वीयरुइ	२८	१६, २२
बुज्झ *		
-बुज्झइ	२६	सू० २६, ४२, ५६,
		सू० ६२, ७४
-बुज्झन्ति	२६	सू० १
-बुज्झामो	१४	४३
बुज्झिया	३	१६
बुद्ध	१	८, १७, २७,
		२६, ४०, ४२
	६	३

बुद्ध	१०	३६, ३७	अब्बावी	६	३७, ३६, ४१,
	११	१३			४३, ४५, ४७,
	१४	५१			५०
	१८	२१, २४, ३२		१२	५
	२३	३, ७		१३	४
	२५	३२		१६	६
	३५	१		२०	३१
	३६	२६८		२१	६
शुद्धपुत्त	१	७		२२	१५
बुद्धि	८	५		२३	२१, २२, २५,
	१३	३३			३१, ३७, ४२,
	३२	४			४७, ५२, ५७,
बुब्बुय	१६	१३			६२, ६७, ७२,
बुवन्त	२३	२१, २२, २५,			७७, ८२
		३१, ३६, ४२,		२५	१०
		४७, ५२, ५७,	-आह	१६	सू० ३ से १२
		६२, ६७, ७२,		२२	८
		७७, ८२	-आहंसु	२	४५
बुवाण	२३	३१		२०	३१
बुह	३०	३५	-आहु	१२	२५
	३३	२५		२१	१४
बू *			-चित्त	१६	२४, ४४, ७५
-अब्बावी	६	६, ८, ११,	-बूम	२५	१६ से २७,
		१३, १७, १६,			३२
		२३, २५, २७,	-बूहि	२५	१४
		२६, ३१, ३३,	बूर	३४	१६

नरजमयण शब्द-सूची

इन्दिय	३६	१२६, १२७, १३०, १३२ से १३४	मंड	१६	२२
वेइन्दियकाय १०		१०	मंडग(य)	३६	२६७
बोन्दि (दे०)	३५	२०		२४	१३
	३६	५५, ५६	मंडवाल	२६	८, २१, ३५
बोद्धवज	३६	१०, ७१, ७६, ६५, ६६, १०६, ११०, १३८, १७१, १८८, २०६	मत	२२	४५
बोहि	३	१६		६	५८
	८	१५		१२	३०
	३६	२५७ से २५६		१७	२
बोहिलाभ	१७	१	मंस *	२०	१५
	२६	सू० १५	-मसेज्जा	२३	२२
			भक्ख	२६	६
				२६	सू० १ से ७२
भ			भसेज्जा	१६	सू० ३ से १२
भइय	३६	२२ से ४६	भक्ख	१	३२
भइणो	२०	२७		६	१४
भइत्ता	१५	४	भक्खण	२३	४६
भइयव्व	२८	२६		३६	२६७
	३६	११	भक्खर	२३	७८
भंज *			भक्खयव्व	२२	१५
-भंजई	२७	४	भक्खी	२३	४५
-भंजए	२७	७	भगव	२	सू० १ से ३
				६	१७
				१६	सू० १
				१८	८ से १०, १६

भगव	२१	१,१०
	२२	४,२२
	२३	५,६
	२६	सू० १,७४
भगवन्त	१६	सू० १ से ३
भग	५	१४,१५
	१६	६१
	२२	३४,३६
भज्ज *		
-भज्जई	२७	३
-भज्जंति	२७	८
भज्जा	६	३
	१३	२५
	२१	७
	२२	२,४,६
भट्ट	२०	४१
भण *		
-भण	२५	१२
-भणइ	२२	१७,२५,३१
भणंत	६	६
भणिय	३०	२६
	३६	६०
भत्त	१	३३
	१२	२७,३५
	१६	७,१२
	१६	७६,८०,९५

भत्त	२६	३१
	२७	१४
	२६	सू० १,४१
	३५	१०,११
भत्ति	२०	५८
	२६	सू० ५
भट्ट	१	३७
	६	१६
	२२	१७,३७
भट्ता	२६	सू० २४
भट्टवज	२६	१५
भट्टा	१२	२०,२४,२५
भम *		
-भमइ	२५	३६
-भमिहिसि	२५	३८
भमर	२२	३०
	३६	१४६
भय	१	२६
	५	१६
	६	६
	६	५४
	१४	२,४,५१
	१५	१४
	१८	६
	१६	४५,४६,६१
	२१	१६

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२४६

भय	२२	१४	-भवइ	२६	सू० ३७, ३६, ४३,
	२४	६			सू० ४५, ४८, ४९,
	२५	२१, २३, ३८			सू० ५४, ५५, ६०,
	३२	१०२			सू० ७२
भय *				३०	२
-भयज्ज	२१	२२		३५	१४
-भयइ	११	११	-भवति	१३	२२
-भयाहि	२२	३७		१४	१२
भयंकर	२३	४३		१५	१४
भयंत	२०	११		२६	सू० ३४
भयट्टाण	३१	६		३२	१११
भयव	६	२, ४, १२	-भवामो	१४	२८
	२३	८६	-भवाहि	६	४२
भयार्इय	२५	२१		१८	११
भयावह	१६	६८		२२	२६
	२१	११	-भविस्सई	२	४५
भरह	१८	३४, ४०		२२	१६, ३७
भरहुवास	१८	३५	-भविस्ससि	६	५
भरेळ	१६	४०		२०	१२
भल्ली	१६	५५		२२	४४, ४५
भव (भवत्)	२	१	-भविस्सामु	१४	१७
	१२	१०, ४५	-भविस्सामो	१४	४५
भव *			-भवे	५	३
-भवइ	२०	१५ से १७		७	१६, २६
	२६	सू० २, ३, ५,		६	४८
		सू० १७, १८, २०,		१४	३६
				२२	४२

२५४

परिमित-२

क्र.सं.	२८	३०	मन्त्र (नमः)	२९	३४
	३०	५,२५,२५		२३	५४
		१५,१५,२०		२६	सू० ४१,६१
		२१,२४,२४		३०	६
	३३	=		३०	३१,१३,६०,
	३५	१			७३,८६,६६
	३६	३,४,६		३४	५८,५८
		२०,२३,२६		३६	६३,६४
		२०,४६,४१	मन्त्रादि	१०	१३,११
		५६,६०,६४		२६	सू० २
		=०,८८	मन्त्र	२२	१३
		१००,१२२	मन्त्रादि	३४	५१
		१५६,१६७	मन्त्रादि	३६	२०५,२०६
		१७१,१७२	मन्त्रादि	२३	४८
		१८१,१८२	मन्त्रादि	३६	२६८
		१८१,१८३	मन्त्रादि	२०	४१,४७
		२०२,२१६		२६	सू० २६
		२२०,२२१	मन्त्रादि	१४	१
		२४३,२४४	मन्त्रादि	२६	११,१७
		२५१,२५२		३४	५२
मन्त्र (नमः)	२	२२		३६	१६१
	१०	४,१५,२५	मन्त्रादि	२६	सू० ४५
	१३	२४	मन्त्रादि	२३	७३,७३
	१४	१	मन्त्रादि	१	३६
	१८	१३,२६		६	३
	१९	१६,२१,७४		१३	२९

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

भायण	१६	१२	भाव	३२	२१, ८७ से ६६, १०२
	२६	२२, ३६		३३	१६
	२८	६		३६	२६०
भायर	१३	४, ५	भावओ	२१	१६
	२०	२६		२३	८७
भार	१०	३३		२४	६, ७
	१२	१५		३६	३
	१३	१६	भावणा	१४	५२
	२६	सू० १३		१६	६३
भारवह	२६	सू० १३		३१	१७
भारह	१८	३४, ३६, ३८, ४१		३६	२६३ से २६६
		४१	भावसुस्सुला	३०	३२
भारिया	१०	२६	भाविय	१४	५२
	२०	२८	भावुज्जुयया	२६	सू० ४६
भारुण्ड	४	६	भावेत्तु	१६	६४
भाव	१४	१०, १६	भावेमाण	२६	सू० ४०, ६१
	२०	१	भावोमाण	३०	२३
	२२	४४	भास		
	२६	३६	-भासइ	११	८
	२८	१५, १८, १६,	-भासई	८	३
		२४, २५, ३५		११	१२
	२६	सू० १, १८, २३,	-भासेज्ज	२४	१०
		सू० ३२, ३७, ४६,	-भासेज्जा	१	११
		सू० ५१, ६०, ६२	भास	२५	१८
		१४, २३, २४	भासओ	३२	१४, १५, १६

२५२

पारिशिष्ट-२

भासा	१	२४
	२	२५
	६	१०
	१२	२
	१८	२६
	२०	४०
	२४	२, १०
भासि	१२	१६
भासिय	१०	३७
	१८	५२
	१६	६७
	२८	१
भासियव्व	१६	२६
भासुज्जुयया	२६	सू० ४६
भिउडि	२७	१३
भंगारी (दि०)	३६	१४७
भेक्ख	२५	३७, ३८
भेक्खमाण	१४	२६
भेक्खवत्ति	३५	१५
भेक्खा	८	११
	१२	३, ६
	१४	१७
	२५	४, ६
	२७	१०
क्खाज	५	२२, २८

भिक्षायरिया	२	सू० १ से ३
	१४	२६, ३३, ३५
	१६	३२
	२६	१२
	३०	८, २५
भिक्षियव्व	३५	१५
भिक्षु	१	१, २४, ३१,
		३२
	२	सू० १ से ३
	२	२, ७, १२,
		१६, २२, २४,
		२६, २८, २९,
		४४ से ४६
	४	११
	५	१६, २०, २५
	७	२२
	८	२, ४, ११,
		१६
	९	१५, १६
	११	१, १५
	१२	१, २६, ४०,
		४३
	१३	१२, १४, १७,
		३०
	१५	१ से १६
	१६	सू० १ से ३

भिक्षु	१६	२,३,७,९,	भीय	२	२१
		१५		१८	३
	१६	२४,८२		१६	७१
	२१	१३,१६,१७,		२२	३५,३६
		१६	भीष्ट	२७	१०
	२५	६,८,३७		३२	१७
	२६	११,१७		३४	२८
	३०	१,४,२४,	भुज(ग)	३६	१८१
		३१,३६	भुज		
	३१	३ से २१	-भुंजइ	१	५
	३५	१,५,७,	-भुज्जई	७	३
		११,१३ से		१२	१०
		१५	-भुजए	६	४४
भिक्षुय	१२	२७	-भुजसू	१२	३५
भिक्षुघम्म	२	२६	-भुजामि	२०	१४
	३१	१०	-भुजामु	१४	३१
भिक्ष्व	१४	३०	-भुजाहि	१२	३४
भित्ति	१६	सू० ७		१३	१४
भिन्न	१२	२५		१४	३३
	१६	५५,६७		२०	११
	२३	५३	-भुजिज्जा	१६	सू० १०
भिसं	५	४		३५	१५
भीम	१५	१४	-भुंजिमो	२२	३८
	१६	४५,७२	-भुंजे	१	३५
	२१	१६	-भुंजेज्ज	६	७
	२३	४८,५५,५८	-भुंजेज्जा	१६	८

भुजंत	२	११	भूय	१	४५
भुजमाण	५	६		२	१७
	७	६		६	२
भुजित्तु	६	३		८	१०
भुजिय	१३	३४		९	५
जभुयिा	७	८		१२	६, ७, २६,
भुजमाण	३२	२०			३०
भुज्जो	५	२७		१३	१२
	७	१२, २५, २७		१४	१३
	१२	२५, ३६		१६	२५, ८६
	१४	२०		२०	३५, ५६
	२६	१८		२१	१३
	२६	सू० २३		२३	२०
भुत्त	१४	१०, ३२		२७	१७
	१६	१२		२९	सू० १८, ४३
	१६	११, १७		३५	८, १०
भुत्तभोगि	१६	४३		३६	२०८
	२२	३८	भुयगाम	३१	१२
भुयंग	१४	३४	भुयगाम	५	८
भुयभोयग	३६	७५	भुयत्य	२८	१७
भुया	१६	४२	भुसण	१६	१३
भुज	२६	सू० ४०	भे	१२	२३
भुज्जम्म	३६	२६४		२०	५५
भुज्जपल्ल	१२	३३	भेत्तूर्ण	६	२२
भूमि	१३	६	भेय	२	१३
	२६	३८		४	६, १३

उत्तरजभयण शब्द-सूची

२५५

भेय	५	३१	भोग(य)	१४	६,३२ से
	१६	सू० ३ से १२			३४,३७,४४
	३३	७,११,१३		१८	४१
	३४	८		१९	११,१७,४३,
	३६	६६,७७,			६६
		१०७,१२७,		२०	६,८,११,
		१३६,१४५,			१४,५०,५७
		१७१,१८५,		२२	३८,४६
		१९७,१९८		२५	३६
भेयण	२६	सू० ४		३२	६३,१०१
भेयणी	२०	१८		३३	१५
भेरव	१५	१४	भोगि	२५	३६
	२१	१६	भोक्चा	३	१६
भो	२	२८		७	११
	६	७,१०		६	३८
	१२	१५		१४	४४
	२५	८		१७	३
भोह	७	७	भोक्चाण	१४	६
भोइत्ता	६	३८	भोक्तुं	१७	२
भोइय	१५	६	भोम	१५	७
भोई	१४	३२,३४	भोमिज्ज	३६	२०४
भोग(य)	३	१६	भोमेज्ज	३६	२१६
	८	५,१४	भोयण	२	३०
	६	३,५१,६२		६	७
	१३	१४,२०,२७,		१२	११
		३२,३३		१५	११

२५६

परिशिष्ट-२

भोयण	१६	सू० ६,१०
	१६	१२
	३०	२६
भोयराय	२२	४३
भोयावेडं	२२	१७

॥

मअ	१२	५
	१६	७
मजय(अ)	२२	२४
	३६	१६,३५
मंगल	२२	६
	२६	४२
	२६	सू० १,१५
मंत	१५	८
	२०	२२
	३६	२६४
मंथु	८	१२
मंस	२	११
	५	६
	७	६
	१६	६६
	२२	१५
मगर	३६	१७२

मगरजाल	१६	६४
मगहाहिव	२०	२,१०,१२
मग	३	६
	५	१४
	७	२५
	६	२६
	१०	३१ से ३३
	१३	३०
	१४	२
	२०	४०,५०,५१,
		५५
	२१	२०
	२३	५६,६१ से
		६३,८७
	२४	४,५
	२८	१ से ३
	२६	सू० ३,६,१७
	३२	३,८६,
		१११
	३५	१
मग *		
-मगहा	१२	३८
मगगामि	२५	२
मघव	१८	३६
मच्छु	५	१५
	१३	२१,२२

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

मञ्चु	१४	४, १४, २३,	मज्झिम	२३	२७
		२७, ५१	मज्झिमय	३६	२५१
	२०	४८	मट्टिया	५	१०
	२३	८१	मट्टियामय	२५	४०
	३२	२४, ३७	मड	१	३६
मञ्छ	१४	३५		३४	१६
	१६	६४	मडग	३४	१६
	३२	६३	मडम्ब	३०	१६
	३६	१७२	मण	१	४३, ४७
मञ्छरि	३४	२६		२	११, २५, २६
मञ्छिय	३६	५६		४	११, १२
मञ्छिया	८	५		६	११
	३६	१४६		८	१०
मज्ज "				१२	२१, ३२
-मज्जई	११	७, ११		१५	१२
मज्झ	१२	१२		१६	२
	१३	१२		१८	२०
	१७	२१		२२	२१
	२३	६६		२३	५८
	३२	१३, ३४, ४७,		२४	२१
		६०, ७३, ८६,		२५	२५
		६६		३०	११
	३६	५६		३२	२१, ८७, ८८
मज्झिम	२३	२६			१००
	३६	५०, २१३,		३५	४, १३, १८
		२१४			

२५८

परिशिष्ट-२

मणुगुत्त	१२	३	मणुन्न	३२	२१ से २३,
	२२	४७			३५, ३६, ४८,
	२६	सू० ५४			४९, ६१, ६२,
मणुगुत्तया	२६	सू० १, ५४			७४, ७५, ८७,
मणुगुत्ति	२४	२, २०			८८
मणजोग	२६	सू० ७३	मणुन्नया	३२	१०६
मणनाण	२८	४	मणुयाहिव	६	४२
	३३	४	मणुस्स	१	४८
मणसमाधार-				२	१६
णया	२६	सू० १, ५७		७	२७
मणसीकर *				६	३०
-मणसीकरे	२	२५		२०	१४, ५५
मणहारि	२५	१७		२१	१६
मणा	१८	७		२२	२२
मणि	६	५		२६	सू० ५
	६	४६		३३	१२
	१६	४		३४	४४
	३६	७४	मणुस्सया	३	७
मणुअ	१०	१, २	मणुस्सिद	१८	३७, ४२
	३२	३४, ४७, ६०,	मणूस	४	२
		७३, ८६, ९६,	मणोरम	६	६, १०
		१००		१४	४०
	३६	१५५, १६५,		१६	सू० ६
		२००, २०२		१६	११
मणुन्न	२६	सू० ४६, ६३		२५	३
		से ६७		३२	२०

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

मणोरह	२२	२५	मन्न		
मणोसिला	३६	७४	-मन्नई	१	३८, ३९
मणोहर	१६	सू० ६		५	६
	३२	१७	-मन्नाए	१	२८
	३५	४	-मन्नति	६	८
मण्डल	३१	३ से २०	-मन्नसी	२३	६५, ८०
मण्डलिया	३६	११८	-मन्ने	१६	६
मण्डव	१८	५		२७	१२
मण्डकुच्छि	२०	२	मन्नत	३	१४
मणमाण	४	७		२७	१३
मत्त	५	१०	मन्नमाण	१७	६
	२२	१०	ममत्त	१६	८६, ९८
भत्ता	३	२०	मम्म	११	४
महव	६	५७	मम्मय	१	२५
	२७	१७	मय (मद)	१२	५
	२६	सू० १, ५०, ६६		१६	७
महवया	२६	सू० ५०		२६	सू० ५०
मन्द	४	१२		३१	१०
	८	७	मय (मृत)	१८	१४, १५
	१२	३६		२७	६
	१८	७	मय (मयद)	३६	६०
	२६	सू० २३	मयगा	१३	६
मन्दर	११	२६	मर		
	१६	४१	-मरई	५	१६, ३२
मन्दिय	८	५	-मरति	३६	२५७, २५९
मन्दिर	६	१२	-मरिस्सामि	१४	२७

-मरिहिति	३६	२६१
-मरिहिसि	१४	४०
मरगय	३६	७५
मरण	५	३, १८
	१६	१४, १५, २३,
		४६, ६०
	२२	४२
	३०	१२
	३२	७
	३६	२५६, २६७
मरणंत	५	१६, २६
	७	६
मरणकाल	३०	६
मरिस *		
-मरिसेहि	२०	५७
मह	१६	५०
मल	१	४८
	४	७
	५	१०
	२५	११
मल्ल	२०	२६
	३५	४
मस	२१	१८
मसय(ग)	२	सू० ३
	२	१०
	१५	४

मसय(ग)	१६	३१
	३६	१४६
मसारगल्ल	३६	७५
मह	१३	१२
	१४	१८
	१८	२, १८
	१६	५०, ६७, ६८
	२०	५१, ५३
	२१	११, २४
	२३	६५, ६६
महज्जुह	१	४७
महद्धिअ	५	२५
महण्णव	१६	१०
	३२	१०५
महत्थ	२३	८८
महन्त	१६	१८, २०
	२१	११
महप्प	१२	२२, ३५
	१६	३२
	२१	१
	२७	१७
महप्पसाय	१२	३१
महब्भय	१६	७२
महव्वय	१६	१०, २८, ८८
	२०	३६
	२१	१२
	२३	८७

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

महाजंत	१६	५३
महाजय	१२	४२
महाजस	१२	२३
	१८	३६, ४६
	१६	६७
	२३	२६
महाणुभाग	१२	२३, ३७
	१३	११, २०
महातलाय	३०	५
महादीव	२३	६६
महादोस	३५	१५
महानाग	१६	८६
महानिज्जर	२६	सू० २०
महानियट्टिज्ज	२०	
	२०	५३
महापउम	१८	४१
महापज्जवसाण	२६	सू० २०
महापन्न	३	१८
	५	१
	२२	१५, १८
महापह	१	२६
	५	१४
महापाण	१८	२८
महापाली	१८	२८
महाबल	१८	५०
महाभर	१६	३५

महाभाग	१२	३४
	२०	५६
	२३	२१
	३६	६३
महामुणी	२	१०
	१२	८
	१८	२३
	२०	५२
	२३	१२, २३, ४८
	२५	२, ६, १३,
		३४
	३५	१७
महामेह	२३	५१
महायस	१३	४
	१८	३६
	२०	५३
	२१	२२
	२२	४, २०
	२३	२, ६, ६,
		१८, ८६
	२५	१
महारभ	७	६
महारण	१६	७८
महाराय	१४	४८
	२०	६, १७, १६
		२५ से २८,
		३०

२६२

परिशिष्ट-

महारिसि	१२	४७	मही	१८	४२, ५१
महालय	१०	३२		२७	१७
	१३	२६	महु	१३	१३
	२३	६६		१६	७०
महावण	१८	४८		३४	१४
	१६	६०	महुर	६	५५
महाविमाण	३६	२४४		३६	१८
महावीर	२	सू० १ से ३		३६	३३
	५	४	महुरज	३६	३३
	२१	१	महेसि	४	१०
	२६	सू० १, ७४		१२	२७
महासागर	३२	१८		१३	३५
महासिणाण	१२	४७		२०	५५
महासुक्क				२१	२०, २३
(महागुक्क)	३	१४		२३	७३, ८३
महासुक्क				२८	३६
(महागुक्क)	३६	२११, २२८	महोदर	७	२
महासुय	२०	५३	महोयहि	२३	८५
महिज	२५	१६	महोरग	३६	२०७
महिङ्खिय	१	४८	महोह	५	१
	११	२२		२३	७०
	१३	४, ७, ११,	मा	१	१०
		२०, २८	माइ	७	५
	१८	३६ से ३८		१७	११
	१६	८		२७	६
	२२	१, ३, ८		३६	२६५
महिया	३६	८५	माइल्ल	५	६
महिल	१६	५७			
	३२	७६			

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

२६३

माइवाहय	३६	१२८	माणुस	३१	५
माण	४	१२		३५	२०
	६	३६, ५४, ५६	माणुसत्त	३	१, ११
	१२	१४, ४१		७	१६, १७
	१८	४२		१०	१६
	१६	६०		१६	१४
	२४	६	माणुस्स	३	८
	२६	सू० १, २, ६६		१८	२६
	३२	१०२		२०	११
	३४	२६		२२	३८
माणव	२१	१६	माणुस्सज(ग)	३	१६
	३२	१७		७	१२, २३
	३५	२		१४	६
माणवेयणिज्ज	२६	सू० ६६		१५	१४
माणस	१६	३, ४५		१६	४३
	२३	८०	मायन्न	२	३
	२६	सू० ४, ४५	माया (माया)	१	२४
माणसिय	३२	१६		४	१२
माणुस	३	१६		६	३६, ५४, ५६
	७	१६, २०		१२	४१
	६	१		१८	२६
	१०	४		२४	६
	१६	७३		२६	सू० १, २, ६, ७०
	२०	१४		३२	१०२
	२५	२५		३४	२६
	२६	सू० ३			

माया (मातृ)	६	३	माहण(न)	१४	५,३८,५३
	१३	२२		१५	६
	२०	२५		१८	२१
	२४	३	माहणत्त	२५	३५
माया (मात्रा)	६	१४, १५	माहणी	१४	५३
मायामुसा	३२	३०, ४३, ५६,	माहिद	३६	२१०, २२५
		६६, ८२, ९५	मिअ (मृग)	१	५
मायावेयणिज्ज	२६	सू० ७०		८	७
मारणंतिय	५	२		११	२०
मारिय	१६	६४, ६५		१३	६, २२
मालुग (दे०)	३६	१३७		१८	३, ५, ६
मास(माष)	८	१७		१९	६३, ७६ से
मास(मास)	६	४०, ४४			७८, ८३
	१२	३५		२३	१६
	२६	१३, १४		३२	३७
	३६	१५१, २५१,	मिउ	१	१३
		२५५		२७	१७
मासकलमण	२५	५		२९	सू० ५०
मासिय	१६	६५	मिगचारिया	१६	८१, ८२, ८४
	३६	२५५	मिगन्वा	१८	१
माहअ (दे०)	३६	१४८	मिच्छकार	२६	३
माहण (ब्राह्मण)	६	६, ३८, ५५	मिच्छत्त	१०	१६
	२५	१, ४, १८ से		२६	सू० २, ५७, ६१
		२७, ३२, ३४	मिच्छदिट्ठि	३४	२५
माहण (माहन)	१२	११, १३, १४,	मिच्छाकार	२६	६
		३०, ३८	मिच्छादंड	६	३०

मिच्छादसण	२६	सू० १,७२
	३६	२५७, २५६
मिच्छादसण-		
सल्ल	२६	सू० ६
मिच्छादिट्ठि	१८	२७
मिण *		
-मिणे	७	२३
मित्त(मित्र)	१०	३०
	११	८, १२
	१३	२३
	१८	१४
	१६	२५, ८७
	२०	११, ३७
मित्त(मात्र)	१६	७४
	३६	७
मित्तव	३	१६
मिति	२६	सू० १८
मिय	१	३२
	१६	८
	२४	१०
	३२	४
मियचारिया	१६	८५
मिया	१६	१, ६७
मियापुत्त-	१६	२, ६, ८, ६६
मियापुत्तिज्ज	१६	
मिलेक्खु	१०	१६

मिहिला	६	४, ५, ७, ६,
		१४
मिहोकहा	२६	२६
मुइय	१८	४४
	१६	३
मुंच *		
-मुंचई	२०	४७
-मुच्चइ	२६	सू० २६, ४२, ५६,
		सू० ६२, ७४
-मुच्चई	५	२२, २४
	६	३०
-मुच्चए	८	२
-मुच्चेज्ज	८	८
-मुच्चेज्जा	२०	३२
-मुच्चंति	२६	सू० १
मुक्क	२३	४०, ४१, ४६
	३२	११०
मुगार	१६	६१
मुच्छिय	१०	२०
	१३	२६
	१४	४३
	१५	२
	१८	३
मुज्झ *		
-मुज्झसी	१८	१३
मुट्ठि	१६	६७

मुट्टि	२०	४२	मुणि	३५	२,१६
	२२	२४		३६	२४६, २५०,
मुणि	१	३६			२५५
	२	६, १५, ३८	मुणिवर	६	६०
	४	८	मुणैयव्व	३०	२०, २३
	५	३२	मुण्डरुद्ध	२०	४१
	७	३०	मुण्डि	५	२१
	८	३	मुण्डिय	२५	२६
	९	१६, २२	मुत्त	१४	३४
	१२	१, १५, ३१	मुत्ता	६	४६
	१४	८, ९	मुत्ति	६	५७
	१५	३		२०	६
	१७	२०, २१		२२	२६
	१८	४४, ४७		२६	सू० १, ४८
	१९	८३	मुद्दिय	३४	१५
	२०	५३	मुद्ध (मूर्धन)	२७	६
	२३	३८, ४०, ४१,	मुद्ध (मुग्घ)	३२	३७
		६१, ६५, ८०,	मुम्मुर	३६	१०६
		८४	मुसल	१६	६१
	२४	१३, २७	मुसा	१	२४
	६५	२६, ३०		२	४५
	२६	२०, ३५		१८	२६
	२७	१		२०	१५
	३०	३७		२५	२३
	३२	१६, २६, ३६,	मुसावाइ	५	६
		५२, ६५, ७८,		७	५
		९१			

उत्तरज्ज्मयण शब्द-सूची

२६७

मुसावाय	१६	२६	मूल	२०	२२
	३०	२		२६	सू० ५
मुसंडी	१६	६१		३२	७, ६, १३
मुसुण्डी	३६	६६	मूलअ(ग)	३२	१
मुह	२	५		३६	६६
	५	१५	मूलओ	२०	३६
	१२	२६	मूलपयडि	३३	१६
	१३	२१	मूलिय(मूलिक)	७	१७
	२०	४८	मूलिय(मौलिक)	७	१६, २१
	२५	११, १४, १६	मूसग	३२	१३
	२७	१३	मेअ	७	२
मुहपोत्तिया	२६	२३	मेत्त	६	६
मुहरी	१	४		७	२४
मुहाजीवि	२५	२७		१४	१३
मुहु	४	११	मेत्ति	६	२
मुहुत्त	४	६	मेत्तिज्जमाण	११	७, ११
	३३	०३	मेयन्न	१८	२३
	३४	३४ से ३६,	मेरअ(ग)	१६	७०
		४६, ५४, ५५		३४	१४
मूढ	१	२६	मेह	२१	१६
	६	१	मेहावि	१	४५
	८	५		२	६, १७, ३६
	१२	३१		५	३०
	१४	४३		२०	५१
मूल	७	१४ से १६		२३	२४, ३०
	१५	८			

२६८

परिशिष्ट-२

मेहुण	२	४२
	२५	२५
	३०	२
मोक्ख	४	३,८
	६	६
	१३	१०
	१४	६,१३
	१८	३६
	२३	३३
	२८	१,१४,३०
	२९	सू० ६,३२
	३२	२,१७,१०६
मोक्खमग्गगुह	२८	
मोण	१४	७,३२,४१
	१५	१
	१८	६
	२०	४६
मोसली	२६	२६
मोसा	१२	१४,४१
	२४	२०,२२
	३२	३१,४४,५७,
		७०,८३,६६
मोह	४	५,११
	८	३
	१३	३३
	१४	१०,२०,५२

मोह	१५	६
	१६	७
	२०	
	२१	११,१६
	२८	२०
	३२	२,६ से ६,
		१०१,१०५
	३३	२
	३६	२५६
मोहट्टाण	३१	१६
मोहणिज्ज	६	१
	२६	सू० ७,७२
	३३	८,६,२१
मोहरिय	२४	६
य		
य	१	६
र		
रअ(य)	६	४२
	११	५
	१३	१७
	१६	सू० ८

रख(य)	१६	२ से ६, १५	रज्जंत	१६	६
	२६	सू० ३२	रज्जमाण	२६	सू० ४
	३२	१५	रच्छा	३०	१८
रह	५	५	रहु	१८	२०
	१४	७, २१	रण	१४	३०
	१६	६	रण्ण	१४	४२
	१६	१३	रणवास	२५	२६
	२१	२१	रत्त (रक्त)	१७	१२
	३२	१०२		३२	२६, ३६, ५२,
रह्य	२२	१२			६५, ७८, ९१
रक्ख *				३६	२५७ से २५६
-रक्खेज्ज	४	१२	रत्त (रात्रि)	२६	१४
रक्खण	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३	रत्ति	२६	१७, १६
रक्खमाण	२२	४०	रम् *		
रक्खस	१६	१६	-रम्ई	१	५
	२३	२०	-रम्ए	१	३७
	३६	२०७		२५	२०
रक्खसी	८	१७	-रमाम	१६	१४
रक्खा	१६	१	-रमे	१४	४१
रक्खय	१५	२	-रमेज्जा	३६	२४६
रज्ज	७	११	रम्म	१३	१३
	६	२		१४	१
	१४	४६		१६	१
	१८	१२, १६, ३७, ४४, ४६, ४७, ४९		२१	७

२७०

परिशिष्ट-२

रय	२	३६
	३	११
	७	८
	१०	३
	१२	४५
	२१	१८
रयण	११	२२, ३०
	१६	४
	२०	२
	२२	२२
रयणा	३५	१८
रयणाभा	३६	१५६
रयणागर	१६	४२
रयणी	१४	२३ से २५
रयय	३४	६
रस	२	३६
	८	११, १४
	१४	३१, ३२
	१६	सू० १२
	१६	१०
	१८	३, ७
	२०	३६, ५०
	२७	६
	२८	१२
	२९	सू० ४६, ६६
	३०	२६

रसे	३२	१०, २०, ६१
		से ७३
	३४	२, १० से
		१५, २३
	३५	१७
	३६	८३, ६१,
		१०५, ११६,
		१२५, १३५,
		१४४, १५४,
		१६६, १७८,
		१८७, १९४,
		२०३, २४७,
		२६४
रसओ	३६	१५, १८, २२
		से ४६
रसंत	१६	५१
रसन्नु	१६	२८
रसपरिष्वाभ	३०	८
रस्ति	२३	५६
रह	११	८, १२
रहनेमि	२२	३४, ३७, ३९
रहनेमिज्ज	२२	
रहस्स(रहस्य)	१	१७
रहस्स(ह्रस्व)	२६	सू० ७३
रहाणीय	१८	२
रहिय	१६	१
	२४	१८

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२७१

राय	१४	१४
	२६	सू० ३१
राइ (रात्रि)	१०	१
	१३	३१
	१४	२४, २५
	२०	३३
	२६	१७
राइ (राजन्)	२०	५
राइय	२६	४७, ४८
राईभोयण	१६	३०
	३०	२
राईमई	२२	६, २६, ३६
राओ	१५	२
राग	१०	३७
	१४	२८, ४२, ४३
	१६	२
	२१	१६
	२३	४३
	२५	२१
	२८	२०
	२६	सू० ६३ से ६७
	३०	१, ४
	३१	३
	३२	२, ७, ६, १२,
		२२ से २४,
		३५ से ३७,

राग	३२	४८ से ५०,
		६१ से ६३,
		७४ से ७६,
		८७ से ८९,
	३५	५
रागि	३२	१००, १०५,
राढामणि	२०	४२
राम	२२	२, २७
राय	७	११
	६	२, ३
	१२	२० से २२
	१३	८, ११, १७,
		२०, २१, २६,
		३२ से ३४
	१४	३, ३७, ३८,
		४०, ५३
	१८	१, ६, ७, ९,
		१३, १५, १६,
		३७, ३९, ४३,
		४५, ४७ से
		४९
	१९	१
	२०	२, १०, ५४
	२२	१, ३, ७,
		२८, ४०

२७२

परिशिष्ट-२

रायपुत्त	१५	६	खर	३२	२६, ३६, ५२,
	२२	३६			६५, ७८, ६१
रायसि	६	५, ६, ८, ११,	खख	१२	
		१३, १७, १६,		१४	२६
		२३, २५, २७,		३६	६४
		२६, ३१, ३३,	खखमूल	२	२०
		३७, ३६, ४१,		१६	७८
		४३, ४५, ४७,		२०	४
		५०, ५२, ५६,		३५	६
		६२			
	१८	५०	ख	२५	६
रायवेडि	२७	१३	ख	३०	३५
रायसीह	२०	५८		३४	३१
रायहाणी	२	१८	ख	१६	६३
	३०	१६	खप	६	४८
रिसि	१६	६६		३६	७३
री *			खम्भ *		
-रिए	२४	४, ८	-खम्भई	३१	३
-रीएज्जा	२४	७	खया	३६	७५
रीयंत	२	१४	खहिर	१२	२५, २६
	२३	३, ७		१६	७०
	२५	२		३६	७२
ख	१	४७	खव	३	१५
	१८	३०		४	११
	२८	२५		६	११
खई	१६	७		६	६, ५५
	१६	५, १२		१२	६

उत्तरजम्भयुण शब्द-सूची

२७३

रुव	१३	१२	रोज्ज्	१६	५६
	१६	सू० १२	रोमकूव	२०	५६
	१६	१०	रोय *		
	१८	१३, २०	-रोयई	१३	१४
	१६	६	-रोयए	१८	३३
	२०	५, ६	रोयइत्ता	२६	सू० १
	२२	४१	रोयंत	२८	२०
	२६	सू० ४३, ४६, ६४	रोयमाण	३	१०
	३१	१६	रोस	३६	२६६
	३२	१४, २२ से	रोहिणी	२२	२
		३४, ४०, ५३,		३४	१०
		६६, ७६, ८२,	रोहिय	१४	३५
		१०३			
रुवंबर	१७	२०	ल		
रुववई	२१	७	लइय	२६	२३
रुवि	३६	४, १०, १३,	लंघिया	१	३६
		१४, २४८	लंतग	३६	२१०, २२७
रुविणी	२१	७	लंबमाणलु	१०	२
रेणुअ	१६	८७	लवख	२७	६
रेवयय	२२	२२, २३		३६	२२१
रोज *			लवखण	८	१३
-रोएइ	२८	१७		६	६०
रोग	२	सू० ३		१५	७
	११	३		२०	४५
	१६	सू० ३ से १२		२२	१, ३, ५, ७
	१६	१४, १५, १६			
७८					

लक्षण	२८	१, ६, ९ से	-लभेज्ज	४	६
		१३	-लभेज्जा	१६	सू० ३ से १२
	३४	२		३२	५
लक्षणअ	१९	४३	लयण	२१	२२
लग	१९	६५, ८७		२२	३३
लग *			लया	२०	३
-लगई	२५	४०		२३	४५ से ४८
-लगन्ति	२५	४१		३६	६४, ६५
लज्जा	२	४	ललिय	६	६०
लज्जु	६	१६		२२	४१
लद्ध	२	३०	लव	१	२५
	१६	८	लवंत	१	२१
लद्धं (लब्धा)	२	२३	लविय	१६	४
	३	८ से ११	लसण	३६	६७
	११	११	लह *		
	१५	१२	-लहइ	७	१४
लद्धं (लब्धुम्)	११	१४	-लहए	१४	२६
लद्धूण	६	१४	-लहामो	१४	७
	१०	१६, १७, १९	-लहित्थ	१२	१७
	११	७	-लहे	१०	१८
लप्पमाण	२०	४३	लहिउं	१७	१
लभ *			लहियाण	२०	३८
-लभइ	११	३	लहु	१	१३
-लभामि	२	३१		१५	१६
लभऊ	१२	१०		२२	३१
लभे	४	५	लहुब्भूय	२३	४०, ४१
	१४	२१			

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

२७५

लहुभूय(अ)	१४	४४	लिग	२३	३०, ३२
	२६	सू० ४३		२६	सू० ४३
लहुय(अ)	३६	१६, ३७	लिप *		
लाघविया	२६	सू० ४३	-लिप्पई	८	४
लाढ	२	१८		३२	२६, ३६, ५२,
	१५	२, ३			६०, ६५, ७३,
लाम	१	२७			७८, ८६, ९१,
	२	३१			९६
	७	१६	-लिप्पए	३२	३४, ४७
	१४	३२	लिच्छु	३२	१०४
	१६	६०	लित्त	८	१५
	२०	५५	लुच *		
	२६	सू० ३४	-लुचई	२२	२४, ३०
	३२	२८, ४१, ५४,	लुप *		
		६७, ८०, ९३	-लुप्पन्ति	६	१
	३३	१५	लुक्ख	३६	२०
	३५	१६	लुक्खय	३५	४१
लामतर	४	७	लुत्त	२२	२५, ३१
लामय *			लुद्ध	६	४८
-लामइस्सन्ति	१	४६		११	२, ६
लालप्पमाण	१४	१५		१७	११
लालसा	२५	४१	लुपंत	६	३
लावण	३२	१४	लूह	२	६, ३४
लाह	७	१४	लेट्टु	३५	१३
	८	१७	लेप्प	१६	६५
	१२	१७	लेव	६	१५
				८	१५

२७६

परिशिष्ट-७

लेसज्जयण

३४

लोअ(ग,य)

२३

३२,४०,६०,

३४

१

७५,७६,७८,

लेसा

१२

४६

२५

१६

३१

८

२८

७

३४

२,१६ से

२६

सू० ७२

२०,३३,४०,

३४

३३

४४,४५,४७,

३६

२,७,११,

५८ से ६१

६१,६७,६९,

लोअ (ग,य)

१

१५,४५

७८,८६,

२

१६,४४

१००,१११,

४

३,५,१०

१२०,१३०,

५

५,६

१३६,१४६,

८

१६,२०

१५८,१७३,

९

१,५८

१८२,१८६,

१०

३५

१९८,२१७

१२

१३,२८

लोगगा

२३

८१,८३,८४

१३

१६,२१

२६

सू० ३६

१४

८,१६,२१

लोगनाह

२२

४

से २३

लोण

३६

७३

१५

१४,१५

लोभ

६

५४,५६

१७

२०,२१

२४

६

१८

२७,३८

२६

सू० २,७१

१९

२३,४४,७३,

३२

२६,३०,४२,

६२

४३,५५,५६,

२०

४६

६८,६९,८१,

२३

१,२,५,६,

८२,८४,८५

उत्तररज्जमयण शब्द-सूची

२७७

लोभ	३४	२६
	३५	३
लोभवेयणिज्ज	२६	सू० ७१
लोमपक्खि	३६	१८८
लोमहरिस्स	५	३१
लोमहार	६	२८
लोयग्ग	३६	५६, ६३
लोल	२६	सू० ४८
	३२	२४
लोलया.	७	१७
लोला	२६	२७
लोलुप्पमाण	१४	१०
लोलुअ	३४	२३
लोह (लोह)	१६	६८
लोह (लोम)	४	१२
	८	१७
	६	३६
	२५	२३
	२६	सू० १, ७१
	३२	८, १०२
लोहणिज्ज	४	१२
लोहतुंड	१६	५८
लोहभार	१६	३५
लोहमय	१६	३८
लोहरह	१६	५६
लोहि (दे०)	३६	६८

लोहिया(अं)	७	७
	३६	१६, २४
लोहियक्ख	३६	७५
व		
व(वा)	१	१६, ३४
	२	२०, ३६
	५	२२
	१०	३६
	१२	७, ४३, ४५
	१३	२२
	१४	२७, ३०
	१६	१३
	२०	१६
	२८	१६
व(इव)	१	१२, ३७, ३९
	३	५, १४
	४	५, ६
	५	१५, १६
	७	७
	८	५, ६, ९, १८
	१०	२८
	१२	२७
	१३	३१
	१४	३३, ३५, ४७

व(इव)	१५	१०
	१७	२१
	१६	८७
	२१	१४, २३, २४
	३४	१४

वअ *

-वए २७ ५

वइ १८ ५२

वइगुत्त २६ सू० ५५

वइगुत्ति २४ २३

वइजोग २६ सू० ७३

वइदेहि ६ ६१

वइर १६ ५०

३६ ७३

वइसाह २६ १५

वइस्स (वैश्य) २५ ३१

वइस्स (द्वेष्ट) ३२ १०३

वंक ३४ २५

वंकजड २३ २६

वचिअ २ ४४

वजण १२ ३४

२६ सू० २२

वंजणलद्धि २६ सू० २२

वक्क १ ४३

६ ११

१३ २७

वक्क	१४	११
	२२	३६
	२५	२५
वग्ग	१३	२३
	१६	२६
	३०	१०
वग्गवग्ग	३०	११
वग्गू	६	५५
वच्च *		
-वच्चवइ	१४	२४, २५
-वच्चउ	२७	१२
वच्छ	८	१८
	६	६
वच्छल्ल	२८	३१
वज्ज		
-वज्जई	३१	६
-वज्जए	१	८, ९, २४,
		३६
	१७	२१
-वज्जेज्जा	१६	१४
वज्ज	३४	२८
वज्जअ	११	१३
वज्जकंद	३६	६८
वज्जण	१६	३०
	२८	२८
वज्जपाणि	११	२३

उत्तरज्ज्मयण शब्द-सूची

वज्जरिसह	२२	६
वज्जिता	३०	३५
	३४	३१, ४५, ६१
वज्जिय	१०	२८
	२४	५, १८
वज्जेयव्व	१६	३०
	२६	२६
वज्झ	२१	८
वज्झग	२१	८
वज्झमण्डण	२१	८
वट्ट *		
-वट्टइ	१७	२
-वट्टए	२६	सू० २०
वट्ट	३६	२१, ४३
वट्टन्त	२३	६०
	३५	१४
वट्टमाण	११	६
	२६	सू० २०, ५१, ५२
वड्डइ	१६	६६
वड्ड *		
-वड्डइ	३२	३०, ४३
वड्डण	१४	४७
वड्डमाण	२२	२६
वड्डावइत्ताणं	६	४६
वण	२०	३६
	२३	१५
	३२	११

वणचारि	३६	२०५
वणप्फइ	३६	१०२
वणस्सइ	२६	३०
	३६	६६, ६२
वणस्सइकाय	१०	६
वणिय	७	१४
	८	६
	१४	३०
वण्ण	६	११
	७	२७
	१३	२६
	१६	५५, ६६
	२०	६
	२८	१२
	२६	सू० ५
	३०	२३
	३२	२०
	३४	२
वण्णओ	३४	४ से ६
	३६	१५, १६, २२
		से ४६, ८३,
		६१, १०५,
		११६, १२५,
		१३५, १४४,
		१५४, १६६,
		१७८, १८७,
		१९४, २०३,
		२४७

वणव	३	१८
वणिग्य	३४	४०, ४४, ४७
वणिह	२२	१३
वत्तगा-	२८	१०
वत्य	२	१२
	२६	२३, २४
	३०	२२
वत्यु	३	१७
	१६	१६
वत्युविज्जा	१५	७
वद्धण	२६	सू० ६
वद्धभाण	६	२४
	२३	५, १२, २३,
		२६
वन्त	१०	२६
	१२	२१
	२२	४२
वन्तर	३६	२२०
वन्तासि	१४	३८
वन्द *		
-वन्दइ	६	५५, ५६
	२६	५०
-वन्दए	१८	८
वन्दण	३५	१८
वन्दणम(अ)	१५	५
	२६	सू० १, ११

वन्दमाण	२५	१७
वन्दिअण	६	६०
	२६	४५
वन्दिता	२०	७
	२२	२७
	२६	८
वन्दिताण	२६	२२, ३७, ४०
		से ४२, ४८,
		४६, ५१
वन्दिता	२६	२१
वम*		
-वमइ	११	७
वमंत	१२	२५, २६
वमण	१५	८
वमिता	१४	४४
वम्मधारि	४	८
वय (वद्) *		
-वयइ	१५	६
	२५	२३
-वए	१	१४, २४
	२०	१५
	२२	४०
	३०	३५
-वएज्ज	१	४१
-वयंति	१२	३८, ४०
	३२	६, ७

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२८१

-वयासी	१४	८, १६
वय (व्रत)	१	४७
	२०	४१
	२१	११
	२२	४०
	२६	सू० १२
	३१	७
वय (वचस्)	५	१०
	८	१०
	१४	८
	१५	१२
	२४	२३
	२६	सू० ५८
वय (व्रज्) *		
-वयद्	६	५४
-वए	१४	४८
	२०	५१
	२७	५
वय (वयस्)	१४	३२
	२०	१६
वय (व्यय)	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३
वय *		
-वुञ्छ	३६	११, ७८, १११, १२०, १५८, १७३,

-वुञ्छं	३६	१८२, १८६, २१७
-वुञ्छामि	३६	४७, १०६
वयगुत्त	१२	३
	२२	४७
वयगुत्तया	२६	सू० १, ५५
वयगुत्ति	२४	२
वयलोग	२१	१४
वयण	१	१२
	६	६
	१२	५, ८, १६, २४
	१३	४, १२, १५, २६, ३४
	१६	६
	२०	१३
	२२	१८, ४६
	२५	१०
	२७	११
वयत्थ	३०	२२
वयमाण	८	७
वयसमाधारणया	२६	सू० १, ५८
वर (वर)	१	१६
	८	३
	६	३
	१४	५०
	२२	७, ४०
	३४	१४

वर (पर)	१४	२२	वसभ	१८	३६, ४६, ४७
वरगङ्ग	३६	६३, ६७	वसह	११	१६
वरदंशि	२८	२, ७	वसहि	१४	४८
वराङ्ग	३६	१२६		३२	१३
वराय	३६	२६१	वसा	१६	७०
वरिस	१८	२८	वसाणुग	१३	५
	३४	४६	वसीकअ	६	५६
वलय	३६	६५	वसुदेव	२२	१
वल्लर	१६	८०, ८१	वमुहा	२०	६०
वल्ली	३६	६४	वमुहारा	१२	३६
वव			वस्स	३२	१०४
-ववन्ति	१२	१२	वह	१	१६, ३८
ववहर *				७	१७
-ववहरई	१७	१८		८	७, ८
ववहरंत	२१	२, ३		१२	१४
ववहार	१	४२		१५	३, १४
	७	१५		१६	३२
ववस्स *				३५	८
-ववस्से	३२	१४	वह * (वह)		
ववस्सिअ	२२	३०	-वहेइ	१८	३
वस *			-वहेई	१८	५
-वसामि	१८	२६	-वहेह	१२	२७
-वसामो	६	१४		२६	सू० ३२
-वसे	११	१४	वह * (व्यथ)		
-वुच्छामु	१३	१६	-वहिज्ज	२१	१७
वस	६	३२	वहण	२७	२
	१४	४२			

उत्तररज्जमयण शब्द-सूची

२८३

वहमांण	२७	३६	२१, २५, २७,
वहिय	१६	७१	३४, ४८, ५०
वा(वा)	१	१४, १७, १६,	२१, २५, २७,
			३४, ४८, ५०
	२	३६	८, १८, २०,
			३०, ३६, ४४
	५	१०	१६, २२, २५,
			२८
	८	१२	१२, २५, ३०
	१२	१८	१७, २२, ३६,
			४०
	१५	६	६, १०, १२,
	१६	३०	३०, ३६, ४४,
	१६	३६	३६, ४४, ५०,
			५६
	२०	६	६, १०, १२,
वा(इव)	२	१०	१०
	१४	४१	४१
	१६	५३, ६३, ६४	५३, ६३, ६४
वाअ	६	१०	१०
वाइय(वादित्र)	१३	१४	१४
वाइय(वाचित)	२७	१४	१४
वाउ	६	१२	१२
	२६	३०	३०

वाउ	१०	१०७, ११७, ११८
	१२	१२२ से
		१२४
वाउक्काय	१०	१०
वागरे	१	१४
वागरेजे	१	२३
वाघाय	१४	१४
वाड	२२	१४, १६, १८
	३०	१८
वाणमतर	३४	५१
	३६	२०४, २०७
वाणारसी	२५	२, ३
वाणिअ	७	१५
	२१	१, ३, ५
	३५	१४
वाद	१५	१५
वाय (वाच)	१	१७, ४३
	६	६
वाय (वात)	१६	४०
	२१	१६
	२२	४४
	३६	२०६
वाय *		
वाएइ	२६	२६
वायणया	२६	सू० १

२८४

वायणा	२६	सू० २०
	३०	३४
वार *		
-वारेज्ज	२	११
वारि	२३	५१, ६६
	२५	२६
वारुणी	३४	१४
वालग्गपोड्या	६	२४
वालुया	१६	३७, ५०
	३६	७३
वालुयाभा	३६	१५६
वावड *		
-वावडे	१७	१८
वावन्न	२८	२८
वावर *		
-वावरे	३०	३६
वास(वर्ष)	३	१५
	४	८
	७	१३
	१२	३६
	१८	३४, ३६, ३८,
		४०, ४१
	१६	६५
	२२	३३
	३४	४१, ४८, ५३
	३६	८०, ८८,

परिशिष्ट-२

वास(वष)	३६	१०२, १२२,
		१३२, १६०,
		२१६ से २२१,
		२५० से २५२
वास(वास)	१४	२६
	१६	८३
	२३	४, ८
	२५	३
	३५	६, ७
वासंत	२२	३३
वासि	१२	८
	१४	१
वासिट्टी	१४	२६
वासिय	३५	४
वासी	१६	६२
वासीमुह (दे०)	३६	१२८
वासुदेव	११	२१
	२२	८, १०, २५,
		३१
वाह *		
-वाहेइ	१७	१६
वाहळ(य)	१	३७
	१०	३३
वाहण	६	४६
	१८	१

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२८५

वाहर *		
-वाहराहि	१८	१०
वाहि	१६	१४, १६
	२३	८१
	३२	१२
वाहिअ	१६	६३
वाहित्त	१	२०
विइत्तु	१५	३
विइय	१२	१३
	१८	२७
	२३	६१
विउ	२१	१२
	२५	३६
विउकम्म	५	१५
विउल	१	४६
	७	२, २१
	६	३८
	१०	३०
	११	३१
	१४	३७, ४६
	२०	१६, ३२, ५२
	२६	सू० ४३
विउन्वि	३	१५
	१३	३२
विउन्विऊण	६	५५
विउस्सग	३०	३०, ३६

विओग	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३
विछिय	३६	१४७
विकत्तु	२०	३७
विकप्पण	३२	१०७
विकोविय	२१	२
विककअ	३५	१३ से १५
विकिणंत	३५	१४
विक्खाय	१८	३६
विकिखत्ता	२६	२६
विगइ	१७	१५
	३२	१०१
	३६	२५२
विगप्प	३३	६
विगप्पण	२३	३२
विगय	१	२६
	८	३
	६	२२
	१४	५२
	२०	६०
	२६	सू० ३०
विगराल	१२	६
विगालिदियया	१०	१७
विगहा	२४	६
	३१	६
	३६	२६३

विगिच		
-विगिच	३	१३
विगिट्ट	३६	२५४
विग्गह	३	८
विग्घ	२०	५७
	२६	सू० ६
विचित		
-विचितए	२	२६
	२६	५०
-विचिन्तेइ	२२	२६
	२७	१५
विचितिय	१३	८
विचित्त	३६	१४८, २५२
विजढ	३६	८२, ६०,
		१०४, ११५,
		१२४, १५३,
		१६८, १७७,
		२४६
विजय	१५	७
	१८	४६
	२६	सू० १, ६८ से ७२
	३६	२१५, २४३
विजयघोस	२५	४, ५, ३४,
		३५, ४२, ४३
विजहिनु	८	२

विज्ज		
-विज्जई	२	७६
	१४	४०
	२०	६, १०
	२३	६६
-विज्जए	६	१५
विज्जमाण	१८	२७
विज्जा (विद्या)	६	१०
	१२	१३, १४
	१५	७
	१८	२२, २४, ३०,
		३१
	२०	२२
	२३	२, ६
	२५	१८
विज्जा		
(विदित्वा)	६	४६
विज्जु	१८	१३
	२२	७
	३६	११०, २०६
विज्झव		
-विज्झविज्ज	१	४१
विज्झाय		
-विज्झायइ	२६	सू० ६१
विज्झाविय	२३	५०
विट्ठा	१	५

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

विडविय	१३	१६	विणियट्टणया	२६	सू० १,३३
विणइत्ता	२६	सू० ५	विणिवाड	१	
विणइत्तु	१४	२८	-विणिवाडयन्ति	१२	२४
विणय(अ)	१	१,६,७,	विणिहण	२	१७
		२३	-विणिहन्नेज्जा	२	१७
	१७	१,४	-विणिहम्मन्ति	३	६
	१८	८,२३	विणी	१	
	२८	२५	-विणएज्ज	४	१२
	२६	सू० ५,६०		५	३१
	३०	३०,३२	विणीय	१	२
	३४	२७		१८	२१
विणयसुय	१			३४	२७
विणस्स *			विणोयण	३२	१०५
-विणस्सइ	२६	सू० ६०	वित्तिगिच्छा	१६	३ से १२
-विणस्सउ	१२	१६	वित्तिमिर	२६	सू० ७२
विणा	१३	७	वित्त(वित्त)	१	४४
	२८	३०		४	५
विणास	३२	२४,३७,५०,		५	१०
		६३,७६,८६		७	८
विणासण	२२	१८	वित्त(वेत्त)	१२	१६
	३५	१२	वित्तास	१	
विणिघाय	२०	४३	-वित्तासए	२	२०
विणिच्छय(अ)	२३	२५,८८	वित्ति	१६	३३
विणियट्ट	१		वित्थर	२०	५३
-विणियट्टन्ति	६	६२	वित्थारुद्ध	२८	१६,२१
	१६	६६			
	२२	४६			

२८८

परिशिष्ट-२

वित्थिण्ण	२४	१८
	३६	५८
विदित्ताण	६	८
विदेह	१८	४५
विद्ध	३२	३
विद्धंस *		
-विद्धंसइ	१०	२७
विद्धंस *		
-विद्धंसे	११	२४
विनिम्मवक्क	१८	५३
	२५	३२
विन्ध *		
-विन्धइ	२७	४
विस्साण	२३	३१
	३६	२६२
विन्नाय	२३	१४
विन्नेअ	३६,	१५
विपक्ख	१४	१३
विपरिधाव *		
-विपरिधावइ	२३	७०
विप्प	१४	६
	२५	१,७
विप्पओग	१३	८
विप्पच्चअ	२३	२४,३०
विप्पजहणा	२६	सू० ७४
विप्पजहा *		
-विप्पजहे	८	४,१६

विप्पजहिता	२६	सू० ७४
विप्पमुंच *		
-विप्पमुक्कड	२४	२७
	२५	३६
	३०	३७
	३१	२१
विप्पमुक्क	१	१
	६	१६
	११	१
	१५	१६
	२०	६०
	२१	२४
	३२	११०
विप्परियास	२०	४६
विप्पलाव	१३	३३
विप्पसन्न	५	१८
विप्पसीअ *		
-विप्पसीएज्ज	५	३०
विप्पुरंत	१६	५४
विभन्ति	३६	४७
विभय *		
-विभयन्ति	१३	२३
विभाग	२८	१३
	३६	११,७८,
		१११,१२०,
		१५८,१७३,
		१८२,१८६,
		२१७

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

विभावण	२६	३६
विभिन्न	१६	५५
	३२	६३
	१६	६
विभूसा	१६	सू० ११
विभूसाणुवाइ	१६	सू० ११
विभूसावत्तिय	१६	सू० ११
विभूसिअ	१६	सू० ११
	२२	६
	३२	१६
विमग		३८
-विमगहा	१२	३०
विमण	१२	४६, ४७
विमल	१२	५८
	२०	७६
	२३	१
	१४	
विमाण		
विमुच *		३०, ४३, ५६,
-विमुच्चई	३२	६६, ८२, ९५
		२०
	३५	३
	८	४
विमोक्खण	१४	८५
	१६	१०
	२५	१, १०, २१,
	२६	३८, ४१, ४६,
		४६

विमोय *

-विमोयन्ति	२०	२३ से २७,
		३०
विमोयणया	२६	सू० ७१
विमोह	५	२६
विम्हअ	२०	५, १३
विम्हावेत	३६	२६३
वियक्खण	२१	१६
	२६	११, १७
	२	४
वियह	२	१८८
विययपक्खि	३६	
वियर *		१०
-वियरिज्जद्द	१२	
वियाण *		१५
-वियाणह	७	२३
	१४	१२
	८७	१२
-वियाणाइ	२५	१
-वियाणासि	४	२
-वियाणाहि	३५	३३
-वियाणिज्जा	१२	५०
वियाणमाण	१४	२२
वियाणिता	७	६८
वियाणिया	१६	२५
	३३	६१
	३४	

वियाणेत्ता	२५	२२	वियाहिय	३६	१७६, १८२,
वियार	३२	१०४			१८४, १८६,
वियाहिय	६	१७			१६६ से
	२४	३, १६			१६८, २०१,
	२६	५२			२०६, २१२,
	२८	१५			२२२, २२३,
	३०	१२, १४, २६,			२४४, २४५,
		३२			२४८
	३२	१११	विरल	३	१५
	३३	१०, १५, २०,		३०	२
		२५		३५	१३
	३६	२, ८, ६,	विरह	१६	२५, २८
		१३, १४, १७,		२६	सू० ६
		४७, ५६, ६१,		३१	२
		६८, ७२, ७७,	विरज्ज *		
		८६, ९३,	-विरज्जइ	२६	सू० ३, ४, ४६
		१००, १०६,	विरज्जमाण	२६	सू० ३, ७
		१०६, ११०,		३२	१०६
		११३, ११६,	विरत्त	१३	१७, ३५
		१३०, १३२,		१४	४
		१३४, १३६,		२५	४१
		१४१, १४३,		३२	३४, ४७, ६०,
		१५१, १५३,			७३, ८६, ८६
		१५५ १५८,	विरम *		
		१६० १६७	-विरमेज्जा	२६	१६
		१७३, १७५,			

विरय	२	६, ४२	विव	२०	४७, ५०
	१२	६		३२	५०
	१५	२	विवच्चास	३०	३
	२०	६०	विवज्ज *		
	२१	२०, २१	-विवज्जए	१६	२, ४, ५
विरली(दे०)	३६	१४७	विवज्जण	१६	२६, २७, २६
विराग	३२	२६, ३६, ५२,		३०	२६
		६५, ७८, ६१		३२	२, ३
विराय			विवज्जयंत	३२	५
-विरायड	११	१५, १६	विवज्जास	२०	४६
विराह्य	२६	३०	विवज्जिअ	१६	२०
विराहणा	२	३४		३०	२८
विराहिय	३६	२५६	विवज्जिता	१	३१
विराहेत्तु	२०	४६, ५०		२४	८
विरिय	६	६	विवड		
विह * *			-विवडइ	१०	२७
-विलहन्ति	१२	१३	विवड्डण	१६	२, ७
विरेयण	१५	८		३५	५
विलवत	१६	५८	विवद्धण	१६	६८
विलविय	१३	१६	विवन्न	१४	३०
	१६	सू० ७	विवर	२०	२०
विलास	३२	१४	विवाइय	१६	५६, ६३
विलुत्त	१६	५८	विवाग	१०	४
विलेवण	२०	२६		१३	३, ८
विलोवअ	७	५		१६	११
विव	१६	५७, ६५, ६६		३२	२०, ३३, ४६,

२६२

पारमिह-२

विवाग	३२	५६, ७२, ८५, ६८	विस	२०	४४
विवागय	२	४१		२३	४५, ४६
विवाद	१७	१२		३६	२६७
विवाह	२२	१७	विसम(य)	७	६
विदिच्च	६	१४		१६	६
विवित्त	१६	सू० ३		२०	४४
	१६	१		२६	सू० ३
	२१	२२		३२	२१
	२६	सू० १, ३२	विसज्जडत्ताणं	१८	८
	३०	२८	विसन्न(ण्ण)	६	१०
	३२	१२		८	५
विवित्तवास	३२	१६		१२	३०
विविह	१०	२७	विसप्प	३५	१२
	१५	४, ८, ६, ११, १२, १४, १५	विसम	५	१४ १६
	२१	१८		१०	३३
	३२	१०२	विसारत्त	२२	३४
	३४	१४	विसारय(अ)	२०	२२
विवेग	४	१०		२७	१
	३२	४	विसाल	१३	२
विस	६	५३		१४	३
	१६	१३	विसालिस	३	१४
	१७	२०	विसीय *		
	१६	११	-विसीयई	४	६
			विसील	११	५
			विसुद्ध	३	१६
				१२	४६, ४७

तत्त्वमयण शब्द-सूची

वेसुद्ध	२६	सू० २, १३, ४३, सू० ७२	विहग	२०	६०
वेसुद्धपन्न	८	२०	विहन्न *		
विसुइआ	१०	२७	-विहन्नई	२	२२
विसेस	५	३०	-विहन्नसि	६	५१
	१२	३७	-विहन्नेज्जा	२	सू० १ से ३
	१८	५१		२	२२, ४६
	२३	१३, २४, ३०	विहम्माण	२७	३
	३०	२३	विहर *		
	३२	१०३	-विहरइ	२०	६०
विसोग	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९६		२७	१७
				२६	सू० १२, १३, ३१, सू० ३४, ६१
विसोह *			-विहरए	२६	३५
-विसोहए	२४	११, १२	-विहरसी	२३	४०
-विसोहेइ	२६	सू० ५, १३, १७, सू० २१, ५३, ५७ से ५६	-विहरामि	२३	३८, ४१, ४३
			-विहरिसु	२३	६
			-विहरिस्सामि	१४	४६
विसोहण	२६	२५	-विहरेज्ज	१७	१
विसोहि	१२	३८		२१	१४
	२६	सू० २, १०, १७, सू० १८, ५१		३२	५
			-विहरेज्जा	१६	सू० १ से ३, ५, ७
विसोहिआ	१०	३२		३५	१६
विसोहेत्ता	२६	सू० ५८, ५९	विहरअ	२	४३
विस्सभिय	३	२	विहरित्ता	१६	सू० ५
विस्सुअ	१६	२, ६७	विहाण	३६	७४, ८३, ९१, १०५, ११६,
	२३	५			

विहाण	३६	१२५, १३५, १४४, १५४, १६६, १७८, १८७, १९४, २०३, २४७	वीडवय + -वीडवयइ	२६	सू० २३, ३३
			वीदसय	१६	६५
			वीयराग	२६	सू० ३७
				३२	१६, २२, ३५,
विहार	१४	४, ७, १७, ३३			४८, ६१, ७४, ८७, १००, १०८
	२६	३५			
	३०	१७		३४	३२
विहारजत्ता	२०	२		३५	२१
विहारि	१४	४४	वीयरागया	२६	सू० १, ४६
विहि	२४	१३	वीरजाय	२०	४०
	२८	२४	वीरासण	३०	२७
विहिस	४	१	वीरिय	३	१, ६, ११
विहिस *				२८	११
-विहिसइ	५	८		३३	१५
विहिसण	७	१०	वीस	३६	५१, ५४, २३१
विहूण					
-विहूणाहि	१०	३	वीसइ	३३	२३
विहूण	१२	१४		३६	२३२
	१४	३०	वीसस *		
	२०	४८	-वीससे	४	६
	२८	२६	वीससणिज्ज	२६	सू० ४३
विहेडयंत	१२	३६	वुडय	१८	२६
वीअ *			वुकवस	८	१२
-वीएज्जा	२	६	वुग्गह	१७	१२

वृच्च *			वृहइता	४	७
वृच्चइ	१	२, ३		२०	४३
	८	६	वेअ	२	३७
	११	४ से ६, ६,		२७	३
		१०, १३	वेइय	१६	४७, ४८, ७१,
	१७	३ से १६			७२, ७४
	२३	७३		२६	सू० ७२
वृच्चन्ति	८	१३	वेइया	२६	२६
वृच्चसि	१८	२१	वेग	२३	६५, ६६, ६८
वृज्जमाण	२३	६५, ६८		२७	६
वृड्ड	१२	३६	वेजयंत	३६	२१५
वृत्त	१४	२२, २३	वेज्जचिंता	१५	८
	२०	१३	वेमाणिय	३४	५१
	२३	३७, ४७, ४८,		३६	२०४, २०५,
		५२, ५३, ६२,			२०६, २१६
		६७, ७२, ७३,	वेमाया	७	२०
		७७, ८२	वेय	१२	१५
	२४	५, ६, २६		१४	६, १२
	२५	१६		२५	११, १४, १६,
	२८	३४			२८
	२६	सू० ८	वेयकाल	४	४
	३३	८	वेयणा	२	३२, ३५
	३६	४, २०४		३	६
वृसीमय	५	१८, २६		५	१२
वृह *				१६	३१, ४५, ४७,
वृहण	१०	३६			४८, ७१, ७३,
					७४

२६६

परिशिष्ट-२

वेयणा	२०	१६ से २१, ३१ से ३३	वेस	१	२८, २९
	२३	८१	वेसमण	२२	४१
	२६	३२	वेसालिअ	६	१७
वेयणिज्ज	२६	सू० ४२, ७३	वेस्स	१३	१८
	३३	२, २०	वोक्कस	३	४
वेयणीय	३३	७	वोच्चत्थ	८	५
वेयरणी	१६	५६	वोच्छिद *		
	२०	३६	-वोच्छंद	१०	२८
वेयविअ	१४	८	-वोच्छिदइ	२६	सू० ३, २१, ३६, सू० ४६
	१५	२	वोच्छिदित्ता	२६	सू० ३६
वेयविउ	२५	७, ३६	वोच्छ *		
वेयवी	२५	४	-वुच्छामि	३०	२६
वेयस	२५	१६	-वोच्छामि	२४	१६
वेयाल	२०	४४		३३	१
वेयावच्च	२६	६, १०, ३२		३४	४०, ४४, ४७, ५१
	२६	सू० १, ४४	वोच्छेय	२६	सू० ४
	३०	३०, ३३	वोच्छेयण	२६	३४
वेयावडिय	१२	२४, ३२	वोदाण	२६	सू० १, २८, २९
वेर	४	२	वोसट्ठकाय	१२	४२
	६	६		३५	१६
वेरत्तिय	२६	२०	वोसिर *		
वेरुलिय	२०	४२	-वोसिरे	२४	१८
	३४	५	व्व	३	१२
	३६	७६		५	१०
वेवमाण	३५	३५			

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

व्व	७	६	स(स्व)	१६	५३, ६६
	१४	४८		२१	३
	१८	५१		३२	१०७
	१६	३५, ३६, ८६	स (सत्)	५	२६
	२१	१६		१२	२६
	२२	४४		२१	२३
	२६	सू० १३		२२	१२
स(स)	६	४	सय	७	१
	१४	३७, ४६		१७	१८
	१६	२०, ८८		२६	सू० ३४
	२०	१६, ५५, ५८		३२	२५, ३८, ५१,
	२२	१८, २१			६४, ७७, ६०
	२५	१३		३६	८२, ६०,
	२६	२०			१०४, ११५,
	२६	सू० ६०			१२४, १५३,
	३२	१, ६, १६,			१६८, १७७,
		२३, ३६, ४६,			२४६
		६२, ७५, ८८	सइं	५	३
	३५	४		७	१८
	३६	१८५, १६२,		२०	३२
		२१६, २२१,	सउण	१६	६५
		२२३, २२५,	संकट्टाण	१६	१४
		२५७, २५६	सकप्प	६	५१
स(स्व)	४	३		३२	१०७
	६	३, ४	संकप्प *		
	१४	२, ५	-सकप्पए	३५	७

संकप्पअ	३२	१०७
संकमाण	१४	४७
संकर	१२	६
संकहा	१६	३
संका	२	२१
	१६	सू० ३ से १२
	१६	१४
संकास	२	३
	५	२७
	१६	५०
	३४	४ से ६
	३६	६१
संक्रिय	२६	२७
संक्रिलिस्स *		
-संक्रिलिस्सइ	२६	सू० २५, ३५, ३६
संकुल	६	७
संख	११	१५, २१
	३४	६
	३६	६१, १२८
संखअ	३२	२
संखणग	३६	१२८
संखय	४	१३
संखवियाण	२०	५२
संखा	२८	१३
	३६	१६७
संखाईय	१०	५ से ८
	३४	३३

संखिज्ज	१०	१० से १२
संखिज्जकाल	३६	१३३, १४२,
		१५२
सखेव	२८	१६
सखेवरुई	२८	२६
सग	२	१६
	३	६
	१३	२७
	१८	५३
	२१	११
	३२	१८
	३५	२
संगह	२५	२२
	३३	१८
संगहिय	२७	१४
संगाम	२	१०
	६	२२, ३४
	२१	१७
संगोफ	२२	३५
सघ	१३	१२
	२३	३, ७, १०,
		१५
	३६	२६५
संघयण	२२	६
संघाडि	५	२१
संघायणिज्ज	२६	सू० ६०

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२२६

संचय	१०	३०	संजय(य)(संयत) १७	६
	१६	३०	१८	३०
	२०	१८	१६	५
	२१	२३	२०	१,४,५,८,
सचिक्ख *				११,४३,५६
-सचिक्खे	२	३३	२१	१३,१५,२०
संचिक्खमाण	१४	३२	२२	३५,४६
सचिण *			२३	१०
सचिणइ	५	१०	२४	४,१०
-सचिणु	३	१३	३०	६
सचिणिया	७	८	३५	३,७,८
सचिन्तण	३२	३	सजइज्ज	१८
सचिय	३०	६	सजम	१
सच्छन्न	२०	३		३
सजअ(सजय)	१८	१,१०,१६,		५
		२२		६
सजअ(य)(सयत) १		१६,३४,३५		१२
२		४,२७,३०,		१३
		३४		१४
	५	१८,२६		१६
	६	१५		१६
	१०	३६		सू० १ से ३
	११	६		५,६,३७,
	१२	२,६,२०,		७७
		२२,४०,४५		२०
१५	५			२२
				२५
				२६

३००

परिशिष्ट-२

संजम	२८	३६
	२९	सू० १,२७,४०
		सू० ५४
	३१	२
	३६	१,२४९
संजममाण	१८	२६
संजल *		
-सजले	२	२४,२६
सजलण	२९	सू० ५
संजा *		
-सजायई	३२	१०७
सजुत्त	१८	१७
	२६	७
	२८	१
संजुय	१२	३४
	१४	२६
	२२	१,३,५
सजोएमाण	२९	सू० ६१
सजोग	१	१
	८	२
	११	१
	२८	१३
	२९	सू० ४
संठाण	१६	४
	२८	२३
	३६	२१,४२,४६,
		८३

संठाणओ	३६	१५,२२ से
		४१,४३ से
		४५,६१,
		१०५,११६,
		१२५,१३५,
		१४४,१५४,
		१६६,१७८,
		१८७,१९४,
		२०३,२४७
संठिय	३६	५७,६०
संडासतुण्ड	१९	५८
संत(सत्)	१	२२
	१९	७
	२०	१२
	२२	३२
	२३	५३
	२५	६
	३२	३४,४७,६०,
		७३,८६,९९
संत(श्रान्त)	१८	३
संतअ	२	३
संतइ	३६	९,१२,७९,
		८७,१०१,
		११२,१२१,
		१३१,१४०,
		१५०,१५९,

सतइ	३६	१७४, १८३, १६०, १६६, २१८	संथार	१७	७
				२३	४, ८
				२५	३
संतत्त	१४	१०	संथारअ	१७	१४
सत्तच्छर	२३	१३, २६	सथुय	१	४६
सतस *				१५	१०
-सतसन्ति	५	२६		२३	८६
-सतसे	२	११	संदिट्ट	२५	१६
-सतसेज्जा	२१	१४	संघाव *		
-सतस्सइ	५	१६	-सघावड	२०	४६
सत्ताण	१४	४१	सधि	१	२६
सत्ति	५	२८	संघिमुह	४	३
	१२	४३ से ४६	सनिनाय	२२	१२
	१८	३८	सनिभ	१६	१३
सत्तिकर	१८	३८		२२	३०
सत्तिमग्ग	१०	३६		३४	४, ६, ८
सत्तुट्ठ	३५	१६	संनिच्छ	७	२४
सत्तुस्स *			सनिवेसणया	२६	सू० १, २६
-सत्तुस्सइ	२६	सू० ३४	सपइ	१०	३१
-सत्तुस्से	८	१६	सपगर *		
सतोसीभाव	२६	सू० ७१	-सपगरेइ	२१	१६
सथव	१५	१, १०	संपगाढ	२०	४५
	१६	३, ११	संपज्जलिय	२३	५०
	२१	२१	सपडिल्लेह *		
	२६	५१	-संपडिल्लेहए	२६	४२
	२८	२८			

३०२

परिशिष्ट-२

संपडिवज्ज *

-संपडिवज्जइ ५ ७

२३ १६

संपडिवज्जेत्ता २६ ५१

संपडिवाइय २२ ४६

संपणाम *

-संपणामए २३ १७

संपत्त ५ ३२

१६ ६०

२२ १५, २३

२३ ८४

२६ १६

३५ २१

३६ ६६

संपन्न १ २

२१ ६

२७ १७

२६ सू० १५

संपन्नया २६ सू० १, ४५, ४६,

सू० ६० से ६२

संपया २० १५

२५ १८

संपराय २० ४१

२८ ३२

संपाउण *

-संपाउणइ २६ सू० ६०

-संपाउणेज्जसि ११

संपाय १८

संपिडिय १४

संपीला ३२

संपुन्न २२

संवद्ध १६

सवाह ३०

संवुद्ध १

६

१६

२१

२२

संवुद्धप्प २३

संमंत १८

संमर *

-संमरे १४

संभव ६

१६

संभूय(अ) १२

१३

२३

२५

संभोग २६

३२

३२

१३

३१

२६, ३६, ५२,

६५, ७८, ९१

७

७१

१६

४६

६२

६६

१०

४६

१

७

३३

१, ११

१२

१

३, ११

४५

१

सू० १, ३४

२८, ४१, ५४,

६७, ८०, ९३

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

संमथ	३६	२६८	संवर	२६	सू० ४०,५६
समदमाण	१७	६		३३	२५
समुच्छ *			सवस *		
-समुच्छद	१४	८	-संवसे	१०	५ से १४
समुच्छिम	३६	१६५, १६८	संवसित्ताणं	१४	२६
सरम्म	२४	२१, २३, २५	संविग्ग	२१	६
सलव *			सविद *		
-सलवे	१	२६	-सविदे	७	२२, २४
सलिह *			संवुड	१	३५, ४७
-सलिहे	३६	२५०		३	११
संलीणया	३०	८		५	२५
सलेहा	३६	२५१		१७	२०
संलोअ	२४	१६, १७	सवेग	१८	१८
संवच्छर	३६	२५१, २५३ से २५५		२१	१०
संवट्ट	३०	१७		२६	सू० १, २
संवट्टगवात	३६	११६	संसग्गी	१	६
संवट्ठ *			ससत्त	१६	सू० ३
-संवट्ठद	२१	५	संसय	१	४७
संवय *				६	२६
-समुवाय	१४	३७		२३	२८, ३४, ३
संवर	६	२०			४४, ४६,
	१२	४२			५६, ६४,
	१६	सू० १ से ३			७४, ७६,
	२२	३६			८६
	२८	१४, १७			२५, ३०

संसार *			सकाम	५	३
संसारइ	१०	१५	सकामभरण	५	२,१६,३२
संसार	३	२,५	सक्क	६	६,५६,६१
	४	४		११	२३
	६	१,१२		१८	४४
	८	१,१५	सक्के *		
१०	१५		सक्केइ	४	१०
१४	२,४,१३,		सक्कर	३४	१५
	१६,४७		सक्करा	३६	७३
१६	१५		सक्कराभा	३६	१५६
२०	३१		सक्कार	३५	१८
२२	३१		सक्कार-पुक्कार	२	सू० ३
२३	७३,७८		सक्किय	१५	५
२४	२७		सक्ख	१४	२७
२५	३८,३६		सक्खं	२	४२
२६	१,५२			६	६१
२७	२			१२	३७
२८	सू० ३,६,२३,			१८	४४
	सू० ३३,६०			२२	४१
३०	३७		सग	२०	२६,२७
३१	१,२१		सगर	१८	३५
३२	१७		सगास	१२	१६,४५
३३	१		सवेल	२	१३
३६	६७		सवेल्लं	२	१२
संसारत्थ	३६	४८,६८,	सच्च	६	२
	२४८			७	२०

सञ्च	६	२१
	११	५
	१३	६
	१८	२४, ५२
	१९	२६
	२१	१२
	२८	२५
	२९	सू० १, ५१
सञ्चपरक्कम	१८	२४, ४८
सञ्चवा	२४	२०, २२
सञ्चामोसा	२४	२०, २२
सजोगि	२९	सू० ७२
सज्ज "		
-सज्जइ	२५	२०
-सज्जति	३५	२
सज्जमाव	२६	६, १०
	२९	सू० १, १६
	३०	३०, ३४
सज्जमाय	१८	४
	२४	८
	२५	१८
	२६	१२, १८, १९, २१, ३६, ४३, ४४
	३२	३
सङ्ग्रहायण	११	१८

सङ्ग्रा	१४	६
सङ्ग्रि	५	२३, ३१
सङ्ग	५	६
	७	५, १७
	२७	५
	३४	२३
सण	३४	८
सणकुमार	१८	३७
	३६	२१०, २२४
सणप्पय	३६	१८०
सणाह	२०	१६, ५५
सण्ह	३६	७१
सत्त(शक्त)	६	११
सत्त (सप्तन्)	१०	१३
	२९	सू० २३
	३०	२५
	३१	६
	३६	८८, १५६, २२४ से २२६
सत्त(सत्त्व)	१४	१८, ४३
	२९	सू० १८, ४३
	३२	१११
सत्त(सक्त्त)	१४	४५
	३२	२९, ४२, ५५, ६८, ८१, ९४, १०३

सत्तम	२६	३
	३६	१६६, २४०
सत्तरत्त	२६	१४
सत्तरस	३६	१६४, १६५, २२८, २२९
सत्तरि	३३	२१
सत्तविह	३३	११
	३६	७१, १५६
सत्तवीस	३६	२३८
सत्तवीसइ	३६	२३९
सत्तहा	३६	१५७
सत्तावीसइ	३४	२०
सत्तु	१९	२५
	२३	३६ से ३८
	३२	१२
सत्थ(शास्त्र)	२०	२०, ४४
	३५	१२
	३६	२६७
सत्थ(शास्त्र)	२८	२०, ४४
सत्थ(सार्थ)	३०	१७
सत्थकुसल	२०	२२
सदावरी	३६	१३८
सद्	९	७
	१५	१४
	१६	सू० ५, १२
	१६	१०

सद्	२१	१४
	२८	१२
	२९	सू० ४०, ४६, ६३
	३२	३५ से ४७, १०६
सद्दह *		
-सद्दहाइ	२८	१८, १९, २७
-सद्दहे	३	११
	२८	३५
सद्दहंत	२८	१५
सद्दहंतया	१०	२०
सद्दहणा	१०	१९
	२८	२८
सद्दहिऊण	३६	२४९
सद्दहिता	२९	सू० १
सद्धम	३	१९
सद्धा	३	१, ९, १०
	९	२०, ५९
	१२	१२
	१४	२८
सद्धि	१	२६
	५	७
	१६	सू० ५
सद्धा	३१	६
सन्नाइपिंड	१७	१९
सन्निअ(य)	१०	१० से १२
	३६	६६, ६७

समद्वक्कमिता	३२	१८
समत्तजो	२७	१३
समग्ग	८	३
समचउरंस	२२	६
समज्जिय	३०	१,४
समण	२	सू० १ से ३
	२	२७
	४	११
	८	७,१३
	९	३८
	१२	९
	१३	१२
	१४	१७
	१९	५
	२५	२९,३०
	२९	सू० १,७४
	३२	४,१४,२१
	३६	१
समणत्तण	१९	३९ से ४१
समत्त	२९	सू० ४३
समत्थ	२५	८,१२,१५,
		३३,३७
समन्नागय	२९	सू० ४३
समप्पिय	२०	१५
समभिद्दव *		
-समभिद्दवति	३२	१० -

समय(समक)	१	३५
समय(समय)	१०	१ से ३६
	३४	३३,४६,५०,
		५४,५५,५८,
		५९
	३६	१३,१४
समयखेत्तिय	३६	७
समया	४	१०
	१९	२५
	२५	३०
	३२	१०१,१०७
समर	१	२६
समाइण्ण	५	२६
समाउत्त	२५	३३
	३४	२२,२४,२६,
		२८,३०,३२
समाउल्ल	२२	३,७,१५
समागळ	२७	१५
समागम	२३	१४,२०,८८
समागम्म	२३	३१
समागय	१२	१९,२८,३३
	१३	३
	२३	१९
समाण(समान)	३२	१८
समाण(सह)	१४	३३
समादाय	६	१५

समाधारणया	२६	सू० १	समासबो	३३	३
समाय	३०	१७	समासास *		
समायय *			-समासासेन्ति	६	६
-समाययन्ती	४	२	समाहारणया	२६	सू० ५७ से ५९
समाययत	३२	३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ९६	समाहि	१	४७
				१४	२६
समायय *				१६	सू० १ से ३, १२
-समाययरासो	१४	२०		२७	१
-समाययरे	१	३१		३२	१०६
समाययार	३४	२५		३६	२६२
समाययारी	१	४७	समाहिकाम	३२	४, २१
समारम्भ *			समाहिकजोग	८	१४
-समारम्भई	५	८	समाहिय(अ)	१६	१५
समारम्भत	१२	३८		२२	२४
समारम्भ	२४	२१, २३, २५		२३	५६
	३५	८, ९		२६	सू० ४०
समाख्य	३२	११	समिअ	२४	१४
समाख्य	११	१७		३०	३
	२२	२२		३४	३१
समावन्न	३	२	समिइ	१२	१७
	५	२४		२४	१ से ३,
	१८	१८			१६, २६
समास	२४	३, १६		२८	२५
	२६	५२		२९	सू० ४३
	३०	१०, १४, २६		३१	७
	३३	१५	समिक्ख	६	२
	३६	४७, १०६			

समिक्ख *		
-समिक्खण	२३	२५
समिच्च	४	१०
	१५	१,१५
समिद्ध	५	२७
	१४	१
	१८	४६
	२०	६०
समिय	६	१६
	८	६
	१६	८८
समियदंसण	६	४
समिला	१६	५६
	२७	४
समीहिय	७	४
समुक्करिस	२३	८८
समुग्गपक्खि	३६	१८८
समुच्छिन्न-		
किरिय	२६	सू० ७३
समुद्दाय	४	१०
समुट्ठिय	१६	८२
	२६	८,३१
समुत्थय	२२	२८
समुदाय	२५	३४
समुदाहिय	३६	२०

समुद्द	७	२३
	११	३१
	२१	४,२४
	३६	५०,५४
समुद्दपाल	२१	४,६,२४
समुद्दपालीय	२१	
समुद्दविजय	२२	३,३६
समुद्दिस्स	७	१
समुद्धत्तु	२५	८,१२,१५
समुद्धर *		
-समुद्धरे	६	१३
समुप्पज्ज *		
-समुप्पज्जिज्जा	१६	सू० ३ से १२
समुप्पन्न	१६	७,८
	२३	१०
समुप्पाड *		
-समुप्पाडेइ	२६	सू० ७२
समुयाण	३५	१६
समुवट्ठिय	२३	८६
	२५	६
समुविच्च	३२	१११
समुवे *		
-समुवेइ	३२	२,२४,२५
समुस्सय	५	३२
समूलिय	२३	४६
समोइण्ण	२२	२१

सम्बुक्कावट्ट	३०	१६
सम्म *		
-सम्मइ	१	३७
सम्म	१४	५०
	१७	५
	१८	२७, ३२
	१६	६४
	२०	३६
	२३	१६, ५८
	२४	२७
	२६	सू० १, १७
	३०	३१, ३७
	३६	१
सम्मग	२३	६३, ८६
सम्मत्त	१४	२६
	२८	१५, २१, २२, २८, २६
	२६	सू० ५७
	३३	६
सम्मत्तपरक्कम	२६	
	२६	सू० १, ७४
सम्महसण	३६	२५८
सम्महमाण	१७	६
सम्महा	२६	२६
सम्माण	३५	१८
सम्मामिच्छत्त	३३	६

सम्ममुड	२८	१७
सम्ममुच्छिम	३६	१७०
सम्मूढ	३	६
सय (शत)	३	१५
	७	१३
	१८	२८
	२६	सू० ४१
	३६	५१, ५३, ५४, ५८
सय (स्वक)	७	१
	३६	८२, ६०, १०४, ११५, १२४, १५३, १६८, १७७, २४६
सय	१२	२२
	१३	२३
	२२	२४, ३०
	२६	५, २६
	२८	१८
	३५	८
सयभू-रमण	११	३०
सयग्धी	६	१८
सयण (शयन)	१	१८
	७	८
	१५	४, ११

सयण(शयन)	१६	सू० ३
	२६	सू० १,३२
	३०	२८,३६
सयण(स्वजन)	१४	१६,१७
	२२	३२
सयमाण	२	३४
सयय	२१	१६
	२३	५१
	३२	११०
सया	१	८,२०,२४,
		४२,४४
	६	६,२१
	११	४
	१५	६
	१६	सू० १ से ३
	१६	८
	१७	२१
	२०	४६
	२४	१४
	२५	१६
	३१	२१
	३२	१५
सर *		
-सरई	६	१
	१६	८
सर(स्वर)	१५	७
	२२	५

सर(सरस्)	१६	८०,८१
सरण	१	४५
	१२	२८,३३
	१४	२
	१५	८
	२०	४५
	२३	६५,६८
सराग	३४	३२
सरित्तु	६	२
	१४	५
सरि	३३	१६,२१,२३
सरिस	२	२४
	६	३
सरीर	२	३७
	३	१३
	४	६,६,१३
	६	११
	१२	८,४४
	१४	१८
	१६	सू० ११
	१६	६
	१६	१२,१३
	२०	२०
	२३	७३
	२६	३४
	२६	सू० १,३६
सरीरत्थ	२३	५०

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

३१३

सरीरय(ग)	१०	२१ से २७
	१३	२५
	२३	४०
सर्लिंग	३६	४६, ५२
सलिल	११	२८
सलोगया	५	२४
सल्ल	६	५३
	१६	६१
	२६	सू० ६
	३१	४
सवण	३	६
सवियार	३०	१२
सवीसेस	७	२१
सव्व	२	२८
सव्वओ	६	६
	६	१६
	१४	२१
	१५	१६
	१८	२
	१६	६३
	२१	२४
	२२	११
	३५	१२
सव्वकामिय	२५	८
सव्वट्ट	३६	५७, २४४
सव्वट्टसिद्धग	३६	२१६

सव्वत्थ(सर्वार्थ)	१८	३०
सव्वत्थ(सर्वत्र)	२१	१५
	३६	१३०, १३६,
		१७३, १८२
सव्वदंसि	१५	२, १५
सव्वन्नू	२३	१, ७८
सव्वभक्खि	२०	४७
सव्वसो	१	४
	६	११
	२३	४१, ४६, ४७
	२४	२६
ससत्ता	२१	३
ससमय	२६	सू० ६०
ससरक्ख	१७	१४
सह(सह)	१	६
	६	४६
	१२	१८
	१४	६, १६, ५३
	१६	३
	२१	२१
सह		
सहई	३१	५
सहेज्जा	२१	१६
सह(स्व)	२८	१७
सहसंबुद्ध	६	२
सहसी	१६	६

सहस्त्र	७	११,१२	साईय	३६	१०१,११२,
	६	३४,४०			१२१,१३१,
	१८	४३			१४०,१५०,
	१६	२४			१५६,१७४,
	२२	५			१८३,१९०,
	२३	३५			१९६,२१८
	३४	४१,४८,५३	साज	३२	१०
	३६	५८,८०,८८,	सागडिय	५	१४
		१०२,१२२	सागपत्त	३४	१८
सहस्त्रसकव	११	२३	सागर	१६	३६,४२
सहस्त्रसो	३६	८३,६१,		२२	३१
		१०५,११६,		२५	३८
		१२५,१३५,		२६	१,५२
		१४४,१५४,		३१	१
		१६६,१७८,		३४	३४,३८,३९,
		१८७,१९४,			४३,५२
		२०३,२४७		३६	१६१,१६२,
सहस्त्रसार	३६	२११,२२६			१६४ से १६६,
सहस्त्रिय	३६	१६०,२१६,			२१६,२२२ से
		२२०			२४३
सहाय	२६	सू० १,४०	सागरंगम	११	२८
	३२	४,५,१०४	सागरंत	१८	३५,४०
सहाव	३६	६०,२६३	सागरोवम	३३	२२
सहिय	१५	१,५,१५		३६	१६० से १६६,
साझम	१५	११,१२			२२४,२२६ से
साईय	३६	६,१२,६५,			२३०,२३२,
		७६,८७,			

सागरोबम	३६	२३४ से २३६, २४२, २४४	साय	२७	६
सागरोबउत्त	२६	सू० ७४		२६	सू० ४
साण	१	६		३३	७
साम	१६	५४		३४	२३
सामण्ण	२	१६, ३३	सायं	३६	२६४
	६	६१	सार	१२	३६
	१८	४६		१४	३०, ३७
	१९	८, २४, ३४, ७५, ६५		१६	२२
	२०	८	सारइय	२०	२४
	२२	४५, ४७	सारण	१०	२८
	३६	२५०		२६	६
सामाइय			सारहि	१६	१५
(सामाजिक) ११	२६			२२	१५, १७, २०
सामाइय(अ)				२७	१५
(सामायिक) २८	३२		सारीर	१६	४५
	२६	सू० १, ६		२३	८०
सामाइयंग	५	२३		२६	सू० ४, ४५
सामायारी	२६		सालि	६	४६
	२६	१, ४, ७, ५२	सालिम	१२	३४
सामि	२	३८	सावथ	२१	१, २, ५
सामुदाणिय	१७	१६	सावकंखा	३०	६
साय	२	८, ३६	सावज्ज	१	२५, ३६
	१६	७४		२१	१३
			सावज्जजोग	२६	सू० ६
			सावण	२६	१६
			सावत्थि	२३	३, ७

सास		
(शिष्यमाण)	१	३७
सास		
(शास्यमाण)	१	३६
सासंत	१	३७
सासग	३६	७४
सासण	१४	५२
	१६	६३
सासय	१	४८
	३	२०
	६	२६
	१६	१७
	२३	८४
	३५	२१
सासयवाइय	४	६
साह *		
-साहसि	१३	२७
-साहेइ	२६	सू० ५
साहण	२३	३१, ३३
साहम्मिय	२६	सू० १, ५
साहसिअ	२३	५५, ५८
	३४	२१
साहस्सिअ	३४	२४
साहस्सी	२२	२३
	२३	१६
साहा	१४	२६

साहारणे	४	४
	२६	सू० ५८
साहारणसरीर	३६	६३, ६६
साहासिय	२३	५५, ५८
साहीण	१४	१६
साहु	१	३६
	५	२०
	८	६
	६	५७
	१२	३७
	१३	२७, ३४
	१६	७
	२०	४, १३
	२३	२८, ३४, ३६,
		४४, ४६, ५४,
		५६, ६४, ६६,
		७४, ७६, ८५
	२५	१५
	२६	४
	२७	१२
	३६	२६५
साहुधम्म	८	८
सिंग	११	१६
सिंगवेर	३६	६६
सिंगार	१६	६
सिंगिरीडो (दि०)	३६	१४७

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

सिघाण	२४	१५
सिच *		
-सिचामि	२३	५१
सिबलि	१६	५२
सिक्ख *		
-सिक्खए	२१	६
-सिक्खा	५	२४
	७	२०, २१
	११	३, १४
	२३	५८
		८
-सिक्खेज्जा	१	४, ५
सिक्खालील	११	२८
सिक्खिता	५	८
सिक्खिय	४	४, ८
सिज्जा	२३	
सिज्ज *		
-सिज्जइ	२६	सू० २, २६, ४२, सू० ५६, ६२, ७४, ५१, ५२, ५४
-सिज्जई	३६	से ५६
-सिज्जन्ति	१६	१७
	२६	सू० १
-सिज्जो	३६	५३
-सिज्जिस्सन्ति	१६	१७
सिट्ठ	१२	४२
सिद्धि	४	६
	२६	सू० २३

सिणाण

सिणाण	२	६
	१२	४७
	१५	८
सिणायय	२५	३२
सिणेह	६	४
	८	२
	१०	२८
	३	१२
सित्त	२३	५१
	३०	१५
सित्थ	१	४८
सिद्ध	३	२०
	१२	११
	१६	१७
	१८	५३
	२०	१
	२६	५१
	२६	सू० ३६
	३३	१७, २४
	३६	४८, ४९, ५५, ५६, ६२ से
		६४, २४८
सिद्धाङ्गुण	३१	२०
सिद्धि	६	५८
	१०	३५, ३७
	११	३२

सिद्धि	१३	३५
	१६	६५
	२२	४८
	२३	८३
	२५	४३
	२६	सू० ३,५
	३६	६३, ६७
सिप्पि	१५	६
सिप्पीय	३६	१२८
सिया	६	४८
सिर	१८	५०
	१६	४६
	२०	५६
	२२	१०
	२३	८६
सिरिली (दि०)	३६	६७
सिरी	१८	५०
सिरीज	३४	१६
सिला	३६	७३
सिलोग	१५	६
	१६	सू० १२
सिव	१०	३५
	२३	८०, ८३
सिवा	२२	४
सिसुणाग	५	१०
सिस्सरिली	३६	६७
(दि०)		

सिहा	१६	३६
सीमोदग	२	४
सीय *		
-सीयन्ति	२०	३८
	२१	१७
सीय (अ)	१	२७
	२	६
	१५	४, १३
	१६	३१, ४८
	२१	१८
	३२	७६
	३६	२०
सीयम	३६	३८
सीयच्छाय	६	६
सीयपिह	८	१२
सीया(सीता)	११	२८
	३६	६१
सीया		
(शिविका)	२२	२२, २३
सील	१	५, ७
	३	१४
	५	१६
	१३	१२, १७
	१४	५, ३५
	१७	३
	१६	५

उत्तरज्जमण शब्द-सूची

सील	२१	११	सुख	२८	२१
	२२	४०	सुइ(श्रुति)	३	१,८,१०
	२३	५३,८८		१०	१८,१९
	२७	१७	सुइ(श्रुति)	१२	४२
	२९	सू० ५	सुइर	७	१८
	३६	२६३	सुए	२	३१
सीलवंत	५	२९		१४	२७
	७	२१	सुंदर	१३	२४
	२२	३२		१९	१७
सीस(शिष्य)	१	१३,१३	सुंसमार	३६	१७२
	२१	१	सुकड	१	३६
	२३	२,३,६,७,		२	१६
		१०,१४,१५	सुकय	१	४४
		१५,१६	सुकहिय	१०	३७
	२७	१०	सुकुमाल	१९	३४
सीस(शीर्ष)	२	३		२०	४
	७	२८	सुकक(शुष्क)	२५	४०,४१
	१२	१७	सुकक(शुक्ल)	३०	३५
	२१	७३		३४	३१
सीसग	३६	६८	सुककज्जमण	२९	सू० ७३
सीसय	१९	२०		३५	१९
सीह	११	२२	सुककलेसा	३४	३,९,३२,
	१३	१४			३९,४६
	२१	१८०		३६	२५८
	३६	९९	सुक्का	३४	१५,५५,५७
सीहकणी	३६	७०	सुक्किल	३६	१६,२६,७२
सीह	१९				

सुगंधाधिय	२२	२४
सुगण्ड	३४	५७
सुगोर्व	१६	१
सुविण्ण	१३	१०
	१४	५
सुचिर	२७	६
सुचोइय	१	४४
सुच्चा	२१	१४
सुच्छिन्न	१	३६
सुजट्ट	१२	४०
सुजह	८	६
सुट्टिय	२२	४०
सुट्ठु	२०	५४
	२५	३५
सुण *		
-सुण	२४	६
	३०	१, ४
	३३	१६
	३६	४८, १७६
-सुणाहि	१३	२६
-सुणेमि	२०	८
-सुणेह	१	१
	२	१
	५	१७
	११	१
	२०	१, १७

-सुणेह	२८	१
	३४	१, २
	३५	१
	३६	१, ६६,
		१०७, १२७,
		१३६, १४५,
		१७१, १६५,
		२०४
-सुणेहि	२०	३८
-सुव्वन्ति	६	७
सुणग	१६	५४
	३४	१६
सुणिट्ठिय	१	३६
सुणिता	१७	१
सुणिया	१	६
सुणी	१	४
सुणेत्ता(श्रुत्वा)	१२	१६
सुणेत्ता(श्रोतृ)	१६	सू० ५
सुणेमाण	१६	सू० ७
सुत्त(सूत्र)	१	२३
	२३	८५
	२८	१६
	२९	सू० २१, ६०
	३२	३
सुत्त(सुप्त)	४	६
सुत्तग	२२	२०

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

३२१

सुत्तखड्	२८	२१	सुपावय	१२	१४
सुदंसण	११	२७	सुपिवासिय	२	५
सुदिट्ठ	१२	३८	सुपुण्ण	५	१८
	२८	२८	सुपेसल	१२	१३, १५
सुदुक्कर	१६	२८ से ३०, ३८, ३९	सुप्पणिहिय	२६	सू० १२
सुदुक्खिअ	२२	१४	सुप्पसारअ	२	२६
सुदुक्खर	१८	३३	सुप्पिय	११	८
सुदुल्लह	८	१५	सुब्भि(दे०)	२६	२७
	१७	१	सुब्भिगंघ	३६	१७
	२०	११	सुभासिय	२०	५१
	२२	३८		२२	४६
सुइ	२५	३१	सुमेरव	१६	५३, ६८
सुद्ध	३	१२	सुमज्जिय	१६	३४
	८	११	सुमह	११	२६
	१८	३२	सुमिण	१५	७
	१९	६४	सुय(सुत)	१३	२३
	३२	१०६		१४	११, ३७
सुद्धवाय	३६	११८	सुय(श्रुत)	१	४६
सुद्धोदअ	३६	८५		२	सू० १
सुन्नगार	२	२०		५	१२
	३५	६		७	२६
सुपक्क	१	३६		११	७, ११, १५, ३१, ३२
सुपट्ठिअ	२०	३७		१४	४८
सुपरिच्चाइ	१८	४३		१६	सू० १
सुपालय	२३	२७		१७	२, ४

जसा	१४	३
दसणभद्	१८	४४
दसार	११	२७
	२२	११
डुम्मुह	१८	४५
देवई	२२	२
नगगइ	१८	४५
नमि	६	२,३,५,८, ११,१३,१७, १६,२३,२५, २७,२६,३१, ३३,३७,३६, ४१,४३,४५, ४७,५०,६१, ६२
	१८	४५
नायपुत्त	६	१७
पालिय	२१	१,४
पास	२३	१,१२,२३, २६
वंभदत्त	१३	१,४,३४
वलमह	१६	१
वलसिरि	१६	२
भरह	१८	३४,४०
भोयराय	२२	४३
मघव	१८	३६

महापउम	१८	४१
महाबल	१८	५०
महावीर	२	सू० १ से ३
	५	४
	२१	१
	२६	सू० १,७३
मिया	१६	१,६७
मियापुत्त	१६	२,६,८,६६
रहनेमि	२२	३४,३७,३६
राईमई	२२	६,२६,३६
राम	२२	२,२७
रोहिणी	२२	२
	३४	१०
वद्धमाण	६	२४
	२३	५,१२,२३, २६
वसुदेव	२२	१
वासुदेव	११	२१
	२२	८,१०,२५, ३१
विजय	१८	४६
विजयघोस	२५	४,५,३४, ३५,४२,४३
सजय	१८	१,१०,१६, २२
सति	१८	३८

उत्तरज्जयण-नामानुक्रम

सभूय	१३	३, ११
सगर	१८	३५
सणकुमार	१८	३७
समुद्रपाल	२१	४, ६, २४
समुद्रविजय	२२	३, ३६
सिवा	२२	४
सेणिय	२०	२, १०, १२, ५४

हरिएसवल	१२	१
हरिसेण	१८	४२

देशों व नगरों के नाम

उसुयार	१४	१
कम्पिल्ल	१३	२, ३
	१८	१, ३
कम्बोय	११	१६
कलिंग	१८	४५
कासी	१३	६
	१८	४८
कोसंबी	२०	१८
गघार	१८	४५
चम्पा	२१	१, ५
दसण्ण	१३	६
	१८	४४
पचाल	१३	१३, २६, ३४
	१८	४५

पिटुण्ड	२१	२, ३
पुरिमताल	१३	२
बारगा	१२	२२, २७
भरह	१८	४०
भारह	१८	४१
मगघ	२०	२, १०, १२
मिहिला	६	४, ५, ७, ६, १४

वाणारसी	२५	२, ३
विदेह	१८	४५
सावत्यी	२३	३, ७
सुगीव	१६	१
सोरियपुर	२२	१, ३
सोवीर	१८	४७
हत्थिणपुर	१३	१, २८

पर्वतों के नाम

कालिंजर	१३	६
केलास	६	४८
नीलवत	११	२८
मदर	११	२६
	१६	४१
रेवयय	२२	२२, ३३

ससुद्रों के नाम

रयणागर	१६	४२
सयभूरमण	११	३०

नदियों के नाम

गंगा	१६	३६
	३२	१८
मयंगा	१३	६
वेयरणी	१६	५६
	२०	३६
सीया	११	२८

उद्यानों के नाम

केसर	१८	३४
कोट्टा	२३	८
तिदुय	२३	४, १५
मंडिकुच्छि	२०	२

चिह्नों के नाम

कहावण	२०	४२
कागिणी	७	११

आवास

उच्चोयअ	१३	१३
कक्क	१३	१३
गेह	१६	२२
गोपुरट्टाला	६	१८
पागार	६	१८
पासायालोयण	१६	४
वंम	१३	१३
वालंगपोइया	६	२४
महु	१३	१३

लयण	२२	३३
वद्धमाणगिह	६	२४
सुन्नागार	२	२०

शास्त्र

अंकुस	२२	४६
असि	१६	३७
इदासणि	२०	२१
कप्पणी	१६	६२
करकय	१६	५१
करवत्त	१६	५१
कस	१२	१६
कुहाड	१६	६६
खुर	१६	५६
गदा	११	२१
चक्क	११	२१
छुरिया	१६	६२
दंड	१२	१६
घणु	६	२१
पट्टिस	१६	५५
फरसु	१६	६६
भल्ली	१६	५५
मुग्गर	१६	६१
मुसढी	१६	६१
मुसल	१६	६१
वज्ज	११	२३

उत्तरज्जयण-नामानुक्रम

३३७

वित्त	१२	१६
सडास	१६	५८
सयग्धी	६	१८
सूल	१६	५१

धातु और रत्न

अक	३४	६
अजण	३६	७४
अभमपडल	३६	७४
अभमवालुया	३६	७४
अय	३६	७३
इन्डनील	३६	७५
उवल	३६	७३
उत्त	३६	७३
कस	६	४६
गेरुय	३६	७६
गोमेज्जअ	३६	७५
चन्दण	३६	७६
चन्दप्पह	३६	७६
तउय	३६	७३
तम्ब	३६	७३
पवाल	३६	७४
पुढवि	३६	७३
पुलअ	३६	७६
फलिह	३६	७५
भुयमोयग	३६	७५

मणोसिला	३६	७४
मरगय	३६	७५
मसारगल्ल	३६	७५
मुत्ता	६	४६
रुप्य	३६	७३
रुयग	३६	७५
लोण	३६	७३
लाह	१६	६८
लोहियक्ख	३६	७५
वहर	३६	७३
वालुया	३६	७३
वेरुलिअ	३६	७६
सक्करा	३६	७३
सासग	३६	७४
सिला	३६	७३
सीसग	३६	७३
सुवण्ण	३६	७३
सूरकत	३६	७६
सोगघिअ	३६	७६
हसगन्म	३६	७६
हरियाल	३६	७४
हिगुलअ	३६	७४
हिरण्ण	६	४६
वनस्पति		
अवग	१६	५५
अयसि	७	११

असण	३४	८
अस्सकण्णी	३६	६६
आलुअ	३६	६६
उच्छु	१६	५३
कद	३६	६८
कदली	३६	६७
कण्ह	३६	६८
कविट्ठ	३४	१२
कालीपव्वंग	२	३
किम्पाग	१६	१७
कुद	३४	६
कुडुवअ	३६	६७
कुहग	३६	६८
कुडसामली	२०	३६
केदकंदली	३६	६७
खज्जूर	३४	१५
जव	६	४६
जावइ	३६	६७
णिहु	३६	६८
तिंदुय	१२	८
तिगहु	३४	११
थीहु	३६	६८
निम्ब	३४	१०
नीलासोग	३४	५
पलंडु	३६	६७
पोम	२५	२६

मुद्धिया	३४	१५
मुसुण्ढी	३६	६६
मूलअ	३६	६६
रोहिणी	३४	१०
लसण	३६	६७
लोहि	३६	६८
वज्जकंद	३६	६८
सण	३४	८
सालि	६	४६
सिगवेर	३६	६६
सिम्भलि	१६	५२
सिरिली	३६	६७
सिरीस	३४	१६
सिस्सिरिली	३६	६७
सीहकण्णी	३६	६६
सूरणअ	३६	६८
हढ	२२	४४
हत्थिपिप्पली	३४	११
हलिदा	३६	६६
हिरिली	३६	६७

प्राणि

अच्छिरोडअ	३६	१४८
अच्छिल	३६	१४८
अच्छिवेहअ	३६	१४७
अणुल्लअ	३६	१२६

उत्तरजर्म्यण-नामानुक्रम

अन्विय	३६	१४६
अरिदुग	३४	४
अलस	३६	१२८
अस्स	२०	१४
अहि	३६	१८१
आइण्ण	११	१६
इदकाडय	३६	१३८
इदगोवग	३६	१३६
उक्कल	३६	१३७
उड्डस	३६	१३७
उद्वेहिय	३६	१३७
उरग	१४	४७
ओहिजल्लिय	३६	१४८
कथग	११	१६
कच्छभ	३६	१७२
कट्टहार	३६	१३७
कप्पासट्टि मिज	३६	१३८
कामवुहा घेणु	२०	३६
कावीय	१६	३३
किमि	३६	१२८
कीड	३६	१४६
कुक्कुण	३६	१४६
कुच	१४	३६
कुक्कुड	३६	१४७
कुन्थु	३६	१३७
कुररी	२०	५०

कुल्ल	१४	४६
कोइल	३४	६
कोल	१६	५४
खलुक	२७	३
गघहत्थि	२२	१०
गवल	३४	४
गाहा	३६	१७२
गिद्ध	१६	५८
गुम्मी	३६	१३८
गो	३४	१६
गोण	३६	१८०
गोह	३६	१८१
चन्दण	३६	१२६
चम्म	३६	१८८
चास	३४	५
चित्तपत्तभ	३६	१४८
जलकारी	३६	१४८
जलूग	३६	१२६
जालग	३६	१२६
डोल	३६	१४७
ढंक	१६	५८
डिगुण	३६	१४६
तउसमिज	३६	१३८
ततवग	३६	१४८
तणहार	३६	१३७
तिदुग	३६	१३८

दंस	१६	३१
नंदावत्त	३६	१४७
नाग	१४	४८
नीय	३६	१४८
पत्तहारग	३६	१३७
पर्यंग	३२	२४
पल्लोय	३६	१२६
पारेवय	३४	६
पिवीलि	३६	१३७
पोत्तिय	३६	१४६
बलागा	३२	६
बिराल	३२	१३
ममर	३६	४६
भारुंड	४	६
भिगारी	३६	१४७
भुजंग	१४	३४
मगर	३६	१७२
मच्छ	३६	१७२
मच्छिय	३६	१४६
मसग	३६	१४६
महिस	३२	७६
माइवाहय	३६	१२८
मालुग	३६	१३७
माहय	३६	१४८
मिग	३२	१३७

मुसग	३२	१३
रोहियमच्छ	१४	३५
रोज्ज	१६	५६
लोमपक्ख	३६	१८८
वराडग	३६	१२६
वसह	११	१६
वासीमुह	३६	१२८
विचित्त	३६	१४८
विच्छिअ	३६	१४७
विययपक्ख	३६	१८८
विग्ली	३६	१४७
वीदसअ	१६	६५
सख	३६	१२८
सखणग	३६	१२८
सदावरी	३६	१३८
समुगपक्ख	३६	१८८
सिगिरिडी	३६	१४७
सिप्पी	३६	१२८
सीह	३६	१८०
सुंगुमार	३६	१७२
सुणग	३४	१६
सुय	३४	७
सुवण्ण	१४	४७
सोमगल	३६	१२८
हस	१४	३३

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

मूल पाठ दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	५।३	कर्म	कम्मं
१५	११।२	पावग ?	पावगं
२१	३१	(एवं ...३४॥)	(एवं)
२४	६३	(एवं ...६३॥)	(एवं)
२७	८६।४	पडिक्कम्मे	पडिक्कमे
३३	४७।४	ईमं	इमं
३८	३८।२	कंवल	कंवलं
४६	२८।३	नाभी	नाभी
४७	४३।३	अविक्रय °	अविक्रय °
५०	१।१	अयार °	आयार °
५०	४।१	भित्ति	भित्ति
५०	८।२	व	वा
५७	१।१	सिक्ख	सिक्खे
६१	४।३	° भेज्जति	° भेज्जंति
७५	२०।३	निकल्लम्मं	निकल्लम्म
८२	७।२	गया	गयो
८३	१२।३	कि	कि

उत्तराध्ययन

८८	६।३	संसग्गि	संसग्गि
१०२	१६।४	बोहि	बोहि
१२२	३।१	से	मो
१२३	१७।३	गयग्गि	रायग्गि
१२६	४८।१	° त्थम्म	° त्थम्म
१२७	५८।१	उत्तमो	उत्तमो
१३४	३०।१	अवउज्झियं	अवउज्झिय

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१५१	भावधरा	भारधरा
१४२	१६१४	दहामु	दाहामु
१५२	२३१४	० भेव	० भेवं
१५८	१८२	तेल्लामहा तिल्लेमु	तेल्ल महातिल्लेमु
१७०	पं ८	कुडुत्तंसि	कुडुत्तरंसि
१७३	१३११	गत ०	गत ०
१७५	११२	सुणिता	सुणिता
१७६	१०११	अहम्मीति	अहमस्सीति
१८२	४०१२	भरह	भरहं
१८३	४७११	सवीर ०	सोवीर ०
१८६	४११३	निहुय	निहुयं
१९०	५०१२	० बालुए	० बालुए
१९३	७७१२	मिगे	मिगो
२०६	४११	घरणी	घरणी
२३२	१३१४	महानुणि	महामुणि
२३४	३४१३	लयं	तय
२३८	१०१३	निउत्तेण	निउत्तेणं
२३९	२४१२	वा	ता
२४३	४७१३	य	×
२४४	७१४	उज्जाहिता	उज्जहिता
२४७	४१३	तु	×
२४९	२०१३	रीयन्तो	रोयन्तो
२५५	पं ६	अणगारेए	अणगारे
२५६	सू०२४	पभावेणं	पभावे णं
२५९	सू०२५	खवेड	अन्नाणं खवेड
२६६	सू०६०	विणुस्सड	विणस्सड
२६९	सू०७४	कम्माड	कम्माइं
२७५	३७११	एवं	एयं
२७७	१७११	० णावणाहि	० भावणाहि
३०५	४१३	खंजणं ०	खंजणंजण ०

शुद्धि और आपूरक पत्र

पृष्ठ	श्लोक
३०६	१०।१
३१७	१
३३०	६५।१
३४९	२६६।३

अशुद्ध
कहुय
'मे एगाममणा'
लयावल्या
कारणेहि

३४३

शुद्ध
कहुय
मेगाममणा
लयावलय
कारणेहि

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२	पा० १	कङ्कहं	कङ्कहं
३	पा० ६	संपन्ना (अ,ज)	संपन्ना (अ,ज), संबुद्धा (आ)
४	पा० १	(अ)	(आ)
५	पा० ८	(क,ख, ...)	(क,ग, ...)
७	पा० ४	(जिचू पा०, जिचू पा०)	(अचू पा० जिचू पा०)
७	सू० ६	एसो ^१ खलु	एसो खलु ^५
८	पा० १	(अचू)	(अचू सू० १०-२२)
१०	सू० १५	'गामे वा' ^१ नगरे वा	'गामे वा नगरे वा
		रणे ^२ वा	रणे ^१ वा' ^२
१०	पा० १	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)	अरणे (अचू)
१०	पा० २	अरणे (अचू)	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)
११	सू० १८	सलागाए वा' ^३	सलागाए वा सलागहत्येण वा' ^३
१२	पा० ३	उज्जालवेज्जा	उज्जालवेज्जा
१४	पा० १	इडगंसि वा	डंडगंसि वा
१८	पा० ६	कट्ट	कट्ठ
२१	पा० ४	६—हारताल ०	६—हरिताल ०
		७—हिगोलए ०	७—हिगोलुय ०
		१४—सोरट्टिय ०	१४—सोरट्टिय ०
२३	पा० २	(अ,ज)	(अ)
२७	८४।३	वा वि	'वा वि' ^१
२७	८४।४	'वा वि' ^१	वा वि
३१	पा० २	(आ,जा,ह)	(आ,जा,हा)
३६	पा० २	(आ,ज)	(अ,ज)

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
३७	१८।१	लोभस्सेसो अणुफासो	'लोभस्सेसो अणुफासो' २
३७	१८।३	सन्निहीकामे	सन्निहीकामे ३
३७	२२।३	य २	य ४
३७	पा० २	२—व (अ)	२—लोभस्सेसणुफासे (क, घ) ; लोभस्से सणुफासे (ख) ; लोभस्सेसणफासो (ग) ३—सन्निहि कामे (हाटी०) ४—व (अ)
३८	पा० ३	ना	नो
४०	पा० ३	जिनदास 'व्याख्यात नहीं है	×
४४	पा० २ गा० ८, ९	तहेवऽ ०	तहेवाऽ ०
		व धारिय'...अइयंमि	वधारियं अइयंमि
४८	५४।३	भयसा ३	'भयसा व' ३
४९	पा० १	मुवक्क ० (ख, ग)	मुवक्क (ख, ग)
५१	१९।४	ण ४	'ण य' ४
५२	पा० ३	(क, ख, घ)	(क, ग, घ)
५५	पा० २	पणीयं रसं	पणीयं
५६	६३।३	कम्मवणम्मि ४	'कम्मवणम्मि अवगए' ४
५६	पा०	२—	१—
		३—	२—
		१—	३—
		२—	४—
५६	पा० २	पुव्व ०	४—पुव्व ०
५७	५।२	० नासाओ २	० नामाओ ३
६२	पा० २	समणोति	समाणोति
	४।४	'वि पए' ८	'नो वि पए' ८
७६	सू० १ पं० २०	खल्लु ४	'खल्लु भो' ४
७१	पा० ४	(आ, जा)	(अ, ज)
८४	पा० २	० वहं (जा, आ)	० वहं (आ, ज), ० पहं (जा)

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
८७	पा०२	जाहिताणं (वृ०, चू०)	जहिताणं (वृ०, चू०); चइत्ताणं (वृ०पा०)
८८	पा०७	(वृ०, चू०) ।	(वृ०, चू०) ; अप्पाचेव दमेयन्वो (वृ०पा०) ।
८९	पा०१	(अ, उ, म,)	(अ, उ, ऋ)
९२	पा०१, २	(चू०पा०)	(चू०)
९२	पा०३	(अ, उ, ऋ), कित्ती ति (ऋ) ।	(अ, उ); कित्ती य (वृ०) ।
१०३	पा०२	(वृ०पा०, चू०पा०) ।	(ऋ, वृ०पा०, चू०पा०)
१०३	पा०७	पीहाति	पीहति
१०९	पा०२	आघा °	आघा °
११०	पा०२	(चू०, वृ०पा०)	(चू०पा०, वृ०)
१११	पा०१	(..सु)	(...स(
११९	पा०१ पं०४	(चू०)	(चू०पा०)
११९	पा०२	..सेवए...णिसेवए	.. सेवए...णिसेवए
१३२	पा०३	(उ, म, वृ०),	(उ, ऋ, वृ०),
१३६	अ०११	बहुस्सुयपुज्जा	बहुस्सुयपुज्जं
१३७	१५।२	'निहियं दुहओ' २	'निहियं दुहओ वि' २
१४७	पा०२	सुसंबुडा	सुसंबुडा
१४७	पा०४	वोसट्ठ °	वोसट्ठ °
१५०	पा०५	वित्तघण °	चित्तघण °
१८२	पा०८		× (आ, इ, स)
१८३	४७।२	चेच्चा ३	'चेच्चा रज्जं' ३
१८५	पा०३		× (आ, इ, सु, चू०)
१८८	३४।४	° पालितं	° पालितं ३
१८८	३७।१	वालुयाकवले ३	वालुयाकवले ४
१८८	३७।२	उ ४	उ ५
			३—पालिया (अ, आ, इ, उ, सु)
१८८	पा०	३—	४—
१८८	पा०	४—	५—
१९९	पा०१२	पा० टि० ७	पा० टि० ८

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२००	पा० ४	अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०)	अणुरत्तमणुव्वया (उ, ऋ, अणुत्तरमणुव्वया (वृ० पा०)
२०७	पा० ४	जहिज्ज संगंथ (वृ०), जहित्तुसंगंथ (वृ०), जहित्तु संगंथ ° (सु) से ओ	जहित्तु संगंथ (वृ०), जहित्तुसंगंथ (वृ०), जहित्तु संगंथ (सु) सेओ
२१४	पा० ८		× (अ, इ, ऋ, स, सु)
२१६	पा० १, ३	से से ° गुरु	सेसे गुरु
२४२	पा० ५	° तवेइ या	तवे इ या
२४८	पा० २	उज्जुभावपडिवल्ले ^६	‘उज्जुभाव पडिवल्ले य ण’ ^६
२५५	सू० ६ पं० ४	‘पडिवल्ले य’ ^३	‘पडिवल्ले य ण’ ^३
२५६	सू० ७ पं० ३	अणासायमाणे ^३	अणासायमाणे
२६१	सू० ३४ पं० ५	निक्कंखे ^४	निक्कंखे ^३
२६१	सू० ३५ पं० ३	जीवियासंसप्पभोग ^५	जीवियासंसप्पभोग ^४
२६१	सू० ३६ पं० २	वोच्छिन्दइ ^६	वोच्छिन्दइ
२६१	सू० ३६ पं० ३	वोच्छिन्दित्ता	वोच्छिन्दित्ता ^५
२६१	पा०	२—‘नो आभाएइ’... (वृ०)	२—× (उ, ऋ, वृ०)
		३—	×
		४—	३—
		५—	४—
		६—	५—
२६३	पा० ६	बन्धाणि	बन्धणाणि
२६५	सू० ५१ पं० ५	परलोगघम्मस्स ^२	‘परलोगघम्मस्स आराहए’ ^२
२६५	सू० ५५ पं० २	‘निव्वियारेणं जीवे’ ^४	‘निव्वियारे... ^४ ज्ञाणगुत्ते’ ^५
	पा०	४—	५—
	पा०	५—	४—
२६६	पा० ६	(वृ० पा०)	(वृ०)
२७२	१४३	‘दव्वओ खेत्तकालेण’ ^८	खेत्तकालेण ^८
२७२	पा० १	° कालाय	° काला य
२७२	पा० ४	चउत्थोउ	चउत्थो उ

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२८४	२५।२	'उ उवेड दुक्खं' ^२	'उवेड दुक्खं' ^२
३०२	१०।३	'कसायमोहणिज्जं' ^३	'कसायमोहणिज्जं तु' ^३
३०३	२४।४	जीवेसु ऽइच्छियं ^३	जीवेसुऽइच्छियं ^३
३०३	पा०	३-स इच्छियं (उ,सु); ३-जीवे स इच्छियं (अ,सु), अहिच्छिय (स)	जीवे अहिच्छियं (स)
३०५	६।२	कोइलच्छदसन्निभा	कोइलच्छदसन्निभा ^२
३०५	७।२	तरुणाइच्चसन्निभा ^२	तरुणाइच्चसन्निभा
३०५	पा०२	० च्छावि ०	० च्छवि ०
३०६	६।४	उ ^२	उ
३०६	१०।४	उ ^३	उ ^३
३०६	१२।२	तुवरकविट्ठस्स ^४	तुवरकविट्ठस्स ^४
३०६	पा०२		×
३०६	पा०	२, ३—	२—
३०६	पा०	४—	३—
३०६	पा०	५—	४—
३०६	२६।१	उप्फालगदुट्ठवाई ^४	'उप्फालगदुट्ठवाई य' ^४
३१२	पा०३	पलियमसंख	पलियमसंख
३१५	पा०४		न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०) । न वि० ... (वृ० पा०) , न हु ० ... (उ, ऋ, सु) ।
३४५	पा०५ पं०४	वियाहियं	वियाहिया
३४६	पा०२	२४८, २४९	२४८ से २६८
३४८	२६१।२	बहुणि ^१	'य बहुणि' ^१

शुद्धि और आपूरक पत्र-३

उत्तराध्ययन शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
६३		अइमन्त	अइमन्त
६४	अंत	२८।४१, ५८, ६१, ७३, २६।सू०१	२६।सू०१, २८, ४१, ५८, ६१, ७३
६५		अंतरमासिल्ल	अंतरमासिल्ल
६६	अकिचण	१४।१५	X
६६			अकिच्च १४।१५
६७	अगारि	२७।२२	७।२२
६७		अगग *	अग्व *
६८		अजाणमाग	अजाणमाण
१०४	अणुभाग	३४।१	३४।६१
१०४		अणुरत्त	अणूरत्त
१०६		अतिति	अतित्ति
१०६	अत्य (अर्थ)	२६।सू०२, ४८	२६।सू०२, ४८
१०७	अवत्त	३२।४२ से ४४,	३२।४२, ४४
१०६	अप्प(आत्मन्)	१४।४६	१४।४८
१११		अर्बभचारि	अर्बभचारि
१११		अब्भाइय	अब्भाहय
१११		-अब्भट्ठेइ	-अब्भट्ठेइ
१११		अब्भुट्ठिच्चा	अब्भुट्ठिता
११२		अभिगमरूह	अभिगमरूह
११२	अभिभूय (अभिभूय)	१५।३	१५।२
११४		अलित	अलित्त
११७	असण (असान)	२।३०	२।३
११८	असायावेयणिज्ज	२०।४२	X
११८			असार १६।१४, २२, २०।४२
११८		अस्सविली	अस्साविणी
११६		अहिसया	अहिसया

३५०

दसवेआलियं-उत्तरज्जम्पणं

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२०		अहुणेववन्न	अहुणेववन्न
१२०	आइ	(दि०)	(दि)
		२६।सू०३	२६।सू०४
१२१	आउकम्म	३२।२,	३३।२
१२१	आउट्टिइ	३६।१३२ से १४१	३६।१३२, १४१
१२१		आगन्तु	आगन्तुं
१२३		-आमन्त्यामो	-आमन्त्यामो
१२३		आमीस	आमोस
१२३	आयय *		-आययन्ति ३।७
१२३	-आयरे	२४।७	२४।२७
१२३	आयहिअ	२१।१२	२१।२१
१२४	आराहण्या	२६।सू०४६	२६।सू०५१
१२४		आरुह *	आरुह *
१२४		-आरुहइ	-आरुहइ
१२७		-आहारेज्जा	-आहारेज्जा
१२८		इक्कत्तीसइ	इक्कत्तीसइ
१२९	ईसाणग	३६।२१	३६।२१०
१३०	उक्कोस	३४।४६ से ५०	३४।४६, ४८ से ५०
१३०	उग्ग	१८।५०	१५।६; १८।५०
१३१	उज्जाण	१८।३४	१८।३, ४
१३१			उज्जुपन्न २३।५६
१३१	उज्जुभाव	२६।सू०६,	२६।सू०१,
१३१		उज्जेय (उद्योत)	उज्जोय (उद्योत)
१३२	उत्तम	१८।४१	१८।४०
१३२	उदग(क,अ)	८।८	८।६
१३२	उदहि		३६।२०६
१३३		उद्धत्तुकाम	उद्धत्तुकाम
१३३	उरग	१४।४७, ३६, १८१	१४।४७; ३६।१८१
१३४		उल्लंघन	उल्लंघण
१३४	उवट्ठिअ(य)	२०।२२	२०।८, २२
१३५	-अवलिप्पई	२५।३०	२५।२६, ३६

शुद्धि और आपूरक पत्र-३

३५९

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	एक	१३।३	१३।३, २३
१३७	एग	१।२६, ३३	१।२६, ३३; २।१८; ५।१, ५, २०, ६।८; ७।१४, १५, ८।७, ९।३४, ४६; १४।१, १९।८३
१३७	एगत	१९।३८	X
१३७	एगम्मा	२९। सू० ३१,	२९। सू० ३६,
१४३	कम्म	३३।१,	३३।१, ३,
१४३			कम्मगणि २९। सू० ३२, ७२
१४३	कम्मपयडि	२९। सू० २३	२९। सू० ३३ ३३
१४३	कर	१३।२७	१३।२७, १४।८
१४७	काय	३२। ८१, ८२, ८६ ३६। ६०, १०३	३६। ८१, ८२, ८६, ६०, १०३
१४७	कारण	९।२९, से ३३' ४४,	९।२९, ३१, ३३ ४५,
१४८	काल	२६। ३७,	२६। ३७, ४२, ३३। १६
१४९	कासी	१८। ४८	X
१४९			कासीराय १८। ४८
१४९	किल्लर	१६। ६	१६। १६
१५१	कुर्वसण	२८। १८	२८। २८
१५१	कुविट्ठि	२८। ३६	२८। ३६
१५१	कुल	२०। ४०, ४२	२०। ४०, ४३
१५६	गण	९। ३, १०, ३६, ३७	९। ३, १०। ३६, ३७
१६८	विट्ठमाण		विट्ठमाण
१६९	छत्त	१८। ४२	X
१७५	जाणिस्ता	१। ३४	१। ४३
१७८	जीवाजीवविभक्ति		जीवाजीवविभक्ति
१९८	देविद	९। २३, २७,	९। २३, २५, २७,
२०२	घारेह		-घारेह
२०७	-नासठ		-नासेइ
२०७	निक्खमे		-निक्खमे
२०८	-निज्जरेइ	२९। सू० ३७,	२९। सू० ३८,

३५२

दसवेआलियं-उत्तरज्मयणं

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२०६		निदहे *	निदह *
२१६	-पगरेह	१२।३६	×
२२०		पडिसविकल *	पडिसविकल
२२२		पन्मवय	पन्नवय
२४१		-फ से	-फासे
२४६		-अब्बवी	-अब्बवि
२५३		भुंज	भुंज *
२५३	-भुजिज्जा	३५।१५	३५।१७
२५४		जभुयिा	भुजिया
२६०	मल	२५।११	२५।२१
२६८	मोह	२०	२०।६०
२७३	रेवयय	२२।२२, २३	२२।३३
२८६	विमोयणया	२६।सू०७१	२६।सू०७२
२९१		विवज्ज त	विवज्जयंत
२९२		विस	विसम
२९४		वुककस	वुक्कस
२९६		सजअ (संजय)	संजअ (संजय)
३०१		-सतसन्ति	-संतसन्ति
३०५	सत्त (सत्त्व)	१४।१८, ४३	१४।१८, ४२
३१७	-सिज्झन्ति	२६।सू०१	×
३२७	हरिणस	१-।२७	१२।३७

